# घुश्मेश्वर गाथा

भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग की प्राकट्य कथा व ऐतिहासिक घटनाक्रम

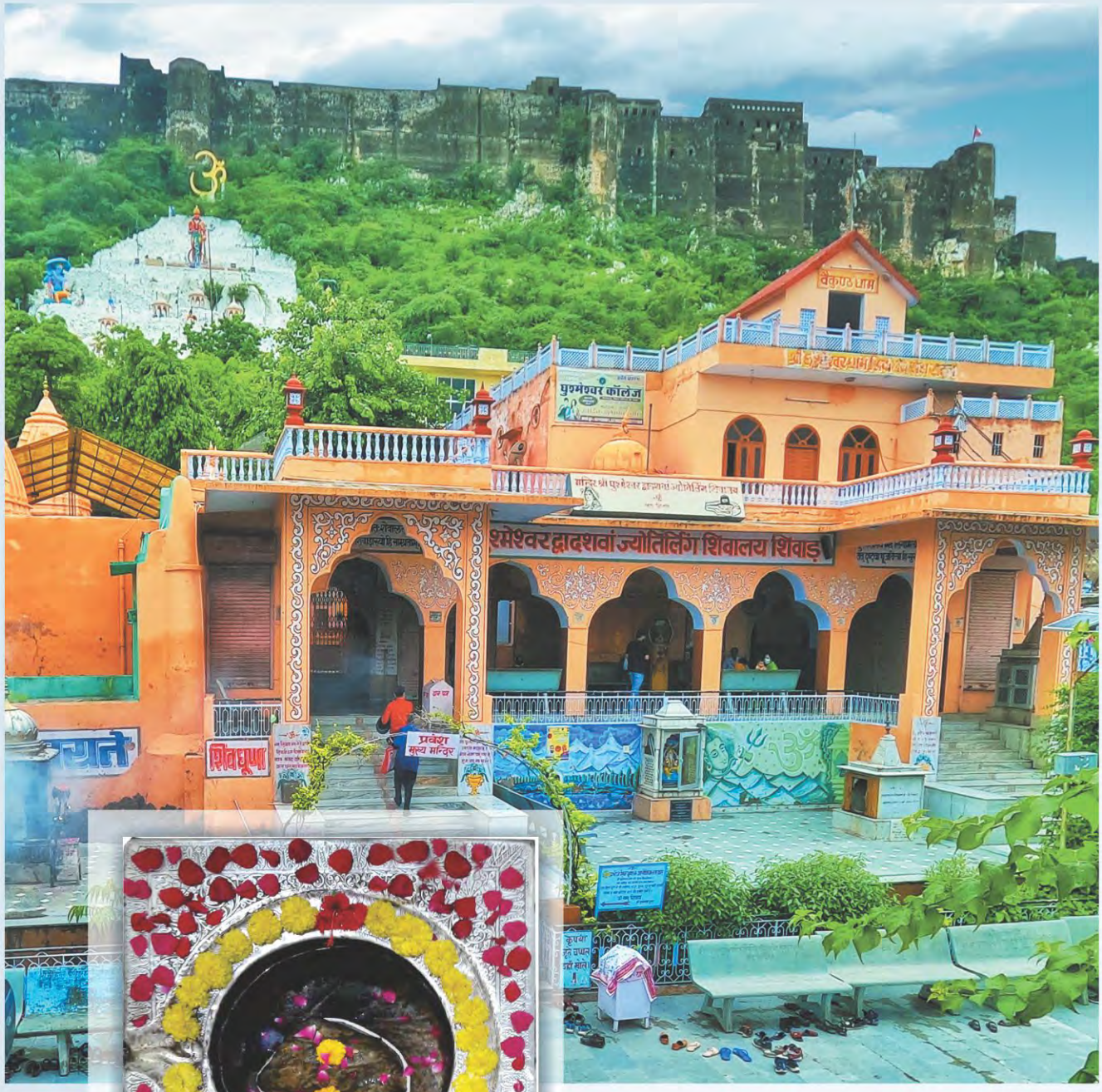


हरीश पाराशर

# श्री घुश्मेश्वर द्वादशवां ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट शिवालय

शिवाड़, जिला सवाईमाधोपुर, राजस्थान, website www.ghushmeshwar.com

शिवभक्तों के उत्साह व सहयोग से ट्रस्ट की ओर से मंदिर परिसर में निर्माण कार्य व दूसरे सेवा कार्य जारी हैं। आप भी सहभागी बन सकते हैं।

## मंदिर में निम्न अभिषेक व उत्सव होते हैं

1. रुद्राभिषेक
2. शिवार्चन
3. सहस्त्रघट
4. अखण्ड ज्योति
5. बिल्वपत्र समर्पण
6. मानस पाठ
7. झांकी महोत्सव
8. जागरण महोत्सव
9. महाशिवरात्रि महोत्सव
10. सावन महोत्सव
11. सावन में नमामि शिवालय महाआरती (शिवाड़ समाज जयपुर के सौजन्य से)

## मंदिर परिसर में ट्रस्ट की यात्रियों के ठहरने की उत्तम व्यवस्था

मंदिर परिसर में 2 विश्राम गृह में 30 से ज्यादा सुविधायुक्त कमरे। घुश्मेश्वर मंदिर के समीप एक और विश्राम गृह में 15 कमरे वातानुकुलित एवं कूलर रूम भी उपलब्ध हैं।

## भोजन व्यवस्था

मंदिर परिसर में केंटिन में थाली सिस्टम और आर्डर से खाना उपलब्ध है। केंटिन रात 10 बजे तक खुली रहती है।

## ट्रस्ट कार्यकारिणी

| | | |
|---|---|---|
| माणक चन्द जैन<br>संरक्षक | प्रेमप्रकाश शर्मा<br>अध्यक्ष | किशन पाटोदिया<br>महामंत्री |
| लल्लू लाल महावर<br>कोषाध्यक्ष | बेनीमाधव शर्मा<br>सह कोषाध्यक्ष | शम्भूदयाल मिश्रा<br>प्रचार प्रसार मंत्री |
| कुमुद कुमार जैन<br>सूचना एवं तकनीकी मंत्री | क्षमाशंकर शर्मा<br>विधि सलाहकार | एवं समस्त<br>कार्यकारिणी |

आप घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ भारत के किसी भी कोने से रेल, बस व निजी वाहन से आ सकते हैं। नेशनल हाइवे 12 पर बरोनी से 21, सवाई माधोपुर से 45, जयपुर से 100 किमी. की दूरी है। जयपुर, सवाईमाधोपुर व टौंक से शिवाड़ के लिए नियमित बस सेवा उपलब्ध है। दर्शनार्थी, जयपुर-मुम्बई रेल मार्ग पर ईसरदा स्टेशन पर उतर सकते हैं।

## आप भी ट्रस्ट में सहभागिता निभा सकते हैं

| | |
|---|---|
| वरिष्ठ परम संरक्षक सदस्य | 51000/- |
| परम संरक्षक सदस्य | 21000/- |
| संरक्षक सदस्य | 11000/- |
| आजीवन सदस्य | 5100/- |

आप यह राशि नकद, बैंक चेक, बैंक ड्राफ्ट, एंव ऑनलाइन बैंक अकाउण्ट ट्रान्सफर द्वारा भी जमा करा सकते हैं।

प्रेमप्रकाश शर्मा
अध्यक्ष

फोन नं. 07462-256136
अध्यक्ष - 9414287390, 9929859433

**हमारा ध्येय** सेवा समर्पण संतुष्टि

# घुश्मेश्वर गाथा

भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग
की प्राकट्य कथा व ऐतिहासिक घटनाक्रम

हरीश पाराशर

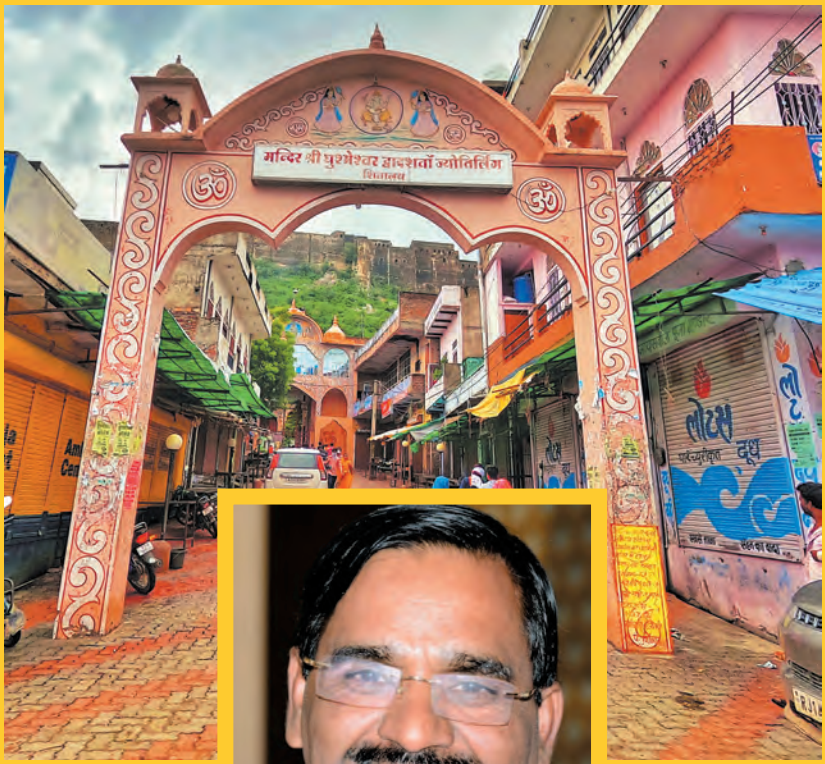

ISBN 978-9-3547329-8-0

9 789354 732980

प्रकाशक:

**शिवाड़ समाज, जयपुर**

73/313 ए, टैगोर लेन,
शिप्रापथ मानसरोवर,
जयपुर-302020

संयोजन:

**शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट**

4, श्रीपुरम कॉलोनी, गुर्जर की थड़ी,
जयपुर-302019

**घुश्मेश्वर गाथा,**

संस्करण : प्रथम, 2021

© हरीश पाराशर

कवर एव लेआउट

**रेक्सू चेरी,**

97722 01521

मुद्रण :

**रेनबो ऑफसेट प्रिंटर्स**

बी-3, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया,
बाईस गोदाम, जयपुर-302001



## लेखक परिचय

**हरीश पाराशर**

**शिक्षा-** इतिहास व पत्रकारिता में स्नातकोत्तर।

**कार्य क्षेत्र-** पत्रकारिता में बत्तीस साल से सक्रिय। पत्रिका समूह में असिस्टेंट एडिटर। पत्रिका के राज्य संपादक (राजस्थान) व जयपुर, उदयपुर एवं कोटा संस्करणों के संपादकीय प्रभारी रहे। टीवी एंकर एवं राजनीतिक विश्लेषक, समसामयिक विषयों पर लगातार लेखन।

**मूल निवासी-** शिवाड़, सवाईमाधोपुर के जहां घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं। सम्प्रति जयपुर में निवास।

**मेल** - harishparashar64@gmail.com

**मोबाइल** - 98292 55840

**सम्बद्धता** - शिवाड़ समाज जयपुर, पाराशर एजुकेशन फाउण्डेशन अहमदाबाद, शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट जयपुर, मॉडर्न एजुकेशन सोसायटी जयपुर व अन्य कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय।

**पुस्तक सृजन का आधार-** सोशल मीडिया पर घुश्मेश्वर महादेव व शिवाड़ से जुड़ी जानकारी देने वाली 52 कड़ियां और कोरोना लॉकडाउन के दौर में 21 कड़ियों की वीडियो क्लिप्स साझा की। इनका ही संयोजन है घुश्मेश्वर गाथा में।

# अनुक्रमणिका


संदेश 06

खण्ड - एक 25

## पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथ्य

घुश्मा की तपस्या से प्राकट्य 27
घुश्मेश्वर धाम के चार द्वार 30
गजनवी की पड़ी गिद्ध दृष्टि 32
किशना खाती की रोचक कथा 35
रौद्र रूप से डरा खिलजी 37
शिव की चार प्रहर आरती 39

खण्ड - दो 43

## अलौकिक घटनाएं

देवगिरी एक पल होता है सोने का 44
जलहरी का ओर-छोर नहीं 46
ज्योति के खंडित होने से अपशकुन 50
सरोवर ने दिया शिवालय नाम 52
शिवसागरः प्रायश्चित बना वजह 54
बालाजी को लाए सिद्धपुरुष 56
बावड़ी में रहस्यमयी शिवलिंग! 58

खण्ड -तीन 61

## मंदिर परिसर में प्रमुख देवालय

अष्टांग योग आधारित शिल्प 62
देखें जयपुर के देवालय की छवि 64
नागदेवता का प्राचीन स्थान 67
शिवभक्त शीशदान चारण 70
12 ज्योतिर्लिंगों का दर्शन पुण्य 72
पीपल के प्राचीन पेड़ की पूजा 75
मंदिर की कायापलट का दौर 77
माणक जी जैन के अथक प्रयास 79

खण्ड -चार 85

## प्रमुख दर्शनीय स्थल

बुर्ज पर डिग्गेश्वर महादेव 86
राण्या काण्या बालाजी 88
महाभारत कालीन शक्तिपीठ 90
क्षेत्रपाल व अस्थल के बालाजी 92
चन्द्रप्रभु जी का अतिशय क्षेत्र 94
कल्याण धणी का प्राचीन मंदिर 96
चारभुजानाथ की दिव्य प्रतिमा 98
छिपोलाई के बालाजी 100
घुश्मा का आराधना स्थल 103
प्रथम पूज्य सिद्धि विनायक 105
नए दौर का नीलकंठ पार्क 107
नाट्यशाला द्वार पर बद्रीनाथ 109
पर्यटकों की पसंद ढील बांध 112

खण्ड -पांच 117

## इतिहास के झरोखे से

गढ़ी का रोमांचक किस्सा 118
दुश्मनों के लिए अभेद्य किला 121
जब मोड़ना पड़ा रेल मार्ग को 125
चांदनी जैसे ही थे महताब सिंह 127
जगाई शिक्षा की अलख 131

खण्ड -छह 135

## शिवाड़ गौरव

स्वामी कृष्णानंद जी महाराज 136
ठाकुर शिवप्रकाश सिंह 137
ज्योतिर्विद पं. शिवप्रताप शर्मा 138
ठा. गुमान सिंह राजावत 139
ठा. बजरंग सिंह राजावत 140
गोविन्दनारायण पारीक 141
केवल चंद जैन 142
प्रेम चंद स्वर्णकार 143
शंकर जांगिड़ 144
जहूर खां देशवाली 145
वैद्य राधेश्याम शर्मा 146
आशुकवि माधोलाल जांगिड़ 147
रघुवीर सिंह राजावत 148
वैद्य सीताराम शर्मा 149
गोविन्दनारायण सैनी 150
पं. कांतिचन्द्र शर्मा 'वासुदेव' 151
वीरेन्द्र कुमार तिवाड़ी 152
गुलाब चंद जैन 153

सत्यमेव जयते

# ओम बिरला

अध्यक्ष लोकसभा
SPEAKER LOKSABHA
INDIA

## संदेश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर, सवाई माधोपुर जिले के शिवाड़ में विराजमान घुश्मेश्वर महादेव मंदिर की जानकारी देने के लिए 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन करने जा रहा है। इसमें इस प्राचीन मंदिर के इतिहास, पौराणिक तथ्य और आसपास के दर्शनीय स्थलों की जानकारी दी जा रही है।

शिवाड़ के इस मंदिर के दर्शन का मुझे भी सौभाग्य मिला है। यह और भी प्रसन्नता का विषय है कि यह मंदिर भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में मान्यता रखता है। देश भर में ऐसे आध्यात्मिक स्थलों पर आकर शाांति मिलती है। यह प्राचीन मंदिर भी इनमें से एक है।

उम्मीद है कि आपके इस प्रयास से इस मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों के प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा और अपनी धरोहर के बारे में नई पीढ़ी को जानकारी मिल सकेगी।

शिवाड़ समाज जयपुर को यह पुनीत कार्य हाथ में लेने के लिए बधाई। मैं 'घुश्मेश्वर गाथा' के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित

(ओम बिरला)

**ओम बिरला**
अध्यक्ष लोकसभा

सत्यमेव जयते

# कलराज मिश्र

राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra

Governor, Rajasthan

## संदेश

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर की ओर से भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव के पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व पर 'घुश्मेश्वर गाथा' ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। यह ग्रंथ घुश्मेश्वर महादेव के महात्म्य और ऐतिहासिक घटनाक्रम की जानकारी देने वाला होगा । हमारे तीर्थ स्थल कई पौराणिक व ऐतिहासिक घटनाक्रमों के साक्षी हैं। शिवाड़ के इस प्राचीन मंदिर की भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में मान्यता है। मंदिर से जुड़ी जानकारी इस ग्रंथ में समाहित करने का आपका यह प्रयास सराहनीय है ।

मुझे उम्मीद है कि इस ग्रंथ में प्रकाशित जानकारी से इस मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सकेगा। नई पीढ़ी को भी इस पवित्र स्थान के बारे में जानकारी मिल सकेगी। मैं इस ग्रंथ के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

कलराज मिश्र

(कलराज मिश्र)

**कलराज मिश्र**

राज्यपाल, राजस्थान

सत्यमेव जयते

# अशोक गहलोत

मुख्यमंत्री, राजस्थान

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर द्वारा भगवान शिव के के बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव के महत्व पर 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शैव आराधना में द्वादश ज्योतिर्लिंगों का महत्व प्राचीन काल से है। प्रदेश के सवाई माधोपुर जिले के शिवाड़ स्थित घुश्मेश्वर महादेव धाम द्वादशम ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रतिष्ठित है।

आशा है 'घुश्मेश्वर गाथा' में इस आस्था स्थल के सांस्कृतिक, पौराणिक एवं आध्यात्मिक महत्व के विभिन्न पहलुओं का समावेश किया जा सकेगा।

मैं श्री घुश्मेश्वर महादेव जी को श्रद्धापूर्वक स्मरण एवं नमन करते हुए 'घुश्मेश्वर गाथा' की सफलता के लिए मंगलकामना करता हूं।

(अशोक गहलोत)

**अशोक गहलोत**
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सत्यमेव जयते

# वसुन्धरा राजे

पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि शिवाड़ के घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के महात्म्य और ऐतिहासिक घटनाक्रम की जानकारी देने वाले ग्रंथ 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है। आपका यह प्रयास सराहनीय है ।

मुझे भी भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में विख्यात इस पावन धरा के दर्शन का सौभाग्य मिला है। यहां आकर अपार शांति का अहसास होता है । मुझे उम्मीद है कि इस ग्रंथ में प्रकाशित जानकारी से इस मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों के प्रचार-प्रसार को तो बल मिलेगा ही, नई पीढ़ी को भी इस पुराधरोहर के अनछुए पहलुओं की जानकारी मिलेगी।

मैं इस ग्रंथ के प्रकाशन की सफलता की कामना करती हूं।

शुभकामनाओं सहित।

वसुन्धरा राजे

(वसुन्धरा राजे)

**वसुन्धरा राजे**
पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान
13- सिविल लाइन्स
जयपुर (राज)

सत्यमेव जयते

# डॉ. सतीश पूनिया

विधायक एवं प्रदेश अध्यक्ष
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग शिवाड़ के घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के बारे में जानकारी देने वाले ग्रंथ 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है। शिवाड़ समाज जयपुर का यह प्रयास सराहनीय है। मुझे भी इस पावन धरा के दर्शन का सौभाग्य मिला है। मंदिर की भव्यता बरबस आकृष्ट करती है। मुझे उम्मीद है कि इस ग्रंथ में प्रकाशित जानकारी से इस मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों की नई पीढ़ी को जानकारी मिल सकेगी। मैं इस ग्रंथ के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित

(डॉ. सतीश पूनिया)

**डॉ. सतीश पूनिया**
विधायक, आमेर
प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा

सत्यमेव जयते

# शांति धारीवाल

नगरीय विकास एवं आवासन मंत्री
राजस्थान सरकार

## संदेश

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर की ओर से 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है। इससे घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के महात्म्य और ऐतिहासिक घटनाक्रम की जानकारी मिलेगी। सवाईमाधोपुर जिले के शिवाड़ कस्बे के इस प्राचीन मंदिर की भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में मान्यता है।

मुझे उम्मीद है कि आपके इस प्रयास से मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों की लोगों को और जानकारी मिल सकेगी। शिवाड़ समाज जयपुर इस पुनीत कार्य के लिए बधाई के पात्र है। मैं घुश्मेश्वर गाथा के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(शांति कुमार धारीवाल)

**शांति धारीवाल**
स्वायत्तशासन, नगरीय विकास
एवं आवासन, विधि,
संसदीय मामलात मंत्री,
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

# डॉ. बी.डी. कल्ला

ऊर्जा व जलदाय मंत्री
राजस्थान सरकार

## संदेश

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर की ओर से 'घुश्मेश्वर गाथा' ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के महात्म्य और ऐतिहासिक घटनाक्रम की जानकारी दी जाएगी। सवाईमाधोपुर जिले के शिवाड़ कस्बे के इस प्राचीन मंदिर की विशेष मान्यता है।

मुझे उम्मीद है कि इस ग्रंथ में मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों की लोगों को जानकारी मिल सकेगी। शिवाड़ समाज जयपुर इस पुनीत कार्य के लिए बधाई का पात्र है। इस ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(डॉ. बी.डी. कल्ला)

**डॉ. बी.डी. कल्ला**
मंत्री, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी,
भूजल, ऊर्जा, कला साहित्य
एवं संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

# डॉ. महेश जोशी

सरकारी मुख्य सचेतक
राजस्थान विधानसभा

## संदेश

मुझे यह जानकर अतीव खुशी की अनुभूति हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर द्वारा घुश्मेश्वर महादेव के पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के लिए 'घुश्मेश्वर गाथा' के नाम से ग्रंथ का प्रकाशन करवाया जा रहा है।

मैं उक्त ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करे 'महाशिवरात्रि पर्व' के लिए अग्रिम बधाई देता हूं।

आपका

(महेश जोशी)

**महेश जोशी**
सरकारी मुख्य सचेतक
(कैबिनेट मंत्री स्तर)
राजस्थान विधानसभा
जयपुर

सत्यमेव जयते

# डॉ. रघु शर्मा

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री
राजस्थान सरकार

## संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि शिवाड़ स्थित घुश्मेश्वर महादेव मंदिर की ऐतिहासिक और पौराणिक जानकारी सर्वजन तक पहुंचाने के लिए शिवाड़ समाज जयपुर द्वारा 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक घुश्मेश्वर महादेव सवाईमाधोपुर के शिवाड़ में विराजित हैं। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर की ऐतिहासिक और पौराणिक जानकारी सर्वजन तक पहुंचाने के लिए शिवाड़ समाज जयपुर द्वारा जिस घुश्मेश्वर गाथा के प्रकाशन का व्रत लिया है, वह बेहद अनुकरणीय है। इसके प्रकाशन की मुझे अतीव प्रसन्ता है क्योंकि इस पुनीत कार्य से पावन मंदिर से संबंधित जानकारियां हम सभी को लाभांवित करेंगी।

शिवाड़ समाज जयपुर के इस प्रयास और उसकी सफलता के लिए मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस प्राचीन और अति विशेष पौराणिक स्थल की आभा दुनिया भर के भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करती रहेगी। एक बार पुनः 'घुश्मेश्वर गाथा' के प्रकाशन की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

सधन्यवाद

(डॉ. रघु शर्मा)

**डॉ. रघु शर्मा**
मंत्री, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य,
आयुर्वेद एवं भारतीय चिकित्सा,
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं (ईएसआई)
एवं सूचना एवं जनसंपर्क विभाग,
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

# प्रताप सिंह खाचरियावास

परिवहन एवं सैनिक कल्याण मंत्री
राजस्थान सरकार

## संदेश

यह जानकर अत्यंत खुशी हुई कि शिवाड़ समाज जयपुर, सवाईमाधोपुर जिले के शिवाड़ में विराजमान घुश्मेश्वर महादेव की जानकारी देने के लिए 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन करने जा रहा है। भगवान शंकर के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक ज्योतिर्लिंग राजस्थान में हैं यह और प्रसन्नता का विषय है। इस पावन धरा का दर्शन सौभाग्य का विषय है। सरकार भी ऐसे स्थानों को धार्मिक पर्यटन के रूप में विकसित कर परिवहन सेवाओं से जोड़ने का भरसक प्रयास कर रही है। आपके इस प्रयास से इस मंदिर व आसपास के दर्शनीय स्थलों के प्रचार-प्रसार को बल मिलेगा और नई पीढ़ी को अपनी धरोहर के बारे में जानकारी मिल सकेगी यह उम्मीद है।

मैं घुश्मेश्वर गाथा के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

(प्रताप सिंह खाचरियावास)

**प्रताप सिंह खाचरियावास**
मंत्री, परिवहन एवं
सैनिक कल्याण विभाग,
राजस्थान सरकार

# घनश्याम तिवाड़ी

पूर्व मंत्री

राजस्थान सरकार

## संदेश

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव से जुड़े पौराणिक और ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ शिवाड़ व आसपास के दर्शनीय स्थलों की जानकारी देने वाली 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन किया जा रहा है। सवाई माधोपुर जिले के शिवाड़ कस्बे में अवस्थित इस भव्य व प्राचीन देवालय के दर्शन का सौभाग्य मुझे भी हासिल हुआ है। न केवल यह मंदिर बल्कि समूचा शिवाड़ गांव ही प्राकृतिक छटा के बीच भव्यता लिए हुए हैं।

शिवाड़ समाज जयपुर के सामाजिक सरोकारों की मुझे समय-समय पर जानकारी मिलती रहती है। शिव के बारहवें ज्योतिर्लिंग का राजस्थान में होना सचमुच गौरव की बात है। यहां मुझे परिवार समेत रुद्राभिषेक का मौका मिला है। जलहरी में विराजित ज्योतिर्लिंग का तेज अविर्चनीय है। शिवाड़ में रहने वाले भाग्यशाली हैं जिन्हें इस पावन धरा पर रहने का मौका मिला है।

घुश्मेश्वर दर्शन में दी गई जानकारी निश्चित ही न केवल शिवाड़ में शिव के बारहवें ज्योतिर्लिंग होने की प्रमाणिकता को पुष्ट करेंगी बल्कि नई पीढ़ी को भी अपने अतीत से परिचय कराने का काम करेगी। मैं घुश्मेश्वर गाथा के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं। आप सब निरोगी और प्रसन्न रहें यह भी भगवान घुश्मेश्वर महादेव से प्रार्थना करता हूं।

(घनश्याम तिवाड़ी)

**घनश्याम तिवाड़ी**
**पूर्व मंत्री, राजस्थान सरकार**

# प्रेमप्रकाश शर्मा

अध्यक्ष, श्री घुश्मेश्वर द्वादशवां ज्योतिर्लिंग
ट्रस्ट, शिवालय, शिवाड़

## संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि घुश्मेश्वर द्वादशवां ज्योतिर्लिंग महादेव की जानकारी एवं महिमा बताने वाली 'घुश्मेश्वर गाथा' का प्रकाशन शिवाड़ समाज जयपुर करने जा रहा है। इस ज्योतिर्लिंग के बारे में कई पुराणोक्त जानकारी इस पुस्तक के माध्यम से मिल सकेगी।

शिवाड़ के विद्वजनों ने अनेक वर्षों से घुश्मेश्वर महादेव व शिवाड़ के पौराणिक और ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करने का प्रयास किया है। लेकिन इस पुस्तक के माध्यम से संपूर्ण जानकारी एक साथ उपलब्ध होगी। इसकी आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। शिवाड़ के आसपास के दर्शनीय स्थलों व ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में भी जानकारी हो सकेगी।

पिछले वर्षों में शिवाड़ समाज जयपुर ने सामाजिक कार्यों के साथ-साथ शिवाड़ क्षेत्र के अनेक अनछुए पहलुओं को देखने-सुनने का विशिष्ट कार्य किया है।

शिवाड़ समाज जयपुर को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूं। मैं इसके प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूं।

(प्रेमप्रकाश शर्मा )

**प्रेमप्रकाश शर्मा**
अध्यक्ष
श्री घुश्मेश्वर द्वादशवां ज्योतिर्लिंग
ट्रस्ट शिवालय
शिवाड़ ,जिला सवाईमाधोपुर

# आशीर्वचन

**पं. नहनू लाल शर्मा**
**(पाराशर)**
मुख्य पुजारी,
घुश्मेश्वर महादेव,
ट्रस्टी, घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट,
शिवाड़।

**शि**वाड़ के तो नाम के आगे ही शिव है। शिवाड़ की यह पावन धरा एक छोटे से गांव से शहर का रूप लेती जा रही है तो उसके पीछे घुश्मेश्वर महादेव का ही आशीर्वाद है। शिव के इस बारहवें ज्योतिर्लिंग के प्रचार-प्रसार में शिवाड़ में पैदा हुए लोगों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। जिसमें जितना सामर्थ्य था उतना प्रयास किया। इन प्रयासों का ही नतीजा है कि इस मंदिर की पहचान देश-दुनिया में बढ़ी है। घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग दिव्य और तेजोमय है। इसमें ऐसी खासियत है कि एक बार में नजरें हटती ही नहीं। शिव की आराधना करते हुए शिवाड़ के मनीषियों ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है इसका प्रमाण उनकी रचनाओं से मिलता है। ये रचनाएं सिर्फ पाण्डुलिपि ही बन कर न रह जाएं इसका भी सबको प्रयास करना चाहिए। शिवालय से शिवाड़ बनी इस पावन धरा की तो यह खासियत ही है कि जो एक बार यहां आ बस जाता है वह यहीं का होकर रह जाता है। शिवाड़ में कमाने-खाने के लिहाज से आए सैंकड़ों लोग ऐसे हैं जो यहां कमाने-खाने के लिए आए और तरक्की के पायदान पर चढ़ते गए।

भगवान भोलेनाथ तो भाव के भूखे हैं, जलाभिषेक से ही प्रसन्न हो जाते हैं। मुझ जैसे को तो शिव शंकर के इस दरबार में जाकर ऐसा लगता है जैसे जन्मों की आराधना का फल मिल रहा है। मन की बात और मन की पीड़ा, घुश्मेश्वर के दरबार में कहें तो वही सुनवाई करता है। मैंने यह महसूस किया है कि भगवान घुश्मेश्वर के दरबार में सच्चे मन से की गई प्रार्थना का जरूर असर होता है। देश भर से हर साल शिवाड़ आने वाले श्रद्धालुओं की बड़ी तादाद इसका जीता-जागता उदाहरण है। पिछले सालों में दानदाताओं ने इस मंदिर के विकास के लिए दिल खोल कर योगदान दिया है। यही कारण है कि आज यह मंदिर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। मेरे परिवार पर तो ईश्वर की महती कृपा रही है। पूज्य पिताजी श्रद्धेय पं. भंवर लाल जी पाराशर और माताजी श्रीमती सरस्वती देवी का परिवार पर ऐसा आशीष रहा कि मेरी सब संतानें अपने-अपने क्षेत्रों में सक्रिय होकर बेहतर काम कर रही हैं।

मेरे सुपुत्र चि. हरीश में लेखन प्रतिभा शुरू से ही थी। पत्रकारिता के क्षेत्र में जाने पर यह रुचि और बढ़ गई। मेरी दिवंगत धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी के दिए संस्कारों का ही फल है कि शहरी माहौल में रहकर भी सभी संतानें अपने गांव शिवाड़ से जुड़ी हुई हैं। 'घुश्मेश्वर गाथा' पुस्तक के लिए चि. हरीश को लेखन क्षमता भगवान भोलेनाथ ने ही दी है, ऐसा मेरा मानना है। इस पुस्तक के सभी अध्याय रुचिपूर्ण और जानकारी से भरे हैं। ऐसी जानकारी, जो हमारी नई पीढ़ी को भी जरूर मिलनी चाहिए। घुश्मेश्वर महादेव के प्रचार-प्रसार के इन प्रयासों को और गति मिले यह कामना करता हुआ मैं चि. हरीश के जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने की ईश्वर से प्रार्थना करता हूं।

# प्राक्थन

**नवल जैन**
अध्यक्ष,
शिवाड़ समाज, जयपुर

**घु**श्मेश्वर गाथा के रूप में यह पुस्तक आपके हाथों में है । घुश्मेश्वर महादेव के पौराणिक महत्व व ऐतिहासिक घटनाक्रमों से जुड़े तथ्यों को पुस्तक के रूप में संयोजित करने का यह सफर लगातार विचार मंथन का नतीजा है। पुस्तक लेखन का यह अनुष्ठान पूरा होना संभव नहीं था यदि ये सारे तथ्य व शिवाड़ के दर्शनीय स्थलों का ब्योरा सिर्फ सोशल मीडिया पर ही साझा होकर रह जाता। पिछले एक-दो साल में शिवाड़ व घुश्मेश्वर महादेव के बारे में जितनी जानकारी सोशल मीडिया पर साझा की गई उतनी शायद पहले कभी नहीं रही होगी। इसका श्रेय हमारी युवा पीढ़ी को भी है जिन्होंने घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के प्रचार-प्रसार के मकसद से सोशल मीडिया पर लगातार शेयर की गई शिवाड़ दर्शन शृंखला को आगे बढ़ाया।

इस पुस्तक के लेखक एवं शिवाड़ समाज जयपुर के महामंत्री हरीश पाराशर मेरे अभिन्न मित्र हैं। उनका पत्रकारिता के क्षेत्र में अलग ही स्थान है। ईश्वर ने उन्हें कलम का धनी बनाया है। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से शिवाड़ की गौरव कथा की शृंखलाओं को सोशल मीडिया पर शेयर किया, तब भी कई प्रतिक्रियाएं इस रूप में आती थी कि इन सब तथ्यों को पुस्तक का रूप दिया जाना चाहिए। इसीलिए पुस्तक प्रकाशित करने का शुरू से ही विचार बन गया था। शिवाड़ समाज के कई माननीय सदस्य भी लगातार यह जोर दे रहे थे कि सोशल मीडिया पर शेयर की गई जानकारी को पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराया जाए। घुश्मेश्वर महादेव व शिवाड़ से जुड़े ऐसे कई किस्से इस पुस्तक में आपको पढ़ने को मिलेंगे जिन्हें शिवाड़वासी होने के बावजूद अधिकांश लोगों को पता नहीं था। हमारे मार्गदर्शक पं. पुरुषोत्तम शर्मा ने उनके पास सहेज कर रखी गई दुर्लभ जानकारी भी उपलब्ध कराई जो हम सबके लिए निश्चित ही ज्ञानवर्धक व रोमांचक थी।

इस पुस्तक को अलग-अलग खण्डों में बांटा गया है ताकि एक प्रकृति की जानकारी एक ही खण्ड में मिल जाए। शिवाड़ की कई विभूतियों ने अपने समय में घुश्मेश्वर महादेव के प्रचार-प्रसार में आगे रहने के साथ-साथ अपने-अपने क्षेत्रों में कामयाबी के नए आयाम स्थापित किए। अब दिवंगत हो चुकी इन विभूतियों के योगदान को अपनी नई पीढ़ी अवश्य जानें इसी इरादे से इनके व्यक्तित्व व कृतित्व का परिचय 'शिवाड़ गौरव' नामक अलग खण्ड में दिया गया है। शिवाड़ से जुड़े पौराणिक व ऐतिहासिक तथ्य, घुश्मेश्वर महादेव से जुड़ी अलौकिक घटनाएं और शिवाड़ व आसपास के अन्य दर्शनीय स्थानों की जानकारी भी मंदिर के दर्शनार्थ आने वालों के लिए उपयोगी होगी। वस्तुतः यह पुस्तक ऐसी धरोहर बन पड़ी है जो घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के प्रचार-प्रसार में अहम कड़ी साबित होगी। हमारी पीढ़ियां भी इस गौरवशाली अतीत को लेकर गौरवान्वित होती रहेगी। पुस्तक के प्रकाशन में सहयोगी बनने वालों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। इस अनुष्ठान को आप सबके सहयोग ने ही सफल बनाया है। यह प्रयास अवश्य पसंद आएगा ऐसी उम्मीद करता हूं।

# स्तुत्य प्रयास

**अनिल जैन सूराशाही**
प्रबंध निदेशक,
शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट,
जयपुर

**शि**वाड़ के घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन मात्र से ही जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। शिव के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में ख्याति प्राप्त महादेव के दर्शन का जब भी मौका मिला तब मुझे नई ऊर्जा की अनभूति हुई। शिवाड़ का पौराणिक महत्व तो है ही, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भी देखें तो यहां नूतन-पुरातन कई रोचक घटनाक्रम का उल्लेख मिलता है। यह महादेव की कृपा दृष्टि ही है कि शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट जयपुर को 'घुश्मेश्वर गाथा' पुस्तक प्रकाशन के पुनीत कार्य में सहभागी होने का मौका मिला है। हमारा ट्रस्ट भी समय-समय पर महादेव की इस नगरी में अपने सेवा कार्य करता रहा है। वरिष्ठ पत्रकार हरीश पाराशर ने जिस मेहनत से घुश्मेश्वर महादेव मंदिर से जुड़े ऐतिहासिक घटनाक्रम को पूरे तथ्यों के साथ इस पुस्तक में पेश किया है वह प्रयास स्तुत्य है। खुशी की बात यह है कि सोशल मीडिया पर साझा की गई जानकारी को इस पुस्तक में इस तरह से समाहित किया गया है ताकि एक ही स्थान पर शिवाड़ से जुड़ी पूरी जानकारी सामने आ सके।

शिवाड़ को सही मायने में धार्मिक नगरी ही कहा जाना चाहिए। घुश्मेश्वर महादेव के प्राचीन मंदिर की कथा तो जग जाहिर है ही, शिवाड़ के दूसरे कई देवालय भी काफी प्राचीन हैं। इन सब देवालयों के बारे में भी कई रोचक जनश्रुतियां भी है जिन्हें लिपिबद्ध करने का प्रयास भी 'घुश्मेश्वर गाथा' में किया गया है। ऐसे-ऐसे तथ्य हैं जिनके बारे में पढ़-सुनकर ही रोमांच हो उठता है। ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कई अलौकिक घटनाओं को लेकर जो जानकारी इस पुस्तक में दी गई है उससे भी शिवाड़ की पावन धरा के महत्व का पता लगता है। शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट का शिवाड़ से गहरा नाता है। शिवाड़ निवासी व मेरे बहनोई नवल जैन की दिवंगत सुपुत्री शिवानी की स्मृति को मन में संजोए ट्रस्ट के माध्यम से हम लगातार सामाजिक कार्यों से जुटे हुए हैं। इसीलिए जब घुश्मेश्वर गाथा के प्रकाशन की बात आई तो ट्रस्ट ने पुस्तक प्रकाशन के संयोजन की जिम्मेदारी वहन करना सहर्ष स्वीकार किया।

देखा जाए तो 'घुश्मेश्वर गाथा' पुस्तक सिर्फ शिवाड़ की जानकारी देने वाला दस्तावेज ही नहीं है बल्कि ऐसी संदर्भ पुस्तक बन गई है जो इतिहास का अध्ययन करने वालों के लिए भी न केवल उपयोगी होगी बल्कि घुश्मेश्वर महादेव के प्रचार-प्रसार में भी महती भूमिका निभाएगी। शिवाड़ समाज जयपुर और शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट दोनों सामाजिक कार्यों में जुटे हुए हैं। यह सेवा भाव भी आप सबकी प्रेरणा से ही आता है। ट्रस्ट, शिवाड़ के लिए भी कई अहम सेवा कार्य हाथ में लेता रहा है। ये प्रयास न केवल जारी रहें बल्कि हमें सेवा कार्यों के लिए भगवान घुश्मेश्वर और आशीर्वाद दे यही प्रार्थना है। अपने साामाजिक सरोकारों के तहत शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट का यह विनम्र प्रयास आपके हाथों में है।

# भूमिका

**पं. पुरुषोत्तम शर्मा**
इतिहासविज्ञ एवं प्रचार प्रभारी
घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट
शिवाड़।

**भ**गवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव की आज जो ख्याति देश भर में फैली हुई है उसकी बड़ी वजह महादेव के प्रति लोगों की अगाध आस्था ही माना जाना चाहिए। हमारे पुरखों ने भी इस पवित्र स्थान के महात्म्य को लेकर काफी कुछ लिखा लेकिन वे पुस्तक के आकार में नहीं रह पाए। जो भी हस्तलिखित सामग्री उपलब्ध है उसमें भी जानकारी का खजाना भरा है। शिवाड़ के ठा. शिवप्रकाश सिंह ने सत्तर के दशक में सेवानिवृत्त तहसीलदार बजरंग सिंह राजावत व मुझे यह जिम्मा सौंपा था कि उनके पूर्वजों के इतिहास का पता लगाकर इसे लिपिबद्ध करें। किले में स्थित पोथीखाने में जो दस्तावेज मिले उसमें घुश्मेश्वर महादेव के इस प्राचीन मंदिर से जुड़ी जानकारियां भी थीं। तब इस काम की दिशा बदल गई और सारा ध्यान मंदिर से जुड़ी जानकारी को एक जगह करने में लगा।

मेरे पास जो तथ्य उपलब्ध थे वे सुरक्षित रहें इसकी चिंता सदैव रहती थी। मेरी इस चिंता को थोड़ा दूर किया मेरे अनुज शिवाड़ निवासी वरिष्ठ पत्रकार हरीश पाराशर ने। एक बार उनका फोन आया और राण्या काण्या मंदिर के बारे में जानकारी चाही। अगले ही दिन मैंने इस जानकारी को सोशल मीडिया पर देखा तो खुशी हुई। इसके बाद तो सिलसिला चल निकला। शिवाड़ के प्रमुख देवालयों से लेकर घुश्मेश्वर मंदिर में राजाओं के दौर में बनाए गए मंदिरों और तालाब-कुए-बावड़ियों और किले-महलों तक को लेकर कई अनछुए पहलुओं की जानकारी सिलसिलेवार सोशल मीडिया के माध्यम से साझा होने लगी। मुझे भी लगा कि मेरे पास संग्रहित जानकारी पात्र व्यक्ति तक पहुंच गई है। सवाल सिर्फ इस जानकारी का ही नहीं बल्कि इसे जनसामान्य की भाषा में लोगों तक पहुंचाने का भी है। सोशल मीडिया पर अपनी शिवालय दर्शन श्रृंखला के माध्यम से जिस रुचिपूर्ण ढंग से उन्होंने शिवाड़ की लोगों को परिक्रमा कराई वह अनूठी रही। यह निश्चित ही कलम का ही कमाल है कि आज यह संपूर्ण जानकारी पुस्तक के रूप में सामने आई है। 'घुश्मेश्वर गाथा' को मैंने आद्योपांत पढ़ा है। पुस्तक ऐसी रुचिपूर्ण बन पड़ी है कि एक ही बार में पूरी पढ़ने का मन होता है।

पुस्तक में जानकारी प्रमाणिकता के साथ है। ऐतिहासिक तथ्य तो इतिहास के पन्नों में भी दर्ज है लेकिन उन अलौकिक घटनाओं का भी जिक्र हैं जो प्रमाणिकता के साथ-साथ लोगों की जुबान पर भी हैं। शिवाड़ में घुश्मेश्वर महादेव के साथ कल्याण जी मंदिर, चतुर्भुज जी मंदिर और चन्द्रप्रभु जी के मंदिर भी प्राचीन और दर्शनीय है। पुस्तक में लेखक ने 'गागर में सागर' भरने का काम किया है। इस पुनीत कार्य के लिए मैं उन्हें साधुवाद देता हुआ भगवान घुश्मेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि शिवाड़ की धरा का गौरव बढ़ाने वाले हरीश पाराशर पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें और उनकी लेखनी को और मजबूत करें। आशा है यह पुस्तक उपयोगी व संग्रहणीय दस्तावेज साबित होगी।

# अपनी बात

**हरीश पाराशर**
वरिष्ठ पत्रकार,
महामंत्री, शिवाड़ समाज जयपुर

यह मेरे ऊपर ईश्वर की असीम अनुकम्पा रही है कि उसने मुझे भगवान घुश्मेश्वर महादेव की नगरी शिवाड़ में जन्म लेने का सौभाग्य प्रदान किया। लिखने की रुचि बाल्यकाल से ही थी। मेरी दिवंगत पूजनीया माताजी श्रीमती पुष्पा देवी पाराशर, मेरी इसी रुचि को देखकर अक्सर कहा करती थी कि कभी मौका मिले तो घुश्मेश्वर महादेव के बारे में जरूर लिखना। मां का आशीर्वाद ऐसा रहा कि पत्रकारिता ही कर्मक्षेत्र बन गई। खुशी इसी बात की है कि पूजनीय माताजी जी का प्रोत्साहन उनके आशीर्वाद के रूप में फलीभूत होकर 'घुश्मेश्वर गाथा' के रूप में आपके सामने हैं। बचपन से ही इस पावन धरा से जुड़ी कई किस्से-कहानियां अपनी दादी व गांव के बुजुर्गों से सुना करता था। इन्हें लिपिबद्ध करने का मन करता था। बचपन के दौर में घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग को प्रचारित करने की दिशा में सेवानिवृत्त तहसीलदार ठाकुर बजरंग सिंह जी राजावत का श्रमसाध्य कार्य भी ऐसा करने को प्रेरित करता था। कहते हैं ना कि 'जहां चाह है वहां राह है'। न जाने किस अज्ञात शक्ति की प्रेरणा से शिवाड़ के बारे में सोशल मीडिया पर लिखना शुरू कर दिया।

पहले पढ़ाई और बाद में अपने कर्मक्षेत्र की व्यस्तता के बावजूद शिवाड़ से नाता लगातार बना रहा। शिवाड़ से जुड़े इतिहास को समझने में आगे की राह दिखाई शिवाड़ निवासी, मेरे अग्रज पं. पुरुषोत्तम शर्मा ने। पाण्डुलिपियों से लेकर उनके पास उपलब्ध अन्य ऐतिहासिक तथ्यों ने ऐसी रुचि जगाई कि सोशल मीडिया पर लगातार चार दर्जन से ज्यादा कड़ियां लिख डाली। उन्होंने अथक मेहनत की। आवश्यक दस्तावेज भी उपलब्ध कराए। मेरी प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान किया। पूज्य पिताजी पं. नहनूलाल जी पाराशर ने भी कई उन अनछुए पहलुओं से अवगत कराया जिनसे अब तक मैं भी अनजान था। सोशल मीडिया पर लिखने का दौर चल ही रहा था कि कोरोना महामारी ने दस्तक दे दी। सही मायने में कोरोनाकाल में आपदा को अवसर में बदलने का मौका मिला और 'घुश्मेश्वर गाथा' को आकार देने की तैयारी शुरू कर दी। यह पुस्तक आपके सामने है।

पूज्य माता-पिता के आशीर्वाद ने ही मुझे हमेशा नई ऊर्जा प्रदान की है। मेरे अग्रज एवं सेवानिवृत्त ज्वाइंट कमिश्नर (राज्य कर) अवधेश जी पाराशर ने भी घुश्मेश्वर महादेव के प्रचार-प्रसार का काफी काम किया है। उन्होंने तो अपने विद्यार्थीकाल में ही 'जय घुश्मेश' नाटक लिखकर शिवाड़ में वर्ष 1977 में दो दिन तक इसका मंचन तक किया था। मेरी अर्द्धांगिनी हेमलता पाराशर भी घुश्मेश्वर गाथा को इस रूप में लाने के लिए हमेशा की तरह हर कदम पर साथ रहीं। खास तौर से व्यस्तता के दौर में मुझे कई पारिवारिक दायित्वों से मुक्त रखा ताकि लेखन के काम में व्यवधान न आए। तमाम प्रयासों में बड़ी भागीदारी मेरे अभिन्न मित्र और शिवाड़ समाज जयपुर के अध्यक्ष नवल जैन की है जिन्होंने मुझे सोशल मीडिया पर लिखी कड़ियों को पुस्तक के रूप में लाने के प्रयासों को धीमे नहीं होने दिया। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी बिटिया शिवानी की स्मृति में बने शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से पुस्तक प्रकाशन के संयोजन का भार भी सहर्ष वहन किया। शिवाड़ समाज जयपुर के सभी माननीय सदस्यों ने भी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से पुस्तक के काम में सहयोग दिया है। घुश्मेश्वर महादेव और शिवाड़ के बारे में तो जितना लिखा जाए उतना कम है। फिर भी जैसी बन पाई, 'घुश्मेश्वर गाथा' को भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद मानते हुए पूजनीया ब्रह्मलीन माताजी श्रीमती पुष्पा पाराशर के चरणों में अर्पित करता हूं।

# श्रीमती पुष्पा पाराशर

धर्मपत्नी पं. नहनूलाल पाराशर

**अवतरण**- 5 अप्रेल 1940 – **निर्वाण**- 26 अप्रेल 2017

## चरणों में समर्पित

**नास्ति मातृसमा छाया नास्ति मातृसमा गतिः।**
**नास्ति मातृसमं त्राणं नास्ति मातृसमा प्रिया।।**

**– महर्षि वेदव्यास**

माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई सहारा नहीं है।
माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय चीज नहीं है।

# शिवाड़ समाज, जयपुर

(जयपुर में रहने वाले शिवाड़ क्षेत्र के प्रवासियों का सामाजिक संगठन)

## हमारा मकसद

- शिवाड़ के प्रवासियों को एकसूत्र में जोड़ना
- शिवाड़ में सामाजिक कार्यों में सहभागिता
- शिवाड़ के प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहन
- शिवाड़ के युवाओं को रोजगार में मदद
- शिवाड़ में मूलभूत सुविधाओं के प्रयास
- घुश्मेश्वर मंदिर का प्रचार-प्रसार
- शिवाड़ के सौंदर्यन के प्रयास
- शिवाड़ में सामाजिक जागरुकता

## हमारे सरोकार

- सावन में शिवालय सरोवर की महाआरती
- शिवाड़ में सफाई के लिए कचरा पात्र
- शिवाड़ में नेकी की दीवार
- स्कूली बच्चों को गर्म कपड़ों का वितरण
- गर्ल्स स्कूल में कम्प्यूटर
- बॉयज स्कूल में ट्री गार्ड
- विद्यार्थियों को केरियर काउंसलिंग
- कोरोनाकाल में प्रभावितों की मदद

यदि आपके मन में भी अपनी मातृभूमि के लिए कुछ करने का भाव है तो जुड़िए

## शिवाड़ समाज, जयपुर से

**घर-परिवार की खुशियों को कीजिए हमसे साझा**

**आप किसी परेशानी में हैं तो भी हमें बताएं**

**हो सकता है हम आपकी मदद कर सकें**

### पदाधिकारी

**अध्यक्ष** - नवल जैन
**वरिष्ठ उपाध्यक्ष** - डॉ. संजय पाराशर, अनिल जैन
**उपाध्यक्ष** - राकेश शर्मा - कोटा, डॉ. मनोज जैन - बहड़ वाले
**महामंत्री** - हरीश पाराशर
**कोषाध्यक्ष** - कुमुद जैन
**संयुक्त मंत्री** - लल्लू लाल शर्मा, विकास गुर्जर
**संगठन मंत्री** - प्रेम सिंह नरुका, गोपाल शर्मा
**सूचना प्रौद्योगिक मंत्री** - मनराज गुर्जर
**प्रवक्ता** - विनय जैन
**प्रचार मंत्री** - अंकित गुप्ता

### संरक्षक मंडल

माणक चन्द जैन
प्रेमप्रकाश शर्मा
राधाकिशन माली
सतीश कुमार पाराशर
पं. पुरुषोत्तम शर्मा
द्वारका प्रसाद शर्मा
डॉ. निर्मल जैन
महेश गुप्ता
अजीत जैन

### सलाहकार मंडल

अवधेश पाराशर
नरेन्द्रकुमार जैन
चेतन कुमार जैन (IRS)
विजयशंकर शर्मा (RPS)
राजेन्द्र महाराण्या
कमलेश सैनी
अशोक जैन (सुपुत्र माणक जी)
तेजकरण सोनी

## शिवाड़ वासियों द्वारा- शिवाड़ के लिए

73/313 ए, टैगोर लेन, शिप्रा पथ, मानसरोवर, जयपुर 302020
Shiwar samaj jaipur
shiwarsamaj.jaipur@gmail.com

## खण्ड- एक

# पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथ्य

देश-दुनिया में भगवान शंकर के लाखों शिव मंदिर हैं लेकिन ज्योतिर्लिंगों का महत्व अलग ही है। देश भर में अवस्थित शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन मात्र से ही पापों से मुक्ति मिल जाती है। राजस्थान के शिवाड़ में अवस्थित बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव की प्राकट्य कथा का तो श्रवण ही पुण्य का भागी बना देता है। यहां बारहवां ज्योतिर्लिंग था तो ख्याति भी खूब थीं। इसलिए शिवाड़ का यह मंदिर आकांताओं की नजर से बचा नहीं रह सका। पहले महमूद गजनवी और बाद में अलाउद्दीन खिलजी की नापाक दृष्टि इस मंदिर पर पड़ी। फिर वही विध्वंस और लूटपाट की कहानी हुई। जलहरी में अवस्थित यह ज्योतिर्लिंग ईश कृपा से सुरक्षित रहा। इस खण्ड में पौराणिक और ऐतिहासिक तथ्यों के साथ-साथ विध्वंस और सृजन का का ब्यौरा।

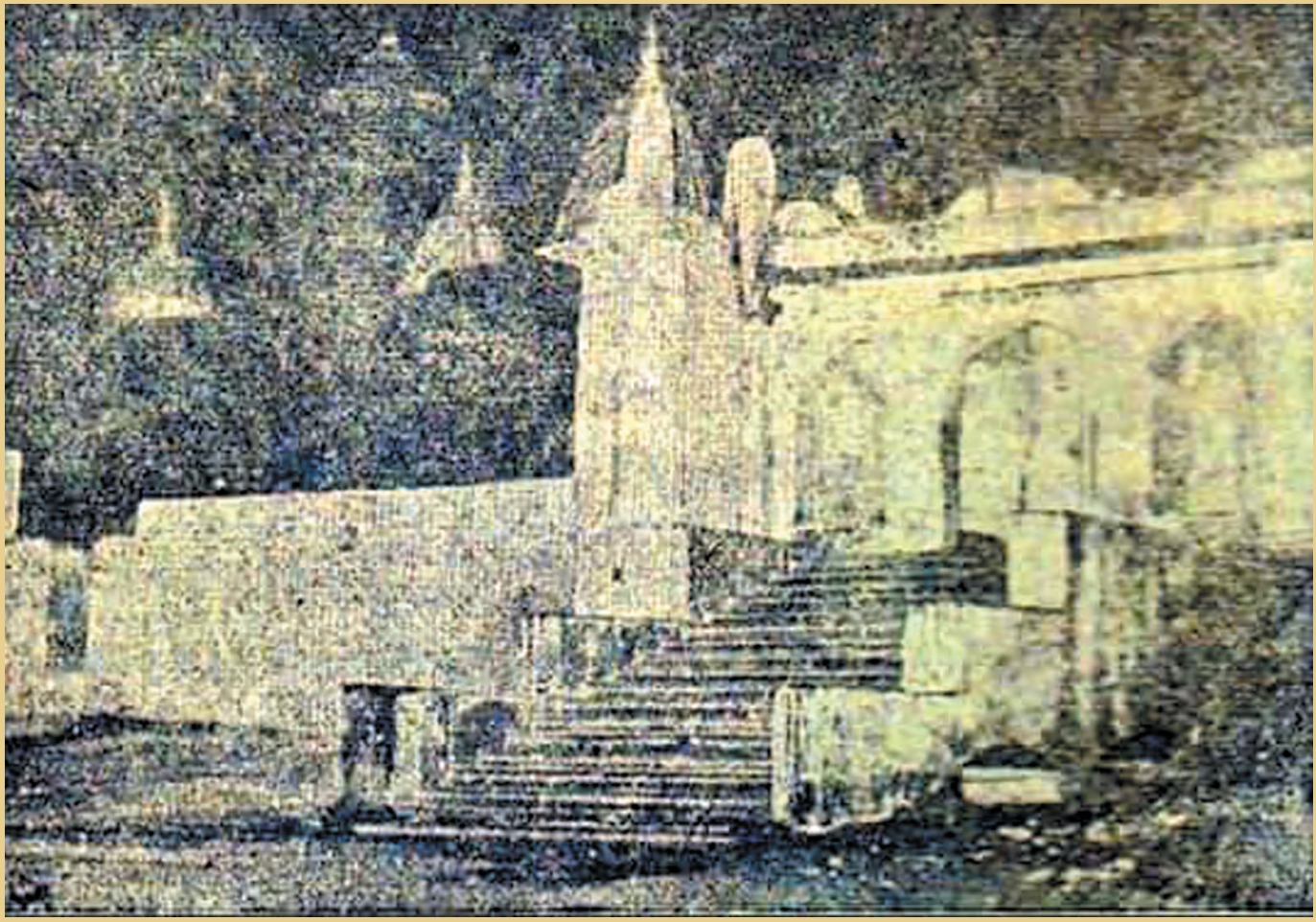

घुश्मेश्वर महादेव मंदिर का प्राचीन स्वरूप। पिछले चार दशक के दौरान हुए नवनिर्माण के बाद मंदिर परिसर का कायापलट हो गया

# घुश्मा की तपस्या से प्राकट्य

भगवान शंकर बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में शिवाड़ में ही क्यों अवस्थित हुए? शायद इसीलिए कि इस धरा पर धर्मपरायण लोग निवास करते थे। खास तौर से यहां की नारी शक्ति। देश भर में प्रमुख आराधना स्थलों पर नारी की भक्ति की शक्ति के कई उदाहरण सामने आते हैं। शिवाड़ में भी घुश्मेश्वर महादेव के अवतरण की कथा घुश्मा नामक एक ब्राह्मणी की शिवभक्ति पर आधारित है। ऐसी महिला, जिसने तमाम विपरीत हालात में भी शिव की आराधना का अपना नियमित क्रम नहीं छोड़ा। अपने इकलौते पुत्र के इस लोक में नहीं रहने की खबर सुनने के बाद भी। अविचलित साधनारत रही घुश्मा पर भोले भंडारी इतने प्रसन्न हुए कि उसके नाम से ही शिवाड़ में अवस्थित होने का वरदान दे दिया। वरदान यह भी दिया कि महिलाओं को तो इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन मात्र से ही चार धाम की यात्रा का पुण्य मिल जाएगा।

शिवपुराण में वर्णित कथानक के अनुसार दक्षिण दिशा में श्वेत-धवल पाषाणयुक्त देवगिरि पर्वत के पास सुधर्मा नामक धर्मपरायण भारद्वाज गोत्र उत्पन्न ब्राह्मण रहते थे। सुदेहा नामक सुंदर व सुशील पत्नी के साथ वे पूजा-पाठ में तल्लीन रहते थे। परिवार में सब सुख था लेकिन संतान नहीं थी। यह पीड़ा कम नहीं होती। लोगों के व्यंग्य बाणों से आहत होकर पति का वंश चलाने के लिए सुदेहा ने अपने पति से दूसरा विवाह करने की जिद कर ली।

जलहरी में अवस्थित शिव का बारहवां ज्योतिर्लिंग स्वयंभू है।

घुश्मा नामक ब्राह्मणी की शिवभक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शंकर, बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में उसके ही नाम पर घुश्मेश्वर महादेव के रूप में शिवाड़ में अवस्थित हुए। शिव का यह ज्योतिर्लिंग नारी की भक्ति में शक्ति का प्रतीक है।

शिवालय सरोवर के मध्य में घुश्मा का स्मारक जिसमें वह शिव आराधना कर रही है

सुधर्मा ने लाख समझाया लेकिन इसी जिद में सुदेहा ने अपनी छोटी बहिन घुश्मा का विवाह सुधर्मा के साथ करवा दिया। घुश्मा, भगवान शंकर की अनन्य भक्त थी। प्रतिदिन एक सौ एक पार्थिव शिवलिंग बनाकर पूजा-अर्चना कर उनका विसर्जन पास ही स्थित सरोवर में कर देती थी। विवाह के उपरांत सब कुछ ठीक चल रहा था। भगवान आशुतोष की कृपा से समय पाकर घुश्मा ने पुत्र रत्न को जन्म दिया तो सुदेहा की भी हर्ष की सीमा नहीं रही। वंश चलाने वाला जो आ गया था। आखिर पुत्र तो बहिन घुश्मा का ही था ना। लेकिन घुश्मा के पुत्र के बड़े होने के साथ साथ सुदेहा को लगा कि सुधर्मा का उसके प्रति आकर्षण एवं प्रेम भी कम होता जा रहा है।

पुत्र के विवाह के उपरांत तो सोतिया डाह का अतिरेक हो गया और एक दिन सुदेहा ने घुश्मा के सोते हुए पुत्र की हत्या कर शव तालाब मे फेंक दिया। अगले दिन प्रातः जब घुश्मा की पुत्रवधू ने अपने पति की शैय्या को रक्तरंजित पाया तो विलाप करती हुई दोनों माताओं को सूचना दी। सुदेहा दिखावे के लिए विलाप करने लगी। जबकि रोज की तरह शिवपूजा में लीन घुश्मा निर्विकार भाव से पार्थिव शिवलिंग बनाकर अपने आराध्य को श्रद्धा सुमन अर्पित करती रही। इधर घर में कोहराम था। मार्मिक चीत्कार, एवं पुत्र की रक्तरंजित शैय्या भी घुश्मा के मन को विचलित नहीं कर सकी।

घुश्मा ने सदैव की भांति पार्थिव शिवलिंगों का विसर्जन सरोवर में कर भगवान शंकर की स्तुति की। लेकिन यह क्या? पीछे से घुश्मा को मां-मां की आवाज सुनाई दी। आवाज तो उसके प्रिय पुत्र की थी जिसे मृत मानकर पूरा परिवार आर्तनाद कर रहा था। इस घटनाक्रम से विस्मित घुश्मा ने उसे शिव इच्छा मान भोले शंकर का स्मरण किया। तभी आकाशवाणी हुई - हे घुश्मा! तेरी बहिन सुदेहा दुष्ट है। उसने ही तेरे पुत्र को मारा है। मैं उसका अभी विनाश करता हूं। दया व करुणा की मूर्ति घुश्मा ने तत्काल स्तुति की- 'प्रभु मेरी बहिन को मत मारो। आप तो उसकी बुद्धि निर्मल कर दो। इस समय आपका दर्शन करके उसके पाप भस्म हो जाएं'। प्रसन्न होकर भगवान भोलेनाथ प्रकट हुए तथा वरदान दिया - मैं आज से तुम्हारे ही नाम से 'घुश्मेश्वर' के रूप मे इस स्थान पर वास करूंगा। जहां तुम शिवलिंग विसर्जित करती हो वह सरोवर शिवलिंगों का आलय हो जाए"।

*घुश्मेशाख्यं सुप्रसिद्धं, लिंगं मे जायता शुभम् ।*
*इदं सरस्तु लिंगनामालयं जायतां सदा।*

तभी से इस तालाब व स्थान की पहचान शिवालय के नाम से बनी। दक्षिण दिशा में देवगिरि पर्वत और उत्तर दिशा में यह शिवालय आज भी है। शिवाड़ में भारद्वाज गौत्र के ब्राह्मण परिवार अब भी रहते हैं। शिवालय सरोवर मंदिर के ठीक सामने है जिसमें घुश्मा नियमित पार्थिव शिवलिंग विसर्जित किया करती थी। दक्षिण दिशा में जो देवगिरी पर्वत है वह श्वेत पाषणयुक्त है। ये तमाम तथ्य इस स्थान को शिव के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रमाणित करने के लिए काफी हैं। शिवाड़ के इस ज्योतिर्लिंग को प्राचीनकाल से ही घुश्मेश्वर के नाम से जाना जाता है। घुश्मेश्वर मंदिर के सामने ही उत्तर की ओर जो शिवालय सरोवर है उसे छोटा तालाब के नाम से ज्यादा जानते हैं। उपलब्ध प्राचीन दस्तावेज के मुताबिक, शिवाड़ का प्राचीन नाम शिवालय ही था। मध्यकाल में यह शिवाल हो गया था। मुखसुख सुविधा ने बाद में शिवाल को शिवाड़ कर दिया। भगवान शिव के देश भर में बारह ज्योतिर्लिंग है उनमें शिवालय (शिवाड़) का यह ज्योतिर्लिंग आखिरी है। ■

- शिवालय सरोवर की खुदाई में मिले असंख्य शिवलिंग प्रमाणित करते हैं कि घुश्मा इन्हीं शिवलिंगों की पूजा कर विसर्जन करती थी
- शिवालय का नाम मध्यकाल के पटटों में शिवाल मिलता है। इसी का अपभ्रंश होकर शिवाड़ रह गया

# घुश्मेश्वर धाम के चार द्वार

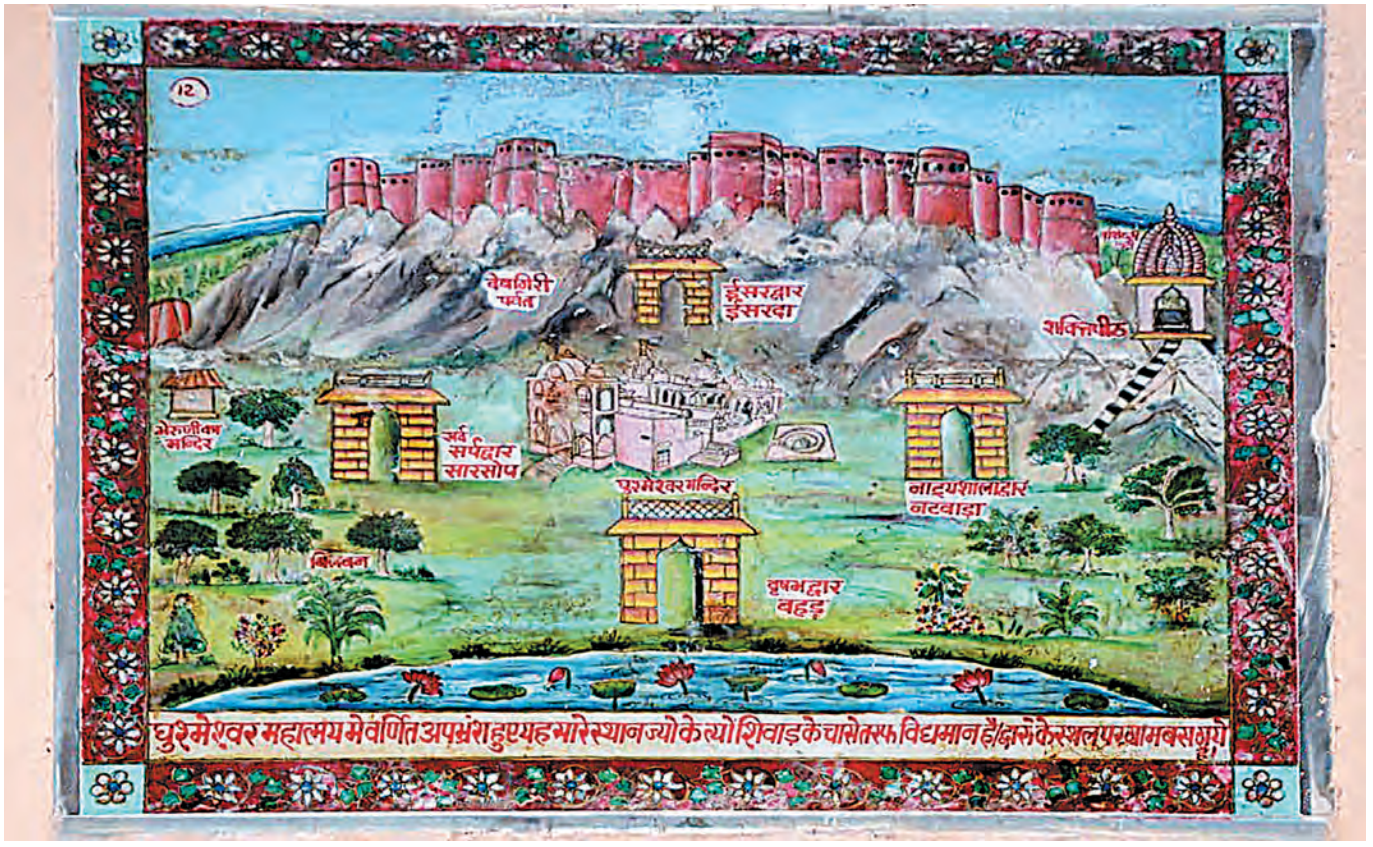


घुश्मेश्वर धाम के चारों तरफ चार प्रमुख दरवाजे थे। इनके नाम सर्वसर्प द्वार, ईश्वरेश्वर द्वार , नाट्यशाला द्वार व वृषभ द्वार थे। ये अब अपभ्रंश होकर क्रमशः सारसोप, ईसरदा, नटवाड़ा और बहड़ हो गए

देश भर में प्रमुख देवालय आम तौर पर दुर्गम स्थानों पर ही हैं। सभी मतावलंबियों के आराधना स्थलों को देख लीजिए, जहां-जहां अलौकिक घटनाओं का उल्लेख होता है वहां-वहां आम तौर पर श्रद्धालुओं की पहुंच आसान नहीं होती। अब भले ही आवागमन के साधनों व गन्तव्य तक पहुंच का मार्ग बना कर इस समस्या को कम किया गया है लेकिन घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन के लिए भी एक समय आवागमन के साधन नहीं थे और लोगों को नदी- पहाड़ों के बीच दुर्गम राह पार कर आना होता था। शिवालय जो बाद में शिवाल और अब शिवाड़ के रूप में जाना जाता है वह सिर्फ शिवालय सरोवर तक ही सीमित नहीं था। शिव के जहां-जहां भी ज्योतिर्लिंग हैं वहां चारों तरफ सुरम्य प्राकृतिक वातावरण और आध्यात्मिकता का माहौल रहता है। यह धाम भी कभी एक योजन लंबे और एक योजन ही चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ था।

मंदिर का मौजूदा गर्भ गृह ही करीब 900 साल पुराना है। हालांकि घुश्मेश्वर महादेव का भव्य मंदिर यहां इससे पहले भी था जिसे आक्रांता महमूद गजनवी ने ध्वस्त कर दिया था। उस वक्त इस इलाके के चारों और घने जंगलों के बीच इंसान महादेव के दर्शनों के लिए निश्चय ही काफी कष्ट भोगकर आता होगा। शिवालय क्षेत्र के चारों तरफ चार द्वार और चार प्रमुख वन्य क्षेत्र थे। ये अपभ्रंश रूप में आज भी मौजूद हैं। शिवपुराण कोटि रुद्र संहिता के अध्याय 33 के अनुसार घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के दक्षिण में देवत्व गुणों वाला देवगिरी पर्वत है, जो श्वेत पाषाण युक्त है। यह पर्वत आकार में पूर्व से पश्चिम की ओर है जबकि प्रायः पर्वतों का विस्तार उत्तर से दक्षिण की ओर होता है। इस पर्वत की बड़ी विशेषता इसकी हिमालय के समान श्वेत शिलाएं हैं।

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग की दक्षिण दिशा में देवगिरी और उत्तर दिशा में शिवालय सरोवर है। शिवालय सरोवर के कारण ही संपूर्ण क्षेत्र शिवालय के नाम से ही विख्यात था। इस क्षेत्र को एक योजन लंबा और एक योजन चौड़ा बताया गया है। इस देवस्थान की चारों दिशाओं में चार द्वार थे जो आज भी अपभ्रंश रूप में मौजूद हैं।

यह ज्योतिर्लिंग यदि स्वयंभू न होकर स्थापित होता तो शायद इन्हीं श्वेत पाषणों से होता। लेकिन यह स्वयंभू ज्योतिर्लिंग जिस शिला का है वैसी आसपास नहीं है। ऐसे में घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के शिवाड़ में प्राकट्य पर कोई संदेह नहीं होना चाहिए। प्राचीन ग्रंथ 'घुश्मेश्वर महात्म्य' में शिवालय क्षेत्र के चारों तरफ चार दरवाजों का उल्लेख मिलता है। शिवाड़ के चारों तरफ आज जो गांव बसे हैं वे ही इन दरवाजों के अपभ्रंश नाम हो गए हैं। शिवालय का पूर्वी द्वार, सर्वसर्प द्वार था यानी शिव के आभूषण सर्पो का वास। यहां आज सारसोप गांव है। यहां से बरसों तक भैरव का स्वांग धारण कर एक व्यक्ति नियमित घुश्मेश्वर के दर्शनार्थ आते थे। मान्यता है कि सारसोप में भैरव का वास है। उत्तर में वृषभ द्वार था जहां शिव के वाहन नंदी का वास था। वृषभ को बैल भी कहते हैं। वृषभ द्वार की जगह आज बहड़ गांव है। पश्चिमी द्वार नाट्यशाला द्वार के रूप में जाना जाता था। यहां शिव के गण नट रहते थे। अब यह गांव नटवाड़ा हो गया समीप ही नट जाति के लोग आज भी रहते हैं। दक्षिण में ईश्वर द्वार का जिक्र घुश्मेश्वर महात्म्य में है। यहां आज ईसरदा गांव है जिसका जयपुर राजघराने से नजदीकी रिश्ता रहा। हमेशा लंबे व उच्चारण में असुविधा वाले नामों को स्थानीय लोग मुख सुख सुविधा के हिसाब से अपना लेते हैं। इन चारों द्वारों का नामकरण भी समय के साथ अपभ्रंश होता गया।

अस्थल की तरफ के रास्ते में प्राचीन दरवाजा

## घने जंगल थे चारों तरफ

पिछली सदी तक मंदिर परिसर के चारों और घना जंगल था। बुजुर्ग बताते हैं कि शेर-बघेरे तक यहां विचरण करते दिख जाते थे। शिव की अनुकंपा ही कहेंगे कि इन जंगली जानवरों ने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। शिवालय क्षेत्र की परिधि में इन चार द्वारों के अलावा चारों तरफ चार घने जंगल भी थे। आज के रणथम्भौर अभयारण्य का विस्तार देवगिरी पर्वत तक था। गांव का नाम शिवाल होने तक मंदिर के आसपास आबादी ज्यादा नहीं थी। वक्त के साथ आबादी का जिस तरह से विस्तार हुआ हमने इन जंगलों को खत्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह घुश्मेश्वर की कृपा ही है कि कमोबेश छोटे रूप में ही सही घुश्मेश्वर धाम के चारों ओर ये वन क्षेत्र आज भी मौजूद है। चार द्वारों की तरह जो चार वनक्षेत्र घुश्मेश्वर तीर्थ के चारों दिशाओं में थे उनके नाम भी अपभ्रंश होकर बदल गए हैं। घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग क्षेत्र के एक ओर कदम्ब वन था। यहां कैमला नामक गांव है और यहां आज भी कंदब का घना जंगल है। गांव वालों की आस्था का आलम यह है कि इस जंगल से कदंब की एक टहनी तक काटना पाप माना जाता है। समीप के मंडावर गांव का प्राचीन नाम मंदारवन, मंदार यानी आक का वन था। अब यह मंडावर हो गया है। मंडावर में आज भी आकड़ों का घना क्षेत्र है। भगवान आशुतोष की पूजा-अर्चना में आक का महत्वपूर्ण स्थान है। ईसरदा स्टेशन के बाद जयपुर की ओर अगला रेलवे स्टेशन सिरस आता है। कहते हैं कि यहां कभी सुरसर सरोवर था। यह सरोवर अब नाले में तब्दील हो गया है। इसके किनारे तुलसी के पौधों का घना क्षेत्र था। वहीं चौथ का बरवाड़ा से पहले के स्टेशन सुरेली के समीप भी कभी बिल्व पत्रों का घना वन था। लंबे समय तक घुश्मेश्वर महादेव की पूजा- अर्चना के लिए बिल्व पत्र यहीं से आते थे। अब तो घुश्मेश्वर उद्यान में ही बिल्वपत्रों का उपवन बन गया है।

- नटवाड़ा में नटेश्वर नामक शिवलिंग है। यहां से लोग आज भी प्रत्येक सोमवार घुश्मेश्वर महादेव के रात्रि जागरण में आते हैं

- प्राचीनकाल का सुरसर सरोवर टूट गया है। यह अब नाले के रूप में बहता है। यहां सिरस गांव बसा हुआ है

# गजनवी की पड़ी गिद्ध दृष्टि

गणेशपोल के बाहर चन्द्रसेन गौड व इन्द्रसेन गौड के स्मारक (ऊपर)

उन वीरांगनाओं के स्मारक जिन्होंने खुद के प्राणों का उत्सर्ग कर दिया (नीचे)

गौड शासकों व उनकी रानियों के स्मारक गौडों की छतरी में (दांए)

शिवालय क्षेत्र में अलौकिक घटनाओं से जुड़ीं जनश्रुतियां खूब हैं, लेकिन ये कोरी सुनी-सुनाई ही नहीं है। प्रत्येक घटना समुचित प्रमाणों के साथ हैं। मंदिर पर हुए आक्रमणों में आक्रांताओं का मुकाबला करते हुए मारे गए स्थानीय शासकों की कहानी यहां के पुराअवशेष खुद-बखुद कह देते हैं। ये अवशेष समय-समय पर मंदिर व इसके आसपास खुदाई में प्राप्त हुए। यह मंदिर निश्चित रूप से कभी भव्य रहा होगा। तभी तो सोमनाथ को लूटने जा रहे आक्रांता महमूद गजनवी को इस मंदिर में भी लूटपाट करने की सूझी होगी। काफी धन पाने की उम्मीद में ही गजनवी की गिद्ध दृष्टि इस मंदिर की ओर गई। आसपास हुई खुदाई में ऐसे पुराअवशेष मिले हैं जो सातवीं सदी के आसपास बने मंदिरों की निर्माण शैली से मिलते हैं। विक्रम संवत 1081 यानी 1024 ईस्वी में इस मंदिर की ख्याति सुनकर महमूद गजनवी ने मंदिर ध्वस्त कर संपत्ति लूटने का इरादा किया। गजनवी के तत्कालीन शिवालय पर आक्रमण का ब्योरा पिछले तीन-चार सौ सालों के दौरान स्थानीय लोगों ने अपने पुरखों से सुनी हुई बातों के आधार पर लिपिबद्ध किया है।

पुरानी लिखावट वाले इन दस्तावेज में से कुछ आज भी सुरक्षित हैं। कुछ शिलालेखों व मंदिर परिसर में मौजूद सती स्मारकों से भी इसकी पुष्टि होती है। इन पाण्डुलिपियों में उल्लेख है कि देवगिरी पर्वत के पश्चिम में छापर स्थान पर गजनवी की सेना ने पड़ाव डाल दिया। मंदिर के पुजारियों ने तत्कालीन शासक चन्द्रसेन गौड को इत्तला दी। चन्द्रसेन ने सेनापति रेवत जी और पुत्र इन्द्रसेन से मशविरा किया। दोनों पहले हिचके लेकिन चन्द्रसेन ने साफ कह दिया कि उसके जीते जी कोई मंदिर को हाथ नहीं लगा पाएगा। चन्द्रसेन ने बहादुरी से गजनवी की सेना का मुकाबला किया। मुकाबला करते हुए चन्द्रसेन, उसका पुत्र इन्द्रसेन व सेनापति रेवत जी राठौड़ भी वीरगति को प्राप्त हुए। सेनापति रेवत जी राठौड़ तो सिर कटने के बावजूद धड़ के साथ शत्रु सेना का सफाया करते रहे। सारसोप मार्ग पर जिस जगह रेवत जी राठौड़ का धड़ गिरा वहां आज भी एक स्मारक बना हुआ है जिसे रेवत स्मारक कहते हैं। गजनवी की सेना ने एक तरह से समूचे मंदिर को जमींदोज कर दिया था। ज्योतिर्लिंग चूंकि जलहरी में करीब डेढ़ फीट गहराई में अवस्थित था इसलिए वह इसे नुकसान नहीं पहुंचा पाया। मंदिर परिसर में भी इन तीनों योद्धाओं के स्मारक हैं। मंदिर के पुज्यारी भी युद्ध में काम आए। चन्द्रसेन, इन्द्रसेन, रेवत जी और मंदिर पुजारियों की पत्नियां अपने पतियों के शव के साथ घुश्मेश्वर महादेव के सामने ही चिता में बैठ गईं। इनके स्मारक यहां मौजूद हैं। जहां ये स्मारक हैं, एक को गौडों की छतरी व दूसरी को पाराशरों की सती कहते हैं। गौड आज भी शिवाड़ में हैं तथा पाराशर ही यहां मंदिर की पूजा करते हैं। छतरी के तीन और तीन स्तंभ हैं जिनमें चारों और सतीत्व के प्रतीक मांगलिक हाथ, दूध देती हुई गाय, सूर्य और चन्द्र तथा अपने पतियों के शव के साथ सती होती वीरांगनाओं का चित्रांकन है। इन्द्रसेन गौड का जो स्मारक गणेशपोल के बाहर है उस पर भी इसी तरह का चित्रांकन है।

मंदिर से सटी मस्जिद जो गजनवी ने मंदिर के मलबे से बनवाई

मंदिर को तहस-नहस करने के बाद गजनवी ने सेनापति सालार मसूद को खजाना लूटने का आदेश दिया। सालार मसूद गर्भगृह तक पहुंचा तो जलहरी से निकली प्रचण्ड चिंगारी से वह भयभीत हो डर के मारे बेहोश हो गया। शिवालय के इस मंदिर को चमत्कारी स्थान बताते हुए गजनवी ने निर्देश दिया कि मंदिर के मलबे से मस्जिद बनाई जाए। रातोंरात यहां मस्जिद बना दी गई। यह आज भी घुश्मेश्वर मंदिर से सटी हुई है। अगले ही दिन ईद पड़ रही थी। गजनवी के सैनिक ईद की नमाज पढ़ सकें इसलिए उस स्थान पर भी मस्जिद बनाई गई जहां सेना का पड़ाव था। इस मस्जिद को ईदगाह कहा जाता है। शिवसागर सरोवर बनने के बाद यह मस्जिद अब तालाब के मध्य में आ गई है। कभी इस सरोवर में इतना पानी होता था कि मस्जिद भी आधी से ज्यादा जलमग्न नजर आती थी। गजनवी के आक्रमण का ब्योरा हमारे पुरखों की हस्तलिखित पुस्तिकाओं में दर्ज है।

गजनवी ने सेना के पड़ाव स्थल पर भी मस्जिद बनवाई । यहां अब शिवसागर सरोवर है।

मेरे पुरखों में एक मंगल जी पुज्यारी (पाराशर) की हस्तलिखित पोथी के जो अंश गंगाबिशन क्षोत्रिय की पुस्तक में दर्ज थे उसमें गजनवी के आक्रमण का ब्यौरा है। ये अंश इस प्रकार हैं-

'पुराना सम म शिवाड़ को नाम शिवाल छो जद अठ चन्द्रसेन राजा राज कर छो..जब संवत 1081 में मथुरा का मंदरा न तोड़तो हुयो महमूद गजनी अठ घुश्मेश्वर का मंदर न तोड़बा आयो और देवगिरी पर्वत क आथूणी छापर मं फौज को पड़ाव पटक्यो। या खबर घुश्मेश्वर का पुज्यारी राजा चन्द्रसेन गौड न पुकार करी ..राजा न आपकी फौज का रसालदार रेवत जी राठौड़ और आपका कंवर चन्द्रसेन न बुलाकर पूछो के आपान काई करणो चाहिए। जब रेवत जी और कंवर कही के गजनी क पास एक लाख फौज छ आपणा पास 400 घोड़ा 400 सपाई छ यासूं आपां जीत न सकां। या ही आछी छ कि आपां लड़ाई न लड़ां। या बातां सुण राजा बड़ो रोस हुयो और या दोन्या न कह्यो थे राजपूत कोण। म्हारे सामने मंदर टूटतो रह अर मं देखतो रहूं यो म्हारो धर्म कोण। हुक्म दूं छूं क थै आपणी फौज को मंदर क च्यारूं और घेरो पटकवा दो .. जब तक एक भी सांस छः तुरक मंदर क हाथ भी न लगा पावै। दूसरे दन लड़ाई हौबा लागी तो राजपूत, मुसलमाना पर टूट पड्या। रेवत जी राठौड़ गजनी की सेना न पाछ हटा दियो जद सालार मसूद गजनी का पड़ाव सूं फौज मंगाई फेर लड़ाई हुई। इमं रेवत जी राठौड़ को माथौ कट ग्यो। पण रेवत जी बगैर माथां क ही लड़तो रह्यो। सारा राजपूतां न मार गजनी मंदर पर आयो और मंदर तुड़वार मस्जिद बणा दी। घुश्मेश्वर नाथ जस्या का तस्यां रह्या क्यूंक जलरी मं छा इं बास्त गजनी न दीख्या नहीं। दूसर दन ईदगाह में बनी मस्जिद में नमाज पढ़ी और गजनी फोज न ले गुजरात सोमनाथ की तरफ चलेग्यो। अंत में यह भी लिखा- मंगल जी पुज्यारी क पास जो पोथी छै इ म घुश्मेश्वर की बातां कई बोल्यां भाषा मं लिखी छै। या आपणी बोलचाल मं बात लिख दी छै जिसूं सब समझ जावै।' ■

- राजा चन्द्रसेन गौड ने शत्रु सेना में एक बार तो खलबली मचा दी थी। लेकिन गजनवी की विशाल सैन्य शक्ति का मुकाबला करते हुए घुश्मेश्वर मंदिर की रक्षार्थ बलिदान हो गए
- युद्ध में बंदी बनाए गए इन्द्रसेन गौड ने इस्लाम धर्म स्वीकर करने से मना कर दिया तो गजनवी ने क्रोधित होकर उसका सिर कलम करा दिया
- सेनापति रेवत जी राठौड़, सिर कटने पर भी धड़ के साथ शत्रु सेना का मुकाबला करते रहे।


भगवान शंकर के
बारहवें ज्योतिर्लिंग
घुश्मेश्वर महादेव
के दर्शनार्थ पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का
शिव की नगरी शिवाड़ में
हार्दिक स्वागत
ईश्वर आपकी हर मनोकामना पूरी करे।

विनीत - डॉ. निर्मल कुमार जैन, डॉ. कविता जैन, डॉ. स्वप्निल जैन,
डॉ. प्राची अग्रवाल, पनीली जैन, अंशुल जैन, (शिवाड़ वाले)

बी 10/133ए चित्रकूट स्कीम, जयपुर 302021

डॉ. निर्मल जैन व डॉ. कविता जैन

# किशना खाती की रोचक कथा

मान्यता है कि घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन के बाद खाती-खातिन के नाम से प्रसिद्ध इस स्मारक की परिक्रमा करने पर ही श्रद्धालुओं की यात्रा सफल होती है।

## दुग्धाभिषेक करती थी गाय

महमूद गजनवी के आक्रमण के बाद यह मंदिर करीब एक सदी तक लोगों की नजर से ओझल रहा। भगवान भोलेनाथ के पुनः प्राकट्य की कथा भी इस पवित्र स्थान पर घटी अलौकिक घटना से जुड़ी है। इस घटना के सामने आने के बाद मंडावर के तत्कालीन शासक शिववीर सिंह चौहान ने यहां फिर से मंदिर बनवाकर फाल्गुन कृष्णा 13 सोमवार संवत 1179 को मंदिर के शिखर पर कलश चढ़वाया। इससे पहले विक्रम संवत 1177 यानी 1120 ईस्वी में यह रोचक घटना हुई। कहते हैं कि समीप के तारापुर गांव के किशना खाती की गाय खंडहर के बीच जंगल में तब्दील हो चुके इस इलाके में चरने आया करती थी। उसकी गाय स्वतः ही उस स्थान पर आकर अपना दूध विसर्जित करती थी जहां ज्योतिर्लिंग दबा हुआ था। रोज गाय को दूधविहीन घर आता देख एक दिन किशना कुल्हाड़ी लेकर गाय के पीछे-पीछे चला आया। यह जानने के लिए कि गाय का दूध कौन पी जाता है? गाय को स्वतः ही दूध विसर्जित करते देख विस्मित किशना को किसी अदृश्य शक्ति के शिला में मौजूद होने की आशंका हुई।

**मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने विक्रम संवत 1179 में मंदिर का पुनर्निर्माण कराया**

जनश्रुति है कि किशना ने उस शिला यानी ज्योतिर्लिंग पर आवेश में आकर कुल्हाड़ी से प्रहार कर दिया। कुल्हाड़ी से प्रहार करते ही शिवलिंग से डरावनी ध्वनि सुनाई दी। भयभीत किशना वहां से भागा। कुछ ही कदम चला होगा कि आकाशवाणी हुई- किशना तूने हमारे ऊपर कुठाराघात किया है, जा तू पत्थर का हो जा। पल भर में ही किशना पाषाण का हो वहीं खड़ा रह गया। यह सब कुछ हुआ तब तक सांझ हो गई होगी। किशना की गाय रंभाती हुई टापुर पहुंची और उसकी पत्नी जानकी का पल्लू पकड़ खींचने लगी। गाय को अकेले आई देख अनिष्ट की आंशका से ग्रस्त जानकी ने ग्रामीणों को एकत्र किया। देवगिरी पर्वत की तलहटी पहुंची तो अपने पति को पत्थर का हुआ देख जानकी विलाप करने लगी। पुराने अभिलेखों से पता चला है कि तब टापुर विद्वानों की नगरी थी। ग्रामीणों के साथ वहां पंडित भी पहुंचे थे। किसी एक ने अपने बुजुर्गों से सुनी कथा के आधार पर बताया कि हो न हो गजनवी के आक्रमण से ध्वस्त हुआ मंदिर यहीं रहा हो। भगवान घुश्मेश्वर के कोप से ही किशना पाषाण का हुआ है ऐसा पंडितों ने माना। समूचा वृत्तांत जानकर किशना की विलापरत पत्नी जानकी भी खुद का जीवन अंधकारमय जानकर उसी कुठार से अपना सिर भगवान शंकर को अर्पित करने के लिए उद्यत हुई जिससे किशना ने ज्योतिर्लिंग पर कुठाराघात किया था।

तब रौद्र रूप में आए भोले भंडारी प्रसन्न हो गए और आकाशवाणी हुई- जानकी, मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हूं। वर मांगो। जानकी ने प्रार्थना की- प्रभु, आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मेरे पति को फिर से जीवित कर उनका अपराध माफ कर दें। थोड़े ही समय बाद लोगों ने देखा कि जिस स्थान पर किशना पाषाण का हुआ था वहां से ज्योतिर्लिंग की ओर चला आ रहा है। किशना की पत्नी जानकी आनंदविभोर हो गई तथा किशना से समूचा वृत्तांत व आकाशवाणी का जिक्र किया। किशना को अपने कृत्य पर काफी ग्लानि हुई। पश्चाताप करते हुए उसने भगवान घुश्मेश्वर से प्रार्थना की और प्रायश्चित स्वरूप से खुद पर कुठाराघात कर जीवन समाप्त करना चाहा। तब फिर आकाशवाणी हुई- किशना तुमने मुझ पर कुठाराघात तो किया है लेकिन अब तुम्हें क्षमा करता हूं। तुम अपनी इच्छानुसार वर मांगो। किशना ने भगवान भोलेनाथ से सदैव यहीं निवास करने का वर मांगा। 'एवमस्तु' कहकर शिव ने साथ ही यह भी कहा कि यहां वे दोनों अपने नाम से दो शिलाएं यहां लगा जाएं। भगवान ने किशना-जानकी को यह भी वर दिया कि उनके दर्शनार्थ आने वाले की यात्रा इन शिलाओं की परिक्रमा करने पर ही पूरी होगी। कहते हैं कि तब खुद किशना ने ही वहां से प्राचीन मंदिर के खण्डित प्रस्तर खंड उठाए और उसी स्थान पर उन प्रस्तरों को स्थापित कर दिया जहां किशना पाषाण का हुआ था। प्रस्तर खण्डों में एक छोटा है जो किशना दंपती के प्रतीक हैं।

किशना तारापुर स्थित अपने घर लौट गया और रात्रि विश्राम करने के बाद सुबह अपनी गाय को घुश्मेश्वर महादेव को अर्पित कर शिवालय सरोवर में स्नान कर ज्योतिर्लिंग की परिक्रमा की और, काशी के लिए सपत्नीक प्रस्थान कर गया। ज्योतिर्लिंग के गर्भगृह से मुश्किल से 200 मीटर दूर आज भी ये प्रस्तर खण्ड लगे हैं। ये प्रस्तरखण्ड प्राचीन शिलाओं के हैं जो हरा-नीलापन लिए हैं। हालांकि पुनर्निर्माण के दौर में इन प्रस्तर खण्डों पर अब मार्बल का आवरण लगा दिया गया है। आज भी दर्शनार्थी इन स्तंभों की परिक्रमा करते हैं। स्थानीय बोलचाल में इन प्रस्तर खण्डों को खाती-खातिन कहते हैं। इस घटना का जिक्र शिवाड़ निवासी स्व.पं.गंगाबिशन क्षोत्रिय की हस्तलिखित पुस्तक में किया गया था। करीब एक सदी तक दुनिया की नजरों से ओझल रहने के बाद इस अलौकिक घटना से फिर घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग प्रकाश में आया। इस घटनाक्रम के बाद लोगों को विश्वास हो गया कि भगवान घुश्मेश्वर फिर से प्रकट हुए हैं। शिववीर सिंह चौहान ने जब मंदिर बनवाया तो सबसे पहले जलहरी को मध्य में रखकर गर्भगृह बनवाया। तब गर्भगृह के मुख्य द्वार के सामने ही सोलह स्तंभों वाला सभा भवन भी बनवाया जो तब की आबादी के हिसाब से विशालता लिए हुए था। इसे नौ चौकिया कहते हैं। यह मंदिर दसवीं शताब्दी के स्थापत्य कला का नमूना था जो दो वर्ष में बनकर पूरा हुआ।

- मुख्य गर्भगृह में घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग पर चढ़ाए गए जल की निकासी जिस मार्ग से होती है उसे शिवगंगा का नाम दिया गया है। श्रद्धालु इस शिवगंगा से पवित्र जल का आचमन कर खुद को धन्य समझते हैं। शिवगंगा की वजह से यहां परिक्रमा आधी ही लगती है

- शिववीर सिंह चौहान ने मंदिर के पुनर्निर्माण के वक्त ही अखण्ड ज्योति, सहस्त्रघट का माप, चार प्रहर आरती आदि की जो व्यवस्था की वह आज तक चली आ रही है

# रौद्र रूप से डरा खिलजी

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग मध्यकाल तक सदैव अक्रांताओं के निशाने पर रहा। अपार स्वर्णाभूषण मिलने की उम्मीद में ये आक्रांता अपने किसी भी युद्ध मिशन पर रास्ते में पड़ने वाले मंदिरों में लूटपाट जरूर करते थे। महमूद गजनवी के आक्रमण से मंदिर समेत समूचा शिवाड़ (तब शिवालय) तहस-नहस हो गया था। करीब एक सदी तक यह स्थान लोगों की नजरों से ओझल भी रहा। किशना खाती की घटना के बाद मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने मंदिर का पुनर्निर्माण कराया तो धीरे-धीरे ज्योतिर्लिंग की ख्याति पहले की तरह होने लगी थी। मंदिर पुनर्निर्माण के वक्त मौजूदा मंदिर परिसर का मुख्य गर्भगृह और गणेशपोल के साथ सभागार ही बनाया गया होगा। विक्रम संवत 1179 यानी वर्ष 1122 से संवत 1358 यानी वर्ष 1301 तक का काल सीमा विस्तार को लेकर होने वाले स्थानीय शासकों में होने वाले युद्धों को छोड़कर आम तौर पर शांतिकाल रहा। लेकिन सम्वत 1358 यानी वर्ष 1301 में रणथम्भौर के शासक हमीरदेव से लोहा लेने जा रहे अलाउद्दीन खिलजी की नजर मार्ग में पड़ रहे इस शिवालय पर पड़ गई। तब तक शिवाल के नाम से जाने जाने वाले इस स्थान पर आबादी के नाम पर संभवतः कुछ भी नहीं था।

मंदिर परिसर के संग्रहालय में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा ध्वस्त किए गए नंदी के अलावा मंदिर शिखर के खंडित अवशेष भी रखे गए हैं

घने जंगल में स्थित इस पुराण प्रसिद्ध शिवालय में अपार संपदा मिलने की उम्मीद में अलाउद्दीन ने अपने सेनापति मलिक काफूर को भेजा। मलिक काफूर ने मंदिर में प्रवेश किया लेकिन उसका ध्यान गर्भगृह में अवस्थित जलहरी की ओर नहीं जा पाया। सभागार में विराजित दो नंदी प्रतिमाओं को जरूर खण्डित कर दिया। मंदिर के शिखर को भी तुड़वाना शुरू कर दिया था पर रात होने के कारण वह शिखर के ऊपरी भाग को तीन फीट तक ही तुड़वा सका। मलिक काफूर ने अपने सैनिकों को विश्राम कर मंदिर ध्वस्त करने की कार्रवाई अगले दिन सुबह करने के निर्देश दिए। संभवतः तब स्थानीय शासकों में से किसी ने खिलजी की विशाल सेना का मुकाबला करने की हिम्मत नहीं दिखाई। इधर भगवान भोलेशंकर ने सेना के पड़ाव स्थल पर विश्राम कर रहे अलाउद्दीन को रात को ऐसा रोद्र रूप दिखाया कि वह अगले दिन ही भाग छूटा। रात में भगवान घुश्मेश्वर ने त्रिशूल हाथ में लेकर खिलजी को सपने में डराया। घबरा कर अलाउद्दीन उठ बैठा और उसे नींद नहीं आई। तत्काल सेनपति को बुलाया तो उसने मशविरा दिया कि स्वप्न में डराने वाला देवता वही हो सकता है जिसका मंदिर हम खंडित कर रहे हैं। आप मंदिर न तोड़ने का निश्चय कर सो जाएं। खिलजी ने ऐसा ही किया तब जाकर उसे नींद आई।

सुबह होते ही मलिक काफूर ने सुबह मंदिर पुजारियों से सुल्तान को आए डरावने स्वप्न का जिक्र किया तो पुजारियों ने बताया कि भगवान शिव ने खिलजी को रौद्र रूप दिखाया है। सुल्तान ने अपनी खता की माफी मांगी है इसीलिए वह रात को चैन से सो सका है। सारा वृतांत खिलजी तक पहुंचा तो उसने सबसे पहले मंदिर के क्षतिग्रस्त शिखर की मरम्मत कराई। बाद में वह तौबा कहते हुए यहां से सैन्य शिविर उखाड़कर रणथम्भौर की ओर चला गया। खिलजी ने उस समय घुश्मेश्वर के पुजारियों को भोग- राग के लिए जमीन के पट्टे भी दिए। किसी आक्रांता द्वारा मंदिर को नुकसान पहुंचाने के बाद फिर से निर्माण कराने के उदाहरण इतिहास के पन्नों में कम ही मिलते हैं। अलाउद्दीन खिलजी जैसा आक्रांता भी भगवान शंकर के कोप से इतना भयभीत हुआ कि उसके बाद किसी अन्य आक्रांता ने मंदिर की तरफ आंख उठाने का साहस भी नहीं किया। खिलजी के आक्रमण का यह ब्योरा भी शिवाड़ के पौथीखाने में मिली हस्तलिखित रचनाओं में दर्ज है। शिवाड़ से जुड़े इन ऐतिहासिक तथ्यों का सत्तर के दशक में शिवाड़ निवासी सेवानिवृत्त तहसीलदार ठाकुर बजरंग सिंह जी राजावत ने अध्ययन किया। उस दौरान ही शिवाड़ राजघराने के पौथीखाने में रखी कई हस्तलिखित रचनाओं में नए ऐतिहासिक तथ्य उजागर हुए। कुछ अन्य प्रमाणों की प्राचीन शिलाखण्ड व शिलालेख गवाही देते हैं।

छोटे-बड़े खंडित प्रस्तर खण्ड हो या फिर देव प्रतिमाएं। खुदाई में मिले ये पुरावशेष घुश्मेश्वर मंदिर के गौरवशाली अतीत की कहानी बताने को काफी है

# शिव की चार प्रहर आरती

राजा शिववीर सिंह चौहान ने जब मंदिर का पुनर्निर्माण कराकर कलश चढ़ाया तब मंदिर के उन पुजारियों को वापस बुलवाया जो गजनवी के आक्रमण के बाद शिवालय (शिवाड़) से सर्वसर्पद्वार (सारसोप) चले गए थे। उन्होंने ही मंदिर की चार प्रहर आरती की शुरुआत कराई जो परिपाटी आज भी जारी है। सबसे पहले जिक्र घुश्मेश्वर महादेव की **मंगला आरती** यानी तड़के होने वाली आरती का। मंगला आरती से पहले जलहरी को विधि- विधान से खाली किया जाता है ताकि जलमग्न ज्योतिर्लिंग के आमजन दर्शन कर सकें। बाद में पूजा-अर्चना का दौर शुरु होता है जिसका सौभाग्य पाराशर पुजारियों को मिला है। मंगला आरती के वक्त को शिव दर्शन का श्रेष्ठतम समय माना जाता है। मंगला आरती की घंटा ध्वनि से आसपास का वातावरण भक्तिमय हो जाता है। इसके बाद दिन भर नियमित पूजा-पाठ का दौर शुरू हो जाता है।

**भोग आरती** -शिवाड़ में महादेव की चार प्रहर आरती में भोग आरती यानी भगवान के भोग अर्पित करने का वक्त। भोग भी राजसी यानी- चूरमा-बाटी-दाल। यों तो घर -परिवारों में आज भी चूरमा की रसोई कोई खास मौके पर ही बनती है। शिव मंदिरों में जलाभिषेक, सहस्रघट आदि होने के कारण चूरमा दाल बाटी की ज्यौणार होने लगी है । लेकिन आज से सदियों पहले मंदिर पुनर्निर्माण के वक्त ही मंडावर के तत्कालीन शासक शिववीर सिंह चौहान ने घुश्मेश्वर महादेव के लिए चूरमा-बाटी का नियमित भोग लगाने की व्यवस्था कर दी थी। तब से भोग सामग्री ठिकाने की ओर से देने का क्रम शुरू हुआ था। भोग के लिए यहां नियमित चूरमा-बाटी की प्रसादी बनती है।

**मंगला से लेकर शयन आरती का विधान राजा शिववीर सिंह चौहान के वक्त तय हुआ था जो आज भी जारी है**

**घुश्मेश्वर महादेव के प्रतिदिन चूरमा-बाटी का भोग ही लगता है**

दोपहर में भोग आरती के वक्त भगवान के यह भोग अर्पित किया जाता है। वैसे भी माना यह जाता है कि भगवान शंकर को प्रिय दाल, बाटी चूरमा, नव ग्रहों का पौराणिक देव भोजन है। गोधूम यानी गाय के गोबर से बनाए कंडों में तैयार दाल, बाटी व चूरमे की रसोई ही शुद्ध मानी जाती है। नए जमाने के दौर में भी मंदिर के प्रसादी कक्ष में बाकायदा कंडे का गजरा लगाकर रसोई बनाई जाती है। बचपन के दौर में भगवान भोले की इस प्रसादी ग्रहण करने का मौका खूब मिला है। पुज्यारी परिवार में जन्म लेने का सौभाग्य जो मिला। मंदिर की संध्या आरती और अखण्ड ज्योति के लिए आने वाले घी की तरह राजभोग की व्यवस्था भी जन सहभागिता के अनुपम उदाहरण है। श्रद्धालु अपनी मनौती पूरी होने पर दैनिक भोग के लिए अपनी ओर से सामग्री देते हैं। आम तौर पर मंदिर की सेवा पूजा करने वालों की ही जिम्मेदारी होती है कि वे भोग की व्यवस्था करें। यह ईशकृपा ही है कि लंबे लॉकडाउन के संकटकालीन दौर में भी राजभोग का यह क्रम बदस्तूर जारी रहा।

एक खासियत और। भगवान घुश्मेश्वर को अर्पित होने वाला राजभोग सिर्फ पुरुष ही तैयार करते हैं। हां, पंडित अपनी क्षमता के मुताबिक ही रसोई तैयार करते हैं। यानी जितना बड़ा कुनबा उतनी ही ज्यादा लोगों के लिए रसोई। भोग लगाने से पहले पूरे मंदिर परिसर को अभिमंत्रित जल से शुद्ध करते हुए श्रद्धालुओं की आवाजाही रोक दी जाती है। महाशिवरात्रि के दिन गांव का कोई भी हिन्दू परिवार ऐसा नही होता जहां चूरमा-बाटी की रसोई न बनती हो। मंदिर में घर-घर से आने वाले भोग को रखने के लिए बड़े बर्तनों का इंतजाम करना पड़ता है। बड़े ड्रम तक। राजभोग आरती के दौरान मुख्य गर्भगृह के अलावा प्रतापेश्वर मंदिर तथा प्रवेश द्वार से सटे हनुमान जी मंदिर में भी भोग लगता है।

**सांध्य आरती**- यों तो शिव की चारों प्रहर की आरती- क्रमशः मंगला, भोग, सांध्य व शयन आरती के रूप में होती है लेकिन सांध्य आरती का अपना ही रोमांच है। खासियत यह है कि आरती के लिए बनाई गई बत्तियों में इस्तेमाल किया घी गांव वालों की सहभागिता का अनुपम उदाहरण है। यानी प्रतिदिन यहां आने वाले दर्शनार्थी ही अपने साथ कटोरी में अपनी क्षमतानुसार घी लेकर आते हैं जिसे जोत (ज्योत) का घी कहते हैं। मुख्य गर्भगृह में बरसों से प्रज्ज्वलित अखण्ड ज्योति से लेकर आरती तक में इसी जोत का घी इस्तेमाल होता है। आरती के लिए तैयारी भी अलग तरीके से होती है। पवित्र शिवालय सरोवर की ताजा काली चिकनी मिट्टी को इन आरती की बत्तियों को स्थिर करने के लिए लोंदा बनाकर लगाया जाता है। आरती की बत्तियां पांच, सात, ग्यारह और इक्कीस की संख्या में होती है। इक्यावन बत्तियों की आरती भी होती है, चांदी के आरती पात्र के साथ। अब भी महाशिवरात्रि जैसे मौकों पर बत्तियों की संख्या बढ़ जाती है। हालांकि जितनी अधिक बत्तियां होंगी, आरती का पात्र भी उतना ही विशाल होगा और जाहिर है आरती करने वाले की क्षमता की परीक्षा भी होना तय है। गांव के कुछ उत्साही युवा, समाजसेवी राजेश जैन की अगुवाई में अरसे से समय की पाबंदी के साथ सांध्य आरती के मौके भगवान भोलेनाथ के दरबार में नियमित हाजिरी दे रहे हैं। इनकी मौजूदगी में आरती के दौरान अलग ही भक्तिमय माहौल होता है।

**शयनआरती** - शिवाड़ में घुश्मेश्वर महादेव के रूप में विख्यात इस ज्योतिर्लिंग की महत्ता गांव के रक्षक के रूप में ज्यादा है। शायद यही वजह है कि हमारे पुरखों ने शिव के लिए शयन आरती की व्यवस्था अन्य देवालयों की तरह नहीं की। मंदिर का पुनर्निर्माण यानी आज से करीब 900 बरस पहले हुआ तब से ही प्रत्येक सोमवार को मंदिर में गर्भगृह के सम्मुख रात्रि जागरण होता है। सिर्फ सोमवार और महाशिवरात्रि के दौर में ही मध्यरात्रि को घुश्मेश्वर महादेव की शयन आरती होती है। अन्यथा प्रतिदिन रात्रि को दस बजे गर्भगृह में ज्योतिर्लिंग की शयन झांकी ही होती आई है। शयन झांकी के बाद मंदिर के पुजारी मंत्रोच्चार के साथ घंटाध्वनि कर भगवान भोलेनाथ से विश्राम करने की अर्ज करते हैं। इसके बाद मंदिर के पट बंद कर दिए जाते हैं। न केवल मुख्य गर्भगृह के बल्कि परिसर में स्थित तमाम दूसरे देव मंदिरों के साथ मुख्य द्वार के भी पट बंद कर दिए जाते हैं।

घुश्मेश्वर की चार प्रहर आरती से पूर्व आकर्षक श्रृंगार किया जाता है

शयन आरती के बाद ठाकुर जी के पट बंद हो जाते हैं

- घुश्मेश्वर महात्म्य में कहा गया है कि जो लोग गायन से, वाद्य यंत्रों से, नृत्य आदि से जागरण द्वारा मेरी सेवा करते हैं वे मेरे लोक में जाएंगे
- चूरमा-बाटी भगवान भोलेनाथ को सबसे प्रिय है। इसीलिए यहां दैनिक चूरमा-बाटी का भोग ही लगता है
- घर-घर से आने वाला जोत का घी शिवाड़ में जनसहभागिता का अनुपम उदाहरण हैं

वैसे तो शिव सदैव जागृत अवस्था में रहते हैं। फिर भी यह परिपाटी बरसों से चल रही है। प्रत्येक सोमवार के जागरण के दिन यहां रात भर भक्तिमय माहौल रहता है। श्रद्धालुओं की संख्या ज्यादा हो तो रात्रि जागरण कालरा सत्संग भवन में होता है। मंदिर परिसर में नियमित सत्संग की जो शुरुआत श्रद्धेय गोविन्द नारायण जी पारीक ने की थी वह आज भी जारी है। उनके प्रिय भजन **'शिवशंकर भोलेनाथ, गहो मम हाथ, जगत हितकारी... सुण लेना विनय हमारी ..।'** की गूंज आज भी होती है। गांव के बुजुर्ग धर्मप्रेमी जगदीश जी ठाकुरिया व पं. प्रदीप पाराशर के साथ भक्तगण इस परिपाटी को जीवित रखे हुए हैं। आस्था के अतिरेक यह है कि सत्संग के दौरान शिव का आह्वान करते भक्ति गीतों की धुन पर भक्तगण खूब झूमते हैं। महाशिवरात्रि के दिन तो मंदिर में जागरण के साथ-साथ पिछले सालों से घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट की ओर से स्थानीय दशहरा मैदान में भजन संध्या का आयोजन किया जाता है।

शेष ग्यारह ज्योतिर्लिंगों का तेज भी इस ज्योतिर्लिंग में है इसलिए शीतलता जरूरी है। भोग आरती के बाद अपरान्ह चार बजे जलहरी सघन (जलमग्न) होती है। इसके बाद पूरे बारह घंटे यानी अगले दिन तड़के चार बजे ही जलहरी को खाली किया जाता है। सीधे तौर पर कहूं को शिवाड़ महादेव के दर्शन आने वालों को साक्षात ज्योतिर्लिंग के पावन दर्शन तड़के चार बजे से सुबह आठ बजे तक और दोपहर 12 से शाम चार बजे तक ही हो सकते हैं। शेष समय ज्योतिर्लिंग पूर्ण या आंशिक रूप से जलमग्न ही रहता है। खैर, शयन झांकी के दौरान मंदिर के पुजारी, भोलेनाथ से विश्राम करने का भले ही निवेदन करते हों लेकिन भोलेनाथ तो सदैव जागते हुए अपने भक्तों की चिंता करते रहते हैं। महाशिवरात्रि पर भोलेनाथ की चार प्रहर पूजा व आरती का अलग ही महत्व है। शिव की चारों प्रहर आरती के दर्शन करने वाले सचमुच धन्य हैं।


जय घुश्मेश्वर

घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ आने वाले सभी श्रद्धालुओं की हर मनौती पूरी हो। सभी श्रद्धालुओं का शिवाड़ आगमन पर

हार्दिक स्वागत

निवेदक– अजीत जैन (शिवाड़ वाले ), तकनीकी निदेशक,
राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र जयपुर।
भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय

अभिजीत जैन (सुपुत्र)

MANGALA®

मंगला सरिया

बेमिसाल मजबूती का नाम... ®

# मंगला ®

TMT BAR

ANGLE & CHANNEL

An ISO 9001:2015 & ISO 14001:2015 Certified Co.

IS: 1786

CM/L-3028845

## राजस्थान में स्वनिर्मित ISI बिलेट से तैयार TMT BARS

www.mangalasispat.com www.mangalasispat.in

B-234, Road No:9, Vishwakarma Industrial Area, Jaipur, Rajasthan, (India) - 302013

## खण्ड- दो

# अलौकिक घटनाएं

भगवान भोलेनाथ की नगरी शिवाड़ में अलौकिक घटनाएं भी कम नहीं है। ऐसी घटनाएं जिन्हें आज देख-सुनकर भले ही कोई विश्वास नहीं करें लेकिन हमारे पुरखों ने शिव कृपा से जुड़ी इन घटनाओं को अपनी पोथियों में सहेज कर रखा है। देवगिरी पर्वत का महाशिवरात्रि के दिन एक पल के लिए सोने का होना और शिवालय सरोवर का क्षीरसागर बनने की कथाएं लोगों की आस्था को और मजबूत करती है। इस भाग में पढ़ें कि घुश्मेश्वर महादेव के गर्भगृह में अखण्ड ज्योति कैसे देती है शुभ-अशुभ के संकेत और क्या रहस्य है जलहरी के टूटने का। यह भी पढ़ें कि शिवाड़ के दो प्रमुख सरोवर कैसे बने हुए हैं गांव की जीवन रेखा।

# देवगिरी एक पल होता है सोने का

देवगिरी पर्वत का यह पार्श्व भाग दूर से ही छटा बिखेरता नजर आता है। श्वेत पाषाण युक्त यह पर्वत आसपास के दूसरे पर्वतों से अलग है। इसी पर्वत की तलहटी में घुश्मेश्वर महादेव विराजमान हैं

घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग की जितनी महत्ता है उतनी ही कौतूहल भरी दास्तां यहां की अलौकिक घटनाओं से जुड़ीं हैं। ये घटनाएं भी ऐसी कि हर कोई दांतों तले अंगुली दबा ले। अब तक आपने पढ़ा कि महमूद गजनवी के आक्रमण के बाद मंडावर के शासक शिववीर सिंह चौहान ने विक्रम संवत 1179 यानी वर्ष 1122 में मंदिर का फिर से निर्माण कराया। इसके बाद मंदिर की फिर ख्याति बढ़ने लगी। लेकिन, आबादी क्षेत्र तब भी समीप के मंडावर व टापुर क्षेत्र तक ही सीमित था। इस निर्माण की शुरुआत के चार सौ साल बाद एक और अलौकिक घटना हुई। जनश्रुति है कि भगवान शंकर ने जब घुश्मा नामक ब्राह्मणी को उसके नाम से यहां अवस्थित होने का वरदान दिया तब यह भी वर दिया था कि महाशिवरात्रि के दिन देवगिरी पर्वत एक पल के लिए सोने का और शिवालय सरोवर दूध का हो जाएगा। स्थानीय लोगों की मान्यता है कि ऐसा आज भी होता है। इस मान्यता की पुष्टि के लिए ऐतिहासिक तथ्य भी है जिसमें शिवरात्रि के दिन एक बणजारे ने देवगिरी से उस पल जो पत्थर उठाया वह सोने में तब्दील हो गया। इस स्वर्ण से ही मंदिर परिसर में ही ऋण मुक्तेश्वर का मंदिर और परकोटे का निर्माण कराया गया।

शिवाड़ के इतिहास को लेकर उपलब्ध पाण्डुलिपियों में हमारे पुरखों ने इस घटनाक्रम को लिपिबद्ध कर रखा है। इसके मुताबिक संवत 1571 यानी 1514 ईस्वी में यह रोचक वाकया हुआ। बताते हैं कि मवेशियों की खरीद-फरोख्त करने वाले खानाबदोश बणजारे महाशिवरात्रि के दिन मंदिर के पास से गुजरे। तब यहां आसपास का इलाका मैदानी होता था। पहाड़ों को छोड़कर कहीं पत्थर नहीं होते थे। इसलिए एक बणजारे ने अपने अगले पड़ाव पर रात्रि में बैलों को बांधने के लिए खूंटे गाड़ने के मकसद से पर्वत की तलहटी से एक पत्थर उठा बैल की पीठ पर लदे झोले में रख लिया। बणजारे ने वहीं एक घड़ा पानी शिवालय सरोवर से भर लिया। शिवालय सरोवर का किनारा तब देवगिरि की तलहटी तक अवश्य रहा होगा क्योंकि सरोवर की लहरों को आज के स्टेशन रोड तक आते तो मैंने बचपन में देखा है। मेरा पैतृक निवास सरोवर के सामने ही है। इधर, रात में अपने गन्तव्य पर पहुंच कर खूंटा गाड़ने के लिए बणजारे ने झोले में रखा पत्थर निकाला तो उसकी आंखे फटी की फटी रह गई। वह यह देखकर चमत्कृत रह गया कि उसके हाथ में पत्थर की जगह स्वर्ण खण्ड था। साथ ही जिस घड़े में पानी लिया था उसमें पानी की जगह दूध था। इस कौतुक को देख आपसी विचार विमर्श कर सब बणजारे वापस उसी स्थान पर पहुंचे जहां से पत्थर उठाया था।

ऋणमुक्तेश्वर यानी कर्ज से मुक्ति दिलाने वाले ईश्वर। इस शिवलिंग की पूजा-अर्चना से कर्ज से मुक्ति हो जाती है, ऐसी मान्यता है

पंडितों ने बणजारों की बात सुन अनुमान लगाया कि हो सकता है कि बणजारे ने यह पत्थर देवगिरी पर्वत से उसी समय उठाया हो जिस पल के लिए शिवरात्रि के दिन यह स्वर्ण का हो जाता है। साथ ही शिवालय भी दूधमय हो जाता है।

## स्वर्णखंड से बना ऋणमुक्तेश्वर मंदिर

- पौराणिक उल्लेख है कि महाशिवरात्रि पर एक पल के लिए देवगिरी पर्वत सोने का हो जाता है
- खानाबदोश बणजारे ने महाशिवरात्रि के दिन उस पल में देवगिरी से उठाया था एक पत्थर
- मवेशियों का खूंटा गाड़ने लगा तो उस पत्थर को सोने में तब्दील देख अचरज में पड़ गया था बणजारा

इस कौतूहल भरी कहानी को लेकर कुछ बणजारे और ग्रामीण तत्कालीन शासक ठाकुर गोपाल दास नरुका के पास पहुंचे। वे शिवाड के समीप गारियागढ़ में रहते थे। गारियागढ़ यानी मिट्टी का गढ़। तब शिवाड़ नरूका वंश के अधीन था। शिवाड़ में पहले धीरावत, बाद में नरुका व राजशाही के अंतिम दौर में राजावतों का शासन रहा। इससे पहले यह पृथ्वीराज चौहान के वंशजों के अधिकार में भी रहा। नरुका वंश के ठाकुर गोपाल दास ने बणजारा की ईमानदारी से खुश हो उसे स्वर्ण खंड वापस देना चाहा। ईमानदारी के साथ साम्प्रदायिक सद्भाव की मिसाल देखिए, इस्लाम के अनुयायी बणजारे ने तत्काल स्वर्ण खंड लेने से इंकार कर दिया। विनम्रता से उसने नरूका ठाकुर से कहा- यह घुश्मेश्वर महादेव की देन है इसलिए मेरी इच्छा इस स्वर्ण खंड से प्राप्त राशि को मंदिर में ही लगाने की है।

जैसा मैंने बताया कि आज का भव्य शिव मंदिर तब सिर्फ ज्योतिर्लिंग के गर्भगृह और दांई तरफ गणेशपोल तक ही सीमित था। बणजारे को मिले स्वर्ण खंड से जो राशि मिली उससे नरूका ठाकुर ने मंदिर परिसर में ही गणेश पोल में एक नए मंदिर का निर्माण कराया गया। इसमें 1514 ईस्वी में ही एक छोटा शिवलिंग स्थापित किया गया जो आज भी हैं। इसे ऋण मुक्तेश्वर का मंदिर कहा जाता है। जाहिर है ऐसे महादेव जो कर्ज से मुक्ति दिलाए। मान्यता भी यही है कि कर्ज में दबे व्यक्ति को ऋणमुक्तेश्वर की पूजा-अर्चना से कर्ज मुक्ति मिलती है। मंदिर का परकोटा और सीढ़ियों तक का निर्माण इसी राशि से हुआ। इतना ही नहीं फिर भी राशि बच गई तो शिवालय सरोवर के पास एक बावड़ी बनवा दी गई। एक बात और, इस घटना के बाद खानाबदोश जीवन बिताने वाले बणजारे इतने अभिभूत हुए कि घुश्मेश्वर की इस नगरी को ही अपना स्थायी वास बना लिया। आज भी स्टेशन रोड पर काफी संख्या में बणजारों के परिवार हैं जो अपना वही पुश्तैनी कारोबार करते हैं। बणजारों में से कई तो खाड़ी देशों में भी जाकर आए हैं। भगवान घुश्मेश्वर की कृपा से इनमें से अधिकांश समृद्ध हैं और भाईचारे की अनूठी मिसाल पेश कर रहे हैं।

# जलहरी का ओर-छोर नहीं

ज्योतिर्लिंग की आए दिन फूलों से मनोरम झांकी होती है। बिल्वपत्र तो शिव की पूजा में खास है

## शिव के जलमग्न रहने का रहस्य

मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने विक्रम संवत 1179 फाल्गुन कृष्णा 13 सोमवार को जब मंदिर का निर्माण करा घुश्मेश्वर महादेव के इस ज्योतिर्लिंग की फिर से पूजा-अर्चना शुरू कराई तब से ही उन्होंने मंदिर की आराधना निमित्त पूजा विधान भी शुरू कराए थे। इनमें सहस्त्रघट अभिषेक, चार प्रहर आरती, अखंड ज्योति और प्रत्येक सोमवार घुश्मेश्वर महादेव के परिसर में रात्रि जागरण व महाशिवरात्रि पर मेले का आयोजन शामिल था। इतने लंबे समय तक कोई पूजा विधान अनवरत रूप से जारी रहे यह सचमुच अनूठी बात है। ज्योतिर्लिंग कुछ समय को छोड़कर आम तौर पर जलहरी में जलमग्न ही रहता है। माना जाता है कि शिव के शेष ग्यारह अन्य ज्योतिर्लिंगों का तेज भी इसमें समाहित है। इसलिए तेजमय शिवलिंग को शांत रखने के लिए जलमग्न रखना जरूरी हो जाता है। शायद पुरखों ने यही सोचकर इस ज्योतिर्लिंग को जलमग्न रखने की सोची होगी। बचपन से ही इस ज्योतिर्लिंग को नजदीक से देखता आया हूं। हमेशा ही यह जानकर अचरज करता था कि इस जलहरी का छोर कहां तक होगा? सचमुच पाताल तक? आज तक कोई इस जलहरी की थाह नहीं ले पाया। अंदर से बनावट भी ऐसी है कि चट्टानों के घेरे में यदि किसी ने हाथ डाल दिया तो निकलना मुश्किल हो सकता है।

घुश्मेश्वर महादेव के सहस्त्रघट अभिषेक के बाद पूरी रात्रि गर्भगृह में शिव इसी तरह से जलमग्न रहते हैं

चमत्कार को ही नमस्कार किया जाता है। इस पवित्र धरती पर यदि कोई चमत्कार नहीं होते तो शायद घुश्मेश्वर का यह धाम भी आज के स्वरूप में नहीं आ पाता। सवाल सिर्फ आस्था का है- कहते भी हैं न कि 'मानो तो गंगा मां हूं, न मानो तो बहता पानी'। जैसा कि मैंने बताया कि शिव का यह ज्योतिर्लिंग जलहरी में जलमग्न रहता है। केवल चार प्रहर आरती के वक्त ही इसे मंदिर के पुजारी खाली करते हैं। सबको आसानी से दर्शन हो जाए इसलिए कभी-कभार थोड़ा पानी कम कर ज्योतिर्लिंग का ऊपरी हिस्सा दिखने दिया जाता है। अलौकिक बात यह कि आम तौर पर यह जलहरी मुश्किल से पांच-सात घट (घड़ों) में लबालब हो जाती है लेकिन कभी ऐसा भी मौका आता है कि सैंकड़ों घट डालने पर भी शिवलिंग पर चढ़ाया जल कहां जाता है, पता ही नहीं चलता। माना जाता है कि पूजा-अनुष्ठान में कोई दोष रहने पर ऐसी स्थिति होती। बाद में तंदुल यानी चावल पूजन कर भगवान को संतुष्ट करने का प्रयास होता है तब जाकर पुरानी स्थिति आती है। मेरे अग्रज अवधेश जी पाराशर वर्ष 1925 की एक घटना का जिक्र करते हैं। यह मेरे प्रपितामह प्रताप जी पाराशर के समय का वाकया है। तब ठिकाने से मंदिर के भोग राग की व्यवस्था होती थी। ठिकाने के मुस्लिम कामदार ने यह कहकर मजाक उड़ाया तंदुल पूजन तुम पंडितों द्वारा की गई व्यवस्था है। तब प्रताप जी ने उसे चुनौती दी कि वह जलहरी को जलमग्न कर दिखाए। आश्चर्य! महज पांच-सात घड़ों में लबालब होने वाली इस जलहरी को वह काफी प्रयासों के बाद भी लबालब नहीं करा पाया। चमत्कार को देख वह कामदार तौबा कर उठा लेकिन बाद में उसे अपनी इस हिमाकत का काफी नुकसान उठाना पड़ा।

जलहरी कहां तक है इसका किसी को अंदाजा नहीं है। चट्टानों के बीच बनी इस जलहरी का भरना व खाली होना भी कम रोमांच का विषय नहीं है।

## सहस्त्रघट की महिमा

आराधना सच्चे मन से हो तो भगवान भी साथ होते हैं। वैसे तो कहते हैं कि भोलेनाथ तो भावना के ही भूखे हैं। उन्हें तो कोई श्रद्धा से जल अर्पित कर दे तो भी प्रसन्न हो जाते हैं। लेकिन शिव आराधना में सहस्त्रघट का अपना महत्व है। यों तो कमोबेश भगवान शंकर के सभी देवालयों में सहस्त्रघट अभिषेक होते हैं। सहस्त्रघट यानी एक हजार घड़ों से जलाभिषेक। सावन में ये अनुष्ठान ज्यादा ही होते हैं। भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग का तेज होने के कारण शिवाड़ में स्थित यह ज्योतिर्लिंग हमेशा ही जलमग्न रहता है। यहां सहस्त्रघट के आयोजन साल भर तक होते हैं। भक्तों की मनोकामना पूरी होने पर वे सहस्त्रघट अभिषेक करवाने का संकल्प लेते हैं। सावन में तो सहस्त्रघट के लिए साल भर पहले ही बुकिंग हो जाती है। सावन में जलमग्न शिवलिंग के दर्शन आसानी से हो सकें इसीलिए यथासम्भव दूध-दही का अभिषेक सहस्त्रघट पूजा के अलावा नहीं होता। बाहर से दर्शन करने के लिए गर्भगृह में दर्पण लगाया गया है।

अन्य शिवालयों के मुकाबले यहां सहस्त्रघट अलग तरीके से होता है। घुश्मेश्वर मंदिर के पुनर्निर्माण के वक्त ही यह तय कर दिया गया कि यहां सहस्त्रघट किस तरह से होगा। शिववीर सिंह चौहान ने जब घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के सहस्त्रघट अभिषेक की परिपाटी डाली होगी तब ही गर्भगृह में एक हजार घट अर्थात घड़ों का आकलन कर लिया गया होगा। जलहरी का अधिकांश जल यों तो गहराई में कहां तक जाता है इसका कोई ओर-छोर नहीं लेकिन फिर भी जलहरी के जलमग्न होने के बाद गर्भगह से बाहर पानी निकासी के लिए एक सुराख है। बाहर जल की निकासी का रास्ता परिक्रमा मार्ग पर है। चूंकि भगवान शंकर के अभिषेक का जल बाहर आता है इसलिए परिक्रमा मार्ग में जहां से इस पवित्र जल की निकासी होती है उसे गंगा स्वरूप में माना गया है। इस ज्योतिर्लिंग की परिक्रमा इसी गंगा की वजह से अधूरी ही लगती है क्योंकि गंगा को लांघने से दोष लगता है।

## गर्भगृह को चीरकर छूटे फव्वारे

बणजारे को मिले स्वर्णखण्ड से बावड़ी बनने के पहले तक सहस्त्रघट अभिषेक शिवालय सरोवर के पवित्र जल से ही होता होगा। सरोवर को दूषित होता देख स्थानीय शासकों ने मंदिर के दूसरे छोर पर तथा शिवालय सरोवर के किनारे विश्वम्भर की बावड़ी बनवाने की सोची होगी। धीरे-धीरे जब इस बावड़ी में भी जलदोहन ज्यादा होने लगा तो दशहरा मैदान के पास स्थित जुलाहों के कुएं से जलाभिषेक होने लगा। हम यूं ही जलदोहन करते रहे तो हो सकता है कि जलाभिषेक के लिए भी बोरिंग कराना पड़ जाए या फिर सार्वजनिक नलों का इस्तेमाल होने लगे। बहरहाल, यहां जो श्रद्धालु सहस्त्रघट अभिषेक कराता है उसकी ही उस दिन प्रमुख व आखिरी पूजा होती है। अभिषेक के दौरान गर्भगृह में जल-निकास का रास्ता बंद कर दिया जाता है और पूर्व निर्धारित माप यानी गौमाता की प्रतिमा तक के माप में गर्भगृह को जलमग्न कर दिया जाता है। मान्यता यह है कि यदि सच्चे मन से सहस्त्रघट अभिषेक हुआ है तो शाम को भरा गया यह जल अगले दिन मंगला आरती के वक्त तक ज्यों का त्यों रहेगा। सही भावना या सही धन के इस्तेमाल से पूजा नहीं हुई तो यह जलस्तर कुछ इंच से फुट तक कम हो सकता है। पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि वर्ष 1966 में ऐसा ही वाकया हुआ था जिसे देखने वाले आज भी मौजूद हैं। श्रद्धारहित होकर भरवाए गए ऐसे ही एक सहस्त्रघट के आयोजन में जलाभिषेक का जल गर्भगृह में ठहरा ही नहीं। हालत यह रही कि समूचा जल गर्भगृह की दीवारों को चीरता हुआ वेग के साथ बाहर फव्वारों की तरह आ गया। एक बूंद भी जल जलहरी में नहीं रहा। बाद में विधिवत तंदुल पूजन करवाकर सहस्त्रघट भरवाया गया तब जाकर आशुतोष भगवान प्रसन्न हुए।

## पंचामृत है इस जल में

किंवदंतियां अपनी जगह हैं, आंखो-देखी अपनी जगह। शिवालय के इस पवित्र जल का सेवन लोग बीमार होने पर कोई उपचार लेने से पहले करते हैं। किसान अपने खेतों में बुवाई से पहले इस पवित्र जल को खेतों में छिड़कते हैं ताकि उनकी फसल बेहतर हों। जल भी ऐसा जिसमें पंचामृत के साथ आक, धतूरा, चंदन, भंग सब कुछ है। मैंने ठिकाने के समय के एक तोपची पीरू चाचा को मंदिर में नियमित आकर इस जल का सेवन करते देखा है। बताते हैं कि तोप चलाते समय वे बुरी तरह झुलस गए थे। इस जल के इस्तेमाल से उनके जलने से हुए दाग काफी समाप्त हो गए थे। शिवभक्त नेत्रहीन श्रवण खटीक भी यहां नियमित दर्शन को आकर पवित्र जल का सेवन करते थे। पोखर कुम्हार जैसे भक्तशिरोमणि भी भोलेनाथ के अनन्य भक्त थे। पंचामृत वाले इस जल की महिमा तो वे लोग ज्यादा बता पाएंगे जो संतान सुख से वंचित थे लेकिन बाबा ने सुनी। असाध्य रोग से पीड़ित थे लेकिन अब राहत में हैं। गंगा की तरह लंबे समय तक सुरक्षित रहने वाले इस जल की महिमा ही ऐसी है कि दर्शनार्थी बोतलबंद जल को अपने साथ ले जाते हैं।

- शिवाड़ के ऐसे बीसियों लोग हैं जिन पर भगवान शंकर की असीम कृपा रही। मंदिर में नियमित दर्शन के लिए आने वाले लोग वर्ग-भेद से अलग होकर ज्योतिर्लिंग पर चढ़ाए जल का सेवन करते हैं

- शिव का पवित्र जल अपने खेतों में छिड़कने के बाद किसान को उम्मीद रहती है कि जमाना अच्छा रहने वाला है। यानी खेतों में पैदावार अच्छी होगी

मुख्य गर्भगृह का परिक्रमा मार्ग। यहां मंदिर का गर्भगृह नीचे से शिखर तक एक ही तरह की शिल्पकला पर आधारित है

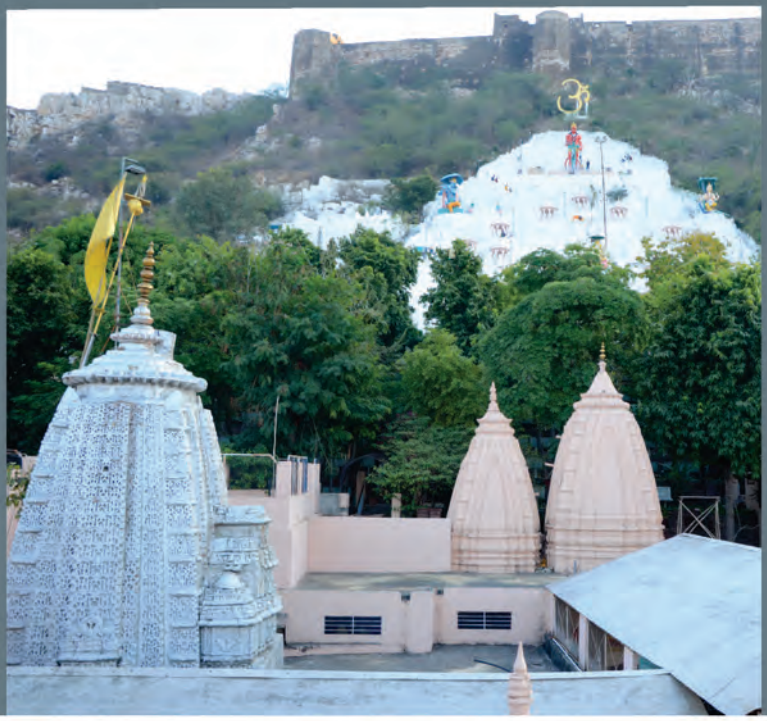

भगवान शंकर के
बारहवें ज्योतिर्लिंग
**घुश्मेश्वर महादेव**
के दर्शनार्थ पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का
शिव नगरी शिवाड़ में
**हार्दिक स्वागत**

**अनिल कुमार जैन** (शिवाड़ वाले)
अधिशाषी अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग,राजस्थान

**Exclusive Manufacturer of**
**Chocolate Redand Brown Sand Stone**

**Jai Bhawani**
**STONE & MINERALS**

24, Ashok Nagar, Bhilwara,
Ph. 0141-221049, Mob. 9414300042
Mail: umeshb_parashar@sify.com

**Bhawani shankar Parashar**

# ज्योति खंडित होना अपशकुन

हर पवित्र धार्मिक स्थलों पर कोई न कोई ऐसी खासियत होती है जो लोगों की नजर में अजूबा हो सकता है लेकिन श्रद्धालुओं के लिए असीम आस्था का परिचायक। हमारे आराधना स्थलों पर इनके आधार पर ही शकुन-अपशकुन का अंदाज लगाया जाता रहा है। चाहे जमाना (मौसम, मानसून आदि) कैसा रहेगा इसकी भविष्यवाणी हो या फिर किसी होनी-अनहोनी का अंदाज। ये सब इन्हीं खासियतों के आधार पर सटीक अनुमान का माध्यम बनते हैं। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में भी अखण्ड ज्योति करीब 900 साल से अनवरत रूप से प्रज्जवलित है। महमूद गजनवी के आक्रमण से ध्वस्त हुए शिवालय में जब विक्रम संवत 1179 यानी वर्ष 1122 में घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के पुनर्निर्माण और पूजा का दौर फिर शुरू हुआ तब से ही मंडावर के राजा शिववीरसिंह चौहान ने यहां अखंड ज्योति की शुरुआत भी कराई थी।

मेरे पुरखों की हस्तलिखित डायरी में इसका उल्लेख भी है। अखण्ड ज्योति के लिए ज्योतिर्लिंग के गर्भगृह में ऊपर बीचों-बीच एक खास ताक में इस ज्योति के नियमित प्रज्जवलित रहने की व्यवस्था तब से आज तक चली आ रही है। इस ज्योति को खंडित होने से बचाए रखने के हरसंभव प्रयास किए जाते हैं। फिर भी इंसान द्वारा संधारित ज्योति किसी कारणवश खंडित हो भी जाए तो कोई न कोई अपशकुन होने का संकेत होता है। मंदिर गर्भगृह में जहां अखंड ज्योति प्रज्जवलित है उसका स्थान पुराना ही है, सिर्फ नवनिर्माण के दौर में कॉच की नक्काशी का काम चारों तरफ दीवारों पर हुआ है। वहीं अखंड ज्योति के दोनों और त्रिशूल की आकृति व नागदेवता चित्रित किए गए हैं। ज्योति के ऊपर ऊँ उकेरा गया है। बरसों से चल रही परिपाटी को निभाए रखना मुश्किल होता है।

कई देवालयों में अखण्ड ज्योति जरूर मिलेगी। लेकिन ज्योति की जितने जतन से सार-संभाल घुश्मेश्वर महादेव के यहां करनी पड़ती है उतनी शायद अन्यत्र नहीं। कारण यही है कि ज्योति के खंडित होने से किसी अनहोनी का पूर्वाभास होने का सबब बना रहता है।

**अखंड ज्योति (इनसेट में) पिछले 900 साल से अनवरत जल रही है। ज्योति का खण्डित होना किसी अपशकुन का संकेत माना जाता है**

खास तौर से तब, जब उसमें आर्थिक मसला भी समाया हुआ हो। अनवरत जलने वाली इस ज्योति के लिए राजशाही के दौर में तो ठिकाने से ही घी की व्यवस्था होती थी। यह भी कम अचरज का विषय नहीं है कि यहां प्रतिदिन दोपहर में भगवान शंकर के जो भोग लगाया जाता है वह भी चूरमा-बाटी का होता है। सहस्त्रघट आयोजन में भी प्रसादी चूरमा-बाटी की ही होती है। अब कुछ लोग खीर-मालपुए का प्रसाद भी अर्पित करने लगे हैं। खैर, चर्चा अखंड ज्योति की चल रही थी। जैसा मैंने कहा कि यथासंभव यह ज्योति अखंड ही रहती है लेकिन यदि आंधी-तूफान या किसी अन्य असावधानी से खंडित हो भी गई तो दुनिया, देश, प्रदेश और यहां तक कि गांव व इसके आसपास के लिए कोई अप्रिय सूचना का संकेत होता है।

## अनिष्ट की घटनाएं गवाह

पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि अखंड ज्योति के खंडित होने के तत्काल बाद या पांच-सात दिन में अप्रिय घटना के बीसियों मामले हुए हैं। मैंने भी अपनी दादी से ऐसे कई किस्से सुने थे। वे बताते हैं कि पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के निधन के दिन 27 मई 1964 को देश भर में जबर्दस्त आंधी-तूफान आया था। कई कच्चे-पक्के मकान तबाह हो गए थे। तब भी यह अखंड ज्योति खंडित हो गई थी। इसके बाद इंदिरा गांधी व राजीव गांधी की हत्या के वक्त भी ऐसा ही हुआ। कई अन्य महापुरुषों के निधन, आंधी-तूफान और भूकंप से तबाही और यहां तक कि करगिल युद्ध के दौर में भी यह ज्योति खंडित हुई। इतना ही नहीं गांव में भी किसी ख्यातनाम व्यक्ति के निर्वाण का संकेत होता है तो यह ज्योति खंडित हो जाती है। शिवाड़ के इतिहास को संकलित करने वाले सेवानिवृत्त तहसीलदार स्व. बजरंग सिंह जी राजावत के पास ऐसी घटनाओं का ब्योरा लिपिबद्ध भी था लेकिन अब वह इधर-उधर हो गया। लेकिन सवाल यह भी कि जब ज्योति के खंडित होने के इतने खतरे हैं तो फिर इसे अनवरत जलाए रखने का इंतजाम क्यों नहीं? बचपन से इस अखंड ज्योति को कौतुहल से देखा करता था। मुझे लगता था कि यह मेरे सामने खंडित क्यों नहीं हो रही? शायद किंवदंतियां जो हैं उनका सत्यापन करना चाहता था। लेकिन यह भी सच है कि कई बार अनिष्ट की आशंका से भयग्रस्त हो खुद गर्भगृह में जाकर डगमगाती अखंड ज्योति को दुरुस्त करने की कोशिश भी की है। मंदिर की पूजा-अर्चना करने वालों का ही दायित्व है कि वे इस अखंड ज्योति की निगरानी करते रहें। इसीलिए शयन आरती के बाद भी बाकायदा तसल्ली की जाती है कि ज्योति के पूरी रात बुझने का खतरा तो नहीं है। तमाम सावधानियों के बावजूद ज्योति खंडित हो भी जाए तो पुज्यारी को श्रद्धालुओं को जानकारी देनी होती है। हां, इतना जरूर है कि इस अखंड ज्योति को मानवीय तौर पर दुरुस्त करने के दौरान समानांतर दूसरी ज्योति जरूर जलाई जाती है ताकि ज्योति का अखंड स्वरूप बना रहे।

- देश के पहले प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू के निधन के ऐन पहले यह ज्योति खंडित हो गई थी
- अखण्ड ज्योति को खण्डित होने से बचाने के तमाम जतन किए जाते हैं फिर भी शकुन-अपशुकन की यह परिपाटी लोगों की आस्था से जुड़ी है
- अखण्ड ज्योति साधना का माध्यम भी है। गर्भगृह के ठीक सामने रामेश्वर मंदिर से श्रद्धालु त्राटक साधना करते हैं
- यह अखंड ज्योति सहकार के जरिए किसी परिपाटी को जीवित रखने का अनुपम उदाहरण है

## खुशहाली की रोशनी

मैंने पहले बताया कि अखंड ज्योति के लिए घी की व्यवस्था राजशाही के दौर में राजघरानों से होती थी। अब भी यह इंतजाम सांकेतिक रूप से है। लेकिन सालों से बिना जात-पांत के भेद के अखण्ड ज्योति के लिए घी की यह व्यवस्था बरसों से ग्रामीण भी खुद ही करते आ रहे हैं। प्रतिदिन यहां दर्शन करने आने वाले कई महिला-पुरुषों का यह नियमित क्रम है कि वे अपने साथ 'जोत' के लिए घी भी लाते हैं। शिवाड़ में रहने वाले कई परिवार नियमित रूप से इस अखंड ज्योति के घी वास्ते अंशदान करते हैं। भले ही वह एक छोटी कटोरी ही क्यों न हो? सहकार के जरिए किसी परंपरा को अनवरत बनाए रखने का यह अनुपम उदाहरण हैं। साथ ही उस आस्था का भी जिसमें श्रद्धालु भोले के दरबार में खड़े होकर ज्योतिर्लिंग के साथ-साथ इस अखंड ज्योति को निहारने का जतन जरूर करते हैं।

# सरोवर ने दिया शिवालय नाम

घुश्मा की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उस तालाब को शिवालय सरोवर के नाम से विख्यात होने का वरदान दिया था जिसमें घुश्मा नित्य पार्थिव शिवलिंगों को पूजा-अर्चना के बाद विसर्जित करती थी। तालाब तब काफी विशालता लिए हुए होगा क्योंकि आबादी शायद कहीं दूर थीं। जलहरी में अवस्थित होने के कारण यह ज्योतिर्लिंग आक्रांताओं की नजर से सुरक्षित रहा। पुनर्निर्माण के बाद भी कभी घने जंगल से आच्छादित इस स्थान पर लोग सिर्फ दर्शन करने ही आ पाते होंगे। समय के साथ-साथ यहां बसावट भी होने लग गई होगी। शुरुआती बसावट पश्चिम दिशा में नाट्यशाला द्वार (अब नटवाड़ा गांव) की तरफ से शुरू हुई होगी। दूसरी तरफ किशना खाती का तारापुर (आज टापुर) गांव रहा होगा। शिवालय सरोवर के साथ-साथ यहां हुई बसावट को भी शिवालय के नाम से ही पुकारा जाने लगा। मध्यकाल में इस स्थान को शिवाल तथा बाद में शिवाड़ कहा जाने लगा। यहां पुराने शासकों की ओर से दिए गए ताम्रपत्रों और विद्वानों की रचना में शिवालय का जिक्र कम है शिवाल और शिवाड़ का ज्यादा।

घुश्मा जिन शिवलिंगों को इस सरोवर में विसर्जित करती थी वे यहां विक्रम संवत 1895 यानी 1838 ई. में तालाब की खुदाई में मिले। शिवाड़ के तत्कालीन धर्मप्राण शासक शिव सिंह राजावत ने इस शिवालय की खुदाई एक तरह से तब के अकाल राहत कार्यों के तहत कराया था। शिवालय सरोवर की खुदाई के दौरान इसमें एक कुण्ड निकला। इसमें अलग-अलग आकृति के शिवलिंग निकले। बाद में तालाब में दूसरी जगह भी खुदाई कराई गई तो वहां भी हजारों की संख्या में शिवलिंग निकले। तब ठाकुर शिवसिंह ने जयपुर से पंडितों को बुलवाया। उन्होंने अनुमान लगाया कि ये वे ही पार्थिव शिवलिंग है जिन्हें पूजा के उपरांत घुश्मा विसर्जित करती थी। शिव के वरदान के कारण ये प्रस्तररूप में बदल गए हैं। खुदाई में निकले इन शिवलिंगों में से कुछ को शिव मंदिर में प्रतिष्ठित कराया गया था। विक्रम संवत 1897 में मंदिर के गर्भगृह के ठीक सामने एक और देवालय परिसर बनकर तैयार हुआ। तब बाईस शिवलिंगों को एक जलहरी में प्रतिष्ठित कराया गया। आसपास के गांवों के शिवालयों में भी इन शिवलिंगों को लोग प्रतिष्ठित कराने के लिए ले गए। शिवाड़ में दो तालाब हैं एक को बड़ा तालाब कहते हैं और दूसरा यह पवित्र सरोवर है।

- शिवालय सरोवर की खुदाई में प्राप्त शिवलिंगों की मंदिर परिसर में ही बने ताड़केश्वर मंदिर में प्रतिष्ठा कराई गई

- ठाकुर शिवसिंह जी की रानी साहिबा हाडी जी ने भी विश्वेश्वर मंदिर में ये शिवलिंग प्रतिष्ठित कराए

इस सरोवर को छोटा तालाब कहते हैं। जब शिवालय सरोवर बना तब बाकायदा घाट भी बनाए गए ताकि स्वच्छता का ध्यान रखा जाए। कभी शिवालय सरोवर में कमल खूब खिलते थे। इन्हीं कमल के पुष्पों से शिव की पूजा अर्चना होती थी। तालाब के बीचों बीच पहले एक चबूतरा था जिसे मगर का चबूतरा कहते थे।

पिछले सालों में भोलेनाथ की मेहरबानी से इन तालाबों में पानी की अच्छी आवक होने लगी है। बरसात की कमी-बेशी का असर दोनों सरोवरों पर भी पड़ता है। जब जलभराव सबाब पर होता है तो इस इलाके की छटा अलग ही दिखती है। छोटा तालाब यानी शिवालय सरोवर का जल उतना ही पवित्र है जितना गंगाजल। शिवाड़ का बच्चा-बच्चा आज कुशल तैराक है तो इन सरोवरों की वजह से ही। जल के महत्व को समझते हुए पिछले पांच साल से यहां सावन में किसी एक दिन हर साल शिवालय सरोवर की महाआरती का आयोजन होता है। शिवाड़ समाज जयपुर की पहल पर होने वाली इस महाआरती में बड़ी संख्या में श्रद्धालु जुटते हैं।

**हर साल सावन में शिवालय सरोवर की महाआरती होती है। शिवाड़ समाज जयपुर की ओर से आयोजित महाआरती में उमड़े श्रद्धालु**


# दिनेश कुमार मुकेश कुमार जैन

(क्लॉथ मर्चेंट)

श्रीमती मनफूली जैन

## गम्भीरमल अशोक कुमार जैन

शिवाड़, जिला सवाईमाधोपुर

## पूजनीय माता-पिता का आशीर्वाद, सदैव हमारे साथ

श्री गंभीरमल जैन,
पूर्व सरपंच, ग्राम पंचायत शिवाड़,
जिला सवाईमाधोपुर, राजस्थान

विनीत- अशोक कुमार, सुभाष कुमार, सुरेन्द्र कुमार, दिनेश कुमार, मुकेश कुमार, जितेन्द्र कुमार

मो.नं. - 9414204539, 9414074351

# शिवसागर : प्रायश्चित बना वजह

शिवाड़ के बड़े तालाब यानी शिवसागर को तत्कालीन शासक ने भगवान शिव व अपने नाम पर शिवसागर का नाम दिया था। वैसे तो शिवाड़ के दोनों तालाबों के नाम शिव पर आधारित हैं लेकिन आकार के हिसाब से लोग इन्हें बड़ा तालाब और छोटा तालाब ही पुकारने लगे हैं। इस तालाब की नींव तत्कालीन शासक ठा. शिवसिंह राजावत के कार्यकाल में संवत 1898 यानी वर्ष 1841 में डाली गई। शिवसागर सरोवर की जानकारी जुटाते समय दिलचस्प जानकारी यह मिली कि प्रायश्चित के परिणाम स्वरूप यह तालाब बनाया गया। बताते हैं कि शिवाड़ में एक ब्राह्मण परिवार के पारिवारिक विवाद में निर्दोष ब्राह्मण को सजा देने के साथ तत्कालीन शासक ने उसे खरी-खोटी सुना अपमानित कर दिया था। ब्राह्मण अपमान नहीं सह सका और आवेश में आकर उसने किले के एक खुले दरवाजे से नीचे छलांग लगा जीवनलीला खत्म कर दी। पुराने लोग बताते हैं कि देवगिरी के घने जंगल में ब्राह्मण का शव पेड़ों में ही अटक गया था। काफी मशक्कत के बाद ब्राह्मण का शव बरामद हुआ। किंवदंती है कि रात को सोते वक्त राजा को ऐसा महसूस हुआ कि कोई उसकी छाती पर बैठ भयभीत कर रहा है। राजा ने पंडितों को बुलाया। पूछा तो उन्होंने ब्रह्महत्या का प्रायश्चित करने को कहा। इसके बाद पंडितों की सलाह पर ही यह विशाल तालाब बना। तालाब में पक्की पाल और घाट बनाए गए। इस पाल की मजबूती का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारी बरसात के दौर में भी पाल से जल रिसाव नहीं हो पाया। उस समय तालाब के किनारे जगह-जगह पक्के घाट भी बनवाए गए थे। इस तालाब के किनारे ठाकुर शिवसिंह ने शिवमंदिर भी बनवाया जो आज भी मौजूद है। ठाकुर शिवसिंह जी की पत्नी रानी हाडी जी ने भी शिवमंदिर के पास ही रघुनाथ मंदिर बनवाया।

धर्मप्राण शासक सदैव प्रजा का ध्यान रखने वाले होते हैं। शिवाड़ के शासकों ने भी तालाब-कुएं व बावड़ियां खूब बनवाई। ठाकुर शिवसिंह राजावत ऐसे ही शासकों में से एक थे।

- तालाब जहां कहीं भी होंगे वहां के निवासियों को तैराकी का स्वाभाविक गुण आ ही जाएगा। शिवाड़ में भी दो सरोवरों की वजह से आज बच्चा-बच्चा तैराक है

- शिवसागर सरोवर के आसपास का दृश्य अलग ही छटा बिखेरता है। तालाब के किनारे लगे खजूर के वृक्ष सैलानियों का मन मोहने वाले हैं। इस तालाब में जलभराव बारहोंमास रहता आया है

- वास्तुशास्त्र भी कहता है कि जिस स्थान पर जलाशय होंगे वहां के निवासी धन-धान्य से परिपूर्ण होंगे

इन दोनों मंदिरों में कलश जेठ बुदी 13 संवत 1899 में चढ़ाया गया। उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार तालाब आठ बरस में संवत 1906 यानी 1849 ईस्वी में बनकर पूरा हुआ। शिवसिंह जी ने तालाब और देवगिरी की तलहटी के बीच आमों का बगीचा भी लगवाया था। वैसे भी ठाकुर शिवसिंह सचमुच प्रजावत्सल थे। अपने जीवनकाल में भी उन्होंने ब्राह्मणों को सैंकड़ों बीघा कृषि भूमि दान की थी। जिस ब्राह्मण की वजह से यह तालाब बना उनके वंशज वासुदेव परिवार के रूप में आज भी शिवाड़ में हैं। तब उनके परिवार को खेती के लिए जमीन भी दी गई। सर्वधर्म समभाव का यह अनुपम उदाहरण ही कहा जाएगा जब शिवसागर सरोवर के मध्य वह भव्य मस्जिद ज्यों की त्यों रहने दी गई जो महमूद गजनवी ने शिवालय पर आक्रमण के वक्त बनवाई थी। तब यहां गजनवी की सेना का पड़ाव डाला गया था। शिवसागर सरोवर आज भी शिवाड़ के लिए जीवन रेखा है। तालाब के पानी से सिंचाई भी होती है। पक्की पाल और किनारे खजूर के पेड़ों की कतार इस तालाब की अलग ही शोभा बढ़ाती है। तालाब की पाल के दूसरे छोर से रेललाइन गुजरती है। जयपुर-मुम्बई मार्ग के यात्रियों के लिए रेल से दिखता विशाल किला और यह बड़ा तालाब किसी कौतूहल से कम नहीं होता। घुश्मा की शिवभक्ति को चिरस्थायी रखने के लिए पिछले सालों में शिवालय सरोवर (छोटे तालाब) के बीच में पंचमुखी शिव व घुश्मा की तपस्या को दिखाती प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की गई हैं। सावन पर पंचमुखी शिवलिंग का जलाभिषेक होता है। ईश कृपा से अच्छी बरसात हो तो इन प्रतिमाओं तक तैरकर ही पहुंचा जा सकता है। तालाब के दो छोरों को जोड़ मंदिर मार्ग के रास्ते पहुंचने के लिए पुलिया भी बनीं हैं जिससे जयपुर की ओर से आने वाले यात्रियों को मंदिर तक पहुंचने में आसानी होने लगी है। अब मंदिर तक पहुंचने के लिए देवगिरी पर्वत के पीछे होते हुए बायपास बन गया है। एक कवित्त में कहा गया है कि-

*ग्राम है शिवाड़ मध्य, कचहरी चारभुजा,*
*जगत में प्रसिद्ध, कलियान कष्ट टारा है।*
*किला है अखंड मंड, भूप महताब सिंह*
*सागर शिवसागर, स्वच्छ गंगधारा है।।*

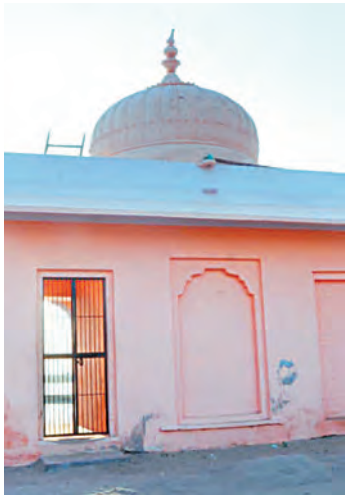

शिवसागर सरोवर के किनारे मंदिर

## पृथ्वीराज चौहान के वंशजों का जुड़ाव

प्राचीन तथ्यों के मुताबिक विक्रम संवत 1179 यानी 1122 ईस्वी में भले ही शिवाल, मंडावर के राजा शिववीरसिंह चौहान के अधीन था लेकिन इससे पहले यह स्वतंत्र रियासत थी। शिवाल में तब चौहान वंश का शासन था। यहां के शासक शिवराज सिंह चौहान के कोई पुत्र नहीं था। उसने अपनी इकलौती पुत्री रतन का विवाह चाकसू के राजकुमार वालादित्य गुहिल से किया था। चाकसू तब बड़ा नगर और गुहिलों की राजधानी थी। शिवाल के राजा शिवराज सिंह चौहान के कोई संतान नहीं होने के कारण मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने शिवाल को अपने राज्य में मिला लिया। पृथ्वीराज चौहान के बाद पृथ्वीराज के एक पुत्र रमसी/रेनसी चौहान भी रणथम्भौर रहने लगा था। रमसी का तब शिवाल पर भी शासन था। रमसी का पुत्र वल्हण देव हुआ। वल्हण के दो पुत्र वागभट्ट और प्रहलाद देव हुए। प्रहलाद देव का पुत्र वीरनारायण संवत 1283 यानी 1226 ईस्वी में अल्हमश से युद्ध करता हुआ मारा गया। तब रणथम्भौर और शिवाल गुलाम वंश में चले गए। तब मालवा के शासक और प्रहलाद देव के भाई वागभट्ट ने भारी सेना के साथ रणथम्भौर पर आक्रमण कर दिया। फिर से रणथम्भौर व शिवाल पर चौहानों का कब्जा हुआ जो हमीरदेव के शासन तक रहा। बाद के वर्षों में शिवाड़ पर क्रमशः धीरावत, नरुका व राजावतों का शासन रहा। रजवाड़ों की समाप्ति तक यहां राजावतों का ही शासन रहा। जाहिर है शिवालय क्षेत्र सदैव इतिहास के पन्नों में प्रमुख स्थान रखता आया है।

# बालाजी को लाए सिद्धपुरुष

शिवाड़ के बारे में पुरखों व बुजुर्गों से सुनी कई बातें अब भी अविश्वसनीय सी लग सकती है। पर जब प्रमाण में उनसे जुड़े दूसरे तथ्य बताए जाते हैं तो श्रद्धा के साथ विश्वास करना ही पड़ता है। जब आस्था ऐसी अलौकिक घटनाओं को स्वीकार करने लगती है तो तमाम किस्से सत्य के करीब नजर आते हैं। ऐसी ही एक घटना घुश्मेश्वर मंदिर परिसर के अंतिम छोर में स्थित बालाजी के मंदिर से जुड़ी है। आगे के अध्याय में आप जानेंगे कि शिवाड़ आए एक सिद्धपुरुष माधवदास जी महाराज ने यज्ञ के दौरान हेड़े (आसपास के गांवों का विशाल भोज) में यहां तलाई के पानी से ही मालपुए तैयार करवा दिए थे। यह घटना वर्ष 1928 के आसपास की थी। तब शिवाड़ के पाटोदिया (खंडेलवाल) परिवार के बिरधीचंद की ओर से दिए गए एक पीपे घी को माधवदास महाराज ने इस तलाई में डालने को कहा था और उसके बाद ही पूरी तलाई के पानी ने घी का काम किया था। मंदिर परिसर में स्थापित बालाजी की प्रतिमा का इन्हीं बाबा माधवदास से जुड़ाव है।

- जिसे मृत मानकर अंतिम संस्कार की तैयारी हो रही हो वह जिंदा हो जाए तो इसे भगवान की असीम अनुकम्पा ही कहेंगे

- बाबा माधवदास ने छिपोलाई मंदिर के यज्ञ में तलाई के पानी से भोजन सामग्री बनवा दी थी

कहते हैं कि यायावरी करते बाबा माधवदास बारह साल बाद फिर शिवाड़ में आए थे। शिवाड़वासियों ने उनका जबर्दस्त स्वागत किया। पर बाबा तो शायद किसी और ही निमित्त से शिवाड़ आए थे। आते ही उन्होंने सेठ बिरधीचंद के बारे में पूछा जिसने यज्ञ में एक पीपा घी का सहयोग दिया था। बाबा का इतना पूछना था कि सन्नाटा पसर गया। किसी ने हिम्मत कर जवाब दिया- बाबा, सेठ तो आज ही स्वर्ग सिधार गए। उन्हें श्मशान ले जाने की तैयारी हो रही है। बाबा तत्काल बोले- अरे! ऐसे कैसे जा सकता है बिरधीचंद। मुझे वहां ले चलो। अभी तो उसे एक काम और करना है। खैर, झोली-कमंडल लटकाए बाबा बिरधीचंद के घर तक पहुंच गए। कहते हैं कि उनकी अर्थी तैयार थी बस परिजनों के इंतजार में देरी हो रही थी। बाबा पहुंचे तो गांव वालों पर बरस पड़े। अरे, इसे कहां ले जा रहे हो? यह तो जिंदा है। इतना कहते ही बाबा ने अपने कमंडल से बिरधी की देह पर जल छिड़का और उसे आवाज लगाई। सब हैरान! बिरधीचंद उठ खड़े हुए। बाबा का अभिवादन किया। परिवार में करुण क्रंदन का माहौल बाबा की जयकार से गूंज गया।

किस्सा यही खत्म नहीं हुआ। बाबा ने तब अपने झोले में लाई एक छोटी सी बालाजी की प्रतिमा निकाली। बिरधी को आदेश दिया- 'घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में इस प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराओ, उसके बाद चले जाना।' बाबा तो यह कहकर वहां से चले गए और बिरधीचंद बाबा के आदेश की पालना में जुट गए। उन्होंने ही बालाजी का यह मंदिर बनवाया और बाबा जिस छोटी प्रतिमा को साथ लाए थे उसकी विधि-विधान से प्रतिष्ठा करवाई। शिवाड़ में अब भी पाटोदिया परिवार रहते हैं। वे अपने पुरखों से सुने इस घटनाक्रम की पुष्टि करते हैं। लेकिन जैसा मैंने कहा- लिपिबद्ध न होने पर इतिहास के तथ्य कई बार आधे-अधूरे रहते हैं। ऐसे में उनके सत्य के नजदीक रहने पर भी शंका होती है। बताते हैं कि बिरधीचंद दो साल तक और जीवित रहे। अलौकिक घटनाओं का कोई ओर-छोर नहीं और इसे चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करता है। ऐसे में कोई मृतप्रायः हो चुके व्यक्ति की देह में प्राण लौट आना असंभव नहीं।

बालाजी की इस प्रतिमा को मैं शुरू से ही श्रद्धा भाव से इसलिए भी देखता रहा क्योंकि मेरे दिवंगत छोटे बाबा यानी मेरे पूज्य पिताजी के काका मूलचंद जी पाराशर इस मंदिर के गर्भगृह में घंटों साधना करते थे। लोग आज भी इसे मूल जी महाराज का मंदिर ज्यादा कहते हैं। बालाजी की यह प्रतिमा चूंकि मुख्य परिसर के अंतिम छोर पर है। इसलिए प्रत्येक दर्शनार्थी अन्य देवालयों के दर्शन करते हुए यहां जरूर शीश नवाता है। बालाजी की इस छोटी प्रतिमा के चारों तरफ इस तरह से सिंदूर लेप हो रहा है कि यह सिंहासन जैसा लगता है। प्रतिमा तो इतनी ही है जो बाबा माधवदास के झोले में आसानी से समा गई होगी। बाबा माधवदास इस प्रतिमा को कहां से लाएं होंगे यह भी रहस्य ही है।

वक्त के साथ बालाजी की इस प्रतिमा के दोनों तरफ राम-सीता व हनुमान की अन्य प्रतिमा भी स्थापित कर दी लेकिन मूल प्रतिमा वही है जो बीच में नजर आती है। आज भी भगवान घुश्मेश्वर की भोग आरती के वक्त प्रतापेश्वर मंदिर व इस बालाजी प्रतिमा के सम्मुख भी नियमित भोग अर्पित किया जाता है। यानी ज्योतिर्लिंग के साथ इन दोनों स्थानों पर भी भोग लगाया जाता है। शायद इस परिपाटी के पीछे भी कोई अलग ही किस्सा हो।


पारीक बर्फ फैक्ट्री
व वाटर सप्लायर्स

हमारे यहां ऑफिस, शो रूम,मकान-दुकान पर डोर-टू-डोर चिल्ड मिनरल वाटर सप्लाई की जाती है। शादी-पार्टी में बर्फ व मिनरल वाटर की आर्डर सप्लाई भी की जाती है।

सतीश पारीक (शिवाड़ वाले)

मो. 9667536187, 9782756991,
7610001009,9667413431

सम्पर्क करें: पारीक बर्फ फैक्ट्री, सूर्य कॉलोनी, पुलिस थाने के सामने, चाकसू

Jai Ghushmeshwar
LORD SHIV
BLESSED
YOU
ALWAYS

SAINI ENTERPRISES
Deales in: Bajri (Grawals), Powder,
Submerecible pump and electric wire)
Plot No-9, Uniyaroo Ji Ka Rasta, Third Crossing ,
Near Sarswati Kund School, Chandpol Bazaar Jaipur.

Pro. Lal Chand Saini,
(Shiwar Wale)
Mo. 9929097073

# बावड़ी में रहस्यमयी शिवलिंग!

कोई वक्त था जब विश्म्भर की बावड़ी लबालब रहती थी। यानी कोई भी सिर्फ मुंडेर पर खड़ा रहकर पानी ले सकता था। जब कभी जलस्तर कम होता तो इन सीढ़ियों से उतरकर पानी लाया जा सकता था

राजशाही के दौर में मंदिर व कुएं खूब बने। शिवाड़ में दो बावडियों को मैं लंबे समय से देख रहा हूं। एक पटेल की बावड़ी और दूसरी बिसमर की बावड़ी। बिसमर की बावड़ी का मूल नाम विश्वम्भर की बावड़ी है। विश्वम्भर यानी भगवान शंकर। इस बावड़ी में पैंदे तक आने-जाने के लिए गोलाकार सीढियां बनी हैं लेकिन दिलचस्प तथ्य यह है कि आज तक किसी ने इसका पैंदा नहीं देखा। अनावृष्टि के दौर में भले ही इसका जलस्तर काफी नीचे चला जाता था। सदानीरा रहने वाली इस बावड़ी का आकार किसी जलहरी जैसा है और पैंदे में करीब तीन फुट ऊंचाई का शिवलिंग भी स्थापित है। बावड़ी उतनी ही पुरानी है जितनी मुख्य मंदिर परिसर का बना प्राचीन परकोटा। एक बणजारे को मिले स्वर्ण खंड से घुश्मेश्वर मंदिर परिसर में परकोटा व ऋणमुक्तेश्वर मंदिर का निर्माण हुआ था। संवत 1571 यानी 1514 ईस्वी यानी आज से ठीक 507 बरस पहले जब बणजारे को मिले स्वर्ण खंड से जुटाई गई रकम में कुछ बाकी रह गई तो शिवाड़ के तत्कालीन शासक ठा. गोपाल सिंह नरूका ने शिवालय सरोवर के किनारे यह बावड़ी बनवाई। भगवान भोलेनाथ के जलाभिषेक के लिए यह बावड़ी बनवाई गई थी।

बावड़ी के चारों ओर घुमावदार सीढ़ियां है। इस बावड़ी के पास ही बनी पोसरी उस दौर की है जब शिवाड़ के तत्कालीन शासक शिव सिंह ने बड़ा तालाब यानी शिवसागर का निर्माण कराया था। शैव मत के राजा शिवसिंह ने जब शिवसागर तालाब बनवाया तो उनकी वैष्णव मतावलंबी रानियों ने बड़े तालाब पर रघुनाथ मंदिर तथा शिवालय सरोवर के दोनों छोर पर दो देवालय बनाए थे। इन्हें छोटी और बड़ी पोसरी कहा जाता है। बड़ी पोसरी सारसोप की ओर जाने वाले मार्ग पर शिवालय सरोवर के दूसरी ओर है। वस्तुतः तब यहां विशाल शिवालय सरोवर के हिस्से के रूप में ही छोटी व बड़ी 'पोखरी' यानी तालाब का छोटा रूप रही होगी। पोखरी को ही बाद में पोसरी कहा जाने लगा। और इनके किनारे बने मंदिरों को भी इसी नाम से पुकारा जाने लगा होगा। ऐसी मेरी मान्यता है। छोटी पोसरी में सीताराम व बड़ी पोसरी में राधा-कृष्ण की प्राचीन प्रतिमा है। इन मंदिरों में आज भी वैष्णवमार्गी महंत परंपरा है। हालांकि समय के साथ-साथ इन देवालयों में दर्शनार्थियों की आवक कम होती जा रही है।

छोटी पोसरी में इमली का काफी पुराना पेड़ आज भी है। कभी यह इलाका घना जंगल था पर अब आबादी पसर गई। बचपन में इस इमली के पेड़ के पास सांझ के वक्त जाने में डर लगता था। कारण वही, भूत-प्रेत का मन में बैठा खौफ। यहां के महंत जगन्नाथ दास महाराज पर्यावरण प्रेमी थे और इस इलाके से किसी को पेड़ की डाल तक नहीं तोड़ने देते थे। करीब 50 बरस पहले जब शिवाड़ में पाइप लाइनों से जलापूर्ति की व्यवस्था शुरू हुई तब से ही एक समय लबालब रहने वाली इस बावड़ी के सुनहरे दिन खत्म हो गए। लंबे समय तक घुश्मेश्वर महादेव का जलाभिषेक पवित्र शिवालय सरोवर से ही होता था। लेकिन जब मानव प्रवृत्ति के मुताबिक जब सरोवर दूषित होना शुरू हो गया होगा तो यह बावड़ी जलाभिषेक के लिए बनाई गई। इसका नाम विश्वम्भर की बावड़ी रखा गया। मैंने बचपन में इसी बावड़ी के जल से सहस्त्रघट अभिषेक होते देखा है। मेरे पूज्य पिताजी बताते हैं कि तब के दौर में सिर्फ पाराशर समाज के महिला-पुरुष ही सहस्त्रघट के दौरान इस बावड़ी से जल भर के ले जाते थे। महिलाएं तक सीढ़ियों से नीचे उतर कर घड़े-मटकों में जल भर के लाती थीं। अब बावड़ी का जलस्तर नीचे रहने लग गया है।

बिसमर की बावड़ी के पास छोटी पोसरी का निर्माण राजा शिवसिंह की रानियों ने कराया। इस पोसरी के बाहर विशाल इमली का पेड़ काफी पुराना है

- बावड़ी के तल में अवस्थित शिवलिंग अभी तक रहस्य बना हुआ है। क्योंकि कई बार इस बावड़ी को मोटर लगाकर पूरी तरह खाली कराने का प्रयास हुआ लेकिन आज तक किसी को इस बावड़ी का पैंदा नजर ही नहीं आया

- बिसमर की बावड़ी सदानीरा है। इसीलिए जलदाय विभाग ने भी शुरू में इसी बावड़ी को गांव में जलापूर्ति व्यवस्था के लिए चुना

www.ironworld.in

# Iron World

## (A World of Iron)

**| Varmala Concept | Stage, Entry, Mandap | Iron Fabrication |**

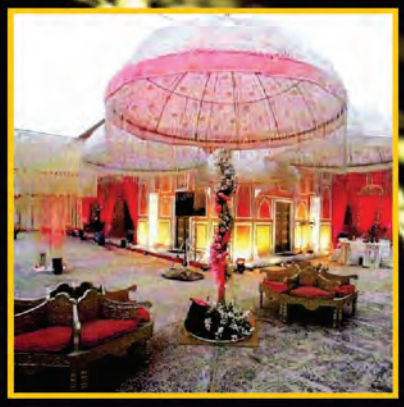

Being counted as the leading manufacturers and suppliers of the industry, we are offering a wide array of Wedding Mandap Decorations, Designer Steel Chairs, SS Beds, Stage Decorations, Wedding Entrance Decorations, Steel Living Room Furniture, Outdoor Wedding Decorations and SS Railings. These products are known for their fine finish and elegant looks.

**Ashok Jain (Shiwar Wale)**

**M : 9314249758, 9929547922**

B-14, Sudershanpura Industrial Area, Opp. Shiv Mandir, 22 Godam, Jaipur - 302 006, Rajasthan, Phone: 0141-2212042

E-Mail: Ironworld.ashokjain@gmail.com

## खण्ड-तीन

# मंदिर परिसर में प्रमुख देवालय

महमूद गजनवी के आक्रमण से पूर्व घुश्मेश्वर महादेव का मंदिर निश्चित ही भव्य रहा होगा। करीब एक सदी तक लोगों की नजरों से ओझल होने के बाद जब यहां पुनर्निर्माण की शुरुआत हुई तब से मंदिर को मौजूदा स्वरूप में आने में वक्त लगा है। शिवाड़ के शासकों ने मंदिर परिसर में ही अन्य देवालयों का निर्माण करा धर्मपरायणता का परिचय दिया है। इस खण्ड में पढ़ें पिछले पांच सौ साल के दौरान मंदिर में निर्माण के दौर की कथा। और, यह भी कि मंदिर व इसके पीछे आकर्षक घुश्मेश्वर उद्यान का सपना कैसे हुआ पूरा?

# अष्टांग योग आधारित शिल्प

घुश्मेश्वर महादेव मंदिर गजनवी के आक्रमण से पहले निश्चित ही भव्य रहा होगा। मंदिर के पुनर्निर्माण के दौरान खुदाई में मिले पुरावशेष इसकी कहानी कहते हैं। जब मंडावर के शासक शिववीर सिंह चौहान ने मौजूदा मंदिर का निर्माण कराया तो सिर्फ गर्भगृह, गणेशपोल और गर्भगृह के ठीक सामने का सभागार बनाया गया था। सभागार को सोलह खंभों पर बनाया गया। इसे नौचोकिया कहा जाता है। दसवीं शताब्दी के स्थापत्य कला का यह मंदिर आदर्श नमूना है। समाधि प्रिय शिव से जुड़ाव योग बल से ही संभव माना जाता है। इसीलिए महादेव के इस मंदिर में वास्तुकला के दौरान अष्टांग योग का पूरा ध्यान रखा गया है। देवालय में प्रवेश के लिए बनी पहली सीढ़ी से ही देव-प्रतिमा का साक्षात्कार शुरू हो जाता है। बरसों से शिवाड़ के घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में भी प्रवेश के वक्त सबसे पहले श्रद्धालु पहली सीढ़ी को स्पर्श कर हाथ को अपने माथे से लगाते हैं। यह माना जाता है कि गोपुरम यानी मुख्य प्रवेश द्वार की पहली सीढ़ी पर ही घुश्मेश्वर के पैर विराजमान हैं। पहले मंदिर के प्रवेश द्वार तक जाने वाली सीढ़ियां उन्हीं पत्थरों से बनी हुई थी जिन पत्थरों का इस्तेमाल इस मंदिर के पुनरुद्धार के वक्त मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान के काल में हुआ था। बाद में इन सीढ़ियों पर आरोली के इमारती पत्थर जड़ा दिए गए। मंदिर ट्रस्ट ने जब नवनिर्माण का काम हाथ में लिया तो मंदिर की इन सीढ़ियों पर मार्बल जड़वा दिया। मंदिर में प्रवेश के लिए इक्कीस सीढ़ियां चढ़नी होती है। इनमें पांच सीढ़ियां अष्टांग योग के सूत्र यम की और पांच ही नियम की है।

**मंदिर की नौ चोकियां ही सभा मंडप था। तब की आबादी के हिसाब से यह सभागार पर्याप्त था। सबसे पहले इसी सभागार में वेद पाठ, रुद्री महिमन व भोलेनाथ की स्तुतियों का उद्घोष हुआ**

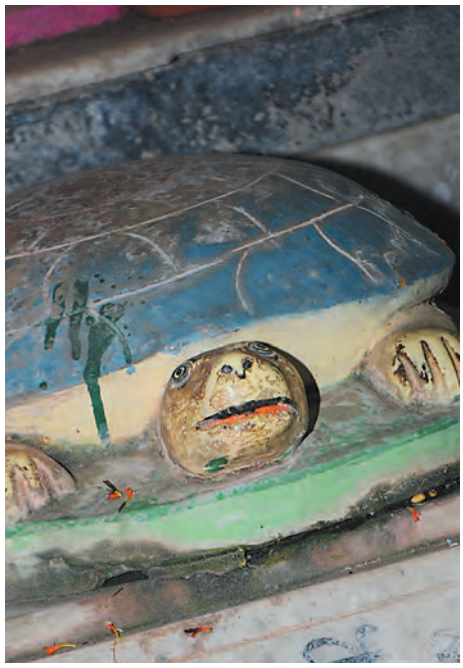

■ घुश्मेश्वर महादेव का समूचा मंदिर परिसर ही शिल्पकला के हिसाब से अष्टांग योग पर आधारित है। क्योंकि ज्योतिर्लिंग के स्थान पर अष्टांग योग की प्रधानता को अनिवार्य माना जाता है

■ श्रद्धालुओं को असुविधा नहीं हो इसलिए मुख्य घंटा जहां लगा है वहां से प्राचीन नंदी प्रतिमा को हटाकर अब खुले चौक में नंदी की विशाल प्रतिमा स्थापित कर दी गई है। कभी गर्भगृह में प्रवेश करते वक्त देहरी पर विराजमान रहे कछुए का स्थान भी बदला है

## ■ नंदी के कान में क्या कहते हैं श्रद्धालु

अष्टांगिक योग के तीसरे चरण में योग आता है जिसके लिए साक्षात नंदी भगवान घुश्मेश्वर के सामने विराजमान है। भगवान तक पहुंचने के मार्ग में यों तो कोई रोक नहीं है लेकिन शिव का वाहन नंदी श्रद्धालुओं की बात भोले तक पहुंचाने का माध्यम रहता है। इसीलिए दर्शन के पहले व बाद में इन्हीं नंदी के कान में लोग अपने मन की बात कहते हैं। शायद वही सब कुछ जिसे पाने की इच्छा वे प्रभु से करते हैं। सही भी है। भगवान तक पहुंचने के लिए पहले उनके भक्तों को मनाना पड़ता है। पहले मंदिर की नौ चोकियों वाले सभागार में ही नंदी की प्रतिमा अवस्थित थी। श्रद्धालुओं को असुविधा नहीं हो इसलिए मुख्य घंटा जहां लगा है वहां से प्राचीन नंदी प्रतिमा को हटाकर अब खुले चौक में नंदी की विशाल प्रतिमा स्थापित कर दी गई है। घुश्मेश्वर की पूजा-अर्चना के बाद श्रद्धालु इसी नंदी के समीप एकत्र होकर आरती करते हैं। योग का चौथे स्वरूप प्राणायाम की मुद्रा में मंदिर परिसर में बजरंगबली विराजमान है। अगले योग यानी प्रत्याहार का आशय है बाह्यजगत को भीतर की और सिकोड़ लेना। इसका प्रतीक है कछुआ। पहले मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करते वक्त ही देहरी पर यह कछुआ विराजमान था। नवनिर्माण के दौर में अब यह कछुआ मंदिर परिसर में ही दूसरी तरफ स्थापित कर दिया गया है। अष्टांग योग के अगले स्वरूप में धारणा के रूप में गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर गणेश जी विराजमान है जिनकी पूजा सबसे पहले होती है। सातवें योग के रूप में ध्यान आता है जिसके तहत माता पार्वती, ज्योतिर्लिंग के साथ प्रतिष्ठित की गई है। योग का आखिरी स्वरूप समाधि है । यह तो साक्षात भोलेनाथ के लिए है जो जलहरी में जलमग्र रहकर समाधिस्थ रहते हैं। भगवान भोलेनाथ के दर्शन के बाद भी दर्शनार्थी लौटते वक्त सीढ़ियों पर अवश्य बैठते हैं। इस प्रार्थना के साथ कि-

*अनायासेन मरणं विनादैन्येन जीवनम।*
*देहान्ते तव सायुज्यम् देहि मे परमेश्वरम ।।*

अर्थात बिना तकलीफ के हमारी मृत्यु हो और हम कभी भी बीमार होकर बिस्तर पर नहीं पड़ें। हम कष्ट झेलकर मृत्यु को प्राप्त ना हों यानी चलते फिरते ही हमारे प्राण निकल जाएं। हे परमेश्वर ऐसा वरदान हमें देना। ■

# देखें जयपुर के देवालय की छवि

- परम शिवभक्त ठाकुर शिवदान सिंह ने जयपुर के प्रतापेश्वर मंदिर में प्रतिष्ठित शिव प्रतिमाओं की तरह शिवाड़ में भी शिव परिवार की प्रतिष्ठा करवाई

- प्रतापेश्वर मंदिर में विराजित शिव परिवार और विशाल जलहरी को हाथी के होदे पर रखकर जयपुर से शिवाड़ लाया गया था

राजा-महाराजाओं का दौर सचमुच ऐसा ही था जिसमें शासक वर्ग जो ठान लेता था उसे पूरा करके ही छोड़ता था। घुश्मेश्वर मंदिर परिसर में बने प्रतापेश्वर जी के मंदिर में भगवान शिव व माता पार्वती के साथ समूचे शिव परिवार की बैठी हुई आदमकद प्रतिमा को देखकर हमेशा अचरज करता रहा हूं कि आखिर इतनी विशाल प्रतिमाएं इस मंदिर तक कैसे पहुंचाई गई होंगी? न केवल इन प्रतिमाओं को लेकर जिज्ञासा रही बल्कि यह भी जानना चाहता था कि प्रतापेश्वर मंदिर के इस शिव परिवार में जलहरी पर जो विशाल शिवलिंग है वह आखिर आया कहां से? और इस शिवलिंग की जलहरी यहां तक कैसे पहुंची होगी? इस मंदिर का निर्माण शिवाड़ के तत्कालीन ठा. शिवदान सिंह ने विक्रम संवत 1917 यानी वर्ष 1860 में कराया और तब ही यहां इन प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई।

घुश्मेश्वर मंदिर परिसर में बने प्रतापेश्वर मंदिर में ये प्रतिमाएं पहले स्थापित की गई और बाद में मुख्य द्वार बनाया गया

आज से करीब पौने तीन सौ साल पहले जब ठा. भैंरू सिंह ने शिवाड़ का किला बनवाया तब से ही यहां शांति का दौर शुरू हो गया था। इसके बाद स्थानीय शासकों का जयपुर राजघराने से खासा जुड़ाव हो गया। यदि कभी युद्ध भी हुए तो स्थानीय ठिकानेदारों ने जयपुर रियासत का ही प्रतिनिधित्व किया। इस दौर में शासकों व उनकी रानियों का ध्यान इस पुराण प्रसिद्ध घुश्मेश्वर मंदिर को विस्तार देना ही रहा। यह भी संयोग रहा कि बाद के दौर में अधिकांश स्थानीय शासकों का नाम शिव के नाम पर ही रहा। रोचक तथ्य यह है कि प्रतापेश्वर की इन प्रतिमाओं का जुड़ाव जयपुर से है। इतिहास को जानने वालों को पता है कि जयपुर के तत्कालीन शासक सवाई प्रतापसिंह ने विक्रम संवत 1851 यानी वर्ष 1794 में जयपुर के सिटी पैलेस के पास चांदनी चौक में प्रतापेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया था। उन्होंने यह मंदिर अपने ऊपर आए संकट को टालने के लिए बनवाया था। इस मंदिर के निर्माण के करीब साठ बरस बाद शिवाड़ में ठाकुर शिवसिंह के उत्तराधिकारी के रूप में ठाकुर शिवदान सिंह का शासन शुरू हो गया था। ठाकुर शिवदान सिंह ने भी शैव मत परंपरा को पोषित करने की अपने पुरखों की परिपाटी को बनाए रखा। उस दौर में वे जयपुर गए होंगे तो उन्होंने प्रतापेश्वर का मंदिर देखकर यह ठान लिया कि ऐसी ही प्रतिमाएं शिवाड़ के घुश्मेश्वर मंदिर में भी होनी चाहिए। उन्हें यह भी जानकारी मिली थी कि जयपुर के प्रतापेश्वर मंदिर की प्रतिमाएं चमत्कारी है। इसलिए उन्होंने जयपुर में ही ऐसी ही प्रतिमाएं बनवाने का फैसला किया जैसी जयपुर के प्रतापेश्वर महादेव मंदिर में थीं।

**जयपुर के चांदनी चौक में प्रतापेश्वर के इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1794 में तत्कालीन शासक सवाई प्रतापसिंह ने कराया**

ठा. शिवदान सिंह करीब 16 माह तक जयपुर ही रहे थे। शिवाड़ आते ही उन्होंने घुश्मेश्वर महादेव मंदिर की चारदीवारी में ही एक शिखरबंद मंदिर बनवाया जिसके बीचों-बीच बड़ा शिवलिंग पधराया। शिव परिवार की जो प्रतिमाएं यहां प्रतिष्ठित कराई गई उनमें भगवान शिव व मां पार्वती के अलावा गणेश व कार्तिकेय की प्रतिमाएं भी हैं। एक-एक शिवगण भी दोनों तरफ प्रतिष्ठित किए गए। प्राप्त दस्तावेज के मुताबिक फाल्गुन बुदी 13 संवत 1917 को महाशिवरात्रि के दिन इन प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई। अगले दिन शिवरात्रि के मेले में आने वाले सभी श्रद्धालुओं को ठाकुर साहब की तरफ से जिमाया गया। इस मंदिर का नामकरण भी जयपुर की तरह प्रतापेश्वर महादेव ही किया गया।

शिव परिवार का मानवीय स्वरूप प्रतापेश्वर मंदिर में देखकर ऐसा लगता है जैसे साक्षात संवाद हो रहा हो। सचमुच ये प्रतिमाएं सम्मोहित करने वाली हैं।

सवाल इन प्रतिमाओं के बनने से ज्यादा यह था कि इन्हें जयपुर से शिवाड़ कैसे लाया गया होगा। वर्ष 1860 के दौर में न तो आज जैसे परिवहन साधन थे और न ही कोई क्रेन आदि। इन सभी प्रतिमाओं को विशेष बैलगाड़ी में लाया गया था। बड़ी समस्या सफेद संगमरमर से एक ही शिला से बनी ऊंची व लंबी जलहरी की थी जिस पर श्याम वर्ण का बड़ा शिवलिंग स्थापित किया जाना था। पुराने दस्तावेज के मुताबिक एक हाथी पर होदे की जगह विशेष रूप से इस जलहरी को रखकर जयपुर से शिवाड़ लाया गया था। प्रतिमाएं और जलहरी को गर्भगृह में पहले स्थापित किया गया और बाद में मुख्य द्वार बनवाया गया। आज भी बिना दरवाजे को चौड़ा किए प्रतिमाओं और जलहरी को बाहर नहीं निकाला जा सकता। जयपुर व शिवाड़ के शिव परिवार की प्रतिमाओं की मुख मुद्रा व बनावट में वक्त के साथ फर्क जरूर है। जिस शिवलिंग को प्रतिष्ठित करने के लिए खास तौर से जलहरी बनवा कर जयपुर से मंगवाई गई वह शिवलिंग, शिवालय सरोवर की खुदाई से निकला था। हो सकता है कि यह वह मुख्य शिवलिंग होगा जिसकी घुश्मा नामक ब्राह्मणी नियमित आराधना करती होगी। संभवतः यह शिवलिंग विसर्जित किए जाने वाले पार्थिव लिंगों में नहीं था। समय के साथ यह मुख्य शिवलिंग भी सरोवर में ही समा गया होगा। शिवाड़ में प्रतापेश्वर का यह मंदिर जयपुर की तर्ज पर ही प्रतापेश्वर कहलाया।

जयपुर के प्रतापेश्वर मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यदि यहां महामृत्युंजय महामंत्र का पाठ कराया जाए तो किसी की जान पर आया संकट टल सकता है। शिवाड़ के प्रतापेश्वर मंदिर के बारे में ऐसी कोई किवदंती तो नहीं है लेकिन शिव परिवार को यह मानव स्वरूप शिवाड़ जैसे स्थान पर होना सम्मोहित ही करता है। प्रतापेश्वर के इसी मंदिर के गर्भगृह में बैठकर परम शिवभक्त ठा. गुमानसिंह राजावत ने घुश्मेश्वर पर कवित्त लिखे। उनकी अधिकांश काव्य साधना यहीं हुई थी।


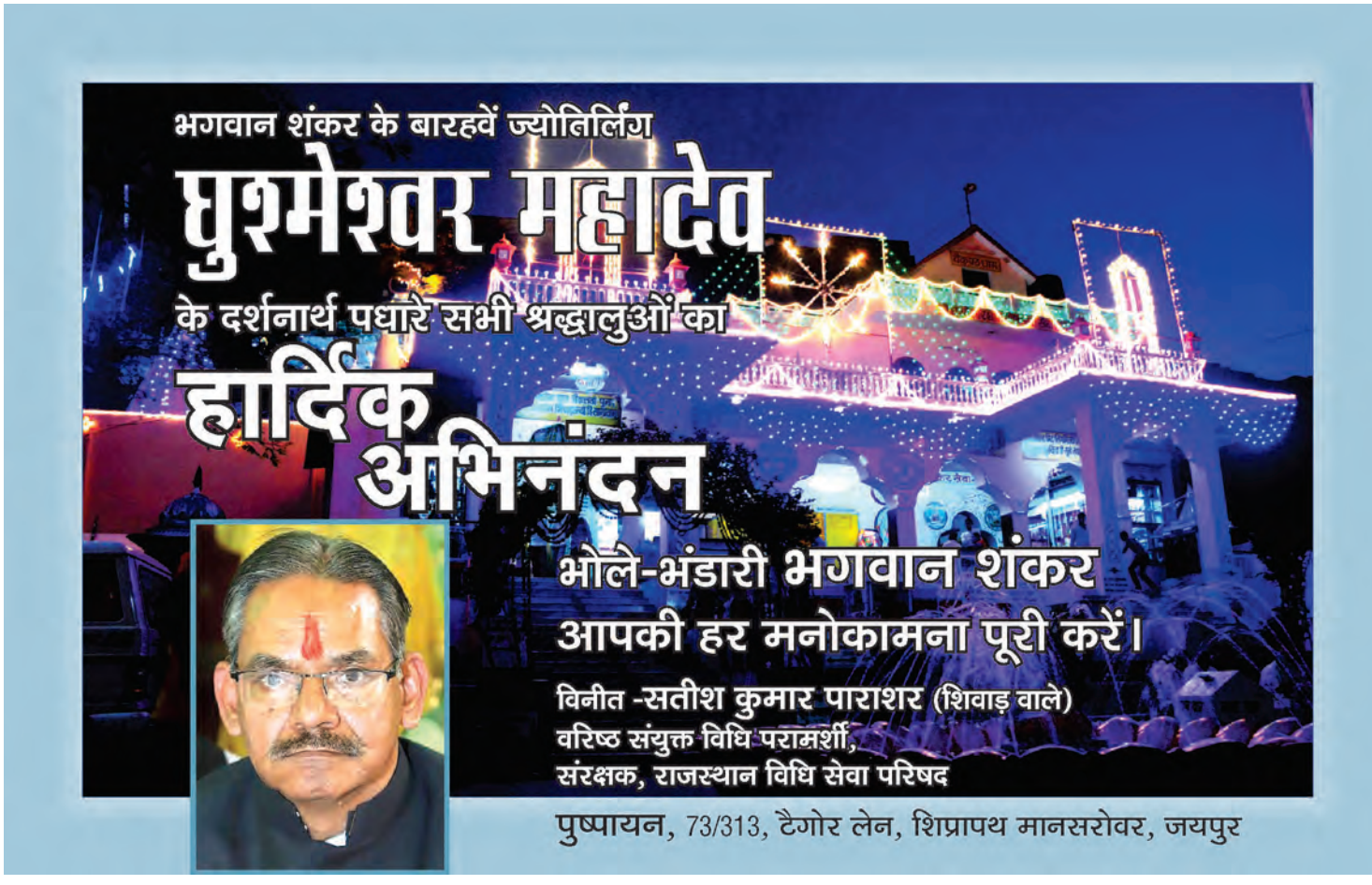

# नागदेवता का प्राचीन स्थान

पुराण प्रसिद्ध घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में कोई भी कोना ऐसा नहीं जिसका अपना इतिहास नहीं रहा हो और कोई भी देव प्रतिमा ऐसी नहीं जिससे जुड़ी अलौकिक घटनाएं न हों। हां, इतना जरूर है कि सभी किस्से-कहानियां लिपिबद्ध नहीं हो पाती। इसीलिए कई बार कुछ दंतकथाएं हमारे पुरखों के साथ ही चली जाती हैं। लेकिन जब किसी किस्से में चमत्कार का भाव हो तो श्रद्धा खुद-ब-खुद जागृत होने लगती है। ऐसा ही किस्सा मंदिर परिसर में बने नागदेवता के स्थान का है। यह स्थान कब से हैं इसका किसी को मालूम नहीं लेकिन जब मंदिर परिसर में आज जैसा निर्माण नहीं हुआ था तब भी नागदेवता की बांबी मौजूद थी। कहते हैं कि महाशिवरात्रि के दिन तो निश्चित रूप से नागदेवता घुश्मेश्वर महादेव के गर्भगृह में आते हैं और महादेव के दर्शन करते हैं। पुराने लोगों ने नागदेवता को मुख्य ज्योतिर्लिंग के लिपटे हुए कई बार देखा है। नागदेवता के इस स्थान को सिंघा बाबा का स्थान कहा जाता था। यह नामकरण सिंघा बाबा क्यों हुआ इसका किसी को पता नहीं। लेकिन बरसों से नागदेवता घुश्मेश्वर महादेव के मंदिर में आते रहते हैं। कुछ लोगों की मान्यता है कि नागदेवता रोज ही भगवान घुश्मेश्वर मंदिर के दर्शनार्थ आते हैं लेकिन भीड़भाड़ की वजह से अब वे मध्यरात्रि बाद आते हैं। दर्शनार्थियों को यहां कभी-कभार नागदेवता के दर्शन हो जाते हैं। उनके पैरों तक में अनजाने में आ जाते हैं लेकिन आजतक किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। लेकिन कहते यही हैं कि नागदेवता के दर्शन किस्मत वालों को ही होते हैं।

**मान्यता है कि नागदेवता रोज ही घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ आते हैं। नागेश्वर महादेव मंदिर में नागदेवता का स्थान**

## दर्शन देते हैं मणिधारी नागदेवता

मुझे स्मरण है कि आज से पचास बरस पूर्व मंदिर में जब इतना निर्माण नहीं हुआ था, मुख्य ज्योतिर्लिंग की परिक्रमा के पीछे वाले हिस्से में घने कंडीर के पेड़ लगे हुए थे। कंडीर के पुष्पों से ही घुश्मेश्वर महादेव की अर्चना होती थी। आज नौ चौकियां में जहां जगदम्बा मां की प्रतिमा लगाई हुई हैं वहां पहले मंदिर की आरती में काम आने वाली घंटी-झालरें रखी रहती थीं। कहते हैं कि एक बार मंदिर की नौ चौकियों में महेश्वर वाले पंडित जी की कथा हुई थी। तब लोगों ने आंखों से देखा है कि नागदेवता पूरी कथा के दौरान इन झालरों के आसपास बैठते और कथा समाप्त होने पर लौट जाते थे। किसी को नुकसान कभी नहीं पहुंचाया। यह करीब पच्चीस बरस पहले की बात है। कहते हैं कि सावन के दौरान भी एक मणिधारी नागदेवता यहां यदा-कदा श्रद्धालुओं को दर्शन दे जाते हैं। मंदिर में निर्माण कार्य होने पर जब परिसर से कंडीर के पेड़ों को हटा दिया गया तो नागदेवता के उस स्थान जहां बांबी बनी हुई है अब पक्का निर्माण करा दिया गया है।

नागपूजा का अपना महत्व है। शिव का तो श्रृंगार ही नागदेवता हैं। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में नागदेवता का प्राचीन स्थल लोगों की आस्था का केन्द्र है ।

नागदेवता ने यहां श्रद्धालुओं को दर्शन तो दिए लेकिन कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया

यहां अब नागेश्वर महादेव मंदिर बनाकर अन्य देव प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठापित की गई है। समूचे परिसर में अब सब जगह पक्का निर्माण हो गया है। मंदिर की हरियाली अब घुश्मेश्वर उद्यान में अलग ही छटा बिखेरती है। पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि करीब तीस-चालीस बरस पहले तो गर्भगृह में एक दिलचस्प वाकया हुआ। सांध्यकालीन आरती का वक्त हो गया था। मंदिर पुजारियों ने आरती की सभी तैयारी कर रखी थी। लेकिन यह क्या? गर्भ गृह के भीतर ज्योतिर्लिंग के नागदेवता लिपटे थे। हालांकि ऐसा पहले भी हुआ होगा लेकिन डर तो डर ही है। किसी की आरती करने की हिम्मत नहीं हुई। तब मेरे छोटे बाबा मूलचंद जी पाराशर जो मूल जी महाराज के नाम से ख्यात थे, उन्हें बुलाया गया। मूल जी महाराज ने नागदेवता से आग्रह किया- बाबा, आरती कर लेने दो, कोई गलती हो गई हो तो माफ करो। चमत्कार! तत्काल नागदेवता वहां से परिक्रमा के रास्ते होते हुए अपनी बांबी में चले गए।

पुरुषोत्तम जी एक और आंखों देखी घटना का जिक्र करते हैं। वे बताते हैं कि 31 अक्टूबर 1984 को जिस दिन देश की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई उस दिन भी नागदेवता प्रतापेश्वर मंदिर के बाहर आकर बैठ गए थे। करीब आधे घंटे तक टस से मस नहीं हुए। कहते हैं कि नागदेवता कभी-कभी काल रूप में भी दर्शन देते हैं। हो न हो इस घटनाक्रम से कोई जुड़ाव रहा हो। लेकिन घटना के समय मौजूद लोग बताते हैं कि इंदिरा गांधी की हत्या का समाचार ज्यों ही फैला, नागदेवता चुपचाप वहां से चले गए। किस्से कहानियां और उनकी प्रमाणिकता को हो सकता है कि संदेह के दायरे में भी रखा जाए। लेकिन जब चश्मदीद कुछ बयां करते हैं तो सत्यता को प्रमाणित करने की जरूरत नहीं रह जाती। अब नागदेवता के स्थान को बाकायदा पूजा स्थल के रूप में चिन्हित कर दिया गया है। यहां श्रद्धालु नागदेवता को नियमित दूध-खीर का भोग भी लगाते हैं। नागपंचमी को तो इस स्थान पर दिन भर विशेष पूजा अर्चना व अनुष्ठान होते हैं। आज भी गाहे-बगाहे श्रद्धालुओं को नागदेवता के दर्शन हो ही जाते हैं। कभी खुद के स्थान पर तो कभी परिक्रमा मार्ग में या फिर परिसर में कहीं भी। ■

# शिवभक्त शीशदान चारण

शक्ति की भक्ति की यह अनूठी कथा है जिसमें ताक में विराजमान (दांए) मां पार्वती की इस प्रतिमा को शिवाड़ के शीशदान चारण अपने घर से रोज घुश्मेश्वर महादेव मंदिर तक सिर पर बंधी पगड़ी पर ऐसे रख कर लाते -ले जाते थे , जैसे विमान में ला रहे हों। शीशदान अशक्त हुए तो उनके परिजनों ने यह प्रतिमा स्थायी रूप से यहां प्रतिष्ठित करा दी ।

रामेश्वरम महादेव के गुफानुमा गर्भगृह में विराजमान मां पार्वती की प्रतिमा (ताक में)

सत्रहवीं शताब्दी के आते-आते शिवाड़ में नरूका वंश का पतन हो गया। यह धीरावत राजपूतों के अधिकार में आ गया। यहीं से मंदिर परिसर में अन्य दूसरे देवालयों के बनने का दौर शुरू हुआ। धीरावत वंश में कुंवर केशरी सिंह धीरावत, घुश्मेश्वर के अनन्य भक्त थे। अपने शासन के दौरान उन्होंने साम्राज्य विस्तार भी किया। रणभूमि में जाने से पहले वे घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग का विधिवत पूजा-अनुष्ठान करते थे। केशरी सिंह नरुका के बारे में कहते भी हैं कि भगवान शिव की कृपा से कभी उन्हें युद्ध में पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। अपनी एक विजय की खुशी में उन्होंने घुश्मेश्वर महादेव के गर्भगृह के ठीक सामने पूर्व में देखता हुआ रामेश्वरम महादेव का मंदिर बनाया। इस मंदिर का शिखर विशेष आकृति लिए हुए हैं तथा परिसर में मौजूद अन्य देवालयों के मुकाबले सबसे ऊंचा है। वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया विक्रम संवत 1725 को यहां रामेश्वरम शिवलिंग की भव्य समारोह में प्राण प्रतिष्ठा की गई। शिवाड़ ठिकाने के अभिलेखागार से उपलब्ध जानकारी के मुताबिक यहां पाराशर पुजारियों को कृषि भूमि भी दान में दी गई।

रामेश्वरम का यह मंदिर एक छोटे गर्भगृह में गुफानुमा स्थान पर है। इसके ठीक बाहर विश्वेश्वर महादेव का मंदिर है जिसे 22 शिवलिंगों के नाम से जानते हैं। रामेश्वरम मंदिर से जुड़ी एक रोचक जानकारी भी साझा करना चाहूंगा। आज से करीब डेढ़ सौ साल पहले यहां चारण परिवार में शीशदान चारण हुआ करते थे जो घुश्मेश्वर महादेव के अनन्य भक्त थे। अपने घर पर उन्होंने मां पार्वती की प्रतिमा स्थापित कर रखी थी। नियमित पूजा के बाद वे प्रतिदिन पार्वती की इस छोटी प्रतिमा को अपने सिर पर रखते और चारों और पगड़ी बांध इसे विमान का रूप देकर घुश्मेश्वर के दर्शनार्थ आते थे। मां पार्वती की इस प्रतिमा को घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के सामने रख फिर लौटने पर यही क्रम दोहराते थे। उनकी यह नित्य क्रिया लोगों के लिए कौतुक व श्रद्धा भाव जगाने को काफी होती थी। बाद में उनके परिजनों ने रामेश्वरम मंदिर की एक खाली ताक में ही प्रतिमा को विराजित करा दिया। शिवाड़ में चारण परिवार आज भी निवास करते हैं।

रामेश्वरम मंदिर से जुड़ा एक तथ्य ओर। साधना के नियमों के अनुसार अखण्ड ज्योति साक्षात्कार के लिए निश्चित दूरी व ऊंचाई जरूरी है। रामेश्वरम का यह मंदिर भी अन्य देवालयों से ज्यादा ऊंचे शिखर वाला तो है ही, मुख्य मंदिर के गर्भगृह में अखण्ड ज्योति के स्थान के ठीक सामने है। साधना का क्रम इसी तरह का है कि पहले रामेश्वरम मंदिर के इस गुफानुमा गर्भगृह मे बैठकर ज्योति से जुड़ाव महसूस किया जाता है। प्राचीनकाल से ही साधक धीरे-धीरे इस दूरी को कम करते-करते दो तीन चरणों में अखण्ड ज्योति के थोड़ा और नजदीक पहुंच दो से तीन चरणों में अपनी साधना को पूरी करते हैं। त्राटक साधना का यह स्वरूप वैसे हर किसी के बस की बात नहीं है। क्योंकि अखण्ड ज्योति से साक्षात करना भी काफी मुश्किल भरा व श्रमसाध्य होता है। लेकिन यह सच है कि रामेश्वरम के इस मंदिर में बैठकर शिव आराधना करते वक्त साधक में ऊर्जा का अद्भुत संचार होता है। आज भी नियमित पूजा करने वाले कई साधको के आराधना का स्थल रामेश्वरम महादेव का यही गुफानुमा स्थान है। इस गुफा में एक बार में एक ही व्यक्ति का प्रवेश संभव है। ■

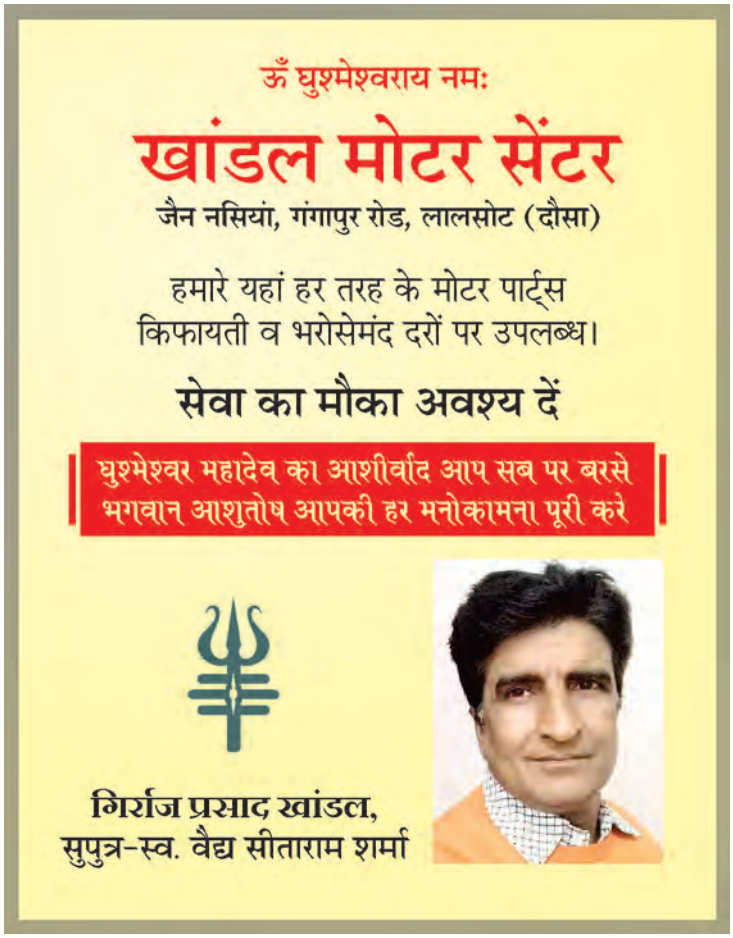

# 12 ज्योतिर्लिंगों का दर्शन पुण्य

ऐसी मान्यता है कि शिव के पहले ज्योतिर्लिंग सोमनाथ और आखिरी ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव के एक साथ दर्शन कर लिए जाएं तो सभी बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्य मिलता है।

सोमनाथ नामक दर्जी ने गणेश पोल के तिबारे में इस एक अन्य गर्भगृह का निर्माण करा सोमनाथ शिवलिंग की प्रतिष्ठा करवाई

संवत 1571 यानी 1514 ईस्वी में देवगिरी पर्वत के स्वर्ण का होने की चमत्कारिक घटना ने ज्योतिर्लिंग की ख्याति को बढ़ा दिया था। लेकिन यहां आवागमन के साधनों का विकट अभाव लंबे समय तक रहा। इसीलिए मंदिर का व्यापक प्रचार नहीं हो पाया। गांव वालों की जितनी भी हस्तलिखित पोथियां थीं वे ही इसके इतिहास को संरक्षित करती रहीं। शिवाड़ के ऐसे ही विद्वतजन गंगाबिशन जी सोती की हस्तलिखित पुस्तक में गणेश पोल में ही स्थापित किए गए सोमनाथ मंदिर के निर्माण की कथा का जिक्र है। दिलचस्प यह है कि भगवान शिव के पहले ज्योतिर्लिंग सोमनाथ की प्रतिकृति को यहां प्रतिष्ठित कराने वाले धर्मप्राण सज्जन का नाम भी सोमनाथ दर्जी (नामदेव) था। घुश्मा की कथा श्रवण से प्रेरित होकर सोमनाथ दर्जी ने अपने संतान होने की मनौती पूरी होने पर मंदिर का निर्माण विक्रम संवत 1637 यानी 1580 ईस्वी में कराया।

सोती जी की हस्तलिखित पुस्तिका में दर्ज है कि शिवाड़ निवासी सोमनाथ दर्जी के कोई संतान नहीं थी। इस वजह से वह काफी दुखी रहता था। जब उसने घुश्मा-सुधर्मा की कथा सुनी तो प्रार्थना की। साथ ही मनौती मांगी कि उसे भी संतान सुख मिला तो यहां सोमनाथ को प्रतिष्ठापित करेगा। वह घुश्मेश्वर की पूजा अर्चना में भक्तिभाव से लीन रहने लगा। ईश कृपा से उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इसके बाद उसने यहां सोमनाथ शिवलिंग की प्रतिष्ठा कराई। मंदिर में शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा बाद में हुई। मान्यता यह भी है कि पहले ज्योतिर्लिंग सोमनाथ और बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव के एक साथ दर्शन करने पर सभी बारह ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्य मिलता है। ठीक वैसे ही जैसे हनुमान चालीसा की पहली व आखिरी चौपाई पढ़ने पर पूरी हनुमान चालीसा पढ़ने का लाभ मिलता है। इसीलिए गणेश पोल में जाने वाले श्रद्धालु पहले वहीं सोमनाथ व साथ ही घुश्मेश्वर के दर्शन कर यह पुण्य कमाते हैं।

देखा जाए तो घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के अलावा इस मंदिर परिसर में कोई सर्वाधिक प्राचीन देव विग्रह है तो वह गणेश जी की प्रतिमा है। यह गणेश पोल में विराजित हैं। देवयोग से गणेश जी की इस प्रतिमा को भी आक्रांता नुकसान नहीं पहुंचा पाए। यह प्रतिमा दक्षिणमुखी है। इस प्रतिमा की पुरानी वेदी की जगह मार्बल वेदी मेरे पूज्य पिताजी पं. नहनूलाल जी पाराशर ने कोई 45 बरस पहले बनवाई थी। गणेशपोल के समीप ही चमत्कारेश्वर महादेव का दुर्लभ शिवलिंग भी प्रतिष्ठित किया गया है। चक्की के पाट के जैसी लगने वाली गोलाकार जलहरी में स्थापित इस शिवलिंग के बारे में माना जाता है कि यह द्रविड़कालीन है। गजनवी के आक्रमण के बाद सुरक्षा के लिहाज से यह शिवलिंग पंडितों ने जमीन में दबा दिया होगा। वर्ष 1998 को खुदाई में यह शिवलिंग निकला तो 21 जून 1999 में इसे चमत्कारेश्वर महादेव का नाम देते हुए प्राण प्रतिष्ठा करा दी गई।

मंदिर के पुनर्निर्माण के वक्त घुश्मेश्वर महादेव के पूजन से पहले मंदिर की उत्तर की ओर एक तिबारा बनाया गया था। इसमें गणेश जी की स्थापना कर पहले विधि-विधान से गणपति की पूजा की गई थी


AARAV MULTISPECIALITY CLINIC

Near SBI Bank, Durgapura Government Dispensory, Durgapura, Jaipur, Mail: jainmanoj37@gmail.com

Specially Concern In:
- Diabetes (CCEBDM)
- Hypertension (CCMH)
- COPD & Astma (CCCA)
- Pediatrics (Ex.- JR LNJP Hospital)
- Comprehhensive Abortion Care(CCAC)
- Thyroid (CCMDT)
- CVD & Stroke (CCCS)

Dr. Manoj Kumar Jain
Mo. 8058361381,
M.B.B.S., M.D. (Gen. Physician)
Senior Medical Officer,
SMS Hospital, Jaipur

Paribhasha Creation

www.paribhashacreation.com "CRAFT OF PERFECTION"

Manufacturer of Floral Jewellery & Accessories, Wedding Giveaways, Handicrafts

Abhilasha Jain
9214521703, 8830356489

38, Surya Nagar, Taroo Ki Koot, Tonk Road, Jaipur, Rajasthan

# M/S AJIT GOYAL

## AA CLASS PWD, MES,
## GOVT. CIVIL CONTRACTOR

# हर हर महादेव

घुश्मेश्वर महादेव सबकी
मनोकामना पूरी करें

Office - 198, Barkat Nagar, Dadu Marg, Tonk Phatak,
Jaipur -302015 (Rajasthan) INDIA

Ph- +91-141-2592606, +919828106650

# पीपल के प्राचीन पेड़ की पूजा

मैं नें पहले भी बताया है कि घुश्मेश्वर मंदिर परिसर और इसके चारों ओर सदियों पहले घना जंगल था। मंदिर के गर्भगृह के चारों और कण्डीर के घने पेड़ थे तो परिसर के बाहर नीम के पेड़। यहां बना घुश्मेश्वर उद्यान तो पिछले दो-तीन दशक की मेहनत का नतीजा है। लेकिन घुश्मेश्वर महादेव मंदिर परिसर में न केवल देवी-देवता बल्कि वृक्ष भी पूजनीय रहे हैं। परिसर में स्थित पीपल का पेड़ करीब डेढ़ सदी से लोगों की आस्था का केन्द्र बना हुआ है। वैसे भी पीपल के प्रति लोगों की आस्था सदैव रही है। खुद भगवान कृष्ण ने तो गीता में अर्जुन से कहा भी है-

*अश्वत्थः र्वृक्षाणां देवर्षिणां च नारदः।*
*गन्धर्वाणां चित्ररथः सद्धानां कपिलो मुनि।।*

अर्थात सब वृक्षों में मैं ही अश्वत्थ यानी पीपल हूं और देवर्षियों में नारद हूं। गंधर्वों में चित्ररथ भी मैं ही हूं तो सिद्धों में कपिल मुनि भी मैं ही हूं। इससे पीपल के महत्व का अंदाजा लग सकता है।

- मंदिर परिसर में खड़े इस पीपल के प्राचीन पेड़ की उंचाई मंदिर परिसर के अन्य देवालयों के शिखरों से भी ज्यादा है
- ऐसी मान्यता है कि पीपल के मूल में ब्रह्मा, मध्य में विष्णु और अग्र भाग में साक्षात शिव विराजमान रहते हैं

RBA
RAJDHANI
BROKER AGENCY
Canvassing Agent Food Grain & Pulses
I.T.C., A.w.B., Adani, Nafed
Rajfed, FCI & Govt. Tenders,
Import & Export Broker
हमारे यहां बाजरे की दलाली
का काम किया जाता है।

Gourishankar Patodiya
Shiwar Wale
M: 9414060657, 8829017461
A-1, 1st Floor, Chandpole Anaj Mandi,
Jaipur-302 001 (Raj.)
Ph. : 0141-2369581, 4107681

द ह्युमन हेल्पलाइन ट्रस्ट
13,गोदावरी एन्क्लेव, नसिया जी जैन मंदिर के पास,
दादाबाड़ी, कोटा

मान्यता भी है कि पीपल के मूल में ब्रह्मा जी, मध्य में विष्णु और अग्र भाग में शिव जी विराजित रहते हैं। वैसे भी पेड़-पौधों को भारतीय परंपरा में देवताओं का रूप मानकर ही पूजा जाता रहा है। सनातन मान्यताओं के हिसाब से सभी जीव, जंतुओं और वनस्पतियों को विशेष महत्व दिया गया है। यही कारण है की किसी न किसी रुप में नदी पहाड़ जीव और वनस्पतियों को धार्मिक आस्थाओं के साथ जोड़ा गया है। इनसे यह महत्व और ज्यादा बढ जाता है। पीपल के वृक्ष को सर्वोत्तम माना गया है, या यों कहें की पीपल को एक दैवीय वृक्ष माना जाता है तो अतिशयोक्ति नही होगी। मंदिर में विशाल पीपल का वृक्ष मंदिर परिसर के अन्य देवालयों के समान ही काफी प्राचीन है। यह पीपल का वृक्ष कितना पुराना है इसकी ठोस जानकारी तो नहीं है लेकिन मेरे पूज्य पिताजी पं. नहनूलाल जी पाराशर बताते हैं कि पीपल का यह पेड़ वे भी अपने बाल्यकाल से ही देख रहे हैं। वे बताते हैं कि शिवाड़ के तत्कालीन ठाकुर महताब सिंह के दौर में उनके पितामह पं. प्रताप जी पाराशर ने मंदिर परिसर में पीपल का यह पौधा रोपा था। इस तरह से इस पेड़ का इतिहास मेरी भी चौथी पीढ़ी से जुड़ा है। अनुमान है कि यह पेड़ करीब पौने दो सौ बरस पुराना होगा।

पीपल के इस पेड़ की आज भी लोग श्रद्धाभाव से पूजा करते हैं। बुजुर्ग बताते हैं कि वर्ष 1900 ईस्वी में फैली प्लेग की महामारी का प्रकोप इसके बाद के काफी सालों तक रहा था। प्लेग से भयभीत लोगों ने गांव छोड़ दिया था और समीप की छीपोलाई व छापर में रहने लग गए थे। पीपल को रोगनाशक भी माना जाता है। बीते साल से कोरोना महामारी जिस तरह से डर का कारण बनी रही उसे देखते हुए पीपल की पूजा का काफी महत्व है। संभवतः प्लेग के प्रकोप के बाद ही गांव को निरोगी रखने की कामना से पं. प्रताप जी पाराशर ने पीपल का यह पौधा यहां लगाया था। पहले इस पेड़ की गहरी जड़ें फर्श में फैलती रहीं है। जब घुश्मेश्वर उद्यान के विकास का दौर शुरू हुआ तो पीपल के चारों तरफ गट्टा बना दिया गया। लोग मनौती मांगने के लिए पीपल के चारों और मंगलसूत्र भी बांधते हैं। शनिवार को ब्रह्म मुहुर्त में पीपल पूजा का काफी महत्व है। आज के दौर में मंदिर का स्वरूप कुछ और हो गया है लेकिन पहले इसी पीपल के पेड़ के समीप ही मंदिर का कंगूरेदार परकोटा होता था। यहीं से मंदिर की छत पर जाने की सीढ़ियां थी और परकोटे के कोने पर ऐसा बुर्ज था जैसा देवगिरी के किले पर हैं। ■

# मंदिर की कायापलट का दौर

घुश्मेश्वर उद्यान में कई देव प्रतिमाएं हैं लेकिन लक्ष्मी उद्यान की छटा निराली है। ड्रोन से लिए गए चित्र में नीला आसमान और सुदूर छायी हरियाली का नयनाभिराम नजारा

देश भर में देवालयों की प्रसिद्धि का बड़ा कारण अलौकिक घटनाओं के साथ-साथ उन्हें मिलने वाला सरकारी सहयोग भी है। लेकिन घुश्मेश्वर महादेव को तो प्रचार माध्यमों तक आने में ही बरसों लग गए। आज शिवाड़ में इस शिव मंदिर की ख्याति कोई सरकारी प्रयासों से नहीं बल्कि स्थानीय लोगों के समर्पण भाव व दानदाताओं के सहयोग से ही हो पाई है। स्थानीय लोगों ने मंदिर में पहली बार वर्ष 1991 में ट्रस्ट का पंजीयन देवस्थान विभाग से कराया। ट्रस्ट के गठन के बाद से ही धीरे-धीरे यहां जनसहयोग मिलता गया और निर्माण कार्य होता रहा।

मंदिर परिसर का सौंदर्यन करते समय इस बात का ध्यान रखा गया कि मूल स्वरूप से छेड़छाड़ न हो लेकिन फिर भी बड़े पैमाने पर निर्माण से ऐसा कहीं-कहीं करना भी पड़ा है। हां, मंदिर का गर्भगृह जस का तस है। वैसे कहते भी हैं कि जिन देवालयों के गर्भगृह से छेड़छाड़ के प्रयास हुए हैं उनकी ख्याति कम होती गई। शिवाड़ के इस मंदिर को स्थानीयता की परिधि से बाहर कर देश भर में प्रचारित करने का प्रयास करने वाले दिवंगत ठा.बजरंग सिंह राजावत का स्मरण जरूर करना चाहूंगा। शिवाड़ निवासी, सेवानिवृत्त तहसीलदार बजरंग सिंह जी का सान्निध्य मुझे भी मिला।

उन्होंने तत्कालीन राजपरिवार के पोथीखाने से लेकर शिवाड़ के बुजुर्गों के पास उपलब्ध ताम्रपत्र व अन्य दस्तावेज जुटाए। विभिन्न स्तर पर पत्र व्यवहार कर यहां बारहवां ज्योतिर्लिंग होने के प्रमाणिक तथ्य हासिल किए। इस बीच मंदिर से जुड़ा काफी प्रकाशन भी तैयार हुआ। शिवाड़ के तत्कालीन ठिकानेदार ठा. शिवप्रकाश सिंह जी, शिवभक्त ठा. गुमान सिंह जी, संस्कृत विद्वान नंदकिशोर गौतम, पं. पुरुषोत्तम जी शर्मा और मेरे अग्रज अवधेश जी पाराशर ने मंदिर के इतिहास से जुड़ी पुस्तकें व आलेख लिखे। मंदिर ट्रस्ट ने प्रचार प्रसार से जुड़ी सामग्री को दूर-दूर तक पहुंचाने का काम किया। हालांकि इससे पहले ठा.बजरंग सिंह जी ने मंदिर की दीवारों पर ही इतिहास लिखवा दिया जो आज भी है। इतिहास लेखन का यह काम शिक्षक मथुरालाल जी जांगिड़ ने किया। अब दिवंगत हो चुके शिवाड़ निवासी शंकर जी जांगिड़, गुरुदेव हरनाथ सिंह जी राजावत का भी स्मरण करना चाहूंगा जिन्होंने मंदिर में विकास कार्य की नींव रखी। इस मंदिर को आधुनिक स्वरूप देने के साथ ही मंदिर के पीछे भव्य गार्डन बनाने में भागीदार रहे मंदिर ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष माणकचंद जी जैन का योगदान तो अतुल्य है। मंदिर ट्रस्ट बनने के भी आठ-दस साल बाद तक यहां निर्माण की गति धीमी रही लेकिन बाद में दानदाता खूब आगे आए। नवनिर्माण का दौर लगातार जारी है और मंदिर ट्रस्ट के मौजूदा अध्यक्ष प्रेमप्रकाश जी शर्मा इस दायित्व को बखूबी निभा रहे हैं।

## भक्तों को खींचते हैं भगवान

कभी-कभी किसी को ऊपर वाले की प्रेरणा ही ऐसी होती है कि सामाजिक कार्यों में जुटने का मन करता है। अपने घर-परिवार की चिंता छोड़ खुद को ऐसे काम में जोड़ना काफी मुश्किल होता है। शिवाड़ में ऐसे समाजसेवियों की कमी नहीं रही जिन्होंने खुद को भगवत्कार्य में समर्पित कर दिया। जहां देवालयों की भरमार होती है उसे बोलचाल में छोटी काशी कहा जाता है। भगवान शिव के प्राकट्य का यह स्थल तो खुद ही काशी बना हुआ है। जाहिर है यहां जो भी देवालय रहे उनमें जनसहयोग का काम भी खूब हुआ। घुश्मेश्वर मंदिर में भी जब विकास कार्यों की आवश्यकता हुई तब ऐसे ही भागीरथी सामने आए। इनमें शंकर जी जांगिड़, नाथूलाल जी महाराण्या, हरनाथ सिंह जी राजावत आदि के नाम स्मरण आ रहे हैं। ये सब इस शिव मंदिर में विस्तार के प्रारंभिक कार्य में जुड़े। किसे ज्योतिर्लिंग कहा जाए और किसे नहीं यह लोगों की श्रद्धा का विषय हो सकता है। संचार माध्यमों का जिस गति से प्रसार हुआ है, खास तौर से सोशल मीडिया का, ऐसे पवित्र स्थलों की ख्याति एक दूसरे से होती हुई तुरत पहुंचती है। इसीलिए मेरी शुरू से मान्यता यह है कि भगवान खुद भक्तों को अपनी और खींचता है, उसे किसी के प्रमाण-पत्र की जरूरत नहीं होती। भगवान शंकर के इस बारहवें ज्योतिर्लिंग में भी कुछ खासियत तो होगी ही जिसकी वजह से श्रद्धालु विकास कार्यों के लिए लाखों रुपए की मदद करने को तैयार हो जाते हैं।

- शिवाड़ में घुश्मेश्वर मंदिर के विस्तार में राजपरिवार का शुरू से ही योगदान रहता आया है। मौजूदा मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य में ठाकुर शिवप्रकाश सिंह जी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता

- घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट देवस्थान विभाग की ओर से पंजीकृत है। ट्रस्ट के अब तक के सभी पदाधिकारियों ने मंदिर के विकास में खूब रुचि ली है

- आज से चालीस बरस पहले शिवाड़ आने वाले को मंदिर का बदला हुआ स्वरूप देखकर सचमुच अचरज ही होगा। मंदिर के मुख्यद्वार से लेकर भीतर तक काफी बदलाव इन्हीं बरसों में हुआ है

घुश्मेश्वर मंदिर का आज से तीस-चालीस बरस पहले का स्वरूप देखने वाले यदि इस अंतराल के बाद शिवाड़ पहुंचे तो इस मंदिर के आज के स्वरूप को देखकर चमत्कृत ही होंगे। पिछले पच्चीस बरस की यात्रा तो इस मंदिर के स्वरूप में चार चांद लगाने वाली रही है। घुश्मेश्वर महादेव से जुड़ी ऐतिहासिक व अलौकिक घटनाएं और यहां के अन्य दर्शनीय स्थलों का अपना महत्व है। लेकिन मंदिर के पीछे बने घुश्मेश्वर उद्यान के निर्माण की गाथा भी कम दिलचस्प नहीं है। जैसा मैंने पहले ही बताया मंदिर में निर्माण कार्य को विस्तार देने का काम तो यों तो वर्ष 1970- 80 के दौर में ही हो गया था लेकिन सीमित स्तर पर। मंदिर के निर्माण कार्य में जनभागीदारी का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज से चालीस-पचास बरस पूर्व तक गांव में किसी भी मकान में छत डाली जाती थी तो एक पट्टी मंदिर में जरूर चढ़ती थी। अब यह परिपाटी खत्म हो गई। ■

# माणक जी जैन के अथक प्रयास

घुश्मेश्वर उद्यान से शिवालय सरोवर तक का मनभावन नजारा (बांए) उद्यान की परिकल्पना कर इस स्वरूप में लाने का श्रेय घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट के पूर्व अध्यक्ष माणक चंद जी जैन (ऊपर) को है

शुरू में स्थानीय प्रबुद्धजनों ने घुश्मेश्वर मंदिर निर्माण समिति बनाकर मंदिर में छुटपुट निर्माण शुरू किए। ठाकुर शिवप्रकाश सिंह जी ने सबसे पहले मंदिर परिसर के चूने वाले फर्श को पक्का कराने का काम कराया। बाद में लोगों ने श्रद्धा के अनुरूप मंदिर परिसर के अलग-अलग देवालयों की फर्श में मार्बल का काम भी कराया। असली प्रगति का दौर शुरू हुआ मंदिर ट्रस्ट के निर्माण के बाद। देवस्थान विभाग से इस मंदिर ट्रस्ट का पंजीयन कराया गया। स्थानीय लोगों ने आपसी सहमति से ट्रस्ट के पदाधिकारी चुने और मंदिर प्रबंधन का काम शुरू हो गया। शिवाड़ के प्रमुख समाजसेवी माणक चंद जी जैन लंबे समय तक मंदिर ट्रस्ट के महामंत्री और बाद में लंबे समय अध्यक्ष भी रहे। आज जो मंदिर का स्वरूप है उसमें माणक जी जैन का ही योगदान है। मंदिर के लिए सहयोग जुटाने में माणक जी का श्रमसाध्य कार्य किसी से छिपा नहीं है।

घुश्मेश्वर उद्यान में पवन पुत्र हनुमान जी की 31 फीट की विशाल प्रतिमा

मंदिर परिसर के पिछवाड़े वाले हिस्से में देवगिरी पर्वत पर खाळों को पाटकर कैलाश पर्वत का स्वरूप दिया गया जिस पर भोलेशंकर विराजमान

## ■ उद्यान की कहानी- माणक जी की जुबानी

घुश्मेश्वर उद्यान, जो आज शिवाड़ का प्रमुख दर्शनीय स्थल बन चुका है उसकी परिकल्पना ने मूर्त रूप कैसे लिया इसकी जानकारी माणक चंद जी जैन के ही शब्दों में- 'जब मंदिर ट्रस्ट बन गया तो यहां विकास के काम हाथ में लेना शुरू किया गया। मंदिर के गर्भगृह से लेकर अन्य देवालयों में दानदाताओं के सहयोग से काम शुरू हो गया था। शिवाड़ में भगवान घुश्मेश्वर के चढ़ाने के लिए बिल्वपत्र शिवाड़ से पांच किलोमीटर दूर सुरेली स्टेशन के पास से लाना पड़ता था। सावन में खास तौर से इसकी जरूरत ज्यादा रहती थी। जो लोग बिल्वपत्र लाते थे वे उस समय भी एक रुपए का एक बिल्वपत्र बेचते थे। विचार आया कि क्यों नहीं मंदिर के पिछवाड़े में पहाड़ पर बिल्ववन विकसित किया जाए। वर्ष 1995 में जयपुर के एक श्रद्धालु निर्मलकुमार जी ने यहां सतचण्डी महायज्ञ करवाया तो यज्ञ की पूर्णाहुति के मौके पर मुख्य अतिथि प्रमुख उद्यमी संजय डालमिया थे। उनसे निवेदन किया तो सहर्ष ही बिल्ववन बनाने के लिए चार लाख रुपए का सहयोग दे दिया। लेकिन पांच साल तक यह प्रोजेक्ट शुरू नहीं हो पाया। शिवाड़ ठिकाने की रानी साहिबा व पूर्व मंत्री श्रीमती नरेन्द्र कंवर ने हमारे अनुरोध को वर्ष 2000 में जाकर स्वीकार कर लिया। बस फिर क्या था, बिल्वपत्र उद्यान के निर्माण की सोच को पंख से लग गए। संयोगवश उन्हीं दिनों वन विभाग के एक आला अधिकारी भी मंदिर दर्शनार्थ आए। उन्होंने बिल्वपत्रों के 51 पौधे भिजवा दिए। पौधारोपण हुआ और पानी की व्यवस्था के लिए एक टंकी बनवा दी गई।

## ■ ढलान पर बनी सीढ़ियां

माणक जी बताते हैं कि बिल्व पत्र उद्यान में पौधे बड़े होने लगे तो मन में आया कि क्यों नहीं पूजा में काम आने वाले अन्य फूलदार पौधे भी लगाए जाएं। प्रभु कृपा से यह काम भी हुआ। धीरे-धीरे पहले कांटो की बाड़ और बाद में बाउण्ड्री बनवा दी गई ताकि ये सुरक्षित रहें। बिल्वपत्र तो लग गए लेकिन और पौधे लगाने में सबसे बड़ी बाधा पहाड़ में बने बड़े-बड़े खाळे थे। बरसात में ये काफी वेग से बहते थे। पहाड़ की ढलान भी काफी थी। ऐसे में ढलान पर सीढियां बनाने का काम शुरू हुआ ताकि और पौधे लग सकें। एक सीढ़ी की चौड़ाई पन्द्रह फीट रखी गई। धीरे-धीरे देवगिरी की इस तलहटी ने फूलों से महकते उद्यान का रूप लेना शुरू कर दिया। जहां चाह वहां राह वाली बात घुश्मेश्वर उद्यान को आज का स्वरूप बनाने में कारगर साबित हुई।

देवगिरी पर्वत पर बने बड़े बरसाती नालों (खाळों) को पाटना कोई मामूली काम नहीं था। सबसे ज्यादा मुश्किल तो निर्माण सामग्री को पहाड़ तक पहुंचाने में थी। मैंने बचपन में इन खाळों से वेग के साथ कल-कल करता पानी पहाड़ों से आता देखा है। ऐसे में बिल्वपत्र उद्यान तो तैयार हो गया लेकिन आगे की रूपरेखा किसी वास्तुविद ने नहीं बल्कि घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट के पदाधिकारियों, खास तौर से माणकचंद जी जैन ने ही तैयार की। मैं पहले भी बता चुका हूं कि मंदिर ट्रस्ट बनने के बाद यहां दानदाताओं ने खुले हाथ से दान देना शुरू कर दिया था।

खास तौर से जयपुर के करोबारी करनानी बंधु ने मंदिर में निर्माण व पुनरुद्धार कार्य कराने में खासी रुचि ली। जब सीढियां दर सीढियां बनते हुए उद्यान पहाड़ की ऊंचाई तक पहुंचने लगा तो विचार आया कि क्यों नहीं यहां शिव की विशाल प्रतिमा लगाई जाए जो दूर से ही नजर आ जाए। मदनलाल जी, शिवशंकर जी व शिवरतन जी, तीनों करनानी बंधुओं को यह विचार बताया तो वे सहयोग के लिए तैयार हो गए। बौंली के पास मार्बल की प्रतिमाएं बनाने का काम होता है। वहां से इस मूर्ति के शिल्पकार को बुलाया गया। करीब एक लाख रुपए की लागत से उद्यान में सीमेंट-कंकरीट से ही शिवप्रतिमा, नंदी स्थापित हो गए और चारों तरफ छोटे-छोटे शिलाखंड की आकृतियां बनवाकर सफेद सीमेंट से पुतवा दी गई। एक तरह से इसे कैलाश पर्वत का रूप दिया गया। शंकर की प्रतिमा से गंगा प्रवाहित की गई और यहां फव्वारा भी लगाया गया। यह उद्यान के सौंदर्यन का पहला काम था। श्रद्धालुओं की आवक बढ़ती देख यहां साल भर बाद ही शेर की सवारी करती दुर्गा मां की प्रतिमा भी बनाई गई। इसके बाद विचार आया कि शिव हैं तो पार्वती भी हों। वह भी सपना पूरा हुआ। नेपाल से आए श्रद्धालु ने यहां गणेश की कमी बताते हुए अपनी तरफ से गणेश प्रतिमा के लिए सहयोग दिया। साल भर बाद ही उद्यान परिसर में गणेश की विशाल प्रतिमा भी लगा दी गई।


ॐ घुश्मेश्वराय नमः

घुश्मेश के दरबार में वही आता है
जिसे बाबा का बुलावा आता है।

शिवाड़ पधारे श्रद्धालुओं का हार्दिक अभिनंदन
भगवान शंकर आपकी हर मनोकामना पूरी करे

कुमुद जैन

सूचना एवं तकनीकी मंत्री
श्री घुश्मेश्वर द्वादशवां
ज्योतिर्लिंग ट्रस्ट शिवालय
शिवाड़ जिला सवाईमाधोपुर



मधु स्मृति

महिला एवं बाल कल्याण उत्थान संस्थान
रंगबाड़ी, कोटा (राजस्थान)

संस्था के उद्देश्य

निराश्रित बालगृह
महिला अल्पआवास गृह,
वृद्ध आश्रम, शिशु गृह

निःशक्तजन कल्याण
कार्यक्रम, कुष्ठ रोगियों
की सेवा, नशा मुक्ति
अभियान, नेत्र चिकित्सा
शिविर, एड्स जागरुकता,
विधिक सहायता, स्वयं
सहायता समूह का गठन,
पौधारोण

1999 में महामहिम राष्ट्रपति
श्री के.आर.नारायणन, राष्ट्रपति
भवन, नई दिल्ली में संस्थान महामंत्री
श्रीमती बृजबाला निर्भीक को
सम्मानित करते हुए

ड्रोन के जरिए लिया गया शिवाड़ का विहंगम दृश्य

उद्यान में प्रभु कृपा से सौंदर्यन के काम में विशेषज्ञता की कहीं जरूरत नहीं पड़ी। शिवाड़ में शेष ग्यारह ज्योतिर्लिंग के दर्शन लाभ भी एक ही जगह हों तो कैसा रहे। यही विचार करते हुए माणकचंद जी ने जयपुर के बारह भक्तों को इस बात के लिए तैयार किया कि वे एक-एक ज्योतिर्लिंग बनाने में सहयोग दें। समूचे गार्डन में जगह-जगह जो गुमटियां सी दिखती हैं वे इन्हीं ज्योतिर्लिंगों का प्रतीक है। सिकंदरा के पास बंशी पहाड़पुर के पत्थरों से इन मंदिरों को बनाया गया। ग्यारह ज्योतिर्लिंग की गुमटियां और सीढ़ियों के सहारे पहाड़ पर ऊंचाई की ओर उद्यान का विस्तार होने लगा था। बीच-बीच में आने वाले नालों का समतल करना काफी मुश्किल था। ऐसे में इनको गुफा का रूप देते हुए दोनों तरफ सीढ़ियां भी बनाई जाती रही।

## उद्यान को इधर से देखें

यह वह दौर था जब मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए घुश्मेश्वर उद्यान नया आकर्षण बनता जा रहा था। ऊंचाई पर पहुंचने के साथ ही ग्वालबाल के साथ कृष्ण की प्रतिमाएं भी बनाई गई इसके बाद जुड़ा मंदिर का बड़ा आकर्षण और वह था शीर्ष पर हनुमान जी की 31 फीट ऊंची खड़ी प्रतिमा। सबसे ऊपर ऊँ की आकृति। दिल्ली से खास तौर पर मूर्तिकार बुलाए गए और मशक्कत के बाद प्रतिमा भी तैयार हो गई। ये सारे काम एक साथ नहीं हुए बल्कि साल-दो साल के अंतर से होते रहे। अब तो यहां प्रतिमाओं के लिए सहयोग करने वालों की होड़ लग गई। धीरे-धीरे लक्ष्मी जी की प्रतिमा, के साथ एक अलग लक्ष्मी उद्यान भी बना दिया गया। उद्यान का स्वरूप इतना भव्य हो गया कि लघु फिल्मों की शूटिंग तक यहां होने लगी।

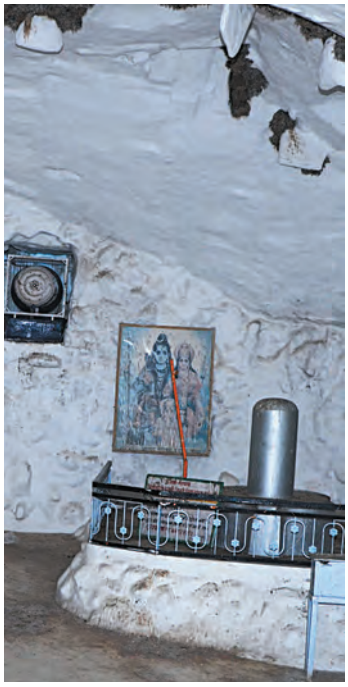

अमरनाथ गुफा

जाहिर है कि इतने काम व रोशनी व्यवस्था हुई तो रखरखाव का खर्चा भी बढने लगा। इसीलिए पहले एक रुपए प्रति व्यक्ति और बाद में दो रुपए प्रति व्यक्ति के हिसाब से उद्यान में प्रवेश शुल्क रखा गया। अब यह शुल्क और बढ़ गया है। लेकिन उद्यान के रखरखाव का खर्चा निकालने के लिए ऐसा करना आवश्ययक हो गया था। इस तरह से वर्ष 2000 से लेकर 2005 तक उद्यान का मौजूदा स्वरूप सामने आया। इस कार्य में एक आकर्षण जुड़ा अमरनाथ की गुफा जिसे बाकायदा बर्फ जमाने वाली मशीन लगाकर बर्फीली गुफा बनाकर ऐसा आभास कराया गया जैसे आप अमरनाथ में ही हों।

घुश्मेश्वर उद्यान, अब यहां श्रद्धालुओं के लिए दर्शन के साथ-साथ फोटोग्राफी का भी बेहतरीन स्थान बन गया है। खास तौर से महाशिवरात्रि पर और पूरे सावन माह के दौरान उद्यान को देखने के लिए भीड़ उमड़ती है। बच्चों के लिए तो यहां कमोबेश हर कोना लुभाने वाला है। देवदर्शन के साथ उद्यान में परिवार के साथ भ्रमण का मौका भला कौन चूकना चाहेगा? इस उद्यान की लाइटिंग के तो कहने ही क्या? रात को घुश्मेश्वर उद्यान में जगमगाती लाइटों से अलग ही दृश्य नजर आता है। मन का भाव यह है कि कभी घुश्मेश्वर मंदिर से देवगिरी की चोटी पर स्थित कालिका शक्ति पीठ तक रोप -वे भी बने। घुश्मेश्वर महादेव, कालिका पीठ और देवगिरी पर्वत पर बने किले को देखने का इससे अलग ही रोमांच रहेगा। जो श्रद्धालु शिवाड़ आना चाहें उनको मशविरा है कि घुश्मेश्वर दर्शन के साथ इस प्राकृतिक दृश्य की असली आभा का आनंद लेना है तो उन्हें एक रात यहां जरूर ठहरना चाहिए। मंदिर ट्रस्ट की देखरेख में वातानुकूलित कमरों की सुविधायुक्त दो धर्मशालाएं हैं। मंदिर परिसर में ही एक और भव्य वातानुकूलित आवासीय खण्ड तैयार है जिसमें एक साथ कई परिवार ठहर सकते हैं।


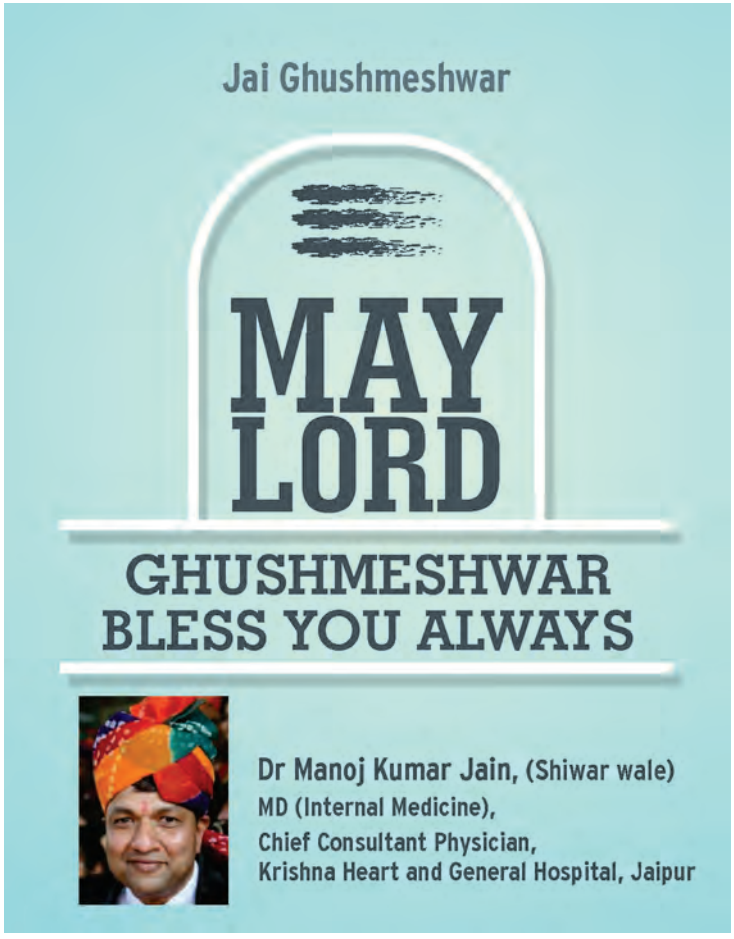

# Each Child is Special
# FIRST SCHOOL OF THE SOCIAL FIELD

School Reg. No. RJSWM 28850
Board Affliation No. 1211030

## LIMITED SEATS FOR ALL CLASSES

### MAIN FEATURE AND FACILITIES

- Well Trained and Experienced Teaching Staff
- Clean, Serene and Secure Environment for Peaceful Education
- Inculcating Indian values traditonal and culture
- Pre-nursery wing with colorful classroom
- Career growth and character building
- Well furnished classroom
- Computer education, Inverter, water cooler and purified drinking water facilities are available
- Other creative activities are organised in school campus like drawing, craft, games, historical tour

**English Medium from Nursery to X**

## WE GIVE WINGS TO OUR KIDS

**Registration or admission form available at the school office on all working days from 8.30 am to 1.30pm**

## ADMISSIONS OPEN

# VARDHMAN PUBLIC SCHOOL

**A Co-Educational**

Place - Digamber Jain Dharmsala, Shiwad, Sawai Madhopur.

Respectful - Sakal Digamber Jain Samaj, Shiwad, 9414828999, 9414204539, 9166952549, 7976791027
Mail - vpsshiwar@gmail.com

## खण्ड-चार

# प्रमुख दर्शनीय स्थल

कभी शिवालय और बाद में शिवाल से शिवाड़ बनी शिव की इस पवित्र नगरी को धर्मनगरी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हर कोने में देवी-देवताओं की प्रतिमाएं विराजमान है। इन सबसे जुड़ी अलौकिक घटनाएं भी कम नहीं है। गांव के प्रवेश द्वार पर सिद्ध विनायक मंदिर से लेकर जयपुर मार्ग पर शिपोलाई मंदिर और देवगिरी पर्वत पर कालिका पीठ से लेकर भगवान चन्द्रप्रभु के मंदिर तक की सबकी अपनी कहानियां हैं। ऐसी घटनाएं भी जिनको देख-सुन कर सब प्रभु की कृपा के आगे नतमस्तक होते हैं। कब और कैसे बने शिवाड़ के दूसरे देवालय। घुश्मेश्वर के दर्शनार्थ आएं तो और कहां-कहां जाना न भूलें श्रद्धालु। पढ़ें- इस खण्ड में।

# बुर्ज पर डिग्गेश्वर महादेव

देवगिरी की इन चट्टानों में बरसों से शिव के अनगढ़ स्वरूप को डिग्गेश्वर के नाम से पूजा जाता है (दांए, गोले में)

डिग्गेश्वर महादेव की पूजा-अर्चना करते घुश्मेश्वर मंदिर के मुख्य पुजारी पं. नहनूलाल पाराशर (ऊपर)

## देवगिरी पर विराजमान पंचमुखी शिव

आम तौर पर पहाड़ की चट्टानों, बादलों और यहां तक पेड़-पौधों में भी आप किसी भी देवी-देवता की कल्पना आसानी से कर सकते हैं। हमारे देश में तो ऐसे हजारों उदाहरण होंगे जहां ऐसी आकृतियों को ही पूज्य मानकर आराधना का दौर शुरू हो गया और इनमें से आज कई तो लोगों की अपार श्रद्धा का केन्द्र है। जिस पहाड़ की तलहटी में घुश्मेश्वर महादेव का ज्योतिर्लिंग है उसे देवगिरी के नाम से पुकारते हैं। इसका देवगिरी नाम है तो जाहिर है यहां देवी-देवताओं का पहले से स्थान भी रहा होगा। यूं तो देवगिरी पर्वत की श्वेत पाषाणयुक्त चट्टानें और इस पर बना किला दूर से ही आभा बिखेरता नजर आता है। इन श्वेत चट्टानों को कभी गौर से देखें तो कभी किसी देवी-देवता की तो कभी शेर-हाथी और दूसरे जानवरों की कृतियां कल्पना में बनती दिखती हैं। देवगिरी पर्वत पर तो सचमुच देवताओं का वास है। देवता और वह भी पंचमुखी शिव के स्वरूप में। देवगिरी पर्वत पर विशाल किला बनवाते समय भी ठाकुर भैंरू सिंह ने संभवतः इस अलौकिक स्थान का महत्व स्वीकार करते हुए किले की पहली बुर्ज इसी पंचमुखी शिव के स्थान पर बनाई। हालांकि किले का निर्माण शुरू होने से पहले पहाड़ की तलहटी पर आम बोलचाल में डूंगर पीछे कहे जाने वाले हिस्से में पहले खाईनुमा बुर्ज बनाकर नींव रखी गई।

यह खाईनुमा बुर्ज भी दुश्मन को किले में प्रवेश से रोकने के लिए बनी होगी। आज से करीब साठ-सत्तर वर्ष पूर्व शिवाड़ निवासी और भगवान शंकर के अनन्य भक्त ठा. गुमान सिंह राजावत ने शिवाड़ में शिव की पांच प्रमुख प्रतिमाओं का उल्लेख अपने इस कवित्त में किया था।

*प्रथम श्री घुश्मेश गिरितल, ऊर्द्धदेश डिग्वेश्वरा,*
*पोसरी भोलेश शिवसर नीलकंठ महेश्वरा।*
*चेतनेश्वर बरजड़े स्थित, स्थापित चेतनगिरा,*
*शिवालय शिव पंचमूर्ति शोभित मंगलकरा।।*

अर्थात पर्वत की तलहटी पर घुश्मेश्वर, ऊपरी हिस्से पर डिग्वेश्वरा, छोटी पोसरी में भोलेश ओर शिवसागर सरोवर में नीलकंठ तथा बरजड़े में चेतनगिरी द्वारा स्थापित चेतनेश्वर मंदिर की पांच मूर्तियां शिवालय में सुशोभित हैं। डिग्गेश्वर महादेव का यह नाम क्यों पड़ा यह तो नहीं पता लेकिन माना जा रहा है कि बरसों से आंधी-तूफान, पहाड़ी से वेग से आने वाले जलप्रवाह व यहां तक कि भू-स्खलन ने भी किले के ठीक नीचे मामूली सहारे से अधर में अटकी इस चट्टान को नहीं डिगाया, इसीलिए शायद इसे डिग्गेश्वर कहा जाने लगा होगा। वैसे तो यह नाम अडिगेश्वर ही रहा होगा, लेकिन बोलचाल में लोगों को जो सही लगता है उसे ही अपना लेते हैं। यहां श्वेत पाषाणयुक्त चट्टानों में शिव के पंचमुखी स्वरूप की कल्पना मात्र की गई है। इनमें तीन मुंह पूर्व की ओर देखते हुए और दो पीछे की ओर है। पं. पुरुषोत्तम जी शर्मा ने न केवल इस स्थान को बारीकी से देखा है बल्कि शिवाड़ में बारहवां ज्योतिर्लिंग होने की प्रमाणिकता पर संदेह करने वालों को भी ये प्रमाण दिखाए हैं। डिग्गेश्वर को लोग बरसों से पूजते रहे हैं लेकिन एकाकी रूप से। यानी यहां कभी सामूहिक पूजा का उपक्रम नहीं होता। पूजा भी रोज-रोज नहीं होती। सिर्फ महाशिवरात्रि के दिन या किसी पर्व विशेष पर ही होती है। यहां पहुंचना कभी आसान नहीं रहा। शायद यही वजह ज्यादा रही होगी। लेकिन कहते हैं कि शिव का यह पंचमुखी स्वरूप तंत्र साधना का केन्द्र रहा है। इसीलिए तांत्रिक अनुष्ठान करने वाले यहां आ ही जाते हैं। आज भी कभी-कभार यहां पूजा सामग्री और बिल्वपत्र आदि नजर आते हैं। यहां आराधना कौन करता होगा यह रहस्य ही है।

- देवगिरी पर्वत पर आज से तीन सौ साल पहले विशाल दुर्ग का निर्माण भी इसी छोर से शुरू हुआ था
- शिव का पंचमुखी स्वरूप की तंत्र साधना करने वाले भी आराधना करते हैं
- डिग्गेश्वर महादेव के पास कुछ श्वेत पाषाण पत्थर दूसरे पत्थर से मारने पर ढोल की तरह बजते हैं

दिलचस्प तथ्य यह भी है कि डिग्गेश्वर के इस प्राकृतिक शिव स्वरूप में जलराशि बूंदों के रूप में अचानक आती है। कभी-कभी लगातार और आम तौर पर वर्षा ऋतु में। आद्रा नक्षत्र में यहां पूजा का खास महत्व है। इतना ही नहीं जो जल इस शिवस्वरूप पर टपकता है उसकी निकासी के लिए निचले भाग में जलहरी का स्वरूप भी बना है। यहां से पानी का प्रवाह होता है लेकिन बूंद-बूंद ही। यह शोध का विषय हो सकता है कि आखिर बिना किसी स्रोत के यह जल कहां से आता होगा। कई साल पहले यहां नेपाल से स्वामी शंकर गिरी महाराज का आगमन हुआ था। यहां शिव का ज्योतिर्लिंग होने की बात पर उन्होंने भी कहा था कि ऐसे स्थानों पर प्राकृतिक रूप से देवी-देवताओं का स्थान होना चाहिए। वे स्वयं इस प्राकृतिक पंचमुखी शिव के रूप को देखने आए थे। चालीस-पचास साल पहले डिग्गेशवर के इस स्थान की तरफ से किले में जाने का रास्ता था।

जिन लोगों की गोठ के लिए किले में जाने की हसरत पूरी नहीं हो पाती थी वे इसी बुर्ज की तरफ से पहाड़ पर चढ़ जाते थे। किले के मुख्यद्वार से प्रवेश किए बिना यहां दुर्गम राह से पहुंचा जा सकता था। एक दिलचस्प तथ्य और है। डिग्गेश्वर महादेव के इस स्थान पर एकाध चट्टानें ऐसी है जिन पर दूसरे पत्थर का प्रहार किया जाए तो ये किसी ढोल की तरह ढम-ढम की आवाज करती है। पत्थरों में ढोल बजने की आवाज विस्मय पैदा करती है। बजने वाले पत्थरों के किस्से अन्यत्र भी हैं। लंबे समय से इस स्थान पर जाने का मौका नहीं मिला और न ही आज की पीढ़ी में यहां जाने का कोई उत्साह देखता हूं। डिग्गेश्वर महादेव के बारे में यह जानकारी नई पीढ़ी के लिए सचमुच रोमांच पैदा करने वाली है। ■

# राण्या काण्या बालाजी

भगवान तो भाव के भूखे होते हैं। आप भले ही किसी भी नाम से पुकार लो। खास तौर से हमारे यहां हनुमान जी और शिवजी के मंदिरों का नामकरण तो श्रद्धालुओं ने मनमुताबिक रख दिए। लेकिन कुछ मंदिरों का नामकरण किसी घटना विशेष से जुड़ जाता है। ऐसा ही हनुमान जी का दिव्य चमत्कारी मंदिर शिवाड़ से तीन किलोमीटर दूर राण्या काण्या बालाजी का है।

- शिवाड़ की चारों दिशाओं में हनुमान जी के प्राचीन मंदिर हैं। ये गांव की बसावट के समय के ही हैं।

- राण्या काण्या बालाजी शिवाड़ और ईसरदा की सीमाओं के बीच में हैं। इस प्राचीन स्थल में लोगों की अपार श्रद्धा है।

बाल्यकाल से ही मंदिर का यही नाम सुनता आया हूं। समझ भी इतनी कि बालाजी की प्रतिमा में एक आंख लगी है तो शायद इसीलिए यह नाम हो। लेकिन हकीकत में बालाजी के इस मंदिर का नाम ऐतिहासिक घटनाक्रम से हैं। यों तो शिवाड़ की चारों दिशाओं में हनुमान मंदिर है और सब अतिप्राचीन भी हैं। लेकिन इस मंदिर का अलग ही महत्व है। मंदिर कितना पुराना है किसी को पता नहीं लेकिन इन चारों हनुमान मंदिरों को तत्कालीन शिवालय (अब शिवाड़) गांव की स्थापना से ही अवस्थित माना जाता है। निश्चित ही ये पहले एक छोटे चबूतरे पर प्रतिष्ठित किए गए होंगे। शिवालय पर आक्रांता महमूद गजनवी के आक्रमण के एक सदी बाद मौजूदा घुश्मेश्वर महादेव मंदिर का निर्माण हुआ था। इसलिए अनुमान है कि ये चारों हनुमान मंदिर भी तब रहे होंगे। राण्या काण्या बालाजी का नाम यह क्यों पड़ा यह जिज्ञासा सबके मन में जरूर होगी। वस्तुतः ये रणकारण बालाजी थे। मुखसुख सुविधा की वजह से यह नाम अपभ्रंश होता हुआ राण्या काण्या हो गया। जनश्रुति तो यह भी है कि सीमा विवाद के कारण दो पड़ोसी राजाओं में हुए युद्ध के बाद इसी मंदिर को आधार मानकर सीमा विभाजन किया गया। यह भी कहा जाता है कि युद्ध के लिए प्रस्थान करने से पूर्व शासक वर्ग इन्हीं बालाजी के शीश नवाने आते थे। एक तरह से रणकारज को सफल करने की अरदास लिए हुए। बालाजी के आशीर्वाद का ही नतीजा रहता था कि यहां के शासकों ने ज्यादातर युद्ध में जीत हासिल की। बालाजी के नामकरण को लेकर यही किवदंती मुफीद नजर आती है।

राण्या काण्या बालाजी मंदिर से सटी ही एक मस्जिद भी है। यह अनुमान है कि शायद किसी आक्रांता ने कभी भव्य रहे इस मंदिर में लूट-पाट की होगी और बाद में यहां इस मस्जिद का निर्माण भी हुआ होगा। यहां मंदिर में आरती और मस्जिद में अजान साम्प्रदायिक सोहार्द का अनूठा उदाहरण है। ईसरदा स्टेशन से सटे होने के कारण शिवाड़ से जयपुर या कोटा की और प्रस्थान करने वाले या फिर वापस लौटने वाले यात्री इस हनुमान मंदिर पर माथा अवश्य टेकते हैं। भले ही वे किसी वाहन में सवार हो, मंदिर के सामने से गुजरते हुए नमन में शीश दोनों ही बातों के लिए बालाजी के समक्ष झुक जाता है। पहला इस बात के लिए कि अपने घर शिवाड़ लौटकर आए यात्रियों की यात्रा सफल हुई। और दूसरी इस बात के लिए कि जो लोग यात्रा के लिए प्रस्थान कर रहे हैं वे यात्रा सफल होने का बालाजी से आशीर्वाद मांगते हैं। समय के साथ अब इस मंदिर के सौंदर्यीकरण का काम भी शुरु हुआ है। मंदिर विकास के लिए प्रबंध समिति भी बनी है अपनी मनौती पूरी होने पर लोग यहां सवामणी भी करते हैं। मंदिर के सामने ही एक कुई भी है। इसका पानी भी मीठा है। गर्मियों में यह कुई राहगीरों की प्यास बुझाने का बड़ा माध्यम होती थी। शिवाड़ के अधिकांश परिवार तो अपने बच्चों के जडूले भी यहीं उतारते हैं।

राण्या काण्या बालाजी की दिव्य प्रतिमा

शिवाड़ से ईसरदा रेल्वे स्टेशन की तरफ आने-जाने का जब साधन नहीं होता था तब देर रात की सवारीगाड़ी से उतरने वाले यात्री बालाजी का सुमिरन करते हुए पैदल ही नीम के घने पेड़ों के बीच सांय-सांय करते माहौल में भी शिवाड़ पहुंच जाते थे। शायद मन ही मन हनुमान चालीसा का पाठ करते हुए। बालाजी की मौजूदगी निश्चित ही भय का माहौल खत्म करने वाली होती थी। चाहे कोई अकेले ही रात को गुजर रहा हो या फिर समूह में भी। शिवाड़ से ईसरदा स्टेशन के बीच महज तीन किलोमीटर का रास्ता भी तब काफी लंबा लगता था। इस मार्ग पर पहले नीम के घने पेड़ सड़क के दोनों तरफ हुआ करते थे। इतने घने कि समीप से आता-जाता व्यक्ति भी नजर नहीं आए। इसीलिए शाम के भ्रमण के वक्त स्थानीय लोग इसी मार्ग को प्राथमिकता देते थे। आज इस मार्ग की नीमड़ियां तो आबादी के विस्तार की भेंट चढ़ गई। शिवाड़ से ईसरदा स्टेशन तक पहुंचने की दूरी तो कम लगने लगी है लेकिन नीमड़ियों के उजड़ने का दर्द यहां के बाशिंदों को हमेशा रहेगा। आज भी गांव में ऐसे लोग हैं जो प्रतिदिन राण्या काण्या बालाजी के दर्शन करने आते हैं। गांव वाले बालाजी को शिवाड़ के दक्षिण द्वार का रक्षक मानते हैं।

# महाभारत कालीन शक्तिपीठ

कालिका शक्ति पीठ तक सीढ़ियों के जरिए जाया जा सकता है।

माना जाता है कि यह कालिका शक्तिपीठ युधिष्ठिर संवत के दौर का है (इनसेट में)

कालगणना का अपना महत्व है। हमारे देश में युधिष्ठिर संवत को प्राचीनतम संवतों में से एक माना जाता है। शिवाड़ में स्थित कालिका शक्तिपीठ के बारे में माना जाता है कि यह युधिष्ठिर संवत के दौर का है। हालांकि मौजूदा शक्ति पीठ के परिसर का निर्माण उसी वक्त हुआ जब मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने करीब नौ सौ वर्ष पहले घुश्मेश्वर महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार शुरु किया था। वही वक्त इस प्राचीन शक्ति पीठ के जीर्णोद्धार का भी है।

बुजुर्ग दंतकथाओं के आधार पर कहते हैं कि शिववीर सिंह चौहान को स्वयं घुश्मेश्वर महादेव ने स्वप्न में इस शक्ति पीठ के जीर्णोद्धार का आदेश दिया था। शक्तिपीठ का जब जीर्णोद्धार हुआ होगा तब संभवतः इस मंदिर का भी गर्भगृह ही रहा होगा। घुश्मेश्वर के अनन्य भक्त और शिवाड़ और शिव मंदिर की काव्यगाथा रचने वाले ठाकुर गुमान सिंह राजावत ने इस कालिका पीठ को लेकर जो काव्य पंक्तियां रची उसमें भी मंदिर के पुनर्निर्माण की तिथि का रोचक तरीके से उल्लेख किया गया है।। ये काव्य पंक्तियां इस प्रकार है।

***अंक ऋषि नभधरणि विक्रम साल था बड़ा।***
***हुई मंदिर की प्रतिष्ठा कलश कंचन का चढ़ा।।***
***यश महाभागी बना जगकीर्ति में आगे बढ़ा।***
***यों भगत शिववीर भूपति भवानी के चित्त चढ़ा।।***

इस छंद की कालगणना की जाए तो अंक- 9, ऋषि, 7, नभ-1, धरणि-1 को अंकानाम वाम यानी 1179 किया जाए तो यह गणना विक्रम संवत 1179 होता है। यानी इस पीठ के जीर्णोद्धार का समय है। युधिष्ठिर संवत संभवतः महाभारतकालीन रहा होगा। पं. शिवप्रताप जी शर्मा प्रकाण्ड ज्योतिर्विद थे। उनके पौत्र पं. पुरुषोत्तम शर्मा कहते हैं कि बाबा ने मंदिर में युधिष्ठिर संवत के निर्माण से जुड़ा शिलालेख लगे होने की बात कही थी। वक्त के साथ यह शिलालेख अब कहीं लुप्त हो गया है। वैसे भी भगवान शंकर के बारह ज्योतिर्लिंग जहां-जहां भी हैं वहां आस-पास शक्तिपीठ अवश्य मिलेंगे। कुछ बिल्कुल नजदीक तो कुछ आसपास। शिवाड़ का यह कालिका शक्ति पीठ भी इस मंदिर के बारहवां ज्योतिर्लिंग होने की पुष्टि करने को काफी है। चाहे यह कालिका शक्तिपीठ हो या फिर समीप के चौथ का बरवाड़ा स्थित चौथ माता का मंदिर, दोनों ही पहाड़ की चोटी पर है। प्राचीन चौथ माता का मंदिर 1451 ई. में बना था। यह मंदिर एक हजार फीट से भी ज्यादा ऊंचाई पर स्थित है। यह मंदिर शिवाड़ के इस शक्ति पीठ के काफी बाद बना। इस मंदिर की स्थापना राजा भीम सिंह ने कराई थी। किवदंतियां हैं कि देवी ने स्वप्न में राजा भीमसिंह चौहान को दर्शन देकर यहां अपना मंदिर बनवाने का आदेश दिया था।

- शिवाड़ क्षेत्र में दोनों देवी मंदिर प्रसिद्ध हैं। कालिका का यह शक्तिपीठ और चौथ का बरवाड़ा का चौथ माता मंदिर

आम तौर पर देवी के मंदिर होते भी दुर्गम स्थल पर ही हैं। शायद इसकी एक वजह यह भी है कि देवी उपासकों को साधना के लिए एकांत की आवश्यकता होती थी। इसलिए देवी पूजा के लिए मंदिर आम तौर पर ऐसे स्थानों पर ही बनें जहां इंसान एकाएक नहीं जा सके। वजह यह भी रही होगी क्योंकि तंत्र साधना करने वाले आम तौर पर दुर्गम स्थानों पर ही देवी आराधना करते रहे हैं। शुरुआत में शिवाड़ की कालिका पीठ तक जाना भी आसान नहीं था क्योंकि पहाड़ पर भी घना जंगल था। मंदिर तक जाने की सीढ़ियां भी पिछले चार दशक के दौरान ही बनवाई गई है। बचपन से ही इस मंदिर को देखता आया हूं। लेकिन यहां तक पहुंचने का मौका ज्यादा नहीं मिला। एक तो जाने की दुर्गम राह, दूसरी वहां खास तौर से नवरात्रि के दौरान वाद्ययंत्रों की भयभीत करने वाली ध्वनि को सुनकर जाने की ज्यादा हिम्मत नहीं हुई। देवी मंदिरों में घंटा ध्वनि भी ऐसी होती है कि बालमन में डर आसानी से बैठ सकता है। मंदिर की सीढ़ियों बनाई गई तो यहां पहुंचना आसान जरूर हुआ लेकिन सीढ़ियों से देवी दर्शन करने पहुंचने वाले भी हिम्मतवाले ही होते हैं। एक दौर में यहां भैंसे की बलि दी जाती थी बाद में बकरे की बलि दी जाने लगी। पशु क्रूरता को लेकर सरकारी नियम-कायदों में सख्ती के बाद अब यहां बलि बंद हो गई है। काली मंदिर होने की वजह से इस की पूजा करने वाले ब्राह्मण काला कहलाए। लेकिन बाद में ये अन्यत्र चले गए। अब यहां कौल (कोली) जाति के लोग पूजा-अर्चना करते हैं। घुश्मेश्वर मंदिर ने जिस गति से भव्य रूप लेना शुरू किया उसी गति से स्थानीय लोगों ने इस शक्ति पीठ की भी सुध ली। अब मंदिर में बाकायदा विकास समिति बनी हुई है। नवरात्रा में मंदिर में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है। इस दौरान यहां माताजी का 'जस' गाया जाता है।

- नवरात्रि के दिनों में यहां श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है। इस दौरान यहां माताजी का जस गाया जाता है

- कोई समय में इस कालिका मंदिर में पशुबलि भी दी जाती थी। सरकारी पाबंदियों के कारण अब पशुबलि बंद है

# क्षेत्रपाल व अस्थल के बालाजी

कोई भी मांगलिक कार्य करने से पहले क्षेत्रपाल की अनुमति जरूर ली जाती है। गांव में नवविवाहित जोड़े भी सबसे पहले क्षेत्रपाल के धोक लगाने अवश्य आते हैं।

शिवाड़ में आयुर्वेदिक औषधालय मार्ग की तरफ एक प्राचीन दरवाजे को पार करने के बाद जो देवस्थान आता है वहां गांव के क्षेत्रपाल विराजमान हैं। हर गांव-कस्बों में क्षेत्रपाल की अपनी मान्यता है। क्षेत्रपाल यानी क्षेत्र के रक्षक। चाहे गांव में किसी को आना हो या गांव से जाना हो, क्षेत्रपाल की अनुमति लेना जरूरी होता है। शिवाड़ रेलमार्ग से करीब एक सौ साल पहले ही जुड़ा है। ऐसे में गांव में आवागमन का मुख्य मार्ग अस्थल की तरफ से निकलता यह रास्ता ही था। जाहिर है, क्षेत्रपाल भी यहीं विराजमान किए गए। बरसों से परिपाटी चली आ रही है। गांव में नवविवाहित जोड़े को क्षेत्रपाल के धोक अवश्य दिलाई जाती है।

शिवाड़, जब शिवालय के रूप में विख्यात था तब ही यहां गांव की चारों दिशाओं में बजरंगबली की प्रतिमाएं स्थापित की गई थीं। आज भी चारों दिशाओं में ये प्रतिमाएं विराजित है। पूर्व दिशा में जो प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई वह अस्थल के बालाजी के नाम से विख्यात है। यह बात और है कि राजाओं के दौर में जब अस्थल बनाया गया होगा तब से पहले के हैं ये बजरंगबली। पहले क्षेत्रपाल के अलावा गांव की पूर्व दिशा में एक बरगद के पेड़ के नीचे यह प्रतिमा ही रही होगी लेकिन बाद में यहां अस्थल बन गया। वैसे अस्थल का नाम मूलतः धर्मस्थल है। अस्थल नाम तो लोगों ने मुखसुख सुविधा के हिसाब से रख दिया। इसे धर्मस्थल इसीलिए कहा जाता था क्योंकि शासक वर्ग ने अपने आराध्य देवताओं को यहीं प्रतिष्ठित किया था। शिवाड़ के ठा. सौभाग सिंह ने संवत 1775 यानी 1718 ईस्वी में शिवाड़ को अपना मुख्य ठिकाना बनाया था। उन्होंने शिवालय सरोवर के पश्चिमी तट पर यह परिसर बनाया तब तक देवगिरी पर किला भी नहीं बना था। यहां बालाजी का मंदिर तो काफी प्राचीन है। अस्थल बनने के भी पहले से ही ये बालाजी विराज रहे हैं।

■ वैसे अस्थल का नाम मूलतः धर्मस्थल है। अस्थल नाम तो लोगों ने मुखसुख सुविधा के हिसाब से रख दिया। इसे धर्मस्थल इसीलिए कहा जाता था क्योंकि शासक वर्ग ने अपने आराध्य देवताओं को यहीं प्रतिष्ठित किया था।

यहां मंदिर निर्माण का शिलालेख भी लगा हुआ है। अस्थल परिसर के भीतर जाएंगे तो जगतश्रवण जी यानी जगतशिरोमणि जी का भव्य का मंदिर नजर आएगा। इस मंदिर में राधा-कृष्ण की प्राचीन मनोहारी प्रतिमा है। वैसे तो स्थानीय शासक हमेशा भगवान घुश्मेश्वर को ही शिवाड़ का वास्तविक राजा मानकर राजकाज चलाते रहे हैं लेकिन राज की तरफ से पूजा-अर्चना अस्थल में स्थित जगतशिरोमणि मंदिर से ही होती थी। यह जगत शिरोमणि मंदिर मूलतः इस बात को भी इंगित करता है कि यहां शासक वर्ग भले ही शैव परंपरा के आराधक रहे लेकिन किसी अन्य पंथ-समुदाय से परहेज भी नहीं किया। अस्थल का महत्व रजवाड़ों के दौर में तो था ही अस्थल के बालाजी मूलतः गांव के पूर्वी द्वार के क्षेत्ररक्षक के रूप में हैं। इसी के समीप प्राचीन दरवाजा आज भी खंडहर के रूप में मौजूद हैं।

शिवाड़ में इस तरह से चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार थे। शिवाड़ के सरकारी स्कूल के पास बना गायत्री द्वार मैंने अपने स्कूली जीवन में देखा है। हालांकि एक अन्य द्वार बनने से पहले यह द्वार ध्वस्त हो गया। कहते हैं कि जयपुर की पूर्व राजमाता गायत्री देवी के स्वागत के लिए यह दरवाजा बना था। इस परिसर में कभी प्राइमरी स्कूल भी चलता था। सरकारी आयुर्वेदिक औषधालय भी। संभवतः पचास के दशक में। अस्थल परिसर में महंत परंपरा रही है। ये ही राजपरिवार के गुरु होते थे। महंत परंपरा में मंदिर के महंत को अविवाहित रहना पड़ता था। राजाश्रय होने के कारण अस्थल परिसर में स्थित देवालयों की सेवा-पूजा भी ठिकाने के माध्यम से होती थी। शिवाड़ के इस प्राचीनतम देवालय परिसर को संरक्षित किए जाने की जरूरत है।

**तीन सौ साल पुराना अस्थल परिसर पहले शासक वर्ग का आराधना स्थल हुआ करता था। अस्थल के बालाजी की प्राचीन प्रतिमा (बांए)**

# चन्द्रप्रभु जी का अतिशय क्षेत्र

चन्द्रप्रभु जी का शिवाड़ में इकलौता जैन मंदिर। ऊंची कुर्सी पर बने इस जैन मंदिर की स्थापत्यकला अनूठी है

शिवाड़ का इकलौता जैन मंदिर करीब पांच सौ साल पुराना बताया जा रहा है। मंदिर में मूल प्रतिमा चन्द्रप्रभु भगवान की विराजमान है। यहां कुल 9 वेदियां हैं। इसके अलावा 150 धातु व पाषाण की दूसरी प्रतिमाएं हैं। मंदिर में पीतल की जो प्रतिमा विराजमान है उसके एक बार तो स्वर्णनिर्मित होने का आभास होता है। चन्द्रप्रभु भगवान की इस दिव्य प्रतिमा को लेकर एक रोचक किस्सा है। पुराने लोग बताते हैं कि देश की आजादी के भी पहले वर्ष 1932 के आसपास पीतल की इस प्रतिमा को सोने की समझकर चोर उठा ले गए थे। सुबह मंदिर के सेवादार ने शोर मचाया तो गांव में खबर जंगल की आग की तरह फैल गई। तब पुलिस की तैनाती तो होती नहीं थी। न थाने-कचहरी थे। सिर्फ राज का ही खौफ होता था। इसलिए चोर भी शायद ज्यादा आगे जा ही नहीं पाए। कहीं सुनार को प्रतिमा दिखाई तो पता चला कि यह प्रतिमा तो पीतल की है। इसे चन्द्रप्रभु की कृपा ही कहेंगे कि तलाशी के शोर से भयभीत चोर प्रतिमा को आगे ले जाने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाए। इसलिए प्रतिमा को सोने की न जान समीप ही बनास नदी के पेटे में प्रतिमा को दबा गए।

जैन मतावलंबियों की एक खासियत होती है कि वे यथासंभव समूह में बसने का प्रयास करते हैं। जहां भी जाते हैं सबसे पहले अपने लिए जिनालय (जैन मंदिर)अवश्य प्रतिष्ठित करवाते हैं

प्रभु कृपा के ऐसे कई किस्से हैं जिसमें भक्तों को स्वप्न में निर्देश मिलते रहे हैं। जिन प्रतिमाओं के तो ऐसे दर्जनों किस्से हैं। बताते हैं कि चोरी की इस वारदात के कुछ दिनों बाद ही किसी भक्त को भगवान चन्द्रप्रभु ने स्वप्न में कहा कि उनकी प्रतिमा बनास नदी के पेटे में अमुक जगह दबी है। स्वप्न की चर्चा कर भक्त गांव वालों को साथ लेकर बनास नदी तक पहुंचा। वहां स्वप्न में बताए गए स्थान को पोला महसूस किया तो प्रतिमा के दबे होने का अंदाजा हुआ। फिर क्या था? सावधानी से दबी प्रतिमा को बाहर निकालने का जतन किया गया। भगवान महावीर की जयकारे के साथ प्रतिमा बाहर निकाली गई। बाद में प्रतिमा की पुनः विधिवत प्रतिष्ठा की गई। चन्द्रप्रभु का यह मंदिर देवगिरी पर्वत की तलहटी में है। आबादी इस इलाके में शुरू से ही घनी रही है। लड़कियों का सरकारी स्कूल भी पास ही है। मंदिर की कुर्सी उस दौर में भी काफी ऊंची ली गई थी। वैसे भी देवस्थान आम तौर पर ऐसे ही बनाए जाते हैं जहां श्रद्धालुओं को थोड़ा कष्ट उठाकर आना पड़े। बाहर से मंदिर का स्वरूप भव्य नजर आता है। मुख्य द्वार से पहले दोनों ओर सीढ़ियां है।

जैन साधु-साध्वियों  का चातुर्मास, प्रवास व प्रवचन यहां होता ही रहता है। पिछले सालों में जैन मत मानने वाले यहां के श्रेष्ठियों ने समय-समय पर वेदी प्रतिष्ठाएं कराकर जिन प्रतिमाओं को विराजमान किया है। धर्म के काम में यहां जैन समुदाय सदैव आगे रहा है। खास तौर से मंदिर के जीर्णोद्धार व नवनिर्माण के काम में। आम तौर पर उन जिनालयों को अतिशय क्षेत्र कहा जाता है जहां प्रतिमाओं से जुड़े अलौकिक किस्से हों। शिवाड़ के चन्द्रप्रभु जी के मंदिर में भी श्रद्धालु ऐसे कई किस्से बताते हैं। मंदिर से सटी ही एक धर्मशाला लंबे समय से सार्वजनिक कार्यों में सबके लिए उपलब्ध है। मंदिर परिसर में वर्धमान पब्लिक स्कूल भी संचालित किया जा रहा है। इस स्कूल में सभी वर्ग-समुदाय के बालक-बालिकाएं पढ़ रहें हैं। मंदिर के पिछवाड़े स्थित इस धर्मशाला के मैदान में रामलीला व अन्य धार्मिक नाटकों का आयोजन भी हुआ करता था। महावीर जयंती पर हर साल यहां भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है। एक तरह से साल भर धर्ममय माहौल बना रहता है इस जिनालय में। गांव का कोई भी जैन परिवार ऐसा नहीं है जो नियमित रूप से चन्द्रप्रभु के दर्शन करने न आता हो। कारोबारी काम की शुरुआत चन्द्रप्रभु के दर्शनों  के साथ ही करते हैं।

जैन मतावलंबियों की एक खासियत होती है कि वे यथासंभव समूह में बसने का प्रयास करते हैं। जहां भी जाते हैं सबसे पहले अपने लिए जिनालय (जैन मंदिर)अवश्य प्रतिष्ठित करवाते हैं। शिवाड़ में भगवान घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के साथ-साथ देवगिरी पर्वत की तलहटी पर स्थित भगवान चन्द्रप्रभु के मंदिर की भी विशद मान्यता है। यहां करीब साठ जैन परिवार रहते हैं। इस गांव का अधिकांश कारोबार इन परिवारों के पास ही है। लेकिन खास बात यह भी इन परिवारों में एक भी शिवाड़ मूल का नहीं है। सब रोजगार की तलाश में यहां आए और शिवाड़ के ही होकर रह गए। वैसे भी भगवान घुश्मेश्वर की इस नगरी के बारे में यह मान्यता है कि बाहर से बाबा की शरण में आकर बसने वाले जल्दी तरक्की कर लेते हैं। शिवाड़ में ऐसे बीसियों उदाहरण हैं। जैन समुदाय के ही चेतन जैन भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी हैं और शिवाड़ के विनोद कुमार जैन के सुपुत्र अजय जैन का भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हुआ है। आईएएस की इस चयन परीक्षा में देश भर में अजय ने बारहवां स्थान प्राप्त कर समूचे शिवाड़ को गौरवान्वित किया है।  गंभीरमल जी जैन यहां बरसों तक सरपंच रहे। घुश्मेश्वर मंदिर को मौजूदा स्वरूप में लाने का श्रेय भी यहां के प्रमुख कारोबारी माणक चंद जी जैन को है। मंदिर ट्रस्ट के वे लंबे समय तक अध्यक्ष रहे। कहने का तात्पर्य यह कि जैन समुदाय इस गांव की बहबूदी में हर वक्त साथ रहा है। ■

- नियमित देव दर्शन की शिवाड़ के जैन परिवारों में परिपाटी चली आ रही है
- शिवाड़ के कारोबारी जगत में जैन समुदाय का योगदान अहम है। कई प्रमुख व्यावसायिक प्रतिष्ठान जैन समुदाय के लोगों के ही हैं
- चन्द्रप्रभुजी के मंदिर में वेदी पर विराजमान जिन प्रतिमाओं में ऐसा आकर्षण है कि श्रद्धालु घंटो इन्हें श्रद्धाभाव से निहारते रहते हैं

# कल्याण धणी का प्राचीन मंदिर

कल्याण जी के मंदिर में मुख्य वेदी पर विराजमान राधा-कृष्ण। कल्याण जी दांई तरफ नीचे वेदी पर विराजमान हैं

सदियों पहले घुश्मेश्वर महादेव गांव के बाहर घने जंगल के बीच विराजमान रहे। जंगल भी इतना घना होता था कि शाम ढलते ही जंगली जानवरों का खौफ रहता था। वह दौर था जब पहले शिवाल और बाद में शिवाड़ के नाम से विख्यात हुई शिव की इस नगरी में घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में सुबह-शाम की आरती के वक्त ही लोगों की आवाजाही होती थी। ऐसे में गांव के मध्य बना कल्याण जी का मंदिर ही धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र रहता था। मंदिर कल्याण धणी के नाम से अवश्य है लेकिन अचरज की बात यह है कि मंदिर के मुख्य गर्भगृह में जो प्रतिमाएं विराजमान हैं वे राधा-कृष्ण की है। डिग्गी कल्याण की तरह शंख, पद्म, गदाधारी विष्णु की प्रतिमा तो गर्भगृह में मुख्य वेदी से नीचे ही अलग से विराजमान है। डिग्गी की तरह शिवाड़ की प्रतिमा भी एकल है अर्थात लक्ष्मी जी के बिना। फर्क सिर्फ इतना ही है कि डिग्गी में प्रतिमा श्वेत पाषाण की है और यह श्याम पाषाण की। यह सवाल जरूर उठता होगा कि जब मंदिर की मुख्य वेदी पर प्रतिमाएं राधाकृष्ण की विराजमान हैं तो मंदिर का नाम कल्याण जी पर क्यों?

कोई जमाने में कल्याण जी का मंदिर ही शिवाड़ में धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र हुआ करता था। इसकी वजह यह थी कि घुश्मेश्वर महादेव मंदिर तब घने जंगल में था। जहां आवागमन आसान नहीं था। इसलिए आबादी के बीच बना यह मंदिर ही धार्मिक प्रयोजन से आयोजित कार्यक्रमों का केन्द्र होता था। धर्म सभाएं तथा साधु-संतों के प्रवचन यहीं होते थे।

- प्रसिद्ध संत स्वामी कृष्णानंद जी महाराज ने कल्याण जी मंदिर को ही अपने प्रवचनों का केन्द्र बनाया
- पिछले सत्तर से ज्यादा वर्ष से कल्याण जी मंदिर में नियमित सत्संग होता है। समीप ही अब अलग से सत्संग भवन भी बन गया है
- शिवाड़ में बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा सत्तर के दशक से चल रही है

वस्तुतः पहले मुख्य वेदी पर कल्याण जी ही विराजमान थे। बताते हैं कि यह मंदिर चन्द्रप्रभु जी के मंदिर से भी काफी पुराना है। शिवाड़ के इतिहास में गहरी रुचि रखने वाले पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि यह मंदिर इस हिसाब से छह सौ साल से भी ज्यादा पुराना होना चाहिए। जैन मंदिर बनने से पहले यहां कल्याण धणी ही मुख्य वेदी पर विराजमान थे। शिवाड़ के जिन जैन मतावलंबी सज्जन ने जैन मंदिर बनवाने में योगदान दिया उनकी पत्नी वैष्णव मतावलंबी थीं। उसने यहां कल्याण मंदिर के जीर्णोद्धार का काम शुरू कराया। उस दौर में ही यहां मुख्य वेदी पर राधा-कृष्ण की प्रतिमा भी स्थापित कर दी गई। जैन मतावलंबी श्रेष्ठि ने अपनी पत्नी की इच्छा के मुताबिक जैन मंदिर के साथ-साथ कल्याण जी के इस मंदिर के पुनर्निमाण में भी दिल खोल कर सहयोग किया। कल्याण जी का यह मंदिर चूंकि शिवाड़ में मेरे निवास से दूसरे छोर पर था इसलिए जाना कम होता था। लेकिन जब भी गया, मंदिर में राधा-कृष्ण व कल्याण धणी की प्रतिमाओं को निहारते रहने का मन करता था। कृष्ण की प्रतिमा यहां श्याम पाषाण की है। जबकि राधारानी की श्वेत पाषाण की । शुरू के सालों में यह मंदिर कच्चे- पक्के ढांचे में था। साठ-सत्तर के दशक में यहां विख्यात संत कृष्णानंद जी महाराज का आगमन हुआ था। उनकी प्रेरणा से ही मंदिर का मौजूदा स्वरूप सामने आया। इससे पहले जब गांव में स्कूल के लिए पृथक भवन नहीं था तो इसी मंदिर परिसर में सरकारी स्कूल चला करता था। स्कूल में तैनात शिक्षक शिवदत्त सिंह जी राजावत ने एक बार जलझूलनी एकादशी पर मंदिर पर यह कहते हुए ताला लगा दिया था कि स्कूल के लिए जमीन दो तब ही ताला खुलेगा।

स्वामी कृष्णानंद जी महाराज ने कल्याण जी के इस मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए लोगों को एकजुट किया। बाकायदा मंदिर के विकास की रुपरेखा तैयार की गई। स्वामी जी ने खुद श्रमदान किया। इससे पहले मंदिर परिसर व परिक्रमा में चमगादड़ों का डेरा था। बचपन में मैंने यहां कई संत-महात्माओं के प्रवचन व भागवत कथा के आयोजन होते देखे हैं। गांव में माइक का इस्तेमाल तब जिन गिने-चुने मंदिरों में ही होता था उनमें कल्याण जी का यह मंदिर भी शामिल था। संवत 2007 यानी वर्ष 1950 में यहां स्वामी कृष्णानंद जी महाराज की प्रेरणा से रामधुनी की शुरुआत हुई। यहीं स्वामी जी ने जयपुर के रामनिवास बाग के शिव सत्संग भवन की तर्ज पर शिव सत्संग भवन स्थापित किया। रामधुनी का दौर अब भी यहां नियमित है। हां शिवाड़ के दूसरे छोर पर अब अलग से सत्संग भवन भी बन गया है। गांव की अधिकांश धार्मिक शोभा यात्राओं की शुरुआत कल्याण जी के इस मंदिर से ही होती है। शिवाड़ समाज जयपुर की ओर से हर सावन में आयोजित महाआरती के जुलूस का आगाज भी यहीं से होता है। जलझूलनी एकादशी पर शिवालय सरोवर में जलविहार के लिए गांव के सभी देवालयों के विमान भी कल्याण धणी की अगुवाई में ही जुलूस के रूप में जाते हैं। हां, ये विमान पहले चारभुजा नाथ मंदिर के सामने एकत्र होते हैं। करीब चालीस बरस पूर्व तक मंदिर परिसर में दुकानों व दफ्तर की जगह समेत काफी निर्माण कार्य हो चुका था। शिवाड़ के पहले बैंक, बैंक आफ बड़ौदा की शाखा भी इसी परिसर में हैं। गांव में बैंक की यह शाखा एक जून 1971 को पहले चारभुजा मंदिर के सामने कचहरी परिसर में शुरू हुई थी। अब मंदिर परिसर के आसपास का इलाका भी कारोबारी गतिविधियों का केन्द्र बनता जा रहा है। एक तरह से मुख्य बाजार का विस्तार गांव के दोनों छोर की तरफ हुआ है।

# चारभुजानाथ की दिव्य प्रतिमा

चारभुजा नाथ यानी चतुर्भुज जी का मंदिर शिवाड़ के बिल्कुल मध्य में स्थित है। एक तरह से इसे शिवाड़ का हृदय स्थल कहा जा सकता है। भगवान चारभुजा नाथ के महत्व का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि रजवाड़ों के दौर में यहां जो कचहरी भवन था वह भी चारभुजा की तरफ देखता हुआ था। यानी न्याय भी भगवान चतुर्भुज को साक्षी मानकर किया जाता था। साक्षात ईश्वर सामने नजर आते हों तो फिर न्याय करने वाले को भी सच-झूठ का फैसला सोच-समझकर ही करना होता है। शायद स्थानीय शासकों ने यही सोच कर कचहरी बनाई होगी। अब कचहरी की जगह शहरों की तरह मॉल खड़ा हो गया है। शिवाड़ के तत्कालीन ठिकानेदार महताब सिंह जी ने यह कचहरी बनवाई थी।

चमत्कार को सब नमस्कार करते हैं। यह बात जीवन के हर पहलू में नजर आती है। लेकिन शिवाड़ के प्राचीन चतुर्भुज जी के मंदिर से जुड़ा चमत्कार तो ऐसा है जिस पर विश्वास करना एकाएक मुश्किल सा लगता है। हालांकि मैं चमत्कार के बजाए इसे अलौकिक घटना की संज्ञा देता हूं।

**चारभुजानाथ की इस दिव्य प्रतिमा को साक्षी मानकर ही पहले कचहरी में न्याय होता था**

इस अलौकिक घटना का कोई प्रमाण नहीं है लेकिन जनश्रुति पर आधारित यह घटनाक्रम सचमुच रोचक है। मंदिर में पाराशर ब्राह्मण ही सेवा-पूजा करते आए हैं। नियमित भोग के साथ रोज आरती के वक्त चारभुजा नाथ के पेड़े का भोग लगाया जाता था। यही प्रसाद आरती के बाद मंदिर में आए श्रद्धालुओं को बांटने की भी परिपाटी है। तब गांव में हलवाई भी गिने-चुने ही थे। मंदिर के समीप हलवाई की एकाध दुकानें ही थीं। इन हलवाइयों का क्रम था कि वे बारी-बारी से चारभुजानाथ के लिए पेड़े इस भोग के लिए पहुंचाते थे। पेड़े भी ज्यादा नहीं गिनती के। मंदिर के पुजारी नियमित जिस दुकान की बारी होती थी वहां से पेड़े लाकर भोग अर्पित करते थे।

कहते हैं कि एक बार मंदिर के पुजारी पेड़े का भोग लगाना भूल गए। लेकिन यह क्या हुआ? एक नन्हा सा बालक मंदिर के पटबंद होने के पहले ही पेड़ा लेने हलवाई के यहां पहुंच गया। हलवाई से एक पायल देकर उसकी एवज में पेड़ा देने को कहा। यह पायल वही थी जिसे चतुर्भुज जी की प्रतिमा के पैरों में पहनाया हुआ था। हलवाई ने यह जानकार कि शायद बालक घर वालों की नजरों से छिपाकर पायल लाया है और सुबह होने पर परिजनों की तलाश कर पायल लौटा दूंगा- बालक को पेड़ा देकर पायल अपने पास रख ली। अगले दिन सुबह ठाकुर जी के नियमित स्नान-प्रक्षालन के दौरान पुजारी को ठाकुर जी की पायल गायब मिली। काफी तलाश के बाद आसपास पायल नहीं मिली तो चोरी होने का शक हुआ। तुरंत गांववालों को एकत्र किया। शोरगुल सुनकर तब वह हलवाई भी आ गया जिसके यहां से बालक ने पेड़ा लिया था। सारा माजरा समझ हलवाई ने पायल दिखाई और कहा- एक बालक यह पायल देकर पेड़ा ले गया है। उन्होंने पीले कागज में लपेट कर बालक को पेड़ा देने की बात भी कही। सब मंदिर पहुंचे तो पेड़ा वहां पीले कागज में लिपटा हुआ ठाकुर जी के चरणों में रखा था। श्रद्धालुओं का मानना है कि हलवाई के यहां जाने वाले ठाकुर जी खुद थे जो बालस्वरूप धारण कर वहां पहुंचे। पुजारी के पौत्र ने इस घटना की पुष्टि की है। आज भी शिवाड़ के सभी हलवाइयों के यहां से आए पेड़े यहां दैनिक भोग में चढ़ाए जाते हैं। ऐसे रोचक व अलौकिक किस्से ही अक्सर देवालयों को प्रसिद्धि दिलाते हैं। लेकिन इस मंदिर में आज भी श्रद्धालुओं की आवाजाही कम होना अचरज का विषय है।

शिवाड़ का पहला बालिका स्कूल चारभुजा नाथ के मंदिर में ही खुला था। मंदिर के ठीक सामने कचहरी यानी अदालत थी। अब इस जगह शहरों की तरह मॉल बन गया है। एक तरह से व्यावसायिक हब जहां कारोबारी गतिविधियां होने लगी हैं।

## सबसे पहले यहीं खुला बालिका स्कूल

शिवाड़ के मुख्य बाजार में स्थित चतुर्भुज जी का यह मंदिर न तो विशाल परिसर में है और न ही यहां दर्शनार्थियों की ज्यादा आवाजाही है। पहले से ही अतिक्रमण की जद में आया मंदिर परिसर अब और सिकुड़ गया है। साल में एक बार जलझूलनी एकादशी पर जरूर गांव के अन्य मंदिरों के ठाकुरजी के विमान पहले यहां आते हैं और बाद में चतुर्भुज जी भगवान के विग्रह को साथ लेकर शिवालय सरोवर में जलविहार के लिए पहुंचते हैं। यह परिपाटी मैं बचपन से देखता आ रहा हूं। हालांकि काफी सालों से ठाकुर जी के जलविहार के इस दृश्य को देखने से वंचित रहा हूं। बचपन में मैंने यहां बालिकाओं को पढ़ते भी देखा है। जब यहां पहली बार लड़कियों का अलग सरकारी प्राइमरी स्कूल खुला तो स्कूल का अपना भवन नहीं था। गांव के बीच में होने के कारण चारभुजा के इसी मंदिर के बरामदे में कक्षाएं लगती थीं। संभवतः1958-59 में इस परिसर में कन्या प्राथमिक शाला खुली थी। शुरू में गांव की आठ-दस बालिकाएं ही इस स्कूल में पढ़ती थी। मेरी दिवंगत माताजी पुष्पा देवी पाराशर की भी शिक्षक के रूप में प्रथम नियुक्ति यहीं हुई थी। संभवतः 1970 के बाद यह स्कूल अपने भवन में चला गया। मंदिर के चारों और पहले जयपुर की तरह कंगूरे थे जो अब बाहर दुकानों के कारण नजर नहीं आते। कचहरी परिसर में एक दशक तक बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा का संचालन होता था। पिछले दो साल के दौरान कचहरी की जगह अब शहरों की तरह मॉल बन गया है। मूलतः चतुर्भुज जी का यह मंदिर तेली समाज ने बनवाया था। अब अधिकांश तेली इस गांव से अन्यत्र चले गए।

# छिपोलाई के बालाजी

वस्तुतः छिपोलाई का मूल नाम छीपा तलाई था जो समय के साथ अपभ्रंश होता हुआ छीपोलाई हो गया। माना जाता है कि शिवाड़ के शासकों ने अपनी पगड़ियां तैयार करने के लिए इस मंदिर के आसपास छीपा (नामदेव) समाज से जुड़े कुछ परिवारों को बसाया था। छिपोलाई के इस मंदिर के तालाब में रंगाई-छपाई के काम में लगे लोग कब तक रहे इसकी पुख्ता जानकारी नहीं है। लेकिन आज भी शिवाड़ में नामदेव समाज के परिवार हैं। अधिकांश परिवार बाद में जयपुर के पास सांगानेर चले गए। यहां जो तलाई है हर बरसात में सबसे पहले लबालब होती है। प्रत्येक सावन में शिवाड़ आने वाले पदयात्रियों व कावड़ यात्रियों का पहला पड़ाव छिपोलाई मंदिर ही होता है। तलाई का पानी स्वच्छ है और यहीं भोजनादि बनाने की व्यवस्था रहती है। मैंने यहां ग्रामीणों को गोठ करते देखा है। तब यह स्थान गांव से दूर लगता था लेकिन अब बसावट मंदिर के आसपास ही पहुंच गई।

बालाजी तो सदैव ही लोगों के आस्था के केन्द्र रहे हैं। छिपोलाई में भी बालाजी का प्राचीन मंदिर अवस्थित है। इस प्राचीन मंदिर के बारे में यह भी कहते हैं कि अपने घुमंतू जीवन के दौरान राजा भृतहरि भी दो-तीन दिन यहां ठहरे थे। भृतहरि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के समकालीन थे। भगवान घुश्मेश्वर की प्राचीनता के समान ही गांव के चारों द्वारों पर प्रतिष्ठित बालाजी के मंदिर भी काफी प्राचीन हैं। पुरातन दौर के किस्से-किवदंतियां रोचकता से भरपूर हैं। यह रोचक घटना करीब 90 साल पहले की है जिसका जिक्र जरूर करना चाहूंगा। हमारे पुरखे ऐसे दिव्य पुरुषों के बारे में बताते रहते हैं जो कभी किसी चीज का अभाव नहीं होने देते थे। यह शायद उनके तप का ही असर होता था जो राजाओं को भी चुनौती देने की ताकत रखते थे। यह बात वर्ष 1928 के आसपास की है। तब घुश्मेश्वर के दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पदयात्रा ही माध्यम होता था। खास तौर से संत-महात्माओं के लिए। उस दौर में यह वाकया हुआ था जब यज्ञ के भण्डारे में बनाए गए मालपुए घी के अभाव में समीप ही तलाई के पानी से ही बना लिए गए। यानी पानी ने ही घी का काम कर लिया। यह किस्सा बचपन में मैंने अपनी दादी से सुना था जो संभवतः इस घटना की प्रत्यक्षदर्शी थीं। मेरे पूज्य पिताजी समेत गांव के अन्य बुजुर्ग भी इस कथानक की पुष्टि करते हैं। जयपुर रोड पर शिवाड़ में प्रवेश करते ही इस छीपोलाई बालाजी मंदिर में मौजूद हनुमान जी की प्रतिमा ही इतनी दैदिप्यमान है कि नजरें हटती ही नहीं।

- घुश्मेश्वर धाम की चारों दिशाओं में प्रतिष्ठित हनुमान मंदिरों में से एक है छीपोलाई का मंदिर
- बाबा माधवदास ने यज्ञ के दौरान यहां तलाई के पानी से पकवान बनवा दिए थे ऐसी जनश्रुति है
- मान्यता है कि छिपोलाई बालाजी की इस दिव्य प्रतिमा के सम्मुख की गई प्रार्थना अवश्य पूरी होती है

- छिपोलाई को पहले छीपा तलाई कहते थे जिसमें रंगाई-छपाई का काम होता था
- संत माधवदास ने छिपोलाई बालाजी मंदिर परिसर में विशाल यज्ञ कराया था
- कहते हैं कि डिग्गी के शासक संग्राम सिंह ने भी इस यज्ञ में आर्थिक सहयोग दिया था

वर्ष 1928 ईस्वी के आसपास इस मंदिर में अनन्य राम-हनुमान भक्त और पहुंचे हुए तपस्वी माधवदास महाराज यायावरी करते हुए पहुंच गए। उन्होंने गांव के प्रवेश द्वार पर ही डेरा डाल दिया। धीरे-धीरे उनकी ख्याति आस-पास भी पहुंची और यहां श्रद्धालुओं का तांता लगने लगा। भक्तिभाव के माहौल से परिपूर्ण घुश्मेश्वर महादेव की इस नगरी में उन्होंने यज्ञ करने का ऐलान कर दिया। यज्ञ स्थल इसी मंदिर परिसर को चुना गया। लेकिन तब के दौर में राज्याश्रय के बिना ऐसे बड़े आयोजन काफी मुश्किल होते थे। शिवाड़ में तब ज्योतिष के प्रकाण्ड पं. शिवप्रताप जी शर्मा इस यज्ञ के प्रमुख यजमान थे।

बताते हैं कि संत माधवदास जी को शासक वर्ग से यज्ञ के लिए इच्छा मुतबिक सहयोग नहीं मिला। खिन्न होकर उन्होंने यहीं पर देख रे दुलारे कोई न सहाय मेरो.... छंद की रचना की। इसकी संपूर्ण पाण्डुलिपि पं. पुरुषोत्तम शर्मा के पास है। अपने दादा की मुख्य यजमानी में हुए इस यज्ञ के बारे में वे बताते हैं कि इस छंद रचना के बाद में डिग्गी के तत्कालीन ठिकानेदार ठाकुर संग्राम सिंह न जाने किस प्रेरणा से शिवाड़ पहुंच गए और माधवदास जी के सामने कलदारों (तत्कालीन मुद्रा) की ढेरी लगा दी। खैर यज्ञ शुरू हुआ तो शिवाड़ समेत आसपास के गांवों के लोग उमड़ने लगे। जाहिर है भण्डारा भी रोज होता था। एक दिन मालपुए बनाने के लिए देशी घी कम पड़ गया। एक सेठ ने कहीं से एक पीपा घी मंगवाया तो संत माधवदास ने मंदिर के पास तलाई में पीपा डालने को कह दिया। चमत्कार ऐसा हुआ कि जब तक यज्ञ चला इस तलाई के पानी ने ही घी का काम किया। भट्टियों-कढ़ाही में यही पानी चढ़ा और पूरे हेड़े के लिए मालपुए बनते रहे। मेरी दादी बताती थी कि यज्ञ की पूर्णाहुति पर यज्ञ के मुख्य यजमान पं. शिवप्रताप जी को हाथी पर बैठाकर पूरे गांव में जुलूस निकाला गया था। मंदिर में यज्ञस्थल व वेदियां आज भी मौजूद है।


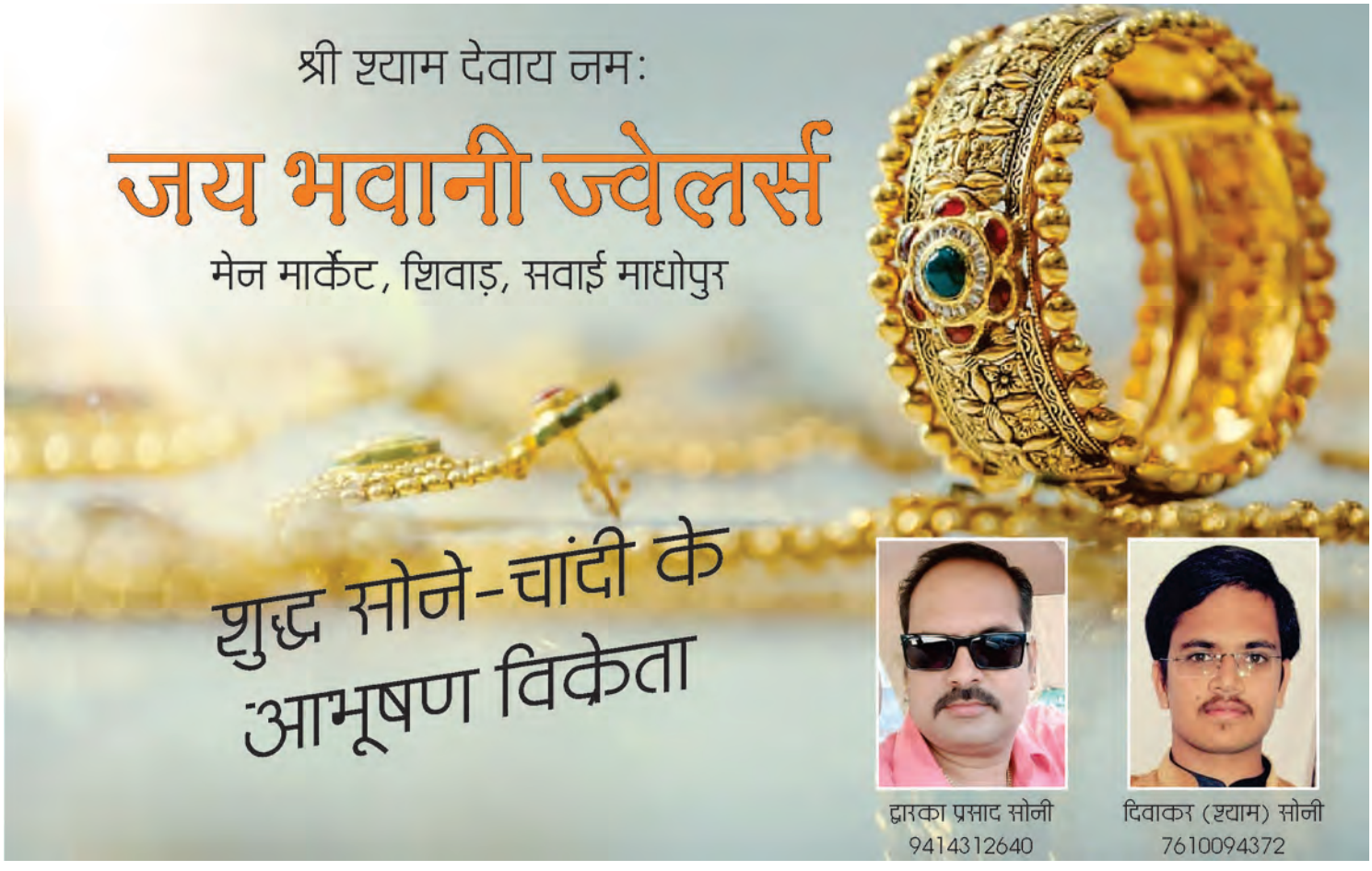

जय घुश्मेश्वर
श्री घुश्मेश्वर धाम, शिवाड़
में पधारने वाले
सभी श्रद्धालुओं का
हार्दिक अभिनन्दन
PERFECT PUBLICITY
* ADVERTISING * PRINTING * EVENT
* INDOOR & OUTDOOR PUBLICITY
perfectpublicity21@gmail.com
7222811444
Savita Printers
* GRAPHIC DESIGN * OFFSET PRINTING
* SCREEN PRINTING * STATIONERY * GIFT
savitaprinters15@gmail.com
9829184896
A-10-A, Mahadev Nagar, Ram Nagar, Sodala, JAIPUR-302 019 (Raj.)
सभी प्रकार की प्रिन्टिंग, एडवरटाइजिंग व पब्लिसिटी के लिए सम्पर्क करें।


ॐ घुश्मेश्वराय नमः
परम शिवभक्त पूजनीय माता-पिता ने
शिवाड़ को कर्मस्थली बना
दिखाई सेवा की राह
आपके आदर्श ही हमारी पूजा
स्व. वैद्य राधेश्याम जी शर्मा
स्व. श्रीमती विद्या देवी
विनीत- सुरेन्द्र शर्मा - श्रीमती राजेश्वरी शर्मा (पुत्र-पुत्रवधु)
अक्षय शर्मा- राधिका शर्मा (पौत्र- पौत्र वधु), दीपक शर्मा - (पौत्र), शिवाड़ वाले
मातृछाया
1/ बी-3 बापूनगर, भीलवाड़ा,
9460994400, 8005644211


GSTIN :
08ABJFA9943N1Z0
+91 9799933888
+91 9582727707
AKM MARBLE &
GRANITE LLP
VARANASI / KISHANGARH
RESIN PROCESSED
LINE POLISHED
EXPORT QUALITY
akmllp@outlook.com
akmllp/facebook.com
RALAWATA, MAIN MAKRANA ROAD
KISHANGARH ( AJMER ) RAJ.

# घुश्मा का आराधना स्थल

- शिवालय सरोवर के किनारे विशाल वटवृक्ष है। इसे बड़जरा कहते हैं। घुश्मा नामक ब्राह्मणी इसी के आसपास शिव आराधना करती थी
- शिवालय में जिस कुंड में शिवलिंग खुदाई के दौरान निकले वह भी इसी बड़जरा के आसपास था

हरि अनंत हरि कथा अनंता की तरह भगवान घुश्मेश्वर नाथ के पवित्र धाम शिवाड़ से जुड़े किस्से-कहानियों की कमी नहीं हैं। शिवाड़ में घुश्मेश्वर मंदिर के बाद यदि कोई प्राचीनतम स्थल है तो वह कालिका शक्ति पीठ है और इसके बाद अस्थल यानी धर्मस्थल की बारी आती है। आज से दो-ढाई सौ साल पहले गांव के पुरखों की हस्तलिखित पुस्तिकाओं के पन्ने पलटता हूं तो पाता हूं कि उस दौर में भी इस गांव के लोग शैक्षणिक दृष्टि से काफी समृद्ध थे। वह भी तब, जब यहां से आवागमन के लिए न तो रेल मार्ग था और न ही सड़क मार्ग। कोसों पैदल चलकर पढ़ाई करना तब मजबूरी रहा होगा। पं. पुरुषोत्तम शर्मा ने जो दस्तावेज उपलब्ध कराए उसके मुताबिक सौ-दो सौ साल पहले भी यहां काशी पढ़कर आए विद्वान होते थे। वे सदैव घुश्मेश्वर की आराधना में रत रहते थे। शिवालय (अब शिवाड़) के जिन पांच प्रमुख शिव मंदिरों का अनन्य शिवभक्त ठाकुर गुमानसिंह राजावत ने कवित्त के जरिए उल्लेख किया था उनमें बरजड़ा स्थित चेतनेश्वर महादेव मंदिर भले ही बाद में बना लेकिन शिवालय सरोवर का यह छोर ही घुश्मा की शिव आराधना का केन्द्र हुआ करता था।

चेतनेश्वर महादेव के बारे में कहा जाता है कि संन्यासी चेतनगिरी ने इस मंदिर को बनवाया था जो इस गांव के ही रहने वाले थे। अस्थल परिसर में अधिकांश देवालय तो शिवाड़ के तत्कालीन ठाकुर सौभाग सिंह ने बनवाए थे। इसलिए अधिकांश मंदिर काफी प्राचीन हैं। यों कहा जाना चाहिए कि गांव की बसावट की शुरुआत के वक्त ही यह परिसर बन गया था। लेकिन अस्थल से सटे ही बरजड़ा में चेतनेश्वर महादेव के रूप में विख्यात शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा तो करीब अस्सी साल पहले ही पं. पुरुषोत्तम शर्मा के दादाजी पं. शिवप्रताप शर्मा के मुख्य पुरोहित्य में हुई थी।

बरजड़ा को जितना मैं समझ पाया हूं यह मूलतः बड़जड़ा रहा होगा। स्थानीय बोलचाल में बरगद या वट वृक्ष को बड़ कहते हैं। और बड़जड़ा मतलब ऐसा बड़ जिसकी जड़ें काफी फैली हो। यह बरगद का वृक्ष शिवालय सरोवर के उसी छोर पर है जहां अस्थल बना हुआ है। इसी बरगद से घुश्मा व सुधर्मा दंपति की शिवभक्ति की कथा भी जुड़ी हुई है। हो सकता है यह बरगद का पेड़ तब भी किसी न किसी रूप में रहा हो। इस घने पेड़ की जड़ों का आज भी कहीं ओर-छोर नहीं है। इसी बरगद के पेड़ के पास एक जीर्ण-शीर्ण सी कुटिया भी है। हो सकता है घुश्मा-सुधर्मा दंपती यहीं पूजा-अर्चना करते हों। शिवाड़ के इतिहास में जाएं तो जब इस गांव का नाम शिवालय और बाद में शिवाल रहा होगा तो यहां सिर्फ मंदिर और शिवालय ही रहा होगा। आबादी क्षेत्र कहीं ओर था क्योंकि तब शिवालय सरोवर ही काफी विस्तार लिए रहा होगा।

खैर, चर्चा बरजड़ा स्थित चेतनेश्वर महादेव की। पिछली सदी में शिवाड़ के बोहरा परिवार में एक प्रकाण्ड विद्वान और धर्मप्राण व्यक्ति का जन्म हुआ था। उनकी ख्याति दूर-दूर तक थी। उनके मूल नाम का पता नहीं चला लेकिन गृहस्थ जीवन त्याग उन्होंने संन्यास ले लिया और अपना नाम स्वामी चेतनगिरी रख देशाटन पर निकल गए। ख्याति के अनुरूप उन्हें काफी मान-सम्मान मिला और श्रद्धालुओं ने मुद्राएं और स्वर्ण भी इस दौरान उन्हें भेंटस्वरूप दी। अपनी मातृभूमि का मोह उन्हें फिर शिवाड़ खींच लाया। वे घर नहीं गए बल्कि इस बरजड़ा के पास ही कुटिया में डेरा डाल दिया। अपने कमाए धन का पुण्य के काम में लगाने के इरादे से उन्होंने बरजड़ा के समीप ही एक बरामदा यात्रियों के ठहरने के लिए बनवाया। यहीं एक कुंआ भी खुदवाया। सरोवर के नजदीक रहने से इस कुएं का जलस्तर हमेशा लबालब रहता था। पिछले चालीस-पचास सालों में जब से जलदाय विभाग ने इस कुएं से गांव जलापूर्ति की व्यवस्था शुरू की तब से यहां भी जलस्तर पाताल में जाने लगा है। अपने जीवन के अंतिम दौर में चेतन गिरी महाराज ने यहां शिव मंदिर बनाकर प्रतिमाओं की स्थापना भी करवाई। इनमें वे शिवलिंग भी शामिल है जो शिवालय सरोवर की खुदाई के दौरान निकले थे। शायद इसीलिए इस शिवालय का नाम चेतनेश्वर महादेव रखा गया होगा। वैसे भी महादेव का यह स्वरूप सदैव चेतन रहने वाला है क्योंकि गांव के एक दिशा के प्रवेश द्वार पर स्थित है। कभी शिवाड़ आने वाले दर्शनार्थियों के लिए अस्थल ही ठहरने, स्नान-ध्यान करने की इकलौती जगह होती थी। संभवतया स्वामी चेतनगिरी ने इस कमी को तो महसूस किया ही, घुश्मा के आराधना स्थल का स्मरण भी चिरस्थायी रखने की सोची होगी।

आज भी शिवाड़ में स्वामी चेतनगिरी के वंशज हैं और वे ही बरजड़ा स्थित इस शिवमंदिर की सेवा-पूजा करते हैं। बरजड़ा के इस पवित्र स्थल पर चेतनगिरी महाराज ने जिस कुएं का निर्माण कराया मैंने वहां बचपन में पनघट पर महिलाओं की भीड़ लगी देखी है। अब जब कुएं ही रसातल मे जाने लगे ओर नलों के जरिए पानी घरों में पहुंचने लगा तो ये पनघट और सिर पर मटके लिए महिलाओं की कतारें अब बीते दिनों की बातें हो गई हैं। लेकिन बरजड़ा के इस कुएं के पानी की खासियत यह है कि इस पानी से दाल जल्दी पक जाती है। दाल नहीं गलना जैसे मुहावरे शायद ऐसे कुओं के लिए बने होंगे जिनके पानी में यह खासियत नहीं होती होगी। आज भी घरों में दाल जल्दी पकाने की मंशा रखने वाले इसी कुएं का पानी काम में लेते हैं। ■

चेतनेश्वर महादेव

स्वामी चेतनगिरी अपनी माटी के प्रति कितना प्रेम रखते थे यह इसी से समझा जा सकता है कि देशाटन में काफी धन कमाने के बावजूद गांव में आकर ही चेतनेश्वर महादेव का मंदिर बनवाया।

# प्रथम पूज्य सिद्धि विनायक

सिद्ध विनायक मंदिर में वर्ष 1982 में सिर्फ गणेश प्रतिमा ही स्थापित की गई थी। अब गणेश जी के दोनों तरफ रिद्धि- सिद्धि भी विराजमान कर दी गई

गणपति प्रथम पूज्य हैं। इसीलिए आम तौर पर गांव-कस्बों से लेकर शहरों तक के प्रवेश द्वार पर ही भगवान गणेश विराजमान रहते हैं। शायद यही सोचकर गांववासियों ने तय किया कि स्टेशन रोड की तरफ भी गणेश मंदिर होना चाहिए। इसके लिए चुना गया सरकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के परिसर को जो अब सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बन गया है। मसकद दोनों ही थे। पहला, गांव में सुख-समृद्धि बनी रहे। और दूसरा, अव्वल तो लोगों को अस्पताल की शरण लेने का मौका ही नहीं मिले और ऐसा हो भी जाए तो शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिए गणपति का आशीर्वाद साथ हो। इस सरकारी अस्पताल में प्रथम नियुक्ति पाने वाले चिकित्सक डॉ. वीरेन्द्र अग्रवाल की देन है यह गणेश मंदिर। श्रद्धालुओं ने इसे सिद्धि विनायक मंदिर का नाम दे दिया है।

गणेश चतुर्थी के दिन ही वर्ष 1982 में शुरू में यहां एक चबूतरे पर छोटी वेदी बना गणेश जी विराजमान किए गए। जिस दिन गणपति को यहां विराजमान किया गया उस दिन गांव में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई थी। तब घुश्मेश्वर मंदिर में प्रकाण्ड विद्वान पं. शिवदत्त जोशी का प्रवास चल रहा था। वे मंदिर में नियमित सत्संग करते थे। डॉ. अग्रवाल, वीरेन्द्र जी तिवारी, मेरे पूज्य पिताजी पं. नहनूलाल जी पाराशर व शिवाड़ के अन्य प्रबुद्ध नागरिक उनके प्रमुख शिष्यों में शामिल थे। अस्पताल होते हुए स्टेशन के रास्ते तब नीम के घने पेड़ होते थे। ऐसे में शाम ढलने के बाद लोगों का इधर कम ही आना-जाना होता था। बचपन में मित्रों के साथ सायंकालीन भ्रमण के बाद यह गणेश चबूतरा ही गपशप का ठिकाना होता था। गणेश प्रतिमा स्थापित हुई तो यहां से गुजरने वाले इमारती पत्थर ले जाते ट्रक-ट्रैक्टरों ने यहां एकाध पत्थर डालने भी शुरू कर दिए। पत्थरों का ढेर लगने लगा तो प्रतिमा के लिए बड़ा चबूतरा बनाने का इरादा हुआ। शिवाड़ के प्रमुख समाजसेवी शंकर जी मिस्त्री ने गणेश प्रतिमा के लिए कलात्मक छतरी बनवा दी।

प्रथम पूज्य गणपति भी ऐसे स्थान पर प्रतिष्ठित हुए कि शिवाड़ में आने वाले और प्रस्थान करने वाले दोनों ही यहां सिर झुकाए बिना नहीं गुजरते। सही मायने में गांव के अस्पताल में विराजित गणपति के दर्शनार्थ आने वाले खुद को निरोगी रखने के साथ सुख-समृद्धि देने की प्रार्थना करते हैं। पिछले दो-तीन साल के दौर में यहां के युवक आगे आए और मंदिर को मौजूदा स्वरूप देने का फैसला किया। गणेश जी के साथ रिद्धि-सिद्धि की प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित करा दी गईं। युवकों ने गणेश मित्र मंडल का गठन भी कर रखा है जो धार्मिक आयोजन करते रहते हैं। हर साल गणेश चतुर्थी पर यहां श्रद्धालुओं की रेलमपेल रहती है। आकर्षक झांकी के साथ महाआरती का आयोजन भी होता है। गणेश मित्र मंडल के सदस्यों का यह आस्था भाव सराहनीय है।

शिवालय क्षेत्र में भी चारों ओर द्वार रहे होंगे तब भी इनमें गणपति विराजमान किए गए होंगे। यों तो घर-घर में गणपति विराजते हैं लेकिन शिवाड़ में सबसे प्राचीन कोई गणपति की प्रतिमा है तो वह एक दौर में घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर विराजमान प्रतिमा ही है। गणेश की यह दिव्य प्रतिमा करीब नौ सौ बरस पुरानी है। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर का मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने पुनर्निर्माण कराया तब प्रवेश द्वार पर ये गणपति ही विराजमान किए गए थे। विक्रम संवत 1179 यानी 1122 ईस्वी में। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार पहले यही था। श्रद्धालु भीतर प्रवेश से पहले गणेश जी की इस प्रतिमा को स्नान कराते थे। तब यह द्वार अपेक्षाकृत नीचा था और समीप ही दोनों तरफ तिबारे बने हुए थे ताकि आगंतुक विश्राम कर सके। इस दरवाजे की ऊंचाई बढ़ाने के साथ-साथ दो दशक पहले मंदिर के मुख्य द्वार को चौड़ा करने का काम हुआ तो गणेश की इस पाषाण प्रतिमा की बाउण्ड्री खंडित हो गई थी। इसके बाद यहां दूसरे गणेश जी विराजमान कर दिए गए। मूल प्रतिमा अब भी सुरक्षित है।

गणेश की यह दिव्य प्रतिमा कभी घुश्मेश्वर मंदिर के प्रवेश द्वार पर प्रतिष्ठित थी। मान्यता है यह प्रतिमा मंदिर के पुनर्निर्माण के वक्त ही स्थापित हुई होगी।

# नए दौर का नीलकंठ पार्क

नीलकंठ पार्क को देखकर लगता है जैसे किसी शहरी इलाके में आ गए हों

किसी सरकारी सहयोग के बिना विकसित किया गया यह पार्क जनसहभागिता की मिसाल है

यह बात सही है कि हमारे यहां गांव अब शहर होते जा रहे हैं। विलासिता और जरूरत की तमाम वस्तुएं यहां उपलब्ध होने लगी है। लेकिन गांवों का जिस कदर शहरीकरण होता जा रहा है उससे पर्यावरण को खतरा भी होने लगा है। कारण साफ है, हरियाली की जगह अब सीमेंट-कंकरीट के जंगल खड़े होने लगे हैं। पिछले सालों में शिवाड़ में भी ऐसा ही कुछ होने लगा था। लेकिन शायद लोगों को अपनी भूल का अहसास होने लगा है। इसीलिए तो अब शहरों की तर्ज पर पार्क तक विकसित किए जा रहे हैं। शिवाड़ में स्टेशन रोड पर भी नीलकंठ पार्क कुछ इसी चिंता के चलते बना है। खासियत यह है कि इस पार्क को विकसित करने का काम जनसहयोग से ही हुआ है। सरकार ने इस पार्क में एक पाई भी खर्च नहीं की। भगवान भोलेनाथ के नाम पर ही पार्क का नाम रखा गया है नीलकंठ पार्क। जिस स्थान पर नीलकंठ पार्क बनाया गया है वहां पहले घने नीम के पेड़ हुआ करते थे। समूचे स्टेशन रोड को स्थानीय बोलचल में नीमड्या ही कहते थे। नीम के पेड़ इतने घने कि बचपन में अकेले तो इधर रुख करने की हिम्मत ही नहीं होती थी। वक्त की रफ्तार ने इस रोड पर एक भी नीम का पेड़ नहीं छोड़ा। एक तरह से गांव के फेफड़ों को तहस-नहस कर दिया गया। इन्हीं नीमड़ियों के इलाके में आज जब नीलकंठ पार्क को देखता हूं तो सुखद अहसास होता है।

पार्क का नाम नीलकंठ ही क्यों? सीधा सा जवाब है कि भोलेनाथ की नगरी में इससे बेहतर नाम और क्या हो सकता है? लेकिन इस नामकरण के पीछे चालीस बरस पुराना इतिहास भी जुड़ा है। तब यहां बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंधक बन कर आए महेन्द्र शर्मा जी व शिवाड़ के कुछ युवकों ने नीलकंठ क्लब बना रखा था। गांव में क्लब के नाम पर कुछ खेल गतिविधियां और पिकनिक आदि हो जाती थी। यह 1978-79 का दौर था। लेकिन महेन्द्र शर्मा जी के यहां से जाते ही क्लब भी खत्म हो गया। तब इस क्लब में सक्रिय रहे कुछ लोगों के दिमाग की ही उपज है नीलकंठ पार्क। शायद पुराने क्लब का नाम जीवित रखने का भी मकसद था इस पार्क के नामकरण के पीछे। अब किस्सा पार्क के निर्माण का। समाजसेवी सुरेन्द्र जैन बताते हैं कि शिवाड़ में ऐसा पार्क बनाने का सपना था जो यादगार रहे। मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष प्रेमप्रकाश शर्मा को इच्छा से अवगत कराया। पंचायत प्रशासन ने स्टेशन रोड पर तिराहे का चयन किया। यहां शिवाड़ से ईसरदा स्टेशन की ओर, सारसोप की ओर व शिवाड़ बायपास की ओर की तीन राहें निकलती है।

इस तिराहे के बीच में करीब चार बीघा जमीन थी। इसमें करीब आधी सड़क निर्माण में आ गई। शेष पर पार्क विकसित करने की योजना बनी। शुरू में यहां पौधारोपण कर कंटीली बाड़ लगाने का विचार ही था। पार्क विकसित करने की तैयारियों के बीच एक के बाद एक नए प्लान सामने आते रहे। गांव के ही नहीं बल्कि बाहर के लोग भी जनसहयोग के लिए जुड़ते रहे। गांव के इकबाल बागवान ने पौधों की देखरेख की जिम्मेदारी बिना किसी मेहनताने के संभाली। पैदल चलने के लिए वॉक वे, बच्चों के लिए झूले, बैठने के लिए आरामदायक कुर्सियां, झूले व फव्वारे आदि सब कुछ है इस पार्क में। मन भाती हरियाली, आकर्षक प्रतिमाएं और जनसुविधाएं भी। रोशनी का पुख्ता बंदोबस्त तो है ही।

सरकारों के भरोसे विकास के काम क्यों आधे-अधूरे रहने के बाद भी भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं इसका अहसास इस पार्क को देखकर हो सकता है। इस पार्क में सीसीटीवी कैमरे तक लगे हैं। ताकि समाजकंटकों पर नजर रखी जा सके। फव्वारे के बीच खिलता कमल और हाइड्रोलिक सिस्टम से ऊपर-नीचे होती प्रतिमा ऐसी कि देखते रहने का मन करे। पार्क में विस्तार के काम अभी जारी हैं। सही मायने में यह पार्क जनसहभागिता की मिसाल है। शिवाड़ व आसपास के दर्शनीय स्थलों में यह पार्क भी एक और मणि के रूप में शामिल हो गया है। सुबह-शाम गांव से पार्क तक नियमित भ्रमण पर आने वालों की संख्या भी दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। शिवाड़ में महादेव के दर्शन के लिए आएं तो मंदिर से महज आधा-पौन किलोमीटर दूर इस पार्क को देखना नहीं भूलें। आपको सब कुछ शहरों से भी बेहतर लगेगा। पार्क की देखरेख के लिए स्थानीय स्तर पर एक प्रबंध समिति भी बना ली गई है।

- नीलकंठ पार्क में हाईड्रोलिक सिस्टम से ऊंची-नीची होती प्रतिमा का अलग ही आकर्षण है।
- पिछले सालों में नीलकंठ पार्क शिवाड़ के नए पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है।

# नाट्यशाला द्वार पर बद्रीनाथ

घुश्मेश्वर के चार प्रमुख दरवाजों में से एक नाट्यशाला द्वार यानी नटवाड़ा में नटेश्वर महादेव के साथ बद्रीनाथ भगवान भी विराजमान हैं (बांए), अक्षय तृतीया पर मंदिर शिखर पर ध्वजा चढ़ाते ग्रामीण (दांए)

हमारी मान्यताएं व परंपराएं भी अनूठी है। राजधानी जयपुर में प्रत्येक गुरुपूर्णिमा को जंतर-मंतर पर किए जाने वाले वायु परीक्षण को भी मैं काफी अचरज भरा मानता रहा हूं। भला हवा का रुख मौसम का अंदाज कैसे लगा सकता है। घुश्मेश्वर महादेव से महज आठ किलोमीटर दूर नटवाड़ा गांव में भी सालों से एक अनूठी परंपरा चली आ रही है। इस परिपाटी के तहत हर साल अक्षय तृतीया के दिन यहां के बद्रीनाथ मंदिर में ध्वज फहराने के तत्काल बाद जो पहला पक्षी मंदिर के शिखर पर बैठता है उसी को देखकर जमाने का अंदाजा लगाया जाता है। यानी साल अकाल का रहेगा या सुकाल का या फिर सामान्य। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर के चार प्रमुख द्वारों में एक द्वार नाट्यशाला द्वार का अपभ्रंश नाम है नटवाड़ा जहां बद्रीनाथ के इस मंदिर के साथ नटेश्वर शिवलिंग भी काफी प्राचीन है। नटेश्वर महादेव का यह स्वयंभू शिवलिंग है। यह कितना प्राचीन है इसका कोई दस्तावेजी सबूत नहीं मिल पाया लेकिन इतना जरूर है कि करीब 900 साल पहले जब शिवालय के इस शिवमंदिर का पुनर्निर्माण हुआ उसके पहले से यहां शिवलिंग व बद्रीनाथ धाम मौजूद है। आज भी शिवाड़ में घुश्मेश्वर महादेव के मंदिर में प्रति सोमवार होने वाले जागरण में नटवाड़ा से गायक कलाकार आते हैं। मान्यता है कि अक्षय तृतीया के दिन ध्वजारोहण के तत्काल बाद शिखर पर सबसे पहले तोता बैठे तो सुकाल और कौवा बैठे तो अकाल का संकेत मिलता है। यदि कोई

# पाराशर ब्राह्मण परिषद

## अजमेर (राजस्थान)

पाराशर समाज की युवा,
उत्साही एवं शिक्षित
**समाजसेविका**

## श्रीमती प्रतिभा पाराशर

को अजमेर नगर निगम
में **वार्ड नंबर तीन**
से भाजपा प्रत्याशी के रूप में
पार्षद चुने जाने पर बधाई।

**हमारा संकल्प**

स्वच्छ अजमेर -स्वस्थ अजमेर
वार्ड नम्बर तीन को बनाएंगे श्रेष्ठ वार्ड
विकास के नए आयाम छूने का इरादा
आपके समर्थन के लिए आभार

**प्रतिभा अरविन्द पाराशर, पार्षद, वार्ड नम्बर तीन अजमेर नगर निगम**

**हमारा ध्येय**

• असहाय एवं जरूरतमन्दों की सहायता करना • समाज की विवाह योग्य युवक-युवतियों का ब्यौरा
• समाज से कुप्रथाओं को दूर करने का प्रयास करना ।

**सबका साथ,सबका विकास। समान भागीदारी,सबका सम्मान**

पाराशर समाज, अजमेर को अजमेर नगर निगम में सेवा मौका देने के लिए भारतीय जनता पार्टी नेतृत्व माननीय प्रदेश अध्यक्ष **श्री सतीश पूनिया** व माननीय विधायक **श्री वासुदेव देवनानी** का

**कोटि-कोटि आभार व अभिनंदन।**

**बड़े-बड़े मौसम विज्ञानी हर साल मौसम का पूर्वानुमान लगाने में भले ही विफल होते दिखें लेकिन नटवाड़ा के बद्रीनाथ धाम में अक्षय तृतीया के दिन जो अनुमान लगाया जाता है वह काफी सटीक होता है। आस्था का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा जिसमें पंछी के शिखर पर बैठने को आधार बनाकर जमाने का अंदाज बरसों से लगाया जाता रहा है।**

पक्षी काफी देर तक बैठै ही नहीं तो अनुमान लगाया जाता है कि न तो अकाल पड़ेगा और न ही सुकाल की उम्मीद। ऐसा कई बार होता है जब शिखर पर कोई भी पक्षी नहीं बैठता। ग्रामीण तब अनुमान लगा लेते हैं कि इस बार का मानसून सामान्य रहने वाला है। नटवाड़ा में बद्रीनाथ धाम का इतिहास भी काफी रोचक है। जनश्रुति के मुताबिक करीब 1200 साल पहले एक परमभक्त गुसाई संत अर्जुन दास प्रतिवर्ष उत्तराखंड स्थित बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर जाते थे। जब वे अशक्त हो गए तो अपनी बद्रीनाथ यात्रा को आखिरी यात्रा बताते हुए अर्जुन दास ने वहां बद्रीनाथ भगवान से प्रार्थना की कि अब मैं और नहीं आ सकता। इसे आपके धाम का अंतिम दर्शन ही मानें। बताते हैं कि अर्जुनदास की श्रद्धा व भक्ति से प्रसन्न बद्रीनाथ भगवान ने उन्हें वहीं स्वप्न में दर्शन दिए। स्वप्न में कहा बताया कि वे खुद उसके साथ चलेंगे। बद्रीनाथ भगवान के बताए स्थान से अर्जुन दास जी को तप्तकुण्ड से कमल का पुष्प मिला जिसे अर्जुनदासजी जी ने निवाई स्थित कुंडो पर रखा जहां कमल का पुष्प मूर्ति में बदल गया। गुसाई संत ने प्रतिमा लाकर समीप के पराना गांव में स्थापित करनी चाही। लेकिन आश्चर्य! सुबह कराया गया मंदिर निर्माण रात को ध्वस्त हो जाता था। यानी कोई अज्ञात शक्ति थी जो वहां मंदिर बनने से रोक रही थी। गुसाई संत ने फिर प्रार्थना की तो भगवान बद्रीनाथ ने स्वप्न में कहा- मुझे एक कोस दूर नाट्यशाला द्वार ले चलो। वहां खुद नटेश्वर महादेव विराजमान है। ये वे ही नटेश्वर महादेव है जिनका जिक्र नाट्यशाला द्वार से नटवाड़ा बने गांव को लेकर पहले भी हुआ है। ऐसा कहते हैं कि पराना टोंक के नवाब की रियासत में था। यहां गोहत्या होती थी अतः बद्रीनाथ भगवान ने स्वप्न मे कहा कि मुझे पराना की बजाए नटवाड़ा ले चलो। इस प्रतिमा को बाद में आज के नटवाड़ा में लाकर स्थापित किया गया। बताते हैं कि मंदिर का निर्माण जब तक चला मंदिर पुजारी को रोज आरती से पहले बद्रीनाथ की प्रतिमा के सम्मुख एक सोने का सिक्का मिलता था। उसी से यह मंदिर पूरा बना। बद्रीनाथ की यह अलौकिक प्रतिमा श्याम पाषाण की है। प्रतिमा के ठीक सामने गरुड स्तंभ है। इस पर हाथ जोड़े गरुड़ की प्रतिमा है। इस मंदिर का शिखर दूर से ही दिखाई देता है। दावा किया जाता है कि उत्तराखंड के बाद बद्रीनाथ का यह अकेला मंदिर है। यह टोंक जिले में शिवाड़-बरोनी मार्ग पर है।

नटेश्वर महादेव का स्वयंभू शिवलिंग

जैसा मैंने पहले बताया कि घुश्मेश्वर धाम से संबद्ध कोई भी मंदिर परिसर ऐसा नहीं है जिसके चमत्कार की गाथाएं न हो। बरसों से लोग इन चमत्कारों के आगे श्रद्धा से सिर झुकाते रहे हैं। बद्रीनाथ भगवान को भीगी दाल एवं बताशे का प्रसाद चढ़ाया जाता है। अक्षय तृतीया पर इस प्रसाद को ताम्रपात्र में डालकर तुरंत निकालने पर दाल ऐसे भीग जाती है जैसे घंटों पहले भिगोयी हो। कहते हैं कि इस चमत्कार को देखकर टोंक के नवाब ने भी मंदिर के निमित्त कृषि भूमि चने की खेती के लिए दान दी थी। शिवाड़ के घुश्मेश्वर मंदिर की तरह बद्रीनाथ के इस मंदिर में भी अखण्ड ज्योति जल रही है। आज भी यहां नटेश्वर महादेव की आरती बद्रीनाथ भगवान के पहले होती है। शिवालय क्षेत्र के चारों और बने आराधना स्थल समूचे माहौल को धर्ममय बना देते हैं। हां, इतना जरूर है कि सरकार चाहे तो आसपास के तीर्थ स्थलों को जोड़कर धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने का काम कर सकती है। सवाईमाधोपुर के त्रिनेत्र गणेश, चौथ का बरवाड़ा की चौथ माता, शिवाड़ के घुश्मेश्वर महादेव और नटवाड़ा के बद्रीनाथ धाम को मिलाकर धार्मिक पर्यटन सर्किट बनाया जा सकता है।

- नटवाड़ा में बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण जब तक चला मंदिर पुजारी को आरती से पहले रोज सोने का एक सिक्का मिलता था।
- अक्षय तृतीया पर ताम्र पत्र में दाल भिगोकर निकालने पर ऐसी हो जाती है जैसे घंटों पहले भिगोई हो।

# पर्यटकों की पसंद ढील बांध

## गोपालपुरा (टापुर का बंधा)

शिवाड़ भगवान भोलेनाथ के दर्शनार्थ आने वाले यदि टापुर के बांध तक न जाएं तो उनकी यात्रा का आनंद अधूरा ही माना जाएगा। अधूरा इसलिए क्योंकि शिवाड़ से महज 9 किलोमीटर दूर बने टापुर के बांध को देखने का रोमांच उन्हें बार-बार यहां आने को मजबूर करेगा। टापुर का बांध सरकारी रिकॉर्ड में ढील बांध या गोपालपुरा बांध के नाम से दर्ज है। गोपालपुरा कभी अलग से रियासत हुआ करती थी। शिवाड़ का राजस्व प्रबंध भी पहले गोपालपुरा ठिकाने से ही होता था। राजपूत ठिकानेदारों के वंश में ठाकुर सौभाग सिंह ने संवत 1775 यानी 1718 ईस्वी में ठिकाने का मुख्यालय गोपालपुरा से शिवाड़ कर दिया था। टापुर का यह बांध सरकारी रिकॉर्ड में गोपालपुरा बांध के रूप में इसीलिए दर्ज है क्योंकि यहां पहले जिस गोपालपुरा गांव की बसावट थी वह अब डूब क्षेत्र में आ गया। समीप टापुर गांव होने के कारण टापुर का बांध भी कहने लगे।

**वर्ष 1911 में जयपुर के शासक सवाई माधोसिंह ने 250 वर्गमील जलभराव क्षेत्र वाले इस बांध का निर्माण करवाया था**

बांध ओवरफ्लो होता है तब यहां पर्यटकों की भीड़ उमड़ती है

टापुर के बांध की पक्की पाल व बांध की निगरानी चौकी

यह बांध जब लबालब होता है तो चादर चलती हुई देखने व बहते झरनों का लुत्फ उठाने यहां भीड़ उमड़ पड़ती है। इस मनोरम स्थल का अंदाजा तो चित्रों से हो ही रहा होगा लेकिन बांध के बनने का इतिहास भी कम रोचक नहीं है। यहां एक शिलालेख लगा हुआ है जिस पर आंग्लभाषा व हिन्दी में इबारत लिखी है उसके मुताबिक जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने संवत 1968 यानी सन् 1911 में इस बांध का निर्माण कराया था। करीब 250 वर्गमील जलभराव क्षेत्र वाले इस बांध की क्षमता 1215 मिलियन क्यूबिक फीट है। बांध से करीब 29 मील तक नहरें बनी हैं। यानी सिंचाई का बेहतरीन साधन। इस शिलालेख में यह भी अंकित है कि इस विशाल बांध के निर्माण में तब तीन लाख 9 हजार रुपए की लागत आई थी। बीसलपुर बांध के बाद इलाके का यह एकमात्र रमणीय स्थल है जहां पानी व हरियाली का सामंजस्य है।

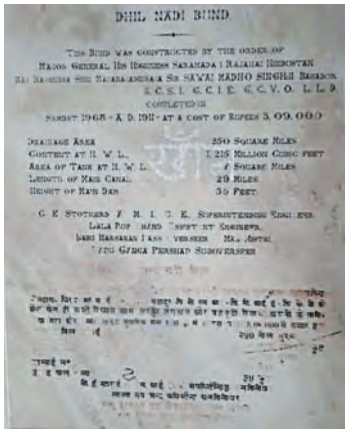
DHIL NADI BUND

टापुर के बांध पर अंकित इस शिलालेख में बांध निर्माण के खर्च का ब्योरा भी अंकित है

अंग्रेज रेजीडेंट के प्रतिनिधियों के आमोद-प्रमोद के लिए बनाया गया खास डाक बंगला

आवागमन के साधन बेहतर हों तो यहां पर्यटन को खूब बढ़ावा मिल सकता है। आजादी के पूर्व यहां अंग्रेज रेजीडेंट के प्रतिनिधि व रजवाड़ों के दौर के शासक, आमोद-प्रमोद व शिकार के लिए आते थे। यहां अंग्रेजों के समय का डाक बंगला व आकर्षक छतरियां इसका स्मरण कराती हैं। करीब सवा सौ साल हो गए इस डाक बंगले व बांध को बने लेकिन आज भी निर्माण कार्य मुंह बोलता है? बांध की विशालता ऐसी है कि जहां नजर दौड़ाओ, जलराशि ही नजर आती है। जयपुर के शासक सवाई माधोसिंह द्वितीय का इस क्षेत्र से नाता रहा है। ईसरदा ठिकाने से गोद गए माधोसिंह जी को शायद इसी नाते ने क्षेत्र में बांध बनाने की प्रेरणा दी होगी। यहां जो शिलालेख लगा है उसमें माधोसिंह जी को 'मेजर जनरल हिज हाईनेस सरमदा राजा ए हिंदुस्तान राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सर सवाई माधोसिंह जी बहादुर' की लंबी उपाधि का जिक्र है। इस शिलालेख का हिन्दी तजुर्मा अब धुंधलाता जा रहा है। टापुर का इतिहास उस घटना से भी जुड़ा है जिसमें किशना खाती के घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग पर अज्ञानवश कुठाराघात करने का उल्लेख है। तब टापुर को तारापुर के नाम से जाना जाता था। समय के साथ यह नाम अपभ्रंश होकर टापुर हो गया।

बीसलपुर की तरह ही इस बांध को सैलानियों के आकर्षण का केन्द्र बनाया जा सकता है। पर्यटकों को चाहिए क्या? बांध की पक्की पाल और कलकल बहते झरने देखकर किसका मन प्रसन्न नहीं होगा? जल व हरियाली का जो संगम यहां है वह आसपास के इलाकों में शायद ही कहीं हो। बरसात के मौसम में यहां यदि चादर चल निकले तो फिर पर्यटकों की ऐसी गहमागहमी होती है कि नियंत्रित करना मुश्किल हो जाता है। लेकिन जैसा यह स्थान है वैसी ही यदि सुविधाएं उपलब्ध हों तो सोने में सुहागे का काम हो सकता है। शिवाड़ घुश्मेश्वर महादेव आने वाले श्रद्धालु अवश्य ही इस मनोरम स्थान पर आना चाहेंगे यदि आवागमन की बेहतर सुविधा हो तो। जरूरत इस बात की भी है कि टापुर बांध तक की सम्पर्क सड़क भी ऐसी बने जिससे पर्यटकों को आने-जाने में परेशानी न हो।

# घुश्मेश्वर महादेव की सब पर कृपा बनी रहे भगवान आशुतोष आपके सब कष्ट दूर करें

श्रद्धेय बालमुकुंद व्यास व श्रीमती रुक्मणी देवी
आपके आदर्श ही हमारी प्रेरणा

**व्यास कॉम्पलेक्स कोटा**
पीपल के पेड़ के पास, पुरानी सब्जी मंडी कोटा

**व्यास फार्म हाउस, कोटा**
बड़गांव, बूंदी रोड कोटा

**बी.आर. एंटरप्राइजेज**
पुरानी सब्जी मंडी कोटा

**व्यास डेयरी**
बूंदी रोड, कोटा

निवेदक–
घनश्याम शर्मा , नरेश व्यास
देई वाले, कोटा



भोले के दरबार में
जो भी आए
उसकी झोली
खुशियों से भर जाए

**जय घुश्मेश्वर**

निवेदक

**भंवर लाल महावर,**
सुपुत्र श्री लल्लू लाल महावर (शिवाड़)
नर्स श्रेणी प्रथम
प्रभारी SNCU (स्पेशियल न्यू बोर्न केयर यूनिट)
सामान्य चिकित्सालय सवाई माधोपुर)
मो-9414828987

2/275, हाउसिंग बोर्ड कालोनी, सवाईमाधोपुर



# उत्कर्ष संस्थान

रजिस्ट्रेशन नं. 158/ जयपुर 1992-93, बाल आधिकारिता विभाग जयपुर,
द्वारा किशोर न्याय अधिनियम के तहत पंजीकृत संस्थान

श्री संदीप शर्मा ( विधायक कोटा -दक्षिण) द्वारा श्रीमती सुधा शर्मा
(सचिव उत्कर्ष संस्थान को सम्मानित करते हुए )

संस्था के उद्देश्य : खुला आश्रय गृह, बाल अधिकारों के लिए सामाजिक जागरुकता, कमजोर समूह के बच्चों का विकास, संरक्षण व पुनर्वास, कामकाजी बच्चों का संरक्षण व कौशल विकास, महिला सशक्तीकरण

1078-बी, श्रीनाथपुरम कोटा, राजस्थान
(0744-2470446,9413007574)

# पाराशर एजुकेशन फाउंडेशन

14/2, तुलसी श्याम, भीमजीपुरा बस स्टेंड के पास, नवा वाडज, अहमदाबाद (गुजरात)-380013

वेबसाइट: www.parasharedu.com

स्थापना- 25 फरवरी 2018

ई मेल: parasharedu.foundation@gmail.com

ज्ञानम् कर्मजा ज्योतिर्गमये

॥ अन्नदानम् परम् दानम्, विद्यादानमत: परम ॥
॥ अन्नेन क्षणिका तृप्ति र्यावज्जीवम् च विद्याया ॥

अन्न दान परम दान है, विद्या दान उससे भी बड़ा है क्योंकि
अन्न से क्षण भर की तृप्ति होती है और विद्या से आजीवन

## अर्थाभाव के कारण उच्च शिक्षा से वंचित मेधावी विद्यार्थियों की सहायतार्थ समर्पित पंजीकृत ट्रस्ट

### हमारा ध्येय

- प्रतिभावान किंतु अर्थाभाव के कारण उच्च शिक्षा से वंचित बालक-बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्रदान करने में सहयोगी बन उनके सपनों को साकार करना
- बालक बालिकाओं को शिक्षा के लिए प्रेरणा
- आत्म निर्भर एवं स्वरोजगार हेतु तकनीकी प्रशिक्षण
- बच्चों व आभिभावकों को शिक्षा पूर्ण के लिए काउंसलिंग एवं सेमिनार आयोजित करना
- हमारी पुरातन संस्कृति के संरक्षण व उन्नयन के प्रयास

### भविष्य की योजनाएं-

- नए प्रोजेक्ट के लिए सरकारी अनुदान प्राप्त करना
- कंपनियों के सीएसआर और अन्य मद से स्वयं अर्जित कौशल उद्योग के अंतर्गत न्यूनतम संचालित व्यय पर उच्च शिक्षा एवं स्वरोजगार और मेक इन इंडिया के तहत तकनीकी प्रशिक्षण केंद्र प्रोफेशनल कॉलेज, हॉस्टल स्थापित करना

### ट्रस्ट की विशेषता

| | |
|---|---|
| Trust Regd. No. | : E/22173 Dated: 27-04-2018 |
| Niti Aayog ID | : GJ/ 2018/0197377 |
| MSME Regd. | : No. GJ 01 DO 105597 |
| ISO 9001:2015 Certificate No. | : SPC20Q4449 |
| Income Tax Pan No. | : AADTP7325C |
| Income Tax Exemption No. | : Ahmedabad/80G/2018-19/A/10121 Dated: 27-12-2018 |
| Trust Income Tax Exemption No. | : Ahmedabad/12AA/2018-19/A/10661 |

आप सभी सक्षम एवं शिक्षा के लिए संवेदनशील बंधु भी शिक्षा दान महादान के महत्व को समझते हुए प्रतिभाशाली किंतु जरुरतमंद बालक-बालिकाओं की उच्च शिक्षा में सहायतार्थ समर्पित पाराशर एजुकेशन फाउंडेशन से जुड़कर पुण्य के भागीदार बनें।

## शिक्षा दान-महा दान

परिवार के मांगलिक मौकों एवं स्वजनों की स्मृति में सहयोग देकर पुण्य कमाएं

### बैंक खाता डिटेल:

पाराशर एजुकेशन फाउंडेशन
खाता न. 10021842304

बैंक: IDFC बैंक
(आई डी एफ सी बैंक)

IFSC कोड: IDFB0040301

शाखा: सन् स्क्वेयर, सी जी रोड,
अहमदाबाद - 380006

### अधिक जानकारी एवं सहायता प्रदान करने के लिए संपर्क करें

**प्रबंध निदेशक**
**चंद्रशेखर पाराशर,**
समाजसेवी एवं
रि.एडिशनल चीफ टाउन प्लानर,
जयपुर,
मो. न. 9414113233

**अध्यक्ष**
**अवधेश पाराशर**
रिटायर्ड ज्वाइंट
कमिश्नर (GST), कोटा,
मो. न. 9829370637

**सचिव**
**अशोक पाराशर**
बिजनेसमेन एवं
इंजीनियरिंग कंसलटेंट, इंदौर,
मो. न. 9425502452

**संयोजक**
**अनिल पाराशर**
प्रमुख उद्यमी एवं
समाज सेवी, अहमदाबाद,
मो. न. 8238184562

**शिक्षाविद**
**डॉ. संजय पाराशर**
ग्लोबल टीचर अवार्ड
से सम्मानित, जयपुर,
मो. न. 9413444090

## खण्ड- पांच

# इतिहास के झरोखे से

राजा-महाराजाओं का दौर सब जगह रोमांच व रहस्यों से भरपूर हैं। शिवाड़ में भी देवगिरी पर्वत पर बने अभेद्य किले से लेकर पुराने दौर में बनी हवेलियों की भी कथाएं खूब हैं।शिवाड़ के धर्मप्रेमी शासकों की धमक जयपुर दरबार तक रही है। आजादी के पहले तक स्थानीय ठिकानेदारों ने जन सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा। इस खण्ड में पढें कि शिवाड़ को आज का रूप देने में इन ठिकानेदारों का क्या रहा योगदान? साथ ही यह भी कि गांव में शिक्षा की अलख जगाने में किन शिक्षकों का योगदान रहा?

# गढ़ी का रोमांचक किस्सा

देवगिरी पर्वत पर किला बनने से पहले स्थानीय शासकों ने आबादी क्षेत्र में जो हवेली बनाई उसे गढ़ी कहा जाने लगा। गढ़ी का मुख्य प्रवेश द्वार कभी काफी ऊंचाई लिए होता था। इस दरवाजे के निर्माण का भी रोचक किस्सा है।

किसी भी स्थान के किले-बावड़ी तथा गढ़-गढ़ी में रोमांचक पुरा इतिहास और किस्से-कहानियां छिपी रहती है। तब के दौर में इतिहास से जुड़े ज्यादातर तथ्य हस्तलिखित पाण्डुलिपियों में ही मिलते हैं। इनमें भी ज्यादातर राजा-महाराजाओं की विरुदावली ही होती आई है। रजवाड़ों के दौर की एक हस्तलिखित पुस्तक में अन्य जानकारी के अलावा गारगढ़ को लेकर दिलचस्प जानकारी सामने आई है। गारगढ़ यानी मिट्टी का गढ़। बोलचाल में मिट्टी को गार कहते हैं। नरूका शासक गोपाल सिंह नरूका गारगढ़ में ही रहते थे। राजावतों के शासन के दौरान किले का निर्माण होने से पहले ठिकानेदार जिस गढ़ी में रहकर राजकाज संभालते थे उसके निर्माण का किस्सा भी काफी रोचक है। उस दौर में शिवाड़ काफी समय तक समीप के गोपालपुरा ठिकाने का हिस्सा था।

गढ़ी का विशाल दरवाजा काफी ऊंचाई (लाल परिधि में महराब) लिए हुआ था। इसी दरवाजे पर तोरण मारने की चुनौती दी गई थी

गढ़ी के बाद स्थानीय शासकों ने बड़े तालाब के रास्ते अपने लिए इस हवेली का निर्माण भी कराया

संवत 1769 यानी 1712 ईस्वी में जब ठाकुर सांवल सिंह (प्रथम) के बाद ठाकुर सौभाग सिंह ने उनकी विरासत संभाली तब उन्होंने गोपालपुरा की जगह शिवाड़ को 1718 ईस्वी में ठिकाने का मुख्यालय बनाया। उन्होंने ही शिवालय सरोवर के पश्चिम तट पर राजपरिवार का आराधना स्थल बनवाया जिसे अस्थल के रूप में जानते हैं। शिवाड़ में आबादी भी तब ज्यादा नहीं थी। उन्होंने अपने लिए आबादी के बीच में जो हवेली बनाई उसे गढ़ी के नाम से जाना जाता है। शिवाड़ का किला भी शिवाड़ में ठिकाने के अस्तित्व में आने के बाद ही बना था। इससे पहले के वर्षों में शिवाड़, टापुर-गोपालपुरा व गीदड़ा डिडवाड़ी की जागीर का हिस्सा रहा। इसमें साढ़े बारह गांव आते थे। मंडावर के राजा शिववीर सिंह चौहान ने यों तो वर्ष 1121 ई. में मौजूदा मंदिर का पुनर्निमाण करा दिया था लेकिन लगातार आक्रमणों के कारण यहां गांव बसता रहा और उजड़ता रहा होगा। लेकिन घुश्मेश्वर महादेव मंदिर, कालिका शक्तिपीठ और शिवालय सरोवर हमेशा ही रहे। शिवाड़ में जिस गढ़ी में ठाकुर सौभाग सिंह रहते थे उसकी पोल कच्ची थी। जनश्रुति है कि सौभाग सिंह के उत्तराधिकारी ठाकुर भैंरू सिंह की बेटी का संबंध समीप के ठिकाने में तय हुआ। वहां से दासियां बाईसा को देखने आई थी। कच्ची पोल की चुगली वर पक्ष के यहां जाकर कर दी। कहा, बाईसा तो लाखों में एक है पर कुंवर साहब तो गार के गढ़ में तोरण मारेंगे।

जंवाईराज ने भी कहीं इस बात का जिक्र कर दिया तो बात वधु के पिता तक पहुंची। शासक वर्ग होता ही ऐसा है। ठान ले तो कुछ भी कर सकता है। बस फिर क्या था शिवाड़ में रातों रात कच्ची पोल वाली गढ़ी पर बुलंद दरवाजा बनवा दिया गया। मुख्यद्वार भी इतना ऊंचा की तीन हाथी खड़े हो जाएं तो भी कम पड़े। कुंवर को इसी गढ़ी पर तोरण मारने का बुलावा भेजा गया। कुंवर तो अपनी हेठी में थे। लेकिन बारात जब वधू पक्ष के दरवाजे तक पहुंची तो नजारा कुछ और ही था। हाथी पर बैठ तोरण मारने आए राजकुमार के लिए तोरण मारना मुश्किल हो गया क्योंकि वह काफी ऊंचा लटका था। अपने राजा की खिल्ली उड़ाने का जवाब देने का गांव वालों को यह अच्छा मौका मिला था। बरातियों पर तंज कसा- अपने हाथी को थोड़ा ऊंचा करो।

पहले वधू पक्ष की लानत-मलानत करने वाले देखते ही रह गए। कुंवर जी तोरण जब ही मार पाए जब तोरण को नीचे लटकाया गया। राजाओं की ठसक का यह दिलचस्प उदाहरण है जिसमें अपनी हेठी के खाातिर वे कुछ भी करने को तैयार रहते थे। यह किस्सा अब भी लोगों की जुबान पर आ ही जाता है। जिस गढ़ी का निर्माण यहां सबसे पहले हुआ तत्कालीन ठिकानेदार तब उसमें ही रहते थे। किला बनने के बाद शासक वर्ग वहां रहने लग गया। एक समय गढ़ी का लंबा-चौड़ा परिसर था जिसे स्थानीय भाषा में रावला कहते हैं। गढ़ी के निर्माण के साथ ही शिवाड़ में आबादी की बसावट फिर से शुरू हुई होगी। इसीलिए गढ़ी के आसपास ही बसावट ज्यादा हुई। गांव का विस्तार बाद में घुश्मेश्वर मंदिर की तरफ ज्यादा हुआ। इस गढ़ी में बाद में शिवाड़ के अन्य ठिकानेदार भी किला बनने तक रहे। बचपन में मैंने भी इस गढी का विशाल दरवाजा देखा है। समय के साथ-साथ यह दरवाजा भी बंद कर दिया गया है। वर्ष 1970 के आसपास गढ़ी में ठाकुर बजरंग सिंह जी रहने लगे थे। इसमें अब दिवंगत रघुवीर सिंह जी राजावत के परिजन रहते हैं।

# दुश्मनों के लिए अभेद्य किला

राजशाही के दौर में किले-महल शासकों की हैसियत के प्रतीक हुआ करते थे। राजपूताने में तो हर छोटे-बड़े गांव-कस्बे में जहां भी पहाड़ हैं, किले मिल ही जाएंगे। शिवाड़ में देवगिरी पर्वत पर बने किले को भी 288 साल पूरे हो गए हैं। आज भी इसकी प्राचीरें सीना ताने खड़ी हैं। यों तो पास के ईसरदा व सारसोप के पहाड़ों पर भी ऐसे किले हैं लेकिन शिवाड़ का किला विशालता के मामले में कहीं ज्यादा है। किले-महलों आदि में राजशाही दौर के रोमांचक किस्से भरे जुड़े रहते हैं। ताज्जुब इस बात पर होता है कि सुविधाओं के अभाव के उस दौर में निर्माण सामग्री इतनी ऊंचाई पर कैसे पहुंचती होगी। यह भी सही है कि उस दौर में कामगारों को सिर्फ दो वक्त की रोटी मिल जाए तो वे रात-दिन हाड़-तोड़ मेहनत करने को तैयार रहते होंगे। फिर, राज की नाफरमानी पर सजा का खौफ भी तो होता होगा। आक्रमणों व लूटपाट का खतरा खत्म हुआ तो अधिकांश राजाओं ने खुद ही किलों को छोड़ कर अवाम के साथ रहने के लिए महल बनाना शुरू कर दिया था। शिवाड़ में भी बाद में ऐसा ही हुआ।

शिवाड़ के तत्कालीन ठिकानेदार ठा. भैंरू सिंह ने शिवाड़ के आबादी क्षेत्र में पहले अपने निवास के लिए सबसे पहले गढ़ी बनवाई थी। समूचा क्षेत्र रावला कहलाता था। उन्होंने बाद में देवगिरी पर किला बनाने का इरादा किया। यह जरूरत इसलिए भी हो गई थी क्योंकि बाहरी आक्रमण के खतरे बढ़ने लगे थे। खास तौर से लूटपाट करने वाले पिण्डारियों का उत्पात इस इलाके में ज्यादा ही हो चला था। ठाकुर भैंरू सिंह होनहार और बहादुर थे। उन्होंने निपुण कारीगरों को बुलाकर नक्शा बनवाया। शुभ मुहुर्त में विक्रम संवत 1790 यानी 1733 ईस्वी में इस किले की नींव रखी। किले का निर्माण सोलह साल में, संवत 1806 यानी 1749 में जाकर पूरा हुआ।

**पिण्डारियों की लूटपाट के दौर में शिवाड़ के तत्कालीन शासक ठाकुर भैंरु सिंह ने देवगिरी पर्वत पर किला बनाने का निश्चय किया। इस अभेद्य किले का भीतरी दृश्य**

शिवाड़ का यह अभेद्य किला बनवाने वाले ठा. भैंरू सिंह की प्रशस्ति में लिखे ग्रंथ 'भैंरू विलास'में शिवाड़ के विद्वान नाथूलाल जी बोहरा ने यों लिखा था।

*बुर्जे विशाल कोट, सुदृढ़ को विचित्र हाल,*

*बाला किलो आगे चोबुरज्यो सुहायो है।*

*प्रथम गणेश द्वार, हाट-बाट, चौकी दस,*

*महल-मंदिर, चौक तिबारे टांके,*

*बांके घुड़साल को छबीलो दृश्य छायो है।*

*तोपखाना देवी द्वार, भैंरू अंधेरी पोल भायो है।।*

*दिव्य रणिवास व वास महल मर्दाने,*

*भैंरू भूप ने दुर्ग देवगिरी पर बनायो है।।*

- देवगिरी पर किला बनाने की शुरुआत तलहटी पर गोलाकार बुर्ज बनाने के साथ हुई। बुर्ज के चारों तरफ गहरी खाई भी बनाई गई

- किले का निर्माण सोलह बरस में पूरा हुआ। किले का मुख्य दरवाजा गणेश दरवाजा है

पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि कोथून (चाकसू) के पास भुरटिया गांव से एक ब्रह्मचारी संत ने ठा. भैंरूसिंह को पहले वास्तुशास्त्र के मुताबिक पानी का टांका व भगवान शंकर का मंदिर बनाने की सलाह दी थी। पहले सूंघे जमीन सूंघ कर ही बता देते थे कि कहां पानी मिलेगा। उनकी सलाह पर ही किले का निर्माण देवगिरी पवर्त की तलहटी से शुरू हुआ। यहां न केवल विशाल कुआं बनवाया गया बल्कि बुर्ज के चारों तरफ खाई भी बनाई गई ताकि शत्रु दाखिल नहीं हो सकें। बताते हैं कि इसी परिसर में नीचे की तरफ ही बारूदखाना बनाया गया ताकि किसी अनहोनी से किले को नुकसान नहीं हो। आक्रांताओं से मुकाबले के लिए बनना शुरू हुए किले की संरचना ही कुछ इस प्रकार की थी कि परिंदा भी पर नहीं मार पाए। वस्तुतः ठाकुर भैंरूसिंह ने जिस दौर में इस किले को बनवाना शुरू किया उस समय समूचा राजपूताना अंदरूनी कलह से जूझ रहा था। छोटे-छोटे ठिकानेदार एक-दूसरे के दुश्मन बन रहे थे। कहीं राज्य के विस्तार की महत्वाकांक्षा थी तो कहीं आपसी रिश्तेदारी में एक-दूसरे की मदद करने का भाव। मराठा सरदारों ने इस माहौल का फायदा उठाकर राजस्थान का रुख करना शुरू कर दिया था। ऐसे में छोटे-छोटे ठिकानेदारों के लिए भी अस्तित्व बनाए रखना मुश्किल हो रहा था।

शत्रु से सुरक्षा के लिए किए जाने वाले प्रयास ही 'किलेबंदी' कहलाती हैं। शिवाड़ में देवगिरी पर्वत के पार्श्वभाग में किले का जो दृश्य दिखता है वह तो महज झांकी मात्र है। किले के अग्रभाग से जो आभा दिखाई देती है उसमें पहाड़ पर ही बने घुश्मेश्वर उद्यान और शिखर पर हनुमान की विशाल प्रतिमा व उससे भी ऊपर ॐ का अंकन रात की रोशनी में तो अलग ही छटा बिखेरता है। इस किले का प्रवेश द्वार शिवाड़ की पुरानी बस्ती की तरफ से है। लेकिन सेना की आवाजाही संभवतः तलहटी पर बने बुर्ज के माध्यम से ही होती होगी। क्योंकि यहीं बारूदखाना भी हुआ करता था। शिवभक्त ठा. गुमानसिंह जी की इस किले से जुड़ी काव्य पंक्तियां इस प्रकार हैं-

*देवगिरी सुंदर शिखर पर दुर्ग शोभा दिव्य है।*

*तलहटी अंचल सुशोभित ईश मंदिर भव्य है।।*

किले के दक्षिणी भाग में धरातल पर बनी कुएं की बुर्ज रहस्यों भरी लगती है। इसके चारों तरफ बनी खाई से अंदाजा लगाना आसान था कि दुश्मन को किले में आने से रोकने का यह कितना मजबूत जतन था। लेकिन उससे भी अचरज भरा बुर्ज में बना कुआं था जो सदानीरा था। गांव से थोड़ा दूर, भूत- प्रेत के किस्सों का खौफ व सुनसान में होने के कारण अकेले तो यहां आने की बचपन में हिम्मत नहीं जुटा पाते थे। अब तो बुर्ज के समीप से मंदिर तक बायपास भी बन गया।

यह जानकर अचरज होना ही चाहिए कि किले की प्रत्येक दीवार बारह फीट चौड़े आसार की है। पं. पुरुषोत्तम शर्मा के मुताबिक किले में चार बुर्ज दक्षिण में, 4 बुर्ज पूर्व में, एक बुर्ज डिगेश्वर की व दूसरी लक्ष्मी बुर्ज है। पश्चिम दिशा में चौबुरज्या हैं। यह कैदखाना हुआ करता था। कहते हैं कि सभी बुर्जों पर तोपें रखी हुई थी। इनमें एक का नाम भवानी तोप था जिसकी क्षमता बीस-पच्चीस किलोमीटर तक थी। इस तोप को मैंने भी किले में देखा है। देवगिरी पर्वत पर बने इस किले के मुख्य परिसर में चार दरवाजे पार करने के बाद ही पहुंचा जा सकता है। मुख्य दरवाजा गणेश दरवाजा है। दूसरा देवी द्वार और तीसरा भैंरू द्वार। सबसे आखिरी में अंधेरी दरवाजा। इसके बाद ही किले में कोई दाखिल हो सकता था। किले के दरवाजों पर भालेनुमा नुकीले कीले लगे होते थे ताकि कोई आसानी से इन्हें नुकसान नहीं पहुंचा सके। घोड़ों के लिए किले में अस्तबल और उनके लिए खाना-दाना रखने वास्ते अलग से विशाल कोठे बनाए गए थे। किला परिसर में ही दो बावड़ी व पानी के जगह-जगह टांके भी थे। वर्षाजल के पुनर्भरण का प्राचीनकाल में कितना बेहतर इंतजाम था यह इस किले में बने टांकों को देखकर अनुमान लगाया जा सकता है।

चाक-चौबंद बंदोबस्त भी यही होता है जो किले में किया गया था। उन परिस्थितियों का मुकाबला करने की भी पूरी तैयारी थी जिनमें किला परिसर की कुआ-बावड़ी व टांकों में पानी की आवक कम हो जाए या फिर थम जाए। किले के दक्षिण की तरफ देवगिरी की तलहटी में जो बुर्ज बनाई गई उसे कुंए की बुर्ज ही कहते हैं। दुर्ग-किलों का रोमांच हमेशा रहता है। ठाकुर भैंरू सिंह ने यह किला इस प्रकार बनाया था कि दुश्मन का वार किसी भी दिशा से नहीं हो सकता था। एक तरह से यह शिवाड़ का अजयगढ़ था। भैंरूसिंह के बाद शिवाड़ के शासक ठाकुर सूरजमल (संवत 1839-1864) के समय सिंधिया व पिण्डारियों का किले पर आक्रमण का उल्लेख है। छापर से किले पर गोले भी दागे गए मगर दुश्मन किले का बाल भी बांका नहीं कर सका। किले की प्राचीरों पर गोले के निशान आज भी हैं। शिवाड़ का यह किला पुरान्वेषण करने वालों के लिए रहस्य व रोमांच भरा है। आज भी पर्यटक इस विशाल और भव्य किले को कौतुहल भरी नजरों से देखते हैं। ■


घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ
पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का
हार्दिक स्वागत

विनीतः राधाकिशन माली
(शिवाड़ वाले), जयपुर।
सेनि अधिशाषी अभियंता।
सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान

RashalResearch
EVALUATING TECHNOLOGIES

RASHA PROPERTIES

57, Kalyanpuri Colony , New Sanganer Road, Sodala, Jaipur

स्थापितः 1971

# मॉडर्न एजुकेशनल एंड कल्चरल सोसायटी

पद्मावती कॉलोनी- बी निर्माण नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर

Education to Grow

## सोसायटी द्वारा संचालित पाठ्यक्रम

**शिक्षा में स्नातक पाठ्यक्रम - बीएड** (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
(नेशनल काउंसिल फॉर टीचर्स एजुकेशन से मान्यता प्राप्त व राजस्थान विश्वविद्यालय से सम्बद्ध)

**डी.एल.एड** (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
(शिक्षा विभाग से मान्यता प्राप्त)

**प्रवेश - राजस्थान सरकार की ओर से आयोजित प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से**

MODERN EDUCATION SOCIETY
T.T. COLLEGE
JAIPUR

हमारे संस्थापक जिन्होंने अपना
सम्पूर्ण जीवन शिक्षा को समर्पित किया।
आपके आदर्श ही हमारी प्रेरणा

**श्री नंदलाल जैन**

**अजय जैन**, मानद सचिव

**नमन जैन**, मैनेजर

**शिक्षा में गुणवत्ता बनाए रखना ही हमारी पहचान**

# जब मोड़ना पड़ा रेल मार्ग को

जयपुर-मुम्बई रेल मार्ग पर ईसरदा स्टेशन पर उतरकर यात्री तीन किलोमीटर उत्तर में घुश्मेश्वर महादेव मंदिर पहुंच सकते हैं

पुराण प्रसिद्ध बारहवां ज्योतिर्लिंग होने के बावजूद स्थानीय शासकों ने इस गांव से सटे रेल्वे स्टेशन का नाम शिवाड़ रखने की मांग करना तो दूर रेल लाइन तक को गांव की सीमा से नहीं गुजरने दी। तत्कालीन ठिकानेदार ठाकुर महताब सिंह के कार्यकाल में अंग्रेजों ने जब गांव में होकर तब का सांगानेर-सवाईमाधोपुर रेल मार्ग ले जाने की अनुमति मांगी तो ठाकुर साहब ने प्रजा की सुरक्षा का हवाला देते हुए ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया। नतीजा यह हुआ कि रेल लाइन को देवगिरी पर्वत के पिछवाड़े होते हुए घुमाव दिया गया। हां स्टेशन का नामकरण तो ईसरदा के नाम से होना ही था क्योंकि जयपुर के तत्कालीन शासक माधोसिंह द्वितीय ईसरदा से ही गोद गए थे। उस दौर में ही नहीं बल्कि सवाई मानसिंह के दौर में भी इस इलाके में ईसरदा की तूती बोलती थी। ईसरदा का आम नागरिक भी खुद को जयपुर दरबार का खास मानकर चलता था।

सांगानेर से सवाईमाधोपुर रेल मार्ग 73 मील दूरी का था। यहां तब मीटर गैज यानी छोटी रेल लाइन थी। शुरू में सांगानेर से निवाई तक का रेल मार्ग ही तैयार हुआ था। यह मार्ग 1905 में यात्रियों के लिए खुल गया था। लेकिन जयपुर के शासक माधोसिंह द्वितीय अपने पैतृक गांव ईसरदा को रेल से जल्दी जोड़ना चाहते थे। इसलिए निवाई से आगे सवाईमाधोपुर रेल लाइन का काम भी तेजी से हुआ। रेल लाइन शिवाड़ के समीप कंवरपुरा से शिवालय सरोवर के किनारे-किनारे होते हुए नीमड़ियों से होती हुई ईसरदा तक जानी थी। चूंकि आगे बनास पर पुल बन रहा था इसलिए ईसरदा में भी गांव तक होकर रेल मार्ग संभव नहीं था। लेकिन शासक चाहे तो क्या नहीं हो सकता था। ईसरदा व शिवाड़ दोनों ही जगह स्थानीय ठिकानेदारों के सम्मुख ग्रामीणों ने गुहार लगाई कि रेल मार्ग गांव के बीच से निकला तो आए दिन हादसे होंगे। आदमी तो अपनी रक्षा कर सकेगा लेकिन मवेशियों का क्या होगा।

तब के दौर में बात भी सही थी। एक डर यह भी था कि आसपास रेलवे स्टेशन हुआ तो गांव में चोरी-चकारी की घटनाएं बढ़ जाएंगी। पिण्डारियों के आतंक से स्थानीय लोग और शासक तक पहले ही परेशान थे। नतीजा वही हुआ। ठाकुर महताब सिंह ने फरमान सुना दिया- रेल गांव से नहीं गुजरेगी। उनका जयपुर राज्य में असर भी था। सो बात तत्काल मान ली गई। कंवरपुरा से ही रेललाइन को घुमाव दिया गया और शिवसागर सरोवर यानी बड़े तालाब के उस पार से देवगिरी पर्वत के पीछे होते हुए रेल लाइन वहां तक पहुंचा दी गई जहां स्टेशन बनाया जाना था।

- शिवाड़ से ईसरदा रेलवे स्टेशन तक आने-जाने का एक जमाने में कोई साधन नहीं था। लोग पैदल ही यात्रा करने को मजबूर थे

- घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के महत्व को देखते हुए ईसरदा स्टेशन के साथ शिवाड़ का नाम जोड़ने की भी ग्रामीणों की पुरानी मांग है

जहां स्टेशन बना वहां न तो शिवाड़ गांव था और न ही ईसरदा। फर्क इतनी ही रहा कि ईसरदा गांव से यह स्टेशन महज डेढ़ किलोमीटर दूर बना और शिवाड़ से तीन किलोमीटर दूर। उस दौर में जब यहां सड़क मार्ग तो दूर वाहनों के नाम पर बैलगाड़ियां ही थीं। तीन किलोमीटर पैदल चल कर ट्रेन पकड़ना सचमुच दुरूह होता होगा। मेरे पूज्य पिताजी पं. नहनूलाल जी पाराशर बताते हैं कि आज से साठ-सत्तर बरस पहले भी स्टेशन तक यात्री समूह में ही आया- जाया करते थे। अकेले जाने में जंगली जानवरों का डर तो था ही, लूटपाट का खतरा भी था।

वक्त एक सा नहीं रहता। रहा सवाल, स्टेशन की दूरी का। यों तो अब सड़कें और आवागमन के साधन इतने हो गए हैं कि मुश्किल से पांच मिनट में ईसरदा से शिवाड़ पहुंचा जा सकता है। और तो और, शिवाड़ का स्टेशन रोड की ओर हो रहा विस्तार भी इस दूरी को कम कर रहा है। लेकिन सवाल फिर वहीं है। क्या रेलवे स्टेशन शिवाड़ होता तो विकास जल्दी हो सकता था। प्रदेश के दूसरे हिस्से भी इस बात के गवाह हैं कि जहां रेललाइन गांव-कस्बे या शहर के बीच में है और स्टेशन नजदीक हैं वे ज्यादा विकसित हुए हैं। तब प्रजा की खातिर लिया गया स्थानीय शासकों का फैसला उस वक्त के हिसाब से सही होगा इससे इनकार नहीं किया जा सकता। वैसे भी ठाकुर महताब सिंह एक तरह से आधुनिक शिवाड़ के निर्माता थे। निवाई से सवाईमाधोपुर रेल लाइन पर आवागमन 17 अक्टूबर 1907 को खुल गया था। बड़ी रेल लाइन होने से यहां रेलगाड़ियों का आवागमन बढ़ा है। पर कुछ तेज रफ्तार रेलगाड़ियां भी ईसरदा स्टेशन पर ठहरे यह स्थानीय लोगों की मांग है। जयपुर-मुम्बई रेल मार्ग पर वनस्थली-निवाई, शिवदासपुरा-पदमपुरा जैसे स्टेशनों का नामकरण वनस्थली और पदमपुरा की ख्याति के कारण ही मूल स्टेशन के नाम के साथ जोड़कर किया गया है। शिवाड़ की ख्याति को देखते हुए यह मांग उठाने में कोई हर्ज नहीं होना चाहिए कि ईसरदा स्टेशन का नाम शिवाड़-ईसरदा अथवा ईसरदा-शिवाड़ कर दिया जाए।


ॐ घुश्मेश्वराय नमः

RAM FURNITURE

where low price live...

ALL KIND OF WOODEN,
STEEL AND PLASTIC FURNITURE

Susheel Bhoot
9460008990

Sourabh Agarwal
9413333853

Shop No. 130-131, Sultan Nagar, Near Samarpan Institute,
Guraj Ki Thdi, After Underpass, Jaipur - 302020

Shop No. 50 Santosh Nagar, Opp, Gang-Jamuna Petrol Pump,
Near New Atish Market, Gopalpura By-Pass. Jaipur - 302020

web : www.ramfurniture.com | e-mail : ramfurnitures@gmail.com

# चांदनी जैसे ही थे महताब सिंह

किले से आबादी के मध्य रखने की मंशा लिए ठाकुर महताब सिंह के समय शिवालय सरोवर के पास बने राजमहल की बारहदरी

महताब यानी चांदनी। जी हां, शिवाड़ के ठिकानेदार ठाकुर महताब सिंह के कामकाज को देखें तो सचमुच वह चांदनी के माफिक ही थे। ठाकुर सांवलदास से लेकर देवगिरी पर्वत पर किला बनाने वाले ठाकुर भैरोंसिह, शिव सागर सरोवर की नींव रखने वाले ठाकुर शिवसिंह व शिवाड़ में कई देवालयों का निर्माण कराने वाले ठाकुर शिवदान सिंह ने अपने-अपने तरीके से प्रजा के हित के काम किए लेकिन ठाकुर महताब सिंह का उल्लेख किए बिना शिवाड़ के आज के स्वरूप की कल्पना करना व्यर्थ होगा। महताब सिंह की जयपुर दरबार में खासी धमक थी। वे सवाई माधोसिंह की काउंसिल के भरोसेमंद लोगों में शामिल थे। महताब सिंह ने जब शिवाड़ की गद्दी संभाली उससे पहले तक भी जयपुर रियासत का शिवाड़ ठिकाने पर सीधा दखल था। यही वजह रही कि ठाकुर महताब सिंह की गोदनशीनी भी जयपुर के शासक सवाई माधोसिंह द्वितीय के दखल पर ही हुई। यह वह दौर था जब समीप के ईसरदा ठिकाने के कायम सिंह, माधो सिंह के नाम से जयपुर के महाराजा सवाई रामसिंह के दत्तक पुत्र के रूप में जयपुर की गद्दी पर आसीन हो चुके थे। सवाई माधोसिंह द्वितीय वर्ष 1880 से 1922 तक जयपुर की गद्दी पर रहे। तब शिवाड़ में ठाकुर शिवदान सिंह के बाद ठा. रणजीत सिंह ठिकानेदार थे। रणजीत सिंह का निःसंतान ही निधन हो गया था। तब जयपुर रियासत के दखल पर गद्दी के वारिस का चयन हुआ।

शिवाड़ से जुड़े ऐतिहासिक दस्तावेज संजोने वाले मेरे अग्रज पं. पुरुषोत्तम शर्मा ने बताया कि तब भी जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह ने बाकायदा 'रुक्का' (शाही हुक्मनामा) भिजवाकर समीप के गोपालपुरा के ठिकानेदार ठाकुर शंकर सिंह के छोटे पुत्र महताब सिंह को जयपुर बुलवा लिया था। यह गोपालपुरा बाद में ढील बांध के पेटे में आ गया। तब जयपुर में ठाकुर रणजीत सिंह की मातमी व महताब सिंह का पगड़ी दस्तूर स्वयं महाराजा माधोसिंह द्वितीय की निगरानी में हुआ था। ठाकुर महताब सिंह को जो रुक्का भिजवाया उसे पढ़ने का प्रयास किया तो धुंधले पृष्ठ पर इस तरह की इबारत समझने में आई।

**'सधे श्री महाराजाधिराज महाराज श्री माधोसिंह री देववचनात। महताब सिंह जी राजावत अपरंच रुक्को... बांचता ही अठ आवै। थांका बाप (पिता) की पगड़ी को... सिरस्ता सधाया जाए। ... मिति प्रथम सावन सुदी दशम संवत 1939।'**

अपने पितामह ठा. महताब सिंह जी की स्मृति में उनके पौत्र ठा. शिवप्रकाश सिंह जी ने मंदिर से सटी महताब धर्मशाला बनवाई।

रुक्का मिलते ही युवराज महताब सिंह जयपुर पहुंचे। तब जोरावर सिंह गेट के पास एक इमारत में महताब सिंह पहुंचे। इसे शिवाड़ वालों की बड़ी हवेली कहा जाता था। हवेली क्या, तब यहां महज एक तिबारा होता था। यहां साफ-सफाई कराई गई। तम्बू आदि लगाए गए। तब खुद सवाई माधोसिंह द्वितीय ने यहां पहुंच महताब सिंह का पगड़ी दस्तूर कराया। इस दस्तूर के कार्यक्रम से जुड़ी जो पांडुलिपियां उपलब्ध हैं उसके मुताबिक महाराजाधिराज जयपुर मातमी का दस्तूर करा वापस महलों में पधारे। पं. पुरुषोत्तम शर्मा ने जो जानकारी उपलब्ध कराई उसके मुताबिक महताब सिंह का जन्म गोपालपुरा में प्रथम भादवा सुदी 14 संवत 1928 यानी 1871 ईस्वी में हुआ था। संवत 1939 यानी वर्ष 1882 में महताब सिंह शिवाड़ ठिकाने में गोद आए। प्रथम सावन सुदी दशमी, संवत 1939 को गोदनशीनी का यह दस्तूर हुआ। ठाकुर महताब सिंह तब किशोर ही थे। लिहाजा पढ़ाई-लिखाई के लिए जयपुर ही रुक गए। यह वह दौर था जब जयपुर शिक्षा का बड़ा केन्द्र बनता जा रहा था। जयपुर में सर गोपीनाथ जी से उन्होंने अंग्रेजी का अध्ययन किया। मास्टर खुदाबख्श जी से फारसी का अध्ययन कर मुंशी फाजिल की डिग्री हासिल की। उनकी काबिलियत को देखते हुए वर्ष 1893 में सवाईमाधोसिंह द्वितीय ने ठाकुर महताब सिंह को अपनी कौंसिल में शामिल किया और राजस्व महकमे की अहम जिम्मेदारी सौंपी।

जयपुर दरबार में राजस्व महकमे में तैनाती के साथ ही शिवाड़ के ठिकानेदार ठाकुर महताब सिंह का रुतबा बढ़ गया था। जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने महज इक्कीस बरस की उम्र में उन्हें अपनी कौंसिल का सदस्य बना दिया। यह एक तरह से आज के किसी महकमे के मंत्री पद के समकक्ष होता था। शिवाड़ के पोथीखाने में ठाकुर महताब सिंह की इस नियुक्ति का शाही फरमान जो जयपुर महाराजा माधोसिंह के हस्ताक्षरों से जारी हुआ था वह इस प्रकार है।

**नकल- रूबकार इजलास खास श्री हुजूर 13 अगस्त 1893 ईस्वी**

'मुनासिब मालूम होता है कि सरदारान ताजीमी, अक्लमन्द व जवान उम्र को कौंसिल के काम मे बहैसियत मेम्बर शरीक किया जावे और कौंसिल के जिस सींगे के काम में उनकी तबियत ज्यादा रजू हो फिलहाल उसी सींगे में उनको भर्ती किया जावे। कौंसिल में भर्ती होकर हमेशा के वास्ते कारोबारराज में शरीक रहेंगे तो इसमें ऐन खुशनवी मिजाज तसुव्वर हैं और उनके वास्ते भी सूरत फायदा है। अगर अपने-2 ठिकाने के कारोबार के लिहाज से या दीगर किसी वजह से हमेशा काम में शरीक रहना उनसे नहीं बन पड़े तो जिस कदर अर्से तक कौसिंल में शरीक रहकर काम में महनत उठावेंगे तो यह मेहनत उनकी राय मान ही मानीजायेगी और उनको अपने ठिकाने के कारोबार दुरुस्ती के साथ अन्जाम करने की लियाकत हासिल होना मुमकिन है। बनजर हालत मुतुजक्करे वाला हुक्म है कि- सींगे कल्कटरी में रावल फतेह सिंह जी सामोद और ठाकुर देवीसिंह जी डिग्गी को, अदालते में भर्ती किया जावे और राव प्रतापसिंह जी मनोहरपुर और ठाकुर महताब सिंह जी शिवाड़ को जदीद मेम्बर इलाकेगेर में भरती किया जावे। उनको चाहिये के बकोशिश तमाम कारोबार राज से वकफियत हासिल करके मुस्तैदी से काम को अन्जाम देते रहें। अलूफा वगैरह का बाद में अकब से हुक्म दिया जावेगा।'

**हस्ताक्षर हुजूर साहब,13 अगस्त 1893 ईस्वी**

इस फरमान से भी जाहिर होता है खुद माधोसिंह युवाओं को मौका देने के पक्ष में थे। इसलिए भी ताकि वे अपने ठिकाने का कामकाज भी और बेहतर तरीके से कर पाएं। वरिष्ठ पत्रकार जितेन्द्र सिंह शेखावत ने भी राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित अपने स्तंभ हैरिटेज विंडो में जिक्र किया है कि रानी जादूण जी के निधन पर जयपुर में सात दिन चले हैडे (महाभोज) का प्रबंध ठाकुर महताब सिंह व कौंसिल के अन्य सदस्य सर गोपीनाथ ने संभाला था। इलाके गैर के काम से खुश होकर महाराजा माधोसिंह ने ठा. महताब सिंह को सींगा माल (रेवेन्यू मिनिस्टर) में शामिल किया।

उस दौर में शिवाड़ की बसावट शिवसागर सरोवर यानी बड़े तालाब की तरफ ही थी। कछवाहा कुआं जिसे कुस्तला का कुआं कहने लगे हैं, गांव का प्रवेश द्वार था। चारभुजा मंदिर व कचहरी तक ही आबादी थी। इसके आगे आज के स्टेशन रोड की तरफ व घुश्मेश्वर मंदिर के आस-पास घना जंगल था। किले में जाने के रास्ते भी कच्चे-मकान थे। किले में रह रहे ठा. महताब सिंह ने अपने लिए गांव के एक छोर पर गढनुमा हवेली भी बनाई। गढ़ी के बाद राजपरिवार के लिए आबादी के बीच यह दूसरा आवास था। बड़े तालाब के रास्ते में बनी इस हवेली में बाद में सरकारी छात्रावास भी संचालित हुआ। इस बीच उन्होंने शिवालय सरोवर की पाल पर भी अपना आवास बनाया। इसे छोटा बाग के रूप में ज्यादा जानते हैं। तालाब के पेटे से लगती बारहदरी इस महल की अलग ही शोभा बढ़ाती है। उन्होंने अतिथि गृह भी बनाया जिसमें आजकल तेल मिल है। चतुर्भुज जी मंदिर के सामने कचहरी, छोटा बाग के सामने सूतरखाना भी महताब सिंह के समय का है। उन्होंने टापुर में भी कचहरी बनवाई।

शिवाड़ के जो विद्यार्थी, जयपुर में ठिकाने के खर्चे पर पढ़ते थे उनमें शिव प्रताप जी, अम्बालाल जी तिवाड़ी, चतर सिंह जी, रामगोपाल जी भट्ट , कल्याण सिंह जी, गोपी जी, ठा. गुमान सिंह जी, आदि के नाम थे। इन सबने बाद में अपने-अपने क्षेत्रों में खूब नाम कमाया। ठाकुर महताब सिंह गांव में विधवाओं को दो जोड़ी कपड़े, अनाज तथा ग्यारह रुपए प्रतिमाह की सहायता भी देते थे। स्वास्थ्य कारणों से ठा. महताब सिंह ने जयपुर कौंसिल से सेवानिवृत्ति का आवेदन कर दिया। उपलब्ध दस्तावेज के मुताबिक 24 जुलाई 1918 से उन्हें 300 रुपए प्रतिमाह पेंशन मंजूर की गई थी। जयपुर में बापूनगर इलाके में शिवाड़ एरिया भी ठा. महताब सिंह की ही देन है। करीब 53 साल तक शासन के बाद शिवाड़ के ये मुकुटमणि 8 मार्च 1936 को देवधाम सिधार गए। ■

- जयपुर दरबार में राजस्व महकमे में तैनाती के साथ ही शिवाड़ के ठिकानेदार ठाकुर महताब सिंह का रुतबा बढ़ गया था। जयपुर के तत्कालीन महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने महज इक्कीस बरस की उम्र में उन्हें अपनी कौंसिल का सदस्य बना दिया।

- जयपुर में पढ़ने के इच्छुक बालकों के लिए भी राजधानी के परकोटे में नाटाणियों के रास्ते में बने शिवाड़ हाउस को खोल दिया था। इन बालकों के आवास, किताबें, पौशाक व खाने-पीने का इंतजाम महताब सिंह जी की तरफ से ही होता था।

**आशीर्वाद की ऐसी ही वर्षा करते रहो।**
**खाली झोलियां सबकी भरते रहो।।**
**तेरे चरणों में सर को झुका ही दिया है।**
**गुनाहों की माफी और दुःख दूर करते रहो।।**

भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं का शिव की नगरी शिवाड़ में हार्दिक स्वागत। ईश्वर आपकी हर मनोकामना पूरी करे ।

## मैसर्स शर्मा इंजीनियरिंग

एए क्लास पीडब्ल्यूडी कांट्रेक्टर
प्लाट नम्बर 14 पार्वती नगर, महादेव जी, टोंक

---

# घुश्मेश्वर महादेव

## सब पर कृपा बनाए रखें

महादेव के दर्शनार्थ
पधारने वाले सभी
श्रद्धालुओं का
शिवालय (शिवाड़) क्षेत्र में

# हार्दिक अभिनंदन

विनीत
हनुमान शर्मा (जांगिड़),
(टापुर वाले)
सहायक लेखाधिकारी,
मेडिकल विभाग जयपुर

हितेश शर्मा, सीए, (पुत्र)
मोनिका शर्मा, सीए (पुत्रवधु)
हिमांशु- साफ्टवेयर इंजीनियर (पुत्र)

---

# GALLOPS

**Facility Management ,**
**Security Services**
**and all kind of**
**Man Power Supplier**

**Pro- Harisingh Shekhawat**
**Mob.: 9214050810, 9414445059**

17- RAGHUNATH VIHAR PANCHYAWALA
SIRSI ROAD JAIPUR.

# जगाई शिक्षा की अलख

शिवाड़ में आजादी के पहले और इसके तत्काल बाद शिक्षा का खास माहौल नहीं था। गरीब व मध्यम वर्ग के बच्चों को पढ़ने के लिए शिवाड़ से सारसोप, ईसरदा, बौंली, निवाई व सवाईमाधोपुर जाना आसान नहीं था। शिवाड़ में वर्ष 1942 के पहले रियासतकालीन स्कूल में सिर्फ पहली व दूसरी कक्षा ही थी। उस दौर में ठिकाने की तरफ से चटशाला संचालित की जाती थी। यहां आज की एलकेजी व केजी कक्षाओं की तरह ही समझें, स्कूल में दाखिले से पहले बच्चों को पढ़ाने का काम मुरलीधर महाराज करते थे। अन्य ग्रामीण इलाकों की तरह शिवाड़ में भी पढ़ाई-लिखाई का वातावरण काफी कम था। ऐसे माहौल में कोई गुरु यदि शिवाड़ में स्कूल भवन बनाने के लिए हठ कर बैठे और गोविन्द यानी ठाकुर जी को भी ताले में बंद कर दे तो गुरु की महत्ता खुद-बखुद सामने आ ही जाती है।

**आजादी के पहले शिवाड़ में सिर्फ दूसरी कक्षा तक पढ़ाई थी। आज दो सीनियर सैकण्डरी स्कूल हैं**

संभवतया 1943-44 के आसपास की घटना है। शिवाड़ में पहली-दूसरी कक्षाएं कल्याण जी के मंदिर में चटशाला की तरह चलती थी और शिवदत्त सिंह जी पढ़ाते थे। जलझूलनी एकादशी का दिन था। इस दिन गांव के सभी देवालयों से ठाकुर जी के विमान जलविहार के लिए शिवालय सरोवर तक आते हैं। इस मंदिर में भी ठाकुर जी का विमान सजाया जाना था। लेकिन शिवदत्त सिंह जी मंदिर के ताला लगाकर घर चले गए। जलझूलनी एकादशी के दिन ताला लगा देख गांव वाले चिंतित हुए। शिवदत्त सिंह जी के पास गए तो उन्होंने गांव वालों को साफ कह दिया- पहले स्कूल का अपना भवन बनाओ तब ही चाबी मिलेगी। गांव के प्रबुद्ध लोगों ने आश्वस्त किया तब जाकर ठाकुरजी का विमान निकल पाया। शिवदत्त सिंह जी के इस हठ का नतीजा रहा कि उसी साल स्कूल के लिए जमीन आवंटित कर दी गई। मौजूदा सीनियर सैकण्डरी स्कूल की इमारत इसी भूखंड पर है। आजादी के बाद जाकर इस भवन में छठी से आठवीं तक की कक्षाएं शुरू हुई। शिवदत्त सिंह जी व गोविन्द नारायण जी पारीक पहले सारसोप पढ़ाते थे। शिवाड़ में प्राइमरी खुलने पर दोनों यहीं आ गए। मुझे दोनों ही गुरुजनों को देखने का सौभाग्य हासिल हुआ है।

घुश्मेश्वर मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रेमप्रकाश शर्मा बताते हैं कि शिवाड़ में पांचवी से आठवीं तक की पढ़ाई आजादी के बाद ही शुरू हुई। वर्ष 1962 में यहां सैकण्डरी स्कूल हो गया था और 1967 में विज्ञान विषय। वर्ष 1980-81 में जब यहां सीनियर सैकण्डरी खुला तो मुझे याद है जयपुर से स्कूल क्रमोन्नति आदेश लेकर आए तत्कालीन सरपंच गंभीरमल जी जैन का गांव में जबर्दस्त स्वागत हुआ था।

पुराने शिक्षकों को याद करें तो स्कूल के प्रधानाध्यापक व प्रधानाचार्यों में देवव्रत जी गुप्ता ने यहां काफी शैक्षणिक नवाचार किए। बाद में द्वारका प्रसाद जी शर्मा, रामपाल जी शर्मा व डॉ. चन्द्रमोहन जी जोशी भी स्कूल की बहबूदगी में आगे रहे। अन्य शिक्षकों में लंबी फेहरिस्त है लेकिन खास तौर पर दिवंगत हरनाथ सिंह जी, रघुनाथ सिंह जी व राधेश्याम जी गौतम व सेवानिवृत्त हो चुके पूज्य पिताजी नहनूलाल जी, कन्हैयालाल जी जैन, केएल मीणा जी, रामकिशन जी मुकुल व पं. प्रभाकर जी शास्त्री को भी वंदन करना चाहूंगा। प्राइमरी स्कूल में सूरजमल जी गोधा, परमानंद जी जैन, बद्रीनारायण जी पारीक सरीखे शिक्षकों का दबदबा था। यहां कन्या स्कूल की पहली प्रधानाध्यापिका कमला शुक्ला जी थीं जो पड़ोस के ईसरदा की थीं। वर्ष 1958-59 में यहां सात-आठ बालिकाओं के साथ कन्या शाला चतुर्भुज (चारभुजा) जी के मंदिर में शुरू हुई थी। लड़कियों के स्कूल में अयोध्या जी व मेरी माताजी पुष्पा पाराशर ने भी लंबी सेवाएं दीं। अभी भी गांव के इन स्कूलों से पढ़कर निकले सैंकड़ों छात्र-छात्राएं स्कूल शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक अध्यापन में जुटे हुए हैं। अब गांव में लड़कों व लड़कियों का पृथक सीनियर सैकण्डरी स्कूल है। गांव में आधा दर्जन गैर-सरकारी स्कूल भी खुल गए हैं। कुल मिलाकर शिक्षा की जो अलख आजादी के पहले से ही गांव में जगाई जा रही थी उसके बेहतर नतीजे आज की पीढ़ी को देखने को मिल रहे हैं। ■


# हर हर महादेव

कर्ता करे न कर सके,
शिव करे सौ होय।
तीन लोक नौ खंड में,
महादेव से बड़ा न कोय।।

घुश्मेश्वर महादेव के दर्शनार्थ शिवाड़
पधारने पर श्रद्धालुओं का हार्दिक अभिनंदन।

विनीत- विनोद शर्मा, पुत्र श्री शिवदयाल शर्मा (पटवारी जी) शिवाड़ वाले,
17, फ्रेंड्स कॉलोनी, चामटी खेड़ा रोड, चित्तौड़गढ़

ॐ घुश्मेश्वराय नमः

SSGH

# शिव शक्ति गेस्ट हाउस

SSGH

## महापुरा चौराहा, शिवाड़,

घुश्मेश्वर महादेव की नगरी में शादी,
पार्टी व ठहरने की उत्तम व्यवस्था एसी रूम भी उपलब्ध

**प्रो. दिनेश शर्मा: 9414287717, 8432717957**

Bharat Petroleum

प्रतिष्ठान- शिव शक्ति फ्यूल सेन्टर, डीलर भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लि., बरौनी रोड, शिवाड़

श्री महावीराय नमः

# SUSHIL KUMAR ANKIT KUMAR JAIN

**Main Market SHIWAR (Sawai Madhopur)**

शूटिंग, शर्टिंग, साड़ी-सलवार सूट एवं मैचिंग के विक्रेता

Siyaram's

DONEAR®
SUITINGS & SHIRTINGS

M - 9982025204 A.K.

M - 9414377890 M.K.

# पुष्पा पाराशर मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट

## (शैक्षणिक व सामाजिक कार्यों को समर्पित)

पुष्पा पैलेस, स्टेशन रोड, शिवाड़

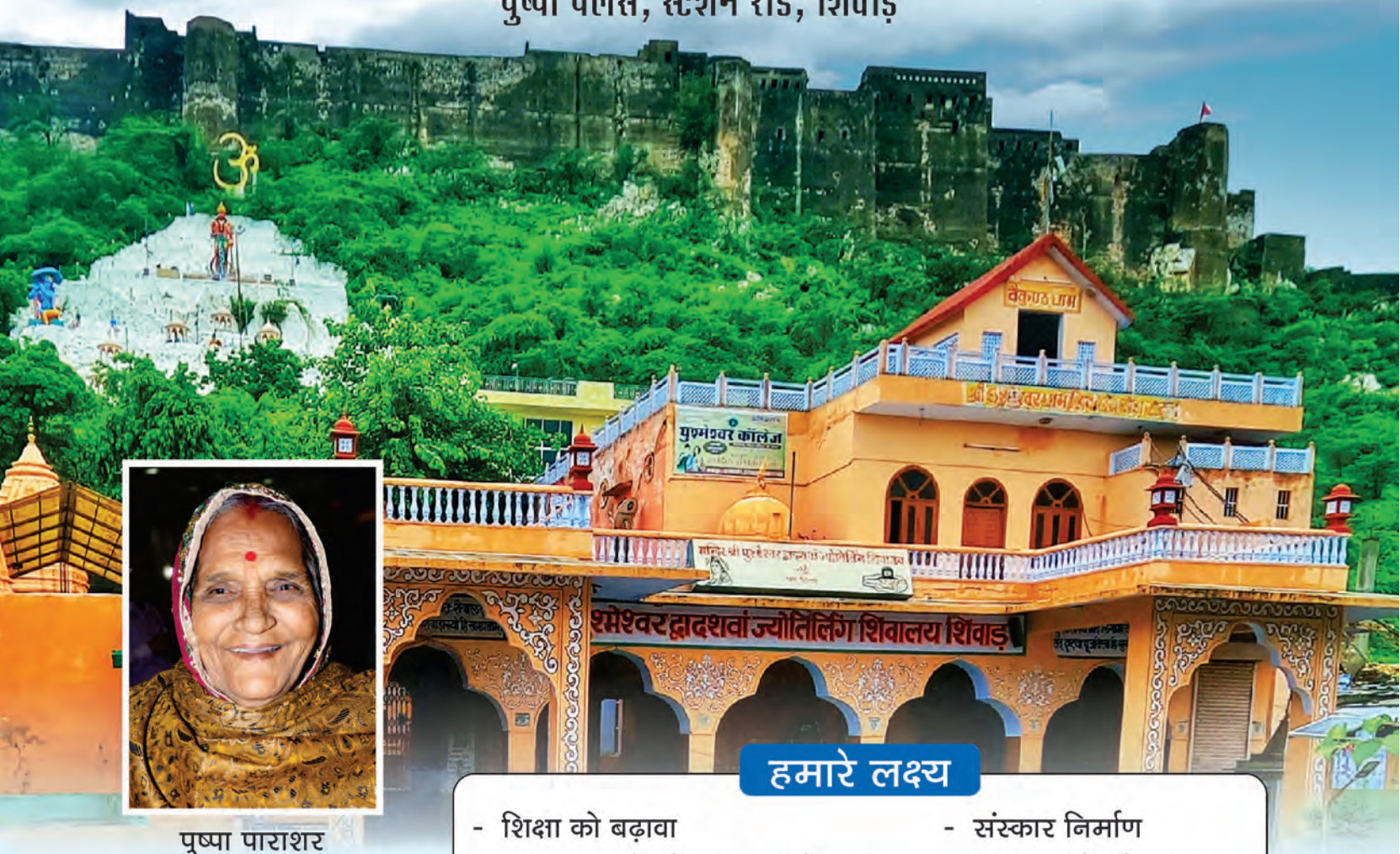




**पुष्पा पाराशर**
धर्मपत्नी श्री नहनूलाल पाराशर
निर्वाण 26 अप्रेल 2017

**मंजू पाराशर**
धर्मपत्नी श्री पवन पाठक पुष्कर
निर्वाण 12 दिसम्बर 2020

### हमारे लक्ष्य

- शिक्षा को बढ़ावा
- छात्र-छात्राओं को अध्ययन में मदद
- बच्चों को निःशुल्क कैरियर काउंसलिंग
- प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान
- संस्कार निर्माण
- जरूरतमंदों की मदद
- समाज के सभी तबकों को आगे लाने का प्रयास

## आपका आशीर्वाद ही हमारी पूंजी

### ट्रस्टीगण

**पं. नहनू लाल पाराशर** - शिवाड़
**अवधेश पाराशर**- कोटा
**शशि कुमार पाराशर** - शिवाड़
**सतीश कुमार पाराशर** - जयपुर
**हरीश पाराशर** - जयपुर
**पवन पाठक** - पुष्कर
**अभय पाराशर**- शिवाड़
**डॉ. संजय पाराशर** - जयपुर
**अजय पाराशर** - झालावाड़

## खण्ड- छह

# शिवाड़ गौरव

भगवान भोलेनाथ की नगरी में आध्यात्म और सेवा भाव की गंगा सदैव प्रवाहित होती रही है। यहां की मिट्टी की ही खासियत है कि जो एक बार यहां आया वह यहीं का होकर रह गया। पिछली एक सदी के दौरान शिवाड़ में ऐसी कई कर्मनिष्ठ विभूतियां हुई हैं जिन्होंने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में न केवल अलग पहचान बनाई बल्कि ऐसा काम कर गए जिन्हें लोग आज भी याद करते हैं। जाति-धर्म व समुदाय से परे इन लोगों के लिए सेवाभाव ही खास ध्येय रहा। जिन्होंने शिवाड़ को अपनी कर्मस्थली बनाया उनके भी व्यक्तित्व और कृतित्व के कई ऐसे पहलु हैं जिनकी सबको जानकारी होना जरूरी है। इस खण्ड में जानिए इन्हीं विभूतियों के बारे में जिन्होंने शिक्षा, चिकित्सा, शिल्प और आध्यात्म सभी क्षेत्रों में नाम कमाया।

# स्वामी कृष्णानंद जी महाराज

## देश भर में बनवाए सत्संग भवन

स्वामी कृष्णानंद जी महाराज पहुंचे हुए संत थे जिन्होंने अपने प्रवास का अधिकतर समय शिवाड़ में ही बिताया। शिवाड़ के कल्याण जी मंदिर में स्वामी जी महाराज के चित्र की आज भी सत्संग के साथ-साथ नियमित पूजा-अर्चना होती है। जयपुर के रामनिवास बाग में बना शिव सत्संग भवन भी कृष्णानंद जी महाराज की ही देन है। उनका जन्म एक अक्टूबर 1907 को चूरू जिले में रतनगढ़ में हुआ। 30 जुलाई 1945 को मोहन लाल से कृष्णानंद बने स्वामी जी का फाल्गुन कृष्णा सप्तमी संवत 2007 यानी वर्ष 1950 में शाम पांच बजे के करीब शिवाड़ में पहली बार पदार्पण हुआ। रेल पटरी के किनारे-किनारे पदयात्रा कर रहे स्वामी जी को दूर से ही देवगिरी पर्वत, किला व शिव मंदिर देखकर यह स्थान भा गया था। शिवाड़ आकर पहला काम घुश्मेश्वर महादेव को भगवान शंकर के बारहवें ज्योतिर्लिंग के रूप में मान्यता देने का किया। उन्होंने कह दिया था कि एक दिन यहां दर्शनों के लिए लाइनें लगेंगी।

उनकी भविष्यवाणी आज फलीभूत हो रही है। स्वामी कृष्णानंद जी के चमत्कृत कर देने वाले दर्जनों किस्से लोगों की जुबान पर हैं। मेरे पिताजी के चचेरे भाई व मेरे चाचाजी मोहनलाल जी पाराशर से जुड़ा किस्सा, उनके ही शब्दों में-'मेरी शादी होकर बारात घर पर लौटी थी। दिन 18 फरवरी 1976 का था। मेरे कक्ष के बाहर महिलाएं मंगल गीत गा रहीं थीं। एकाएक न जाने क्या हुआ मैं कक्ष में बेहोश होकर गिर पड़ा। नवब्याहता चीखी तो गीत-संगीत थम गया और कोहराम मच गया। पिताजी पं. मूलचंद पाराशर, कल्याण जी मंदिर में सत्संग कर रहे स्वामी कृष्णानंद जी के पास बिलखते हुए पहुंचे। कृष्णानंद जी ने सत्संगियों में मौजूद वैद्य सीताराम शर्मा को हमारे घर भेजा। अपना कमण्डल मंगाया और पीछे से सत्संगियों के साथ खुद भी पहुंच गए। मुझे याद नहीं स्वामी जी ने कमरा बंद कर कमंडल से कितनी बार मेरे चेहरे पर छींटे दिए लेकिन दो बार ऐसा होने का स्मरण है। मुझे आवाज लगाई। जैसे मैं गहरी नींद से जागा था। स्वामी जी ने कमरे का दरवाजा खोल बाहर विलाप कर रहे परिजनों को कहा- अरे, क्यों रोते हो? ये तो जिंदा है। सब चमत्कृत थे। जहां मरघट सा सन्नाटा था वहां घर में खुशियां लौट आई और फिर से मंगल गीत गाए जाने लगे।

समीप के निवाई की एक अन्य घटना है जब स्वामी जी वहां चातुर्मास कर रहे थे। वहां कुछ लोगों ने टिप्पणी कर दी कि यह वैष्णव साधु आया है इसलिए बरसात नहीं हो रही। कृष्णानंद जी महाराज के कानों तक यह बात पहुंची तो उन्होंने कह दिया-कल शाम चार बजे तक बरसात आ जाएगी। तीन बजे तक कुछ आसार नहीं थे। अचानक चार बजे काली घटाएं घिर गई और भारी बरसात हुई। कहते हैं कि यात्रा के दौरान एक बार स्वामी कृष्णानंद जी जिस कार में सफर कर रहे थे उसका पेट्रोल बीत गया। स्वामी जी ने ड्राइवर को पेट्रोल की जगह पानी डालने को कहा और कार चल गई। सिरस की एक घटना में वहां केशवराय जी मंदिर में सत्संग कर रहे स्वामी जी को एक भक्त ने कहा- महाराज आपके कमंडल का जल गर्म हो गया है। ठंडा पानी ले आता हूं। पहले स्वामी जी ने इनकार किया ज्यादा ही आग्रह करने पर अनुमति दे दी। लेकिन यह क्या? जिस कुएं से पानी लाना था उसका पानी तो खारा था। स्वामी जी ने कमण्डल का जल कुएं में डालने को कहा- यहां भी चमत्कार- कुएं का पानी मीठा हो गया। एक बार भगवतगढ़ में स्नान के लिए जाते समय उनका शेर से सामना हो गया। शेर उनके चरणों में लोट कर वापस चला गया। स्वामी कृष्णानंद जी से जुड़े ऐसे कई किस्से हैं। ऐसे संत शिरोमणि के सान्निध्य में रहे शिवाड़ निवासी देवकीनंद जी पाटोदिया ने स्वामी जी पर एक पुस्तक लिखी थी उसमें उक्त घटनाओं का जिक्र है। उन्होंने शिवाड़ में नियमित सत्संग की जो नींव रखी वह आज भी जारी है। अब तो शिवाड़ में पृथक से शिव सत्संग भवन भी बना दिया गया है। ■

# ठाकुर शिवप्रकाश सिंह

# शिवाड़ के चहुंमुखी विकास का हमेशा रखा ध्यान

भगवान घुश्मेश्वर के धाम शिवाड़ में जितने भी ठिकानेदार हुए उन सबने अपनी क्षमता के मुताबिक गांव के विकास में रुचि दिखाई । ठाकुर शिवप्रकाश सिंह भी उनमें से एक थे। देखा जाए तो आज के शिवाड़ में विकास कार्यों की शुरुआत शिवप्रकाश सिंह जी के वक्त में ही हुई। उनका जन्म भादवा बुदी 12 संवत 1997 यानी 30 अगस्त 1940 को हुआ। शांत स्वभाव लेकिन रौबदार चेहरा था उनका। मुख्य बाजार से कभी गुजरते तो कारोबारी उनके सम्मान में झुक कर खम्मा घणी करते थे। कुछ ऐसा ही स्वभाव था उनका कि बच्चों से लेकर बड़ों तक सबमें घुलमिल जाते थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिवाड़ ठिकाने में ठाकुर महताब सिंह की जयपुर रियासत पर पहुंच का फायदा उनके उत्तराधिकारियों ने भी उठाया। ठा. महताब सिंह के बाद ठाकुर सांवल सिंह गद्दी पर बैठे। ठा. सांवल सिंह का जब निधन हुआ तब शिवप्रकाश सिंह जी नाबालिग थे। तब तक देश आजाद हवा में सांस लेने लगा था। शिवप्रकाश सिंह जी की शिक्षा-दीक्षा राजस्थान के प्रसिद्ध मेयो कॉलेज में हुई। वे फर्राटेदार अंग्रेजी बोलते थे। उनके कई अंग्रेज मित्र शिवाड़ भी आते रहते थे।

शिवाड़ के अधिकतर ठिकानेदार लंबे समय तक किले में ही रहे। महताब सिंह के समय से ठिकानेदारों की आवाजाही शिवालय सरोवर के किनारे बने छोटा बाग में भी रही। ठाकुर शिवप्रकाश सिंह के जन्म दिन पर शिवाड़ में जश्न का माहौल रहता था। मेरे पूज्य पिताजी बताते हैं कि शिवप्रकाश सिंह जी के जन्म दिन पर देवगिरी पर्वत पर बने किले में गांव के प्रबुद्ध लोग बधाई देने पहुंचते थे। घुश्मेश्वर मंदिर के जीर्णोद्धार में ठा. शिवप्रकाश सिंह जी ने काफी रुचि ली। पहले समूचे मंदिर परिसर में फर्श पर चूना ही था। वहां नीले पत्थर के चौके जड़वाए। मंदिर का मुख्य प्रवेश द्वार ऊंचा कराने के साथ-साथ ऊंची-नीची सीढ़ियों की जगह नई सीढ़ियां बनवाई। संवत 2032 में अपने बाबा ठा. महताब सिंह की स्मृति में मंदिर से सटी महताब धर्मशाला बनवाई। तब यह धर्मशाला गांव में सार्वजनिक कार्यक्रमों में काफी काम आती थी। कई संत-महात्मा भी यहां ठहरते थे। अब मंदिर ट्रस्ट ने इस धर्मशाला को और सुविधायुक्त बना दिया है। मंदिर के ऐतिहासिक तथ्यों की प्रमाणिकता को लेकर उन्होंने ही सबसे पहले वर्ष 1981 में 'घुश्मेश्वर परिचय 'पुस्तक भी प्रकाशित कराई थी। दरअसल, तब वे अपने पुरखों का इतिहास लिपिबद्ध करवाना चाहते थे। तब उन्होंने सेवानिवृत्त तहसीलदार बजरंग सिंह राजावत से अनुरोध किया कि वे किले के पौथीखाने में मौजूद हस्तलिखित पाण्डुलिपियों के आधार पर यह लेखन करें। इसी खोज के दौरान घुश्मेश्वर मंदिर से संबंधी कई महत्वपूर्ण दस्तावेज भी मिले। गांव में भी जिन लोगों के पास पुराने दस्तावेज थे उनको भी संकलित किया गया। किले में कई हस्तलिखित ग्रंथ संस्कृत में लिखे हुए थे। इसका अनुवाद प्रकाण्ड ज्योतिषि पं. शिवप्रताप जी और पं. प्रभाकर जी शास्त्री ने किया। शिवाड़ सरपंच के रूप में काम की व्यस्तता के बावजूद ठाकुर शिवप्रकाश सिंह जी ने इस पुस्तक का लेखन किया। वे उस दौर में खुली जीप की सवारी करते थे। तब गांव में भारी वाहन तो थे लेकिन कार-जीप इक्का-दुक्का ही थी। जनता शासन के दौरान जब ठिकानेदारों को जनता पार्टी से जोड़ा जा रहा था तब शिवप्रकाश सिंह जी ने भी शिवाड़ के सरपंच का चुनाव लड़ा और जीते। सरपंच रहते हुए ठाकुर शिव प्रकाश सिंह ने वर्ष 1977 के उस दौर में भी समूचे गांव की गलियों व मुख्य मार्गों में पाटोल बिछवा कर पक्की नालियां बनवा दी थीं। राजपरिवार के प्रति शिवाड़ के लोगों का सम्मान भाव हमेशा ही रहा है। राजमाता नरेन्द्र कंवर भैरोंसिंह शेखावत सरकार में पर्यटन मंत्री रहीं है। उनके सुपुत्र ठा. राजेश्वर सिंह भी शिवाड़ के विकास में सदैव आगे रहते हैं।

## ज्योतिर्विद पं. शिवप्रताप शर्मा

# सटीक होती थीं उनकी भविष्यवाणियां

कुछ लोग अपने व्यक्तित्व व कृतित्व की ऐसी छाप छोड़ जाते हैं कि उन्हें विस्मृत किया ही नहीं जा सकता। शिवाड़ ठिकाने के राजगुरु रहे प्रकाण्ड ज्योतिषि पं.शिवप्रताप शर्मा भी बहुभाषी और ज्योतिष की बहुविधाओं के ज्ञाता थे। रजवाड़ों के दौर में दूर-दूर से शासक वर्ग उन्हें अपने यहां बुला कर सम्मानित करता रहा। पांडित्य की ऊंचाइयां छूने के बाद भी उन्होंने अपना कर्मक्षेत्र शिवाड़ को ही बनाया। गौरव की बात यह है कि प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री ने वनस्थली विद्यापीठ खोला उसका भी न केवल मुहुर्त ही पं. शिवप्रताप जी ने निकाला बल्कि इसमें दाखिला लेने वाली प्रथम छह छात्राओं में एक अपनी बेटी प्रियम्वदा शर्मा को भी शास्त्री जी को सौंप दिया। मुहुर्त जानने के लिए हीरालाल शास्त्री को खुद शिवाड़ आना पड़ा था। पंडित शिवप्रताप जी का जन्म संवत 1948 यानी वर्ष 1891 में हुआ। शिवाड़ के तत्कालीन शासक ठाकुर महताब सिंह ने शिवाड़ के जिन बच्चों को ठिकाने के खर्चे पर जयपुर पढ़ने भेजा उनमें शिवप्रताप शर्मा भी थे। बाद में उन्होंने काशी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में ज्योतिष का अध्ययन किया।

पं. शिवप्रताप जी ने अपने ज्योतिष ज्ञान की धूम राजस्थान, उत्तरप्रदेश, गुजरात व अन्य प्रदेशों में खूब मचाई। वे घुश्मेश्वर महादेव के नियमित दर्शन के बाद रोज तीन-चार घंटे का वक्त अपने घर पर ही शिवार्चना में लगाते थे। पंडित जी, बिल्वपत्र को पूजा में अनिवार्य मानते थे। चाहे यह जयपुर या सवाईमाधोपुर से ही क्यों न आए? उनका हिन्दी के साथ-साथ संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, बंगाली पर समान अधिकार था। घर पर भी समृद्ध पुस्तकालय था। ज्योतिषालंकार, वैद्य मनीषी उपाधि प्राप्त पंडित जी प्राकृतिक चिकित्सा में भी सिद्धहस्त थे। जयपुर दरबार से उनको 'ब्रह्मर्षि कल्पद्रुम की उपाधि मिली थी। आसपास के गांव ईसरदा,सारसोप, टापुर, ऐंचेर, महापुरा आदि के बच्चों को अपने घर पर ही रोज दो-तीन घंटे पुरोहित्य कर्म का प्रशिक्षण निःशुल्क देते थे। आज भी आसपास के गांवों से उनके पढ़ाए बच्चों के बीसियों उत्तराधिकारी गुरु-शिष्य परंपरा के तहत दशहरे पर पं. शिवप्रताप जी के देवगिरी की तलहटी में स्थित घर की देहरी को श्रद्धा से नमन करने आते हैं। पं. शिवप्रताप जी का निधन हुआ

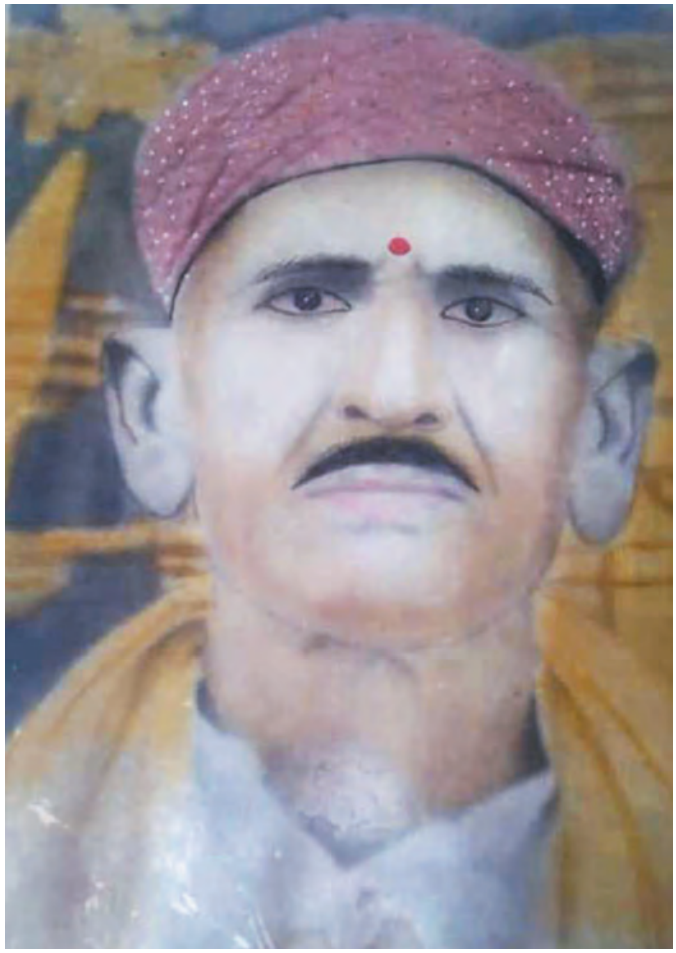

तब मैं चौथी-पांचवी में पढ़ता था। तब भी मैंने सुना था कि उन्होंने अपने महाप्रयाण का वक्त पहले ही बता दिया था। पुरुषोत्तम जी से इस बारे में जिक्र किया तो उन्होंने पुष्टि की। यह वाकया उनके ही शब्दों में - 'मैं टोंक कॉलेज में पढ़ता था तब उनका एक पोस्टकार्ड मिला जिसमें बाबा ने बताया था कि मैं 9 फरवरी 1976 को देह त्याग दूंगा। पत्र मिलते ही शिवाड़ पहुंचा तब इस तिथि में दो दिन बाकी थे। उन्होंने पढ़ाई का हवाला देते हुए वापस भेज दिया। लेकिन ठीक नौ फरवरी को मेरे पिताजी राजगुरु पं. प्रभाकर जी शास्त्री जो अब सेवानिवृत्त शिक्षक हैं, तब ईसरदा में पढ़ाते थे, उनको छुट्टी का आवेदन देकर आने का कहा। बाबा ने ईसरदा में अपने मित्र मोहनलाल जी शर्मा को भी साथ लाने को कहा। पीछे से मेरी माताजी को गाय के गोबर से आंगना लीपने को कह खुद को रुद्राक्ष की माला पहनाने को कहा। बाबा के महाप्रयाण का ऐलान करने की खबर सुन गांव वाले भी वहां पहुंच गए। पिताजी के साथ आए मोहनलाल जी से उन्होंने कहा मैं अपना ज्ञान इनको हो सकता है पूरा नहीं दे सका हूं। अगर परिवार के ये सदस्य शिष्य भाव से आएं तो ज्योतिष की जानकारी दे देना। बाबा इतना कहकर पूर्व घोषित समय पर पोळ में बने चबूतरेनुमा बैठक से उतर कर गोबर से लीपे स्थान पर ध्यानमग्र होकर बैठ गए और पूर्वघोषित समय पर देह त्याग दी। उनका निधन हुआ तब शिवाड़ में प्रवास कर रहे कृष्णानंद जी महाराज ने कहा था- 'शिवाड़ का दीपक आज अस्त हो गया'। ऐसी विभूति को शत-शत नमन। ■

# ठाकुर गुमान सिंह राजावत

# कविमन खोलता था अन्तर्मन के द्वार

नाम गुमान सिंह लेकिन जरा सा भी गुमान नहीं था उनमें। राजपूत थे लेकिन उनकी विद्वता और भक्तिभाव को देखकर कोई भी पंडित समझने की भूल कर लेता था। कवि ह्रदय ठाकुर गुमानसिंह जी को मैंने बचपन में घुश्मेश्वर महादेव मंदिर परिसर में बने प्रतापेश्वर जी मंदिर के एक कोने में घंटों बैठे देखा है। उनका कविमन इसी परिसर में शायद अन्तर्मन के द्वार खोलता था। उनके लिखे सैंकड़ों छंद-सौरठे और चौपाइयां आज भी उनकी हस्तलिखित डायरियों में मिलते हैं, लेकिन इनका प्रकाशन नहीं हो पाया। नम्रता व सादगी की प्रतिमूर्ति ठाकुर गुमानसिंह ने अपनी कलम शिवभक्ति पर लिखे छंदों पर तो चलाई ही, शिवाड़ के वैभव को काव्य पंक्तियों में भी उन्होंने खूब समेटा। आज से पचास बरस पूर्व भी राजनेता वोट मांगने गांव-गांव तक जाते थे। तब भी मतदान के महत्त्व को लेकर ठाकुर गुमानसिंह जी ने जो लिखा वह इस प्रकार है-

***मत मांगते क्यों मत क्या इनका, मतवारन की पहचान करो।***
***मति मारे ये मतिमानन की, मतिमान सही ये ज्ञान करो।।***
***इनके मत सहमत होते समय,मतदाता जरा सा 'गुमान' करो।***
***मत के उन्मत क्यों बोल रहे, मतदान करो, मतदान करो।।***

**भावार्थ-** जो मत मांग रहे हैं वे क्यों मांग रहे हैं? उनका क्या मत (मंशा) है। इन मतवालों की पहचान करो। ये लोग मतिमानन (ज्ञानवान) लोगों की भी मति हर लेते हैं। जो खुद को मतिमान (ज्ञानवान) बता कर वोट मांगने आ रहे हैं वे सही हैं यह भी जान लो। मतदाताओं, यह भी जान लो कि लोग आपके मत (राय) के विपरीत क्यों बोल रहे हैं। या यह भी कि खुद के मत (विचारधारा) में उन्मुक्त होकर क्यों बोल रहे हैं। यह सब विचारकर ही मतदान करो।

शिवाड़ के वैभव को भी ठाकुर गुमान सिंह ने अपनी काव्य पंक्तियों में यों उकेरा-

***देवगिरी सुंदर शिखर पर दुर्ग शोभा दिव्य है।***
***तलहटी अंचल सुशोभित ईश मंदिर भव्य है।।***
***वाटिकायुक्त दृश्य ऐसा अन्यत्र अलभ्य है।***
***भूरि-भूरि प्रशंसा भनत,यहां का मानव सभ्य है।।***

अपनी काव्य रचनाओं में हर रस को समेटे ठाकुर गुमान सिंह राजवत यों तो जमींदार परिवार से सम्बद्ध रखते थे। लेकिन परिवार मोह से विमुक्त होकर उन्होंने अपना अधिकतर जीवन शिव आराधना में ही बिताया। उनकी हस्तलिखित डायरी के पन्नों के मुताबिक मिति पौष कृष्णा 13 सोमवार संवत 1992 यानी वर्ष 1935 में ठाकुर गुमान सिंह जी समेत शिवाड़ के प्रमुख धर्मप्राण सज्जनों ने 'सनातन धर्म सभा ' नामक संस्था का गठन किया था। प्रत्येक सोमवार को शाम सात से रात 9 बजे तक इस संस्था के बैनर तले कल्याण जी मंदिर में सत्संग का आयोजन तय किया गया। यहां प्रवास करने वाले संत स्वामी कृष्णानंद जी महाराज भी गुमानसिंह जी की विद्वता से प्रभावित थे। वे जब भी शिवाड़ आते गुमानसिंह जी से जरूर कहते- कुछ नया लिखा हो तो सुनाओ। गुमानसिंह जी सभा को उसी भाव में अपनी रचनाएं सुनाते। भगवान शिव की भक्ति में वे किस कदर मग्न हो गए थे इसका अंदाज बुजुर्गों से सुनी सत्य घटना से होता है। शिवाड़ के बड़े तालाब पर शिव मंदिर में वे एकांत साधना के लिए जाया करते थे। भक्तिभाव विभोर होकर वे एक बार अपनी गर्दन काटकर शिव को अर्पण करने को उद्यत हो गए थे। गर्दन पर चाकू भी चला दिया था लेकिन ऐन मौके पर मंदिर महंत वहां पहुंच गए। घायल अवस्था में उन्हें समीप के ईसरदा गांव के सरकारी अस्पताल में ले जाया गया वहां डॉ. रघुवीर सिंह जी ने उनके टांके लगाए। भक्ति प्राण गुमानसिंह जी को शत-शत नमन। ■

# ठाकुर बजरंग सिंह राजावत

# घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग के असली प्रचारक

शिवाड़ में समाज के सभी वर्गों से जुड़े लोगों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र में छाप छोड़ी है। ऐसा ही व्यक्तित्व ठाकुर बजरंग सिंह राजावत का था। उन्हें गांव वाले तहसीलदार जी के नाम से ही पुकारते थे। उनके अनथक प्रयासों का ही नतीजा है कि आज घुश्मेश्वर महादेव का पुराण प्रसिद्ध मंदिर दुनिया के धार्मिक मानचित्र पर प्रमुखता से आ गया है। स्थानीय स्तर पर शिवाड़ के इस ज्योतिर्लिंग को बारहवां ज्योतिर्लिंग काफी समय से माना जाता रहा है लेकिन समुचित प्रचार के अभाव में लंबे समय तक इस मंदिर की महत्ता गुमनामी में ही रही। मेरा मानना है कि ठाकुर बजरंग सिंह राजावत के इन प्रयासों का जिक्र किए बिना मंदिर व शिवाड़ के इतिहास को पन्नों में समेटने के प्रयास अधूरे ही हैं। छात्र जीवन में ठाकुर बजरंग सिंह जी को निकट से देखने का मौका मिला लेकिन उनकी विद्वता के आगे मेरा अबोध मन संवाद करने में डरता रहा। पं. पुरुषोत्तम शर्मा बताते हैं कि वर्ष 1970 के आसपास ठाकुर बजरंग सिंह जी तहसीलदार के ओहदे से निवृत्त होने के बाद जयपुर जाकर बसना चाहते थे।

विधाता को कुछ और ही मंजूर था। शिवाड़ के ठाकुर शिवप्रकाश सिंह जी ने बजरंग सिंह जी से आग्रह किया कि वे ठिकाने का इतिहास लिपिबद्ध करें। बजरंग सिंह जी इसके लिए तैयार हो गए और किले के पोथीखाने से जरूरी पुस्तकें व पाण्डुलिपियां अपने साथ ले आए। इन्हीं पाण्डुलिपियों में बजरंग सिंह जी को वे ऐतिहासिक तथ्य भी मिले जिनमें शिवाड़ का प्राचीन नाम शिवालय होने, शिवमंदिर के बारहवां ज्योतिर्लिंग होने व महमूद गजनवी व अलाउद्दीन खिलजी के यहां आक्रमण होने का उल्लेख था। बस फिर क्या था, ठिकाने का इतिहास लिखने की धारा बदल गई और ठाकुर बजरंग सिंह मंदिर के ऐतिहासिक तथ्यों के प्रचार-प्रसार में जुट गए। विद्वता और सादगी की इस प्रतिमूर्ति ने मंदिर के प्रचार-प्रसार के लिए धर्म गुरुओं व अन्य लोगों से खूब पत्र व्यवहार किए। सबसे पहला काम उन्होंने मंदिर परिसर में शिवाड़ व मंदिर से जुड़े ऐतिहासिक तथ्यों को मंदिर की भित्ति पर अंकित करवाने का किया। 1970 से 1974 के बीच विभिन्न विद्वानों से बजरंग सिंह जी ने पत्राचार भी किया। इन्हें लिपिबद्ध किया जगदीश जी ठाकुरिया ने। दैनिक राष्ट्रदूत में 'क्या शिवजी का द्वादशवां

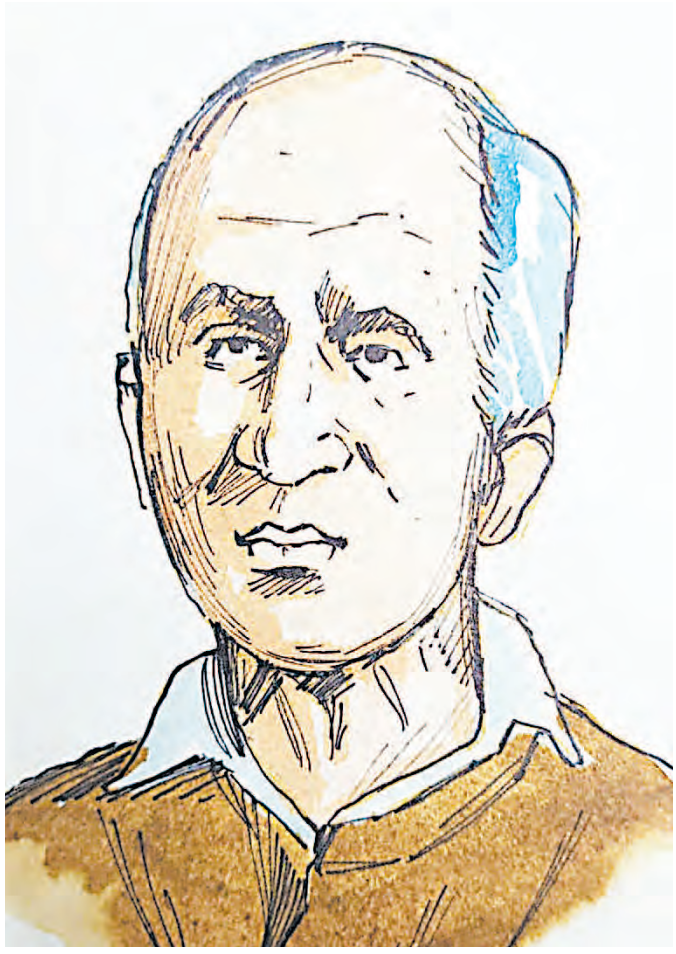

ज्योतिर्लिंग राजस्थान में हैं' शीर्षक 7 मार्च 1975 को एक आलेख प्रकाशित हुआ। ठा. बजरंग सिंह जी के प्रयासों से ही वर्ष 1976 में जयपुर में रह रहे शिवाड़ के कुछ प्रबुद्ध लोगों ने मिलकर जिनमें रामदयाल जी जैन व नंदकिशोर जी गौतम प्रमुख थे, घुश्मेश्वर प्रचार समिति का गठन किया। मंदिर परिसर की भित्तियों पर संपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं और पौराणिक तथ्यों का अंकन भी उन्होंने ही करवाया। भित्तियों पर लेखन का यह काम ऐंचेर निवासी शिक्षक मथुरा लाल जी शर्मा ने किया था। शिवाड़ से जुड़े इतिहास को लिपिबद्ध करने का काम बाद में भी जारी रहा। खुद शिवाड़ के ठिकानेदार ठा. शिवप्रकाश सिंह जी, डॉ. नंदकिशोर जी गौतम, पुरुषोत्तम जी शर्मा और मेरे अग्रज अवधेश जी पाराशर ने इन ऐतिहासिक तथ्यों को समय-समय पर पुस्तक का स्वरूप दिया। लेकिन मेरा मानना है कि ठा. बजरंग सिंह राजावत ने श्रमसाध्य काम नहीं किया होता तो आज शिवाड़ का इतिहास शासकों के दिए ताम्रपत्रों व हमारे पुरखों की लिखी पाण्डुलिपियों में ही दबा रह जाता। नई पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण होना ही चाहिए। बजरंग सिंह जी राजावत को सम्मान देने के लिए मंदिर परिसर के चौक में मंदिर के मुख्य द्वार की तरफ देखती उनकी प्रतिमा भी स्थापित की गई है। फिर भी मन का यह भाव है कि शिवाड़ में, खास तौर से मंदिर परिसर में ही उनका कोई यादगार स्मारक बने। यह इसलिए भी, क्योंकि अपनी माटी के प्रति समर्पित ऐसे लोग विरले ही होते हैं।

## गोविन्दनारायण पारीक

# गोविन्द की भक्ति को समर्पित गुरु

भव्य भाल पर भस्मी का त्रिपुण्ड और सिर को पूरा घेरते हुए साफा, गले में रुद्राक्ष की माला। जब भी उनका स्मरण होता है तो यही छवि उभर कर आती है। वे मेरे पूज्य पिताजी के भी गुरू थे। पूरे गांव में 'माड़साब' के नाम से पहचान रखने वाले गोविन्दनारायण जी पारीक शिवाड़ में खुले सरकारी स्कूल के संस्थापक शिक्षकों में थे। गोविन्दनारायण जी पारीक को तो शायद शिक्षा की अलख ही जगानी थी। इसीलिए तब खासी धमक वाली समझे जाने वाली पटवारी की नौकरी को छोडकर शिक्षक बनना पसंद किया। गोविन्दनारायण जी का जन्म 6 सितंबर 1913 को मुफलिसी में जीवन बिता रहे परिवार में हुआ। पिता तत्कालीन शिवाड़ ठिकाने में 'सैंजणा' यानी फसल की रखवाली करने वाले थे। शिवाड़ में 1942 के पहले पहली व दूसरी कक्षा तक ही पढ़ाई होती थी। सो, जैसे-तैसे गोविन्दनारायण जी ने प्रारंभिक शिक्षा चाकसू में पूरी की। तब पटवारी में नंबर आ गया लेकिन नौकरी रास नहीं आई। बाद में सवाईमाधोपुर जिले के नादौती के सरकारी स्कूल में शिक्षक के रूप में नया सफर शुरू किया।

गांव में तब शिक्षा का माहौल नहीं था। जो बाहर जाने में सक्षम होते थे वे ही पढ़ाई जारी रख पाते थे। अपने सेवाकाल का कुछ समय बौंली व सारसोप में भी बिताया। लेकिन जब शिवाड़ स्कूल में तीसरी व चौथी कक्षा भी शुरू हुई तो उनका पदस्थापन भी शिवाड़ हो गया। यह दौर संभवतः 1943 - 44 का था। उन्होंने घर-परिवार से लेकर गांववालों तक को पढ़ाई-लिखाई का महत्व समझाया। उनके पुत्र राधेश्याम जी पारीक जयपुर में पौद्दार प्रबंध संस्थान में प्रोफेसर रहे। शिक्षक के साथ वे धर्मप्राण व्यक्तित्व थे। सेवानिवृत्त साल 1970 में ही हो गए थे। बचपन से ही उनके घर के सामने से गुजरते वक्त, कल्याण जी मंदिर में व घुश्मेश्वर मंदिर में नियमित प्रार्थना सभा में उनको सस्वर पाठ करते देखता था। ईशवंदना वे खुद रचते भी थे। 'थॉको बेड़ो होळो पार, रटे जा शंकर शंभो..' की धुन के साथ नियमित कीर्तन को मैं श्रद्धाभाव से देखता-सुनता था। ईश्वर में आस्था इतनी कि अपने पोलियोग्रस्त पौत्र को भी नियमित घुश्मेश्वर मंदिर के दर्शनों के लिए लाकर अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। उनके पौत्र करुणानिधि पारीक का कहना हैं 'पोलियोग्रस्त होते ही बाबा मुझे शिवजी के ले जाने लगे। पैरों से बिल्कुल लाचार हो गया था। शुरू में लकड़ी का सहारा लिया। पांच-छह माह बाद लकड़ी भी फिंकवा दी। मुझे नहीं पता कि चिकित्सकों को दिखाए बिना ये कैसे संभव हुआ लेकिन बाबा के इस आस्थाभाव का नतीजा ही है कि आज खुद खड़ा होता हूं।' संत कृष्णानंद जी महाराज की ओर से शुरु कराए गए रामधुनी व गीता-रामायण का नियमित पाठ व सत्संग कल्याण जी मंदिर के साथ-साथ घुश्मेश्वर मंदिर में भी नियमित रूप से गोविन्दनारायण जी की अगुवाई में ही हुआ और अनवरत जारी है। जितने धर्मपरायण थे उतने ही सेवाभावी थे 'माड़साब'। उनके मोहल्ले मे एक खनाबदोश गड़रिया लुहार परिवार की वृद्धा का निधन हो गया। महिला के आगे-पीछे कोई नहीं था। पुलिस समय पर नहीं आई तो मृत देह का सम्मान करते हुए गोविन्दनारायण जी ने चंदा कर वृद्धा का अंतिम संस्कार कर दिया। अन्न का अनादर नहीं हो इसका खास ध्यान रखते थे। पं. पुरुषोत्तम जी शर्मा एक घटना बताते हैं- 'एक बार सारसोप मार्ग से हम दोनों साथ आ रहे थे। एक रोटी का टुकड़ा पड़ा देख तुरंत उठाकर सिर से लगा लिया कहा- मेरे नाथ आप यहां कहां? चलिए मेरे साथ। और रोटी के टुकड़े को एक कागज में लपेट लिया। आगे गाय मिली तो उसे खिलाया। गांव में कहीं भोज शुरू हो तो मुनादी कर देते थे कि कोई अन्न को झूठा न छोड़ें। गांव में संत-महात्मा आए या फिर रामलीला के पात्रों के भोजन की चिंता। जनसहयोग जुटाने में आगे रहते थे। 2002 में 19 अक्टूबर को यह विभूति चिरनिद्रा में लीन हो गई। ■

## केवल चंद जैन

# ‘जनाब’ के नाम से थी जिनकी पहचान

नाम उनका केवल चंद जैन था लेकिन पूरा गांव उनको ‘जनाब’ के नाम से जानता था। शिवाड़ में कोई भी कहे कि जनाब के घर जाना है तो गांव का बालक भी उसे केवल जी के घर तक पहुंचा आता था। शिवाड़ के कारोबारी जगत में मैं अपने बालपन से ही जो नाम सुनता था उनमें केवल चंद जी जैन सबसे ऊपर थे। जितना बड़ा कारोबार उतनी ही विराट कद-काठी के स्वामी थे केवल चंद जी। गांव में उनके परिवार के भाई-भतीजे आदि की कद-काठी भी छह फीट के आसपास या इससे ज्यादा है। ‘जनाब’ एक तरह से उनका तकिया कलाम था। छोटे- से बड़े सबको जनाब कहकर संबोधित करना उनकी आदत में शुमार था। इसीलिए लोग उनको भी इसी नाम से संबोधित करते रहे। शिवाड़ में किसी भी धर्म-समुदाय का आयोजन हो, केवलचंद जी उसमें शरीक जरूर होते थे। इसीलिए उनकी पहचान साम्प्रदायिक सद्भाव के पहरुओं में होती थी। कभी दो समुदायों के बीच हल्का तनाव भी होता दिखे तो केवल जी की मौजूदगी ही काफी होती थी। अन्य कारोबारियों की तरह केवल चंद जी के परदादा भी हाड़ीगांव से आकर यहां बसे थे। अपने पुरखों के कारोबार को उन्होंने न केवल आगे बढ़ाया बल्कि अपने परिवार के दूसरे सदस्यों को भी अलग-अलग व्यापारिक गतिविधियां सौंपी।

शिवाड़ में जिस दौर में अधिकांश मकान कच्चे खपरैल वाले होते थे तब गिने-चुने मकान ही पक्की छत वाले होते थे। इनमें केवल जी के परिवार के मकान भी थे। बचपन में शिवाड़ के तीन कारोबारी फर्मों का नाम सुनता था उनमें केवल चंद-लाल चंद जैन, गंभीरमल-ज्ञानचंद जैन व गुलाब चंद-कैलाश चंद जैन शामिल थीं । बड़े कारोबारी होने के बावजूद केवल चंद जी जमीन से जुड़े हुए थे। समृद्धि के उत्कर्ष पर भी और जब कारोबारी उतार-चढ़ाव का दौर आया तब भी। इसे केवल चंद जी की ही प्रेरणा कहें कि उनके छोटे भाई माणकचंद जी जैन भी मंदिर के प्रचार-प्रसार व नवनिर्माण कार्य में जुट गए। शिवाड़ में कहीं भी कोई जागरण हो और उसमें केवलचंद जी मौजूद नहीं हो ऐसा संभव नहीं था। इसी आस्था का नतीजा था कि उनकी खोई हुई आवाज लौट गई। इस चमत्कार की कहानी उनके पुत्र व मेरे मित्र नवल

जैन के ही शब्दों में- ‘बीस बरस पूर्व बाऊजी (केवल चंद जी) को गले में कुछ समस्या हुई। पहले बैठे हुए गले से बोलने लगे थे। एकाएक उनकी आवाज चली गई। पता नहीं क्या हुआ? बड़े से बड़े चिकित्सकों को दिखाया लेकिन निराश हो गए। बाऊजी इशारों से ही या लिखकर अपनी बात कहने लगे थे। करीब दो-तीन साल ऐसे ही निकल गए। हमने इसे नियति का खेल मान लिया। अचानक एक दिन चमत्कार हो गया। शिवाड़ के ही दुर्गासिंह जी, जो अब दिवंगत हो गए, आगूचा से एक संत बाबा बालकनाथ को शिवाड़ लाए थे। घुश्मेश्वर मंदिर परिसर में उनका प्रवचन था। बाऊजी भी वहां पहुंचे थे। बालकनाथ जी को सुन रहे थे। प्रवचन खत्म होने पर जयकारे लगे तो अचानक न जाने क्या हुआ बाऊजी भी जोर-जोर से जयकारे लगाने लगे। वहां मौजूद लोग चमत्कृत थे। हम सब लोग इस ईशकृपा के आगे नतमस्तक थे। बाद में वे जब तक जीवित रहे उसी दबंग आवाज से संवाद करते रहे। बरसों तक केवल चंद जी जैन शिवाड़ की रामलीला कमेटी के अध्यक्ष रहे। पद-प्रतिष्ठा का कभी मोह नहीं रहा। हां, ग्रामीणों के आग्रह पर दो बार वार्ड पंच का चुनाव लड़कर जीते। पंचायत में वे रहें या नहीं रहे उनकी तूती बोलती थी। वर्ष 2014 में 12 अप्रेल को 84 वर्ष की आयु में केवल चंद जी यह दुनिया छोड़ गए। आज भी जब उनके घर के सामने से गुजरता हूं तो लगता है पूछेंगे- जनाब कैसे हो? मेरा सौभाग्य है कि मुझे इनके परिवार का स्नेह हासिल है। उनके बड़े पुत्र नवल जैन भी सामाजिक कार्यों में जुटे हैं। ■

## प्रेम चंद स्वर्णकार

# 'प्रेम जी की नथ' का आज भी नाम

अपने पैतृक गांव शिवाड़ के अपने-अपने क्षेत्र में दक्ष लोगों के बारे में सुनता और समझता हूं तो लगता है कि यदि इन्हें समुचित मौका मिला होता तो शायद प्रदेश-देश में पहचान रखने वाले होते। ऐसे ही गुणी शिवाड़ के प्रेम चंद जी स्वर्णकार थे जिन्होंने अपनी कला का लोहा नहीं बल्कि 'सोना' मनवाया। स्वर्ण आभूषणों से बारीक से बारीक काम में उन्हें महारत हासिल थी। गांवों में महिलाएं बहुतायत में जिस नथ को अपनी नाक में पहनती है उसकी तो प्रेम जी ने ऐसी पहचान बना दी कि न केवल शिवाड़ व आसपास के गांव बल्कि टोंक, दौसा, सवाईमाधोपुर, करौली आदि जिलों के सैंकड़ों गांवों की महिलाएं इस नथ की मुरीद हैं। नथ की महिलाओं के बीच लोकप्रियता का आलम यह था कि इस नथ का नामकरण ही 'प्रेमजी की नथ' हो गया। आज भले ही प्रेम जी स्वर्णकार इस दुनिया में नहीं है लेकिन अपनी बनाई नथ को उन्होंने एक तरह से ब्राण्ड ही बना दिया। उनके पौत्र द्वारका प्रसाद सोनी के शब्दों में हम तो आज भी दादाजी के नाम का ही खा रहे हैं। आखातीज व अन्य अबूझ सावों पर तो इस नथ के लिए मारामारी होती है।

सिर पर टोपी लगाए प्रेम जी को मैंने भी बचपन में उनकी दुकान पर आभूषण गढते देखा है। आज भले ही आभूषण निर्माण की नई-नई तकनीक आ गई हो लेकिन सोचता हूं कि आखिर प्रेम जी की नथ में ऐसा क्या था कि चार-पांच जिलों में पहचान बना गई। गांव वालों से ही पूछा तो जवाब मिला- सबसे बड़ी बात शुद्धता की गारंटी। और इसके बाद नथ की गोलाई, जो इस हिसाब से दी जाती थी कि पहनने वाली महिला पर कैसे फबेगी। ग्रामीण महिलाओं की पसंद भी अपनी-अपनी रहती थी। कोई ठोडी से लटकती नथ पसंद करती तो कोई होठों को चूमती हुई। नाक पतली है या मोटी इस पर भी नथ का आकार तय होता है। गहने खूबसूरती तो बढ़ाने वाले होते ही हैं सेहत के लिए भी फायदेमंद। नथ पहनने का सीधा संबंध एक तरह से नाक के एक्यूप्रेशर से जुड़ा है। नाक में नथ के लिए छेद कहां हो, प्रेम जी इस जानकारी में दक्ष थे। नथ तो उनके नाम से ब्राण्ड बन गई लेकिन प्रेम जी दूसरे आभूषणों में भी सिद्धहस्त थे। कोई आभूषण इतनी लोकप्रियता हासिल कर ले तो कम से कम राज्य स्तरीय पुरस्कार तो पाने का हकदार बनता ही है। लेकिन प्रेम जी 'घर का जोगी जोगणा'..ही बन कर रह गए। जो नथ ब्राण्ड बनकर इतनी ख्याति प्राप्त कर चुकी हो उसकी मांग क्षेत्र विशेष में ही होकर रह गई। अपने बनाए उत्पाद की इस लोकप्रियता के बावजूद प्रेम जी ने जीवन में कभी समृद्धि को ओढ़ा नहीं। सादगी और नम्रता उनकी खास पहचान थी। उन्हें अपनी बनाई नथ का इतना लोकप्रिय होने का लैशमात्र भी गुमान नहीं था। जितनी दक्षता आभूषण निर्माण में थी उतनी ही रुचि धार्मिक प्रवृत्ति में भी थी। गो-सेवा में रत रहते थे। जब तक रहे घर में भी गोपालन खूब हुआ। प्रतिदिन गांव में गायो की 'घेर' को चारा डालने का उनका नियम था। इतना ही नहीं घुश्मेश्वर मंदिर निर्माण में भी उन्होंने खूब सहयोग दिया। मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार का शिलान्यास उनके हाथों ही हुआ था। शिवाड़ में स्वर्णकारों के दस-बारह परिवार हैं। सब एक से एक बढ़कर हैं और सबके काम का अपना महत्व भी है। लेकिन प्रेमजी ने अपने हुनर के जरिए जो ख्याति हासिल की उसकी जानकारी नई पीढ़ी को देना जरूरी समझता हूं। प्रेम जी के परदादा को शिवाड़ के तत्कालीन ठिकानेदार खास तौर से जयपुर जिले के बस्सी कस्बे से लेकर आए थे। कुनबा बढ़ता गया और प्रेम जी ने अपने पांच भाइयों को भी आभूषण निर्माण कला सिखाई। प्रेम जी 87 साल की उम्र में 29 जुलाई 2009 को हरिशरण हो गए लेकिन उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी सबके लिए प्रेरणा बना हुआ है। आभूषण निर्माण कला के ऐसे चितेरे को शत-शत नमन। ■

## शंकर जांगिड़

# शिवभक्ति में लीन मौन साधक

कहने को तो वे शिवाड़ की पहली व अकेली आरा मशीन यानी लकड़ियों की कटाई मशीन को लाने वाले थे लेकिन प्रभु ने शायद उनको इस धरती पर दूसरे ही निमित्त से भेजा था। शिवाड़ के पुराण प्रसिद्ध घुश्मेश्वर महादेव का आज जो स्वरूप श्रद्धालुओं को देखने को मिलता है उसकी नींव शंकर जी जांगिड़ ने ही रखी थी। मंदिर में दर्शनार्थ आने वालों को कुछ पल विश्राम का मौका मिल जाए इसी इरादे से उन्होंने पहाड़ की तरफ वाले इलाके में 'शंकर सेवा सदन' का निर्माण कराया। बिना किसी जनसहयोग के खुद ही निर्माण कार्य की धुन पकड़ आगे बढ़ते रहे। अपने बचपन में इन्हें रोज सुबह-शाम घुश्मेश्वर महादेव के दर्शन करने आते-जाते देखता था। मंदिर की अखण्ड ज्योति के लिए गिलास में घी, अखण्ड धूनी के लिए लकड़ी का बुरादा और मिश्री का प्रसाद लाना उनकी दिनचर्या में शामिल था। वे यह सुनिश्चित कर ही लौटते थे कि मंदिर परिसर में मौजूद कोई भी प्रसाद से वंचित नहीं रहे। लोग उन्हें शंकर जी मिस्त्री कहते थे।

घुश्मेश्वर महादेव के मुख्य गर्भगृह के गुम्बद व शिखर पर मंडित प्राचीनकाल की नक्काशी को सामने लाने का श्रेय शंकर जी को ही जाता है। यह संभवतः 1970 या इसके आसपास का दौर था। ठाकुर बजरंग सिंह जी मंदिर का इतिहास संकलित करने में जुटे थे तो शंकर जी का शिल्पकार मन इस बात की तलाश में जुटा था कि प्राचीन होने के बाद भी मंदिर के गर्भगृह का गुम्बद, शिखर सफेदी से पुता ही क्यों दिखता है। बस इसी उत्सकुता से शंकर जी ने खुद हाथों में हथौड़ा और छैनी थाम लिया। करीब आधा फीट तक के ऊपरी आवरण को खरौंचा तो मूल तस्वीर सामने आ गई जो राजा शिववीर सिंह चौहान ने विक्रम संवत 1179 यानी 1123 ईस्वी में बनवाया था। यानी शिखर को बने तब करीब 850 बरस हो गए थे। छैनी से खोदते-खोदते जब पत्थर की टंकार हुई तो शिखर पर कलात्मक नक्काशी सामने आई। बस फिर क्या था आरामशीन के अपने स्टाफ को पूरे गुम्बद का यह आवरण हटाने के काम में लगा दिया। लगातार छह माह तक चूना हटाने का काम चला। दरअसल शिखर की पुताई के बजाए पहले चूने का घोल शिखर पर उड़ेल दिया जाता था। ऐसा करते-करते शिखर की कलात्मकता कई फीट गहरी दब गई। शंकर जी ने नक्काशीयुक्त

गुम्बद को नीचे से शीर्ष तक बारीकी से न केवल साफ कराया बल्कि बाद में इसे रंगवाया भी। बाकायदा मंदिर की मौजूदा परिक्रमा बनवाई। गांव वाले यह देख चमत्कृत थे कि शिखर तक समूचे गुम्बद को पत्थर में बारीक नक्काशी (ऊपर चित्र में) की गई थी। आस्थावान संपदा हासिल करता है तो प्रभु अपने आप ही ऐसे लोगों को सेवा कार्य में लगा देता है। मूलतः शंकर जी काष्ठकला से जुड़े थे। लेकिन यहां भी उन्होंने लोगों के घरों में खिड़की-दरवाजे बनाने के बजाए ठाकुर जी के काष्ठ के विमान व झूले बनाने का काम ज्यादा किया। शिवाड़ में कई देवालयों में शंकर जी ने पुराने विमान व झूले बदलकर नए बनाए। दान-पुण्य में वे ऐसे रचे-बसे थे कि रास्ते में जरूरतमंद दिख जाए तो उसे खुले हाथ से देने में नहीं चूकते थे। बड़े तालाब के पास सार्वजनिक उपयोग के लिए कुआ और पशुओं के लिए पानी की पक्की खेल बनवाई। उनके पुत्र रामप्रसाद बताते हैं कि पिताजी का जन्म टोंक जिले के अलीगढ़ के समीप गुढलाई में वर्ष 1934 में हुआ था। पन्द्रह साल की उम्र में ही रोजगार की तलाश में टोंक के धोलाखेड़ा गांव आ गए और वहां लकड़ी का पुश्तैनी काम सीखा। कुछ समय बाद टोंक नवाब की बेगम के ड्राइवर बन गए। साथ ही काष्ठकला से जुड़े भी रहे। नवाब की कोठी में भी आरा मशीन लगा दी। वर्ष 1968-69 में शिवाड़ ग्राम पंचायत ने आरा मशीन के लिए जगह देने का आश्वासन दिया और शिवाड़ बुला लिया। जीवनपर्यंत वे शिवाड़ से जुड़े रहे। ■

# जहूर खां देशवाली

# कुरान भी पढ़ी तो गीता भी

कुछ लोग अपने जीवन के अल्पकाल में ही ऐसी छाप छोड़ जाते हैं कि पीढ़ियों तक उनको याद रखा जाता है। जहूर खान देशवाली का इंतकाल महज 54 साल की उम्र में हो गया लेकिन वे शिवाड़ में कौमी एकता की मिसाल बन गए थे। जब प्रदेश में पंचायत राज अपने शैशव दौर में ही था गांव वालों ने इस शख्सियत को कई मर्तबा वार्ड पंच के लिए चुना। साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रतीक जहूर खां जी शिवाड़ की रामलीला कमेटी के बरसों तक सदर रहे। जब तक वे रहे शिवाड़ में कोई साल ऐसा नहीं रहा जब रामलीला का आयोजन नहीं हुआ हो। वे रामलीला में पात्रों के संवाद पर्दे के पीछे से बोलते थे। सूत्रधार के रूप में। अब तो रामलीला लुप्तप्राय है । शिवाड़ में भी। रामलीला कमेटी के सदर रहते हुए जहूर खां जी इस बात का खास ध्यान रखते थे कि किसी पात्र को संवाद में असुविधा नहीं हो। कभी कोई पात्र न भी उपलब्ध हो तो खुद भी स्वांग करने से नहीं चूकते थे। जामवंत उनका प्रिय रोल होता था। कुरान की आयतों से लेकर रामचरितमानस की चौपाइयां और गीता के कई श्लोक उनको कंठस्थ थे। शिवाड़ में आज जिसे दशहरा मैदान कहते हैं वहां रावण दहन के लिए एक छोटा चबूतरा बनवाने के शुरुआती प्रयास भी जहूर खां जी के ही थे। बाद में यहां पंचायत ने रंगमंच का निर्माण करा दिया।

जहूर खां जी गांव में वार्ड पंच रहे। पंचायत के सचिव भी रहे और बाद में ग्राम सेवा सहकारी समिति के व्यवस्थापक रहे। शिवाड़ की बसावट का जो विस्तार स्टेशन रोड की तरफ हुआ उसके प्रारंभिक मास्टर प्लान में भी जहूर खां जी का योगदान था। आज शिवाड़ का विस्तार ईसरदा स्टेशन की ओर काफी हो गया है। जहूर खां जी का इंतकाल वर्ष 1990 में हो गया था। जहूर खां जी से ज्यादा संवाद नहीं हो पाया लेकिन उनके सहकारी समिति के व्यवस्थापक रहते सादगी और नम्रता की इस प्रतिमूर्ति को देखा है। उस दौर में सहकारी समिति के जरिए ही राशन पर चीनी व केरोसिन मिलता था। बचपन में उन्हें देखता था, क्या मजाल कि तोल में कोई उलटफेर हो जाए। वह दौर था जब राशन की दुकान पर तब लंबी कतारें लगना आम था लेकिन उनकी नजर में कोई वीआईपी नहीं होता था। पहले आओ, पहले पाओ के सिद्धांत का कठोरता से पालन करते थे। मूलतः इनका परिवार दूदू के पास उंदरया गांव का था। जब राजावतों ने शिवाड़ को धीरावतों से छीनकर अपने कब्जे में लिया तो राजावत वंश के तत्कालीन ठाकुर ने इस देशवाली परिवार के मुखिया को शिवाड़ बुला अपनी सेना में भर्ती किया था। एक तरह से तब से ही लंबे समय तक देशवाली परिवार शाही खिदमत में रहा। इतना ही नहीं पांचोलास की चर्चित लड़ाई में भी देशवाली परिवार के सैनिकों ने हिस्सा लिया था। वक्त के साथ-साथ रजवाड़ी दौर खत्म हुआ तो इस परिवार ने सेना से नाता तोड़ लिया। जहूर खां जी का वर्ष 1936 में जन्म हुआ। वे खुद भी पढ़े और अपनी संतति को भी पढ़ाया। जहूर खां जी के बड़े पुत्र निसार मोहम्मद देशवाली राजस्थान रोडवेज में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त हुए हैं। पौत्र अरशद खान, शिवाड़ में राजनीतिक पार्टी के कार्यकर्ता हैं। निसार बताते हैं कि अब्बा हुजूर ने मेरी पांचों बहिनों को भी हम भाइयों के साथ तालीम में आगे रखा। संभवतः अल्पसंख्यक समुदाय में स्कूल जाने वाली गांव की पहली बालिकाएं जहूर खां जी की ये पुत्रियां ही थीं। मुझे गर्व है कि मेरी पूजनीया माताजी श्रीमती पुष्पा देवी पाराशर ने शिवाड़ के सरकारी स्कूल में इन बालिकाओं को पढ़ाया। गांव में यों तो आज सभी साथ-साथ रहते हैं लेकिन इस गंगा-जमुनी माहौल की नींव जहूर खां जी सरीखे शिवाड़ के हमारे पुरखों ने रखी है इसमें संशय नहीं । कौमी एकता के प्रतीक ऐसे व्यक्तित्व को नमन।

# वैद्य राधेश्याम शर्मा

# जड़ी-बूटियों से उपचार प्रणाली में थे सिद्धहस्त

काला कोट, सिर पर काली टोपी और बड़े फ्रेम वाला चश्मा उनके ओजपूर्ण व्यक्तित्व पर खूब फबता था। वैद्य राधेश्याम जी शर्मा आजादी के पहले के आयुर्वेद चिकित्सक थे। ऐसा दौर था जब गांवों में मरीज, आयुर्वेद के भरोसे रहते थे क्योंकि एलोपैथी के अस्पताल शहरों व कस्बों तक ही सीमित थे। शिवाड़ में जब राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय खुला तब सबसे पहले वैद्य के रूप में नियुक्ति राधेश्याम शर्मा जी की ही हुई थी। इससे पहले उनकी सेवाएं अधिकतर समीप के ईसरदा में ही थीं। हालांकि 1969 के आसपास वे सरकारी सेवा से निवृत्त हो चुके थे लेकिन उसके बावजूद उनके घर के बाहर बैलगाड़ियों का जमावड़ा रहता था। सेवानिवृत्ति के बावजूद निजी तौर पर उनकी प्रेक्टिस जारी थी। प्रेक्टिस क्या, एक तरह से समाजसेवा थी। अपनी फीस मरीज से कभी मांगी नहीं और जो खुशी से दे गया उसे स्वीकार भी किया। मरीज ऐसे भी जो कुछ देने की स्थिति में नहीं होते थे, उन्हें अपनी जेब से आने-जाने तक का खर्चा दे दिया करते थे। इतना ही नहीं बाहर से आने वाले मरीजों को भोजन तक के लिए पूछते। उनका घर एक तरह से राम-रसोड़ा था। वैद्यराज का घर शिवाड़ में मेरे पैतृक निवास के ठीक सामने था। इसलिए उनके परिवार से हमारा खासा अपनापा था। पूरे मोहल्ले के लिए वैद्य दंपति अम्मा-बाऊजी थे। अस्सी पार उम्र के उस पड़ाव में भी वे मरीजों की सेवा में जुटे रहते थे।

आखिर ऐसी क्या खासियत थी वैद्य जी में कि लोग खिंचे चले आते थे। गठिया -बाय के उपचार में वे सिद्धहस्त थे। जिस मरीज को चार लोग सहारा देकर लाते थे वह उनका उपचार लेकर खुद चलकर जाता था। जड़ी-बूटियों में उनकी विशेषज्ञता थी। निःसंतान दंपतियों के लिए भी वे भगवान थे। चर्म रोगों में भी उनकी औषधि रामबाण होती थी। आसपास के गांवों में भी ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें उनकी दी औषधि के सेवन के बाद संतान सुख हासिल हुआ। सेवानिवृत्ति के बाद उनको जयपुर के जौहरी बाजार में धन्वन्तरि औषधालय में सेवाएं देने की पेशकश की गई लेकिन उन्होंने ग्रामीणों की सेवा करना ही उचित समझा। कहते हैं कि उन्हें भैरव का इष्ट था और देवी मां से वे संवाद किया करते थे। मूलतः वैद्य राधेश्याम जी शर्मा ईसरदा के सरकारी औषधालय में नियुक्त हुए थे, आजादी के पहले ही। उनके पुत्र सुरेन्द्र शर्मा नेहरू युवा केन्द्र में लेखाकार हैं। वे बताते हैं कि उनके पुरखे गुजरात के सिद्धपुर से थे। औदिच्य यानी गुजराती भट्ट परिवार से राधेश्याम जी के पिता पं. छोगालाल जी मथुरा आ गए। मथुरा में ही राधेश्याम जी ने आयुर्वेद का अध्ययन व प्रशिक्षण लिया और राजस्थान में सरकारी सेवा में आ गए। अधिकांश समय ईसरदा व समीप के सारसोप में तथा आखिरी सेवाकाल शिवाड़ में रहा। शिवाड़ में ऐसे आए कि यहीं घर बना लिया। तीनों गांवो में ही पूरी सरकारी सेवा हो गई। कभी तबादला भी हुआ तो गांव वालों के विरोध के कारण शासन को निरस्त करना पड़ा। आसपास के गांवों में मरीजों को देखने जाने के लिए ठिकाने की तरफ से उनके लिए घोड़ी की व्यवस्था रहती थी। शिवाड़ ठिकाने के कामदार गोकुलचंद जैन से उनका दोस्ताना था। दोनों साथ में भ्रमण के लिए जाया करते थे। अपने वक्त में पहलवानी भी किया करते थे। शतरंज के खेल में उनका कोई सानी नहीं था। जब अस्थल से आयुर्वेद अस्पताल मौजूदा भवन में शिफ्ट हुआ तो वैद्य राधेश्याम जी ने सेवानिवृत्ति के बाद इसी अस्थल के उसी कक्ष में अपनी प्रेक्टिस शुरू की जहां सरकारी औषधालय था। कुछ समय के लिए उन्होंने मुख्य बाजार में वासुदेव जी के मकान में भी अपना औषधालय चलाया। वर्ष 1994 में 92 वर्ष की उम्र में वे स्वर्ग सिधार गए। ऐसे व्यक्तित्व सब जगह होते हैं पर अफसोस इसी का रहता है कि असाध्य रोगों के उपचार की सिद्धि साथ ही चली जाती है।

# आशुकवि माधोलाल जांगिड़

## पं. नेहरू को भी बनाया अपना मुरीद

इकहरा शरीर लेकिन दबंग आवाज। सफेद झक्क आधी बांह वाले कुर्ता और धोती का पहनावा। चेहरे पर जबर्दस्त विद्वता का तेज। जी हां, वे माधो लाल जी जांगिड़ ही थे जिनके बिना गांव में कोई भी सभा-कार्यक्रम अधूरा सा रहता था। जहां पहुंच जाते थे वहां ठहाके लगना तय था। पेशे से काष्ठकार थे लेकिन तुकबंदी कर हास्य रचना में माहिर थे। मैंने अपने स्कूली दौर में उनको बच्चों से लेकर बड़ों तक के बीच हंसी का ऐसा ही माहौल बनाते खूब देखा है। हमारे लिए वे माधोबाबा थे। आज से पचास-साठ बरस पहले शिवाड़ के सभा-सम्मेलन व समारोह में 'रेस्पेक्टेड चीफ गेस्ट, लेडीज एंड जेंटलमेन से अपनी बात शुरू कर ...थैंक्यू फॉर लिसनिंग टू मी... तक का फर्राटेदार अंग्रेजी में जब अपना कम से कम एक पैरे का संबोधन देते तो लोग दांतों तले अंगुली दबाने को मजबूर होते थे। ऐसा नहीं था कि वे अंग्रेजी के बड़े ज्ञाता थे। पर अपनी इस अलग विधा की वजह से वे बच्चों से लेकर बूढ़ों तब सबके चहेते बने थे। सबसे अलग हटकर उनका जो गुण था वह था हाजिर जवाबी और आशुकविता करना। हंसने-गुदगुदाने वाली तुकबंदी ऐसी कि लोगों के हंसते-हंसते पेट में बल पड़ जाते।

माधोबाबा के पौत्र हिंदुस्तान जिंक चित्तौड़गढ़ में रहे विनोद शर्मा ने बताया कि एक बार सवाईमाधोपुर क्षेत्र के दौरे पर आए देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू का स्थानीय बोली में स्वागत गान पेश किया तो माधो बाबा ने नेहरू जी को भी अपना मुरीद बना लिया था। आवाज इतनी बुलंद कि भरी भीड़ में भी कभी माइक की आवश्यकता नहीं होती थी। शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ेपन वाले उस दौर में भी अपनी लड़कियों को भी लड़कों के समान ही शिक्षा-दीक्षा प्रदान की थी माधोबाबा ने। संगीत से उनका खासा लगाव था। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में रात्रि जागरण में भी माधोबाबा की हर सप्ताह यानी सोमवार को हाजिरी होती थी। कड़ाके की ठंड के दौर में भी जब आज से पचास-साठ बरस पहले चुनिंदा लोग ही जागरण में पहुंचते थे, माधोबाबा की उपस्थिति अवश्य होती थी। शास्त्रीय संगीत से उनका खासा जुड़ाव था। किसी भी भक्ति संगीत का कार्यक्रम उनकी मौजूदगी के बिना अधूरा ही माना जाता था। शिवाड़ में वैद्य सीताराम शर्मा के निवास पर होने वाले नियमित रामायण पाठ में भी माधो जी जांगिड़ की भूमिका रहती थी। एक-एक चौपाई का ठेठ गांव की बोली में अर्थ समझाते उसके बाद ही अगली चौपाई का पठन होता था। माधोबाबा के सुपुत्र शिवदयाल जी पटवारी ने भी संगीत की इस विरासत को आगे बढ़ाया। उन्हें शौकिया घड़ीसाजी का काम ऐसा रास आया कि इसे भी कामकाज का हिस्सा बना लिया। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में रात्रि जागरण में जैसे पटवारी जी ने माधोबाबा की जगह ले ली थी। आज से छह-सात दशक पहले गांव की हर छोटी-बड़ी परेशानियों का समाधान माधोबाबा के पास होता था। तत्कालीन राजमाता व कामदार गोकुलचंद जी जैन उनकी बात को अहमियत देते थे। वे खरी-खरी कहते थे, भले ही कोई नाराज हो जाए। माधोबाबा को संस्कृत का भी काफी ज्ञान था। रुद्री पठन उनकी दिनचर्या में शामिल था। उम्र के 65-70 के पड़ाव में भी वे कामदार जी व पंडित हरिशंकर जी शर्मा के साथ अलसुबह उठकर भ्रमण पर जाया करते थे। शायद ही किसी को इस बात पर विश्वास हो कि उस दौर में समाज मे मृत्युभोज की परिपाटी का भी वे खुलकर विरोध करने वाले थे। वे कहते भी थे कि इंसान के जाने के बाद उसके नाम पर बेहिसाब खर्च करने का कोई औचित्य नही। उन्होंने अपने घर से ही इस परिपाटी को खत्म करने की शुरुआत की। अपने जीवन के अंतिम समय तक वे सक्रिय रहे और जून 1997 में 85 वर्ष की आयु में अपनी नश्वर देह छोड़ी। ऐसी शख्सियत को नमन।

## रघुवीर सिंह राजावत

# खेल जगत की प्रतिभाओं को तराशने वाले

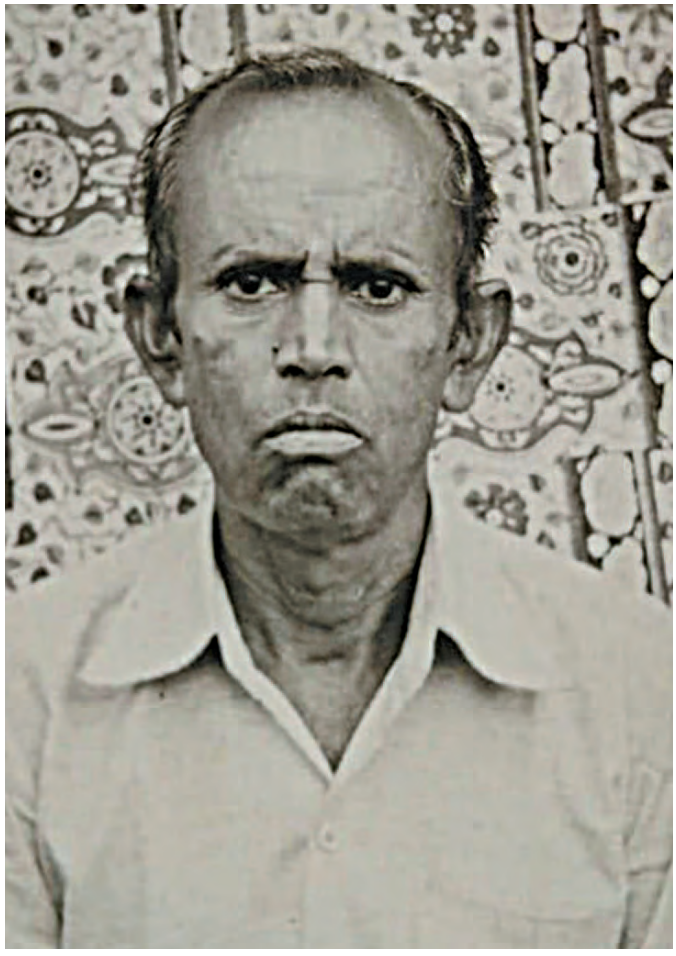

कुछ शख्सियत ऐसी होती हैं जो आपकी स्मृतियों में स्थायी रूप से अंकित हो जाती हैं। ऐसे ही थे शिवाड़ में गणित के शिक्षक रहे रघुवीर सिंह जी राजावत। समय के इतने पाबंद कि आधा मिनट भी आगा-पीछा नहीं होते थे। देशप्रेम तो उनमें कूट-कूट कर भरा था। राष्ट्रगान कहीं भी सुनाई दे तत्काल सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाते। हर भारतीय में हमारे जवानों और देश के प्रति सम्मान व गौरव का भाव है। यदि नहीं है तो उनमें जिनको रघुवीर सिंह राजावत जैसे शिक्षक नहीं मिले। उन्होंने मुझे ही नहीं बल्कि मेरे उन अग्रजों को भी पढ़ाया है जो अब षष्ठीपूर्ति कर चुके हैं। कहने को तो वे गणित शिक्षक थे लेकिन भूमिका उनकी किसी शारीरिक शिक्षक जैसी थी। शिवाड़ के स्कूल में हॉकी, वालीबाल, क्रिकेट व बैडमिंटन जैसे खेलों की शुरुआत उनके प्रयासों से ही हुई। सुनने में अविश्वसनीय लग सकता है लेकिन अपने सेवाकाल में उन्होंने एकाध मौकों को छोड़कर कभी अवकाश नहीं लिया। यह उनकी कर्मनिष्ठा का प्रतीक था। पं. पुरुषोत्तम शर्मा जिक्र करते हैं कि शिवाड़ की तत्कालीन माजी साहिबा के निधन पर उन्हें अवकाश पर रहना पड़ा। अंत्येष्टि में शामिल होने के लिए वे स्कूल के तत्कालीन प्रधानाध्यापक देवव्रत गुप्ता से अनुमति लेने पहुंचे तो गुप्ता जी ने उनकी तरफ देखे बिना ही कह दिया- आज तो आप देरी से आए हैं। शायद यह उनकी निरंतरता में आए व्यवधान का तंज कसा गया था। तत्काल रघुवीर सिंह जी ने जवाब दिया- 'मैं तो आधे दिन का अवकाश देने आया हूं।' और, शायद यही उनका एक मात्र अवकाश आवेदन था।

रघुवीर सिंह जी का पढ़ाई में भी अलग ही अनुशासन था। गणित जैसे विषय के सवाल खाली पन्ने वाली कॉपी (सफेद) में ही हल करवाते थे। पेन से नहीं बल्कि बारीक नौंक वाली कलम-स्याही से। क्रिकेट की कमेंट्री सुनना उनका प्रिय शगल था। समूचे गांव में रेडियो पर जिन्हें भी क्रिकेट कमेंट्री सुनने का चस्का लगा होगा वह उनकी ही देन है। रघुवीर सिंह जी और मशहूर कमेंन्टेटर जसदेव सिंह दोनों चाकसू के सरकारी स्कूल में पढ़े थे। बाद में जसदेव सिंह के साथ जिन तीन जनों का यूएस में हॉकी कमेंट्री सुनाने के लिए चयन हुआ उनमें रघुवीरसिंह जी भी थे। तब विदेश जाने के लिए आधी राशि खुद की जेब से देनी होती थी। ऐसे में अर्थाभाव से रघुवीर सिंह जी वहां नहीं जा पाए। खेलों के प्रति उनका लगाव ताजिंदगी रहा। गणित प्रेम ऐसा कि कठिन से कठिन सवाल वे चुटकियों में हल कर देते थे। स्कूल में हर समय विचारमग्न नजर आते थे।शायद ऐसे ही सवालों का हल सोचते रहते होंगे। हां, चेहरे पर उल्लास के भाव तभी देखता था जब क्रिकेट में चौके-छक्के लगते थे। रिटायर्ड तहसीलदार ठाकुर बजरंग सिंह राजावत के वे भतीजे थे। पिता शिवराज सिंह जी शिवाड़ ठिकाने के मुलाजिम थे। बजरंग सिंह जी ने ही रघुवीर सिंह जी व उनके दो अन्य भाइयों को पढ़ाया-लिखाया। उनके सुपुत्र सत्यवीर सिंह राजावत ने बताया कि उनके पापा सबसे पहले पुलिस में भर्ती हुए थे। पटवारी भी बने और कस्टम विभाग में भी नौकरी की। लेकिन तीनों ही नौकरी रास नहीं आई। बाद में शिक्षक के रूप में सेवाएं शुरू की। पहली नियुक्ति सवाईमाधोपुर के समीप कुण्डेरा गांव में हुई। अपना अधिकांश सेवाकाल शिवाड़ में ही बिताया। वर्ष 1982-83 के आसपास वे सेवानिवृत्त भी हो गए। तब शिवाड़ में मेरे संयोजन में बनी संस्था 'मेधावी छात्र अभिनंदन समिति' की ओर से गणित के प्रतिभाशाली छात्रों को उनके नाम पर ही अवार्ड देने की घोषणा की गई थी। दुर्भाग्यवश यह क्रम शुरू ही नहीं हो पाया। रघुवीर सिंह जी शिवाड़ की उस प्राचीन हवेली में रहते थे जिसे गढ़ी कहते हैं। यह गढ़ी ठिकाने की संपत्ति थी। ऐसे गौरव पुरुष वर्ष 2008 में इस दुनिया को अलविदा कह गए। ऐसे मनीषी को शत-शत नमन।

## वैद्य सीताराम शर्मा

# जिनकी दिलासा भर से होता था मर्ज ठीक

गरीबोनिवाज लाज राखबो को बानो तेरो, ऐसो है दीन जनता के पुजारी है। रहेगो न रोग यहां अब दशरथ कुलधारी, क्योंकि तेरे साथ त्रिपुरारी है।'- ये काव्य पंक्तियां साठ के दशक में प्रसिद्ध आशुकवि माधो जी जांगिड़ बाबा ने लिखी थी। दशरथ कुलधारी यानी सीताराम विशेषण शिवाड़ के सरकारी औषधालय में उस दौर में नियुक्त होकर आए वैद्य सीताराम शर्मा के लिए था जो परम शिवभक्त थे। शिवाड़ व आसपास की जनता का वे जिस सेवाभाव से उपचार करते थे उसे देखते हुए ही माधोबाबा ने वैद्य जी के लिए दीन जनता के पुजारी व गरीबनवाज जैसे शब्द इस्तेमाल किए बल्कि यह भी उम्मीद जताई कि शिवाड़ में अब रोग नहीं रहेगा। सचमुच ऐसे लोग विरले ही होते हैं जो सरकारी नौकरी करने के मकसद से कहीं आए हों और फिर वहीं के ही होकर रह गए हों। शुरुआत तीन-चार साल को छोड़कर वैद्यराज ने अपना संपूर्ण सेवाकाल शिवाड़ में आयुर्वेद चिकित्सक के रूप में बिताया। लालसोट के पास तलाबगांव से आए सीताराम जी शिवाड़ के आयुर्वेद औषधालय की नवीन इमारत में आने वाले पहले वैद्य थे। तब ऐलोपैथी का अस्पताल तो गांव में था ही नहीं लेकिन उनको इस पैथी से गुरेज भी नहीं था।

वैद्यराज की वाणी में ही ऐसा मिठास था कि दिलासा भर से मरीज आधा तो ठीक हो ही जाता था। वैसे तो गुरु और वैद्य हमेशा सम्मान के पात्र रहते हैं लेकिन सीताराम जी के प्रति सम्मान की बड़ी वजह मरीजों के लिए हर वक्त तैयार रहने की उनकी फितरत थी। मरीजों को वैद्यजी में भरोसा इतना था कि एक बार एक ग्रामीण महिला ने रास्ते चलते उनसे पेट दर्द की दवा पूछ ली तो उन्होंने जेब में कागज का पुर्जा निकाल दवा लिख दी । साथ ही नसीहत दी कि घर जाकर इसे खा लेना। महिला घर जाकर वैद्य जी के लिखे उस पुर्जे को ही दवा समझ निगल गई। अगले दिन वैद्यजी को आकर कहा- 'बैद जी महाराज, म्हैं थांकी दवा सूं ठीक होगी।' हैरत में पड़े सीताराम जी ने पूछा- लेकिन तुमने मुझे दवा तो दिखाई ही नहीं। सारा वाकया सुना तो वे खुद अचरज में पड़ गए। यह आस्था का अतिरेक था या नासमझी लेकिन वैद्य जी से जुड़े ऐसे दर्जनों किस्से हैं। वैद्य सीताराम जी के लिए गांव का औषधालय ही घर था। उनके सुपुत्र गिरिराज खांडल बताते हैं कि कभी हम सब परिजनों को इसी व्यस्तता के कारण एक साथ भोजन करने तक का अवसर नहीं मिलता था। खांसी-जुकाम बुखार से लेकर प्रसव कराने का भार इसी औषधालय पर था। आसपास के गांवों में मरीज देखने साईकिल से जाते। दवा देने के बाद एक बार फॉलोअप करने जरूर उस मरीज के पास जाते। आज की तरह व्यावसायिकता कतई नहीं थी। किसी के पास कुछ हो तो दे जाता था। जिसके पास न भी हो तो वैद्य जी जेब से भी पैसे दे देते थे दवाओं के लिए। धर्मपरायण ऐसे कि रोज शाम को वैद्यराज जहां रहते थे उस मकान के चबूतरे पर नियमित रामायण पाठ होता। वे शिवाड़ में हों या नहीं रामचरितमानस पाठ का यह नियमित क्रम चलता रहा। प्रति शनिवार को इसी चबूतरे पर काव्य गोष्ठी भी होती थी। रामचरितमानस पाठ में माधोबाबा के अलावा कल्याण जी छीपा, मथुरालाल जी खाती, राधेश्याम जी खाती, शिवदयाल जी पटवारी, पं. विजयनारायण जी, रघुवीरसिंह जी राजावत आदि शामिल होते थे। घुश्मेश्वर महादेव मंदिर में रूद्री पठन उनका नियमित क्रम था। संभवतः मेरे जन्म के आसपास शिवाड़ आए सीताराम जी आठ-नौ माह के लिए ही अन्यत्र गए और बाद में समीप के सारसोप गांव के औषधालय से 1999 में सेवानिवृत्त होकर ही लालसोट पहुंचे। वहां भी लोग उन्हें सीताराम जी शिवाड़ वाले के नाम से ही जानते थे। शिवाड़ से जुड़ाव का अर्थ इससे अधिक क्या होगा। वर्ष 2019 में 28 सितम्बर को उनका निधन हो गया। वैद्यराज को विनम्र श्रद्धांजलि।

## गोविन्दनारायण सैनी

# फर्श से अर्श तक पहुंचने वाले

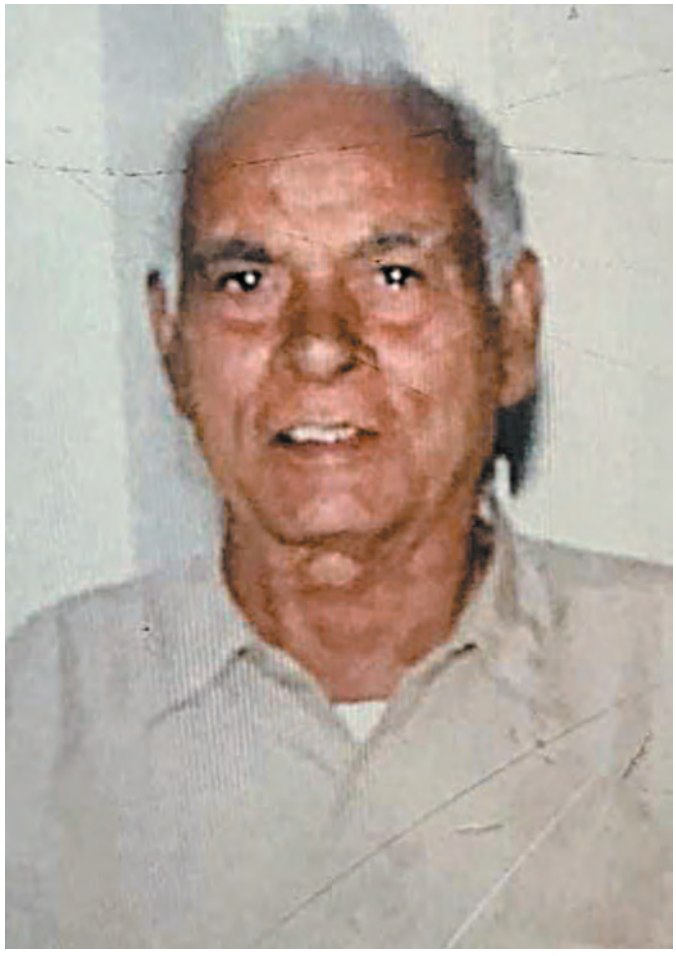

घुश्मेश्वर बाबा की नगरी शिवाड़ की खासियत ही यह है कि यहां जो भी बाहर से स्थायी रूप से बसने की चाहत लेकर आता है वह कामयाबी के शिखर पर जल्दी ही चढ़ जाता है। जयपुर से लाइम स्टोन और सोप स्टोन की खदानों को संभालने के मकसद से शिवाड़ आए गोविंद नारायण जी सैनी को खुद भी गुमान नहीं होगा कि शिवाड़ में न केवल वे स्थायी रूप से बस जाएंगे बल्कि उनका कारोबार भी बुलंदियों पर पहुंचेगा। गोविन्द नारायण जी के पिता जयपुर में नामी ठेकेदार थे। इसलिए ठेकेदार उपनाम गोविन्द नारायण जी के साथ शिवाड़ में भी जुड़ गया। वे पचास के दशक में यानी आजादी के बाद के आठ-दस साल में ही शिवाड़ आ गए थे। तब शिवाड़ के लोगों के लिए ठेकेदार नाम का संबोधन नया ही था। पूरे गांव के लिए वे ठेकेदार जी थे। लंबे समय तक मैं भी उनके मूल नाम से अनभिज्ञ था। गांव की अर्थव्यवस्था को गति देने वाले अहम किरदार होने के बावजूद उन्हें घमंड छू तक नहीं गया था। अपने संघर्ष के दौर में वे परिवार के साथ तब के गायत्री द्वार के पास स्थित एक कच्चे मकान में आकर रहे। बाद में स्टेशन रोड पर अपना छोटा सा आशियाना बना लिया। बेटे-बेटियों का यहीं जन्म हुआ। यह वह दौर था जब मकान निर्माण के काम में चूना-पत्थर का ही इस्तेमाल होता था। सीमेंट-कंकरीट का दौर तो काफी बाद आया।

गांव व आसपास के इलाके की जरूरत समझते हुए ठेकेदार जी ने कांकर्या भैरू के पास ईंट भट्टा शुरू किया जो उस समय का गांव में किसी लघु उद्योग से कम नहीं था। घर, घुश्मेश्वर मंदिर के प्रवेश द्वार के नजदीक ही था। वैद्य राधेश्याम जी के परिवार से ठेकेदार जी के परिवार की दांत-काटी दोस्ती थी। पूरे गांव के लिए वैद्य जी व ठेकेदार दम्पती अम्मा-बाऊजी थे। दान-पुण्य के हर मौके पर ठेकेदार जी आगे रहते थे। मकर संक्रांति पर्व पर पतंगबाजी से ज्यादा शिवाड़ में दान-पुण्य का जोर रहता था। खास तौर से गायों को चारा डालने की समृद्ध परिपाटी रही। इस पुण्य में सबकी समान रूप से भागीदारी रहे इस इरादे से घर-घर से चंदा एकत्र किया जाता था। गोविन्दनारायण जी इस काम में सबसे आगे रहते थे। गोविन्दनारायण जी अब दिवंगत हो गए लेकिन उनके इसी सेवाभाव का नतीजा है कि दोनों बेटे जयपुर में अपने-अपने कारोबार के क्षेत्र में काफी आगे हैं। मेरे मित्र लालचंद और अनुज कमलेश सैनी। लालचंद जी पिता के ही कारोबार को आगे बढ़ा रहे हैं तो कमलेश जी सैनी की प्रदेश भर में वर्षाजल संरक्षण के काम में अलग ही प्रतिष्ठा है। वे राज्य सरकार द्वारा प्रमाणित अकेले जलदूत हैं। ठेकेदार जी को साठ के दशक में समीप के ईसरदा में लाइम स्टोन और सारसोप में सोप स्टोन की खदान आवंटित हुई थी। महानगर बनते जयपुर का मोह छोड़ शिवाड़ आ बसे और यहीं कलई (चूना) भट्टा शुरू कर दिया। तब इस कली भट्टे पर गांव के करीब पचास युवक-युवतियों को रोजगार मिलता था। गोविन्द नारायण जी की जितनी आवाज कड़क थी उतनी ही गांव में उनकी धमक भी थी। गांव के बाहर कांकर्या भैरू स्थान (यहां अब आबादी पसर गई) पर गायों की घेर लगती थी। यों तो घेर को चारा डालने का गोविन्द जी का नियमित क्रम था लेकिन मकर संक्रांति के दिन गांव भर से खास तौर से बाजार में कारोबारियों से चंदा लेकर यह पुनीत काम करते थे। अब गांव में न तो वैसा गोपालन है और न ही गायों की घेर। कांकर्या भैरू के पास ही गोविन्दनारायण जी का कलई भट्टा था। आसपास पन्द्रह किलोमीटर तक की परिधि में भवन निर्माण के लिए इसी भट्टे से कलई जाती थी। दिन भर बैल व ऊंटगाड़ियों का जमावड़ा रहता था यहां। ठेकेदार जी जैसे सेवाभावी व्यक्तित्व सचमुच अनुकरणीय हैं।

# पं. कांतिचन्द्र शर्मा 'वासुदेव'

## कारोबारी जगत में बनाई पहचान

इकहरा बदन। सफेद धोती-कुर्ता या फिर धोती के साथ कमीज, यही उनका पहनावा था। सादगी ऐसी कि कारोबारी जगत में अलग पहचान रखने के बावजूद कभी खुद को अग्रिम पंक्ति में रहने की चाह नहीं रखी। मितभाषी भी इतने कि नपी-तुली बात में ही विश्वास रखते थे। जी हां, यह जिक्र है अब दिवंगत हो चुके शिवाड़ के प्रमुख कारोबारी कांतिचन्द्र जी शर्मा उर्फ वासुदेव जी का। वासुदेव इनके परिवार का उपनाम है। यों तो सनाढ्य ब्राह्मण कुल में पैदा हुए। पिता का नाम पं. देवीलाल जी था। वे भी अपने समय के प्रकाण्ड कर्मकांडी थे। उनका ज्यादातर समय देशाटन में ही बीता। जीवन का अधिकांश समय महाराष्ट्र में कर्मकाण्ड व पूजा अनुष्ठानों में बिताया। वासुदेव परिवार की चर्चा करते समय यह बता दूं कि आज शिवाड़ का शिवसागर सरोवर (बड़ा तालाब) भी इसी कुल के पुरखों में से एक की वजह से बना था। शिवाड़ के तत्कालीन ठिकानेदार के एक फैसले से खफा होकर इनके इस पुरखे ने किले से छलांग लगाकर खुदकुशी कर ली थी। पंडितों के परामर्श पर ब्रह्महत्या के प्रायश्चित के रूप में इस तालाब का निर्माण कराया गया था। यह तालाब काफी विशालता लिए हुए है।

बात कांतिचन्द्र वासुदेव जी की। अपने बचपन में मैंने उन्हें साईकिल पर सवार होकर आसपास के गांवों में फैरी लगाने जाते देखा है। कांतिचन्द्र जी के बड़े पुत्र दिनेश शर्मा बताते हैं कि पिताजी अपने शुरुआती दौर में सरकारी स्कूल में शिक्षक भी रहे। साल भर जयपुर भी रहे लेकिन गांव छोड़ना रास नहीं आया इसलिए लौट आए और खुद का ही कुछ करने की ठान ली। उनका कारोबारी संघर्ष फर्श से अर्श तक पहुंचने का जीवंत उदाहरण है।

शिवाड़ के पास टोंक जिला मुख्यालय बीड़ी बनाने का बड़ा केन्द्र रहा है। सत्तर के दशक में कांतिचन्द्र जी के घर के बरामदे में भी बीड़ी बनाने का एक तरह से कारखाना ही लगा हुआ था। और सूतरखाने में बीड़ी पत्तों का गोदाम। गांव के बीसियों युवकों को इससे रोजगार मिला हुआ था। घरों में महिलाएं भी इस काम में जुड़ी हुई थी सो अलग। दरअसल यह उस दौर में बीड़ी निर्माण की फ्रेंचाइजी थी। वर्ष 1966 में घर में ही परचूनी की दुकान भी शुरू की। ब्राह्मण थे, इसलिए अपनी पंडताई के कर्म को कारोबार से पीछे नहीं रखा कांतिजी ने। खासियत यह कि मुहूर्त बताने से लेकर मांगलिक कार्य तक के लिए कभी अपने यजमान से कोई फीस तय नहीं की। जो स्वेच्छा से दे गया उसे ही स्वीकार कर लिया। शिवाड़ के घुश्मेश्वर महादेव मंदिर ट्रस्ट के आजीवन कोषाध्यक्ष रहे। कांतिजी के पिता ने ही मंदिर परिसर में नीलकंठ महादेव मंदिर का जीर्णोद्धार करा गर्भगृह में मार्बल लगवाया था।। कांति जी भी मंदिर में निर्माण कार्य के सहयोग में हमेशा आगे रहे। साम्प्रदायिक सौहार्द का यह उदाहरण ही है कि एक तरफ वे शिव मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष थे तो शिवाड़ की जामा मस्जिद में निर्माण की देखरेख भी खुद ने ही की। कल्याण जी मंदिर की विकास समिति से भी उनका जुड़ाव रहा। गांव में रामलीला के दौर में खुद राम का अभिनय करते थे और रामलीला मंडली के लिए चंदा एकत्र करने तक में आगे रहते थे। रामलीला के पात्रों को तब सामूहिक रूप से लोग भोजन के लिए बुलाया करते थे। इस व्यवस्था में भी वे आगे रहते थे। गांव में जब जिन गिने चुने घरों में टेलीविजन था उनमें कांतिचन्द्र जी का भी एक था। परिवार सम्पन्न रहा, लोगों को ब्याज पर रकम तक देते थे लेकिन परिवार में न खुद ने और न ही उनके बेटों ने सम्पन्नता का लबादा ओढ़ा। कांतिचन्द्र जी के तीन बेटे हैं- इनमें सबसे बड़े दिनेश शर्मा गांव में ही पेट्रोल पम्प संभालते हैं तो एक पुत्र शिक्षक है। तीसरे बेटे ने दुपहिया वाहन की एजेंसी ले रखी है। श्रद्धालुओं के आवागमन को देखते हुए पिछले सालों में दिनेश शर्मा ने गेस्ट हाउस का संचालन भी शुरू किया है। वर्ष 2013 में 19 फरवरी को कांतिचद्र जी ने देह त्याग दी। अब उनके बेटे कारोबार को आगे बढ़ाने में लगे हैं। सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी रही इस विभूति को नमन।

# वीरेन्द्र कुमार तिवाड़ी

## सेवा भाव व परोपकार को बनाया ध्येय

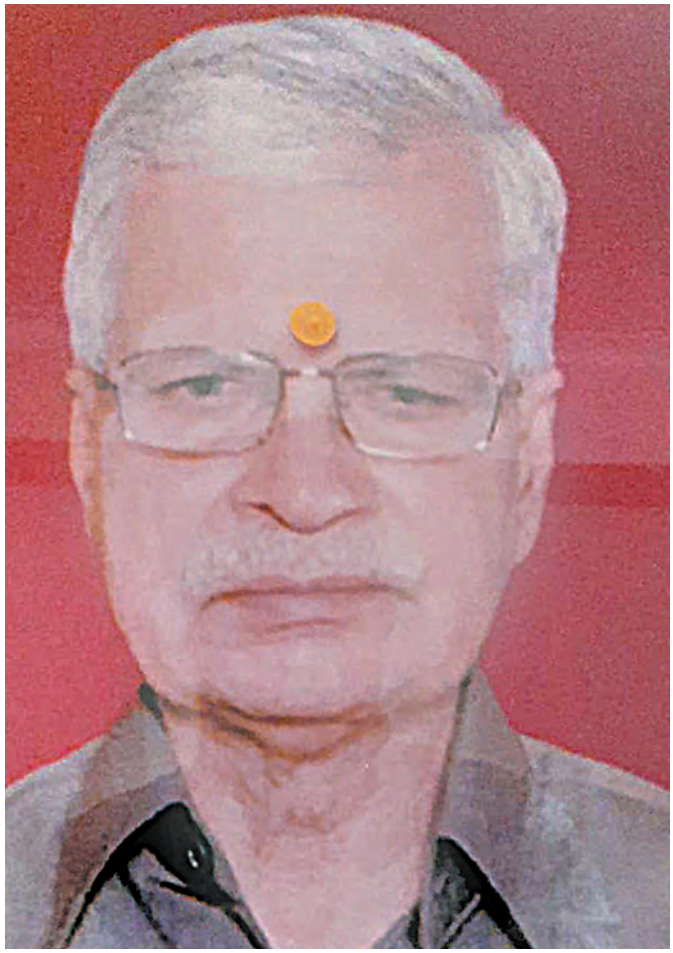

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो शायद इस धरती पर ही सेवा भाव व परोपकार का ध्येय लेकर आते हैं। उन्हें ईश्वर भी इसी निमित्त भेजता है। ऐसे लोग अपने जीवन में जो काम कर जाते हैं वे भावी पीढ़ी के लिए भी अनुकरणीय होते हैं। मैं चर्चा कर रहा हूं शिवाड़ में जन्मे वीरेन्द्र कुमार जी तिवाड़ी की। वीरेन्द्र के रूप में उनका नाम तो सरकारी दस्तावेज में ही था। गांव में सब उनको बाबू जी तिवाड़ी के नाम से जानते थे। वीरेन्द्र जी शिवाड़ के उन गिने-चुने लोगों में थे जो साठ के दशक में ही पढ़-लिखकर सरकारी महकमों में तैनात हो गए थे। तब के दौर में शिक्षा हासिल करने के बाद जयपुर जैसे शहर में आना शिवाड़ के लोगों के लिए सचमुच बड़ी बात थी। आंखों पर फबता हुआ चश्मा लगाए वीरेन्द्र तिवाड़ी राजस्थान रोडवेज में बड़े ओहदे पर थे लेकिन सादगी भरे व्यक्तित्व से इसका अंदाज ही नहीं होता था। आधी बांह का शर्ट व पेंट उनका पसंदीदा परिधान होता था। जयपुर से शिवाड़ जब भी आते उनका पहनावा धोती-कुर्ता हो जाता था क्योंकि अधिकांश समय वे शिव आराधना में ही बिताते थे।

राजस्थान रोडवेज में सामान्य क्लर्क के रूप में सेवाएं शुरू करने वाले तिवाड़ी जी प्रबंधक के ओहदे तक पहुंचे और उन्होंने उस दौर में शिवाड़ के बीसियों युवकों को रोडवेज में नियुक्ति की राह दिखाई। तब रोडवेज में चालक के साथ-साथ परिचालक को भी अनिवार्य प्रशिक्षण व लाइसेंस प्रक्रिया से गुजरना होता था। रोडवेज मुख्यालय में भी उनकी कार्य प्रक्रिया से सब प्रभावित थे। गांव में रोडवेज की बस सेवा शुरू कराने में भी उन्होंने काफी रुचि ली। उनके पुत्र संजय तिवाड़ी जयपुर में राजा रामदेव पौद्दार सीनियर सैकण्डरी स्कूल में व्याख्याता हैं। वे बताते हैं कि अपने सेवाकाल में ईमानदारी के साथ-साथ समय की पाबंदी भी उनका खास गुण रहा। उनके इन्हीं गुणों को जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। वीरेन्द्र जी के पिता देवीलाल तिवाड़ी पहले डिग्गी व बाद में शिवाड़ ठिकाने में कामदार रहे। जाहिर है, परिवार पर राजसी रहन-सहन की छाया आ सकती थी लेकिन वीरेन्द्र जी ने खुद को सादगी से दूर नहीं रखा। वर्ष 1965 में उनकी नियुक्ति राजस्थान रोडवेज में हो गई थी। गांव में बड़े तालाब के रास्ते में उनका घर था। जब भी जयपुर से शिवाड़ आते थे तो उनका घर धर्म व आध्यात्म पर चर्चा का केन्द्र हो जाता था। घंटो शिव आराधना में रत रहना उनकी खासियत थी। बात किसी को नौकरी की राह दिखाने की हो या मुश्किल वक्त में मदद करने की हो वीरेन्द्र जी ने किसी को निराश नहीं किया। लोगों पर असर ऐसा कि सत्तर के दशक में स्थानीय राजनीति में भी उनकी भूमिका अहम रहती थी। वीरेन्द्र जी से मेरा सीधा संवाद कभी नहीं हुआ लेकिन बचपन में उनके विद्वतापूर्ण वक्तव्य सुनकर मुरीद हो जाता था। गांव में पहुंचे हुए संत कृष्णनानंद जी महाराज हों या फिर बाद में यहां प्रवास पर आए पं. शिवदत्त जी महाराज के सत्संग का इंतजाम, वीरेन्द्र जी सदैव आगे रहते थे। शिवदत्त जी महाराज ने जब शिवाड़ के सरकारी अस्पताल परिसर में गणपति की प्रतिमा स्थापित करने की मंशा जाहिर की उस वक्त इस पुनीत काम में आगे आने वालों में वीरेन्द्र जी भी थे। आध्यात्मिक पुस्तकों के लेखन व प्रकाशन में उनकी गहन रुचि रही। उन्होंने सम्पूर्ण पूजा विधि सहित आनंददायी उपासना, दुर्गा उपासना, रुद्राष्टाध्यायी आदि पुस्तकों का प्रकाशन भी करवाया। सही मायने में वर्ष 1999 में सेवानिवृत्ति के बाद वीरेन्द्र जी ने खुद को आध्यात्म की ओर मोड़ लिया। परम शिवभक्त वीरेन्द्र जी जीवन के शेष कार्यकाल में अधिकांश समय जयपुर में ही रहे। 26 जनवरी 2013 को वे महाप्रयाण कर गए। सेवा की इस प्रतिमूर्ति को शत-शत नमन। ■

## गुलाब चन्द जैन

# नाम के माफिक ही रखी कारोबार की महक

गुलाब चंद जी जैन, सचमुच गुलाब की माफिक ही थे जिन्होंने शिवाड़ में अपने कारोबार की महक चहुंओर फैलाई। आज भी कारोबार का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं जिसमें गुलाब जी के परिवार का दखल न हो। यों कहना कि पिछले पांच दशक में शिवाड़ के विकास में और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कराने में गुलाब जी की अहम भूमिका रही है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। शून्य से शिखर तक पहुंचने की कहानी है ग्राम सेठ के नाम से मशहूर रहे गुलाब चंद जी जैन की। सब उनको सम्मान से सेठ जी का ही सम्बोधन देते थे। साठ के दशक से पहले शिवाड़ में पाटोदिया परिवारों का कारोबार पर कब्जा था। फर्में पहले होती नहीं थी। साठ के दशक में गांव के तीन प्रमुख जैन परिवारों ने फर्म बनाकर शिवाड़ का कारोबारी विकास किया उनमें गुलाब चंद- कैलाश चंद जैन के अलावा केवल चंद-लालचंद जैन व गंभीरमल-ज्ञानचंद जैन का नाम रहा।

गुलाब चंद जी के पिता गणपत लाल जी जैन टोंक जिले के हाडीगांव से दूसरे जैन परिवारों के साथ कमाने-खाने के लिए शिवाड़ आकर बस गए थे। संभवतः वर्ष 1900 के आसपास या इससे थोड़ा पहले। गणपत जी 'बणजी' करते हुए शिवाड़ व आसपास के गांवों में घूम-घूम कर घी बेचा करते थे। गुलाब जी के आज वाले मकान के ठीक सामने के नोहरे में कभी गणपत जी का कोल्हूपोश मकान होता था। तब तक शिवाड़ में दो-तीन परिवार ही पक्के मकानों में रहते थे। गणपत जी की तीन संतानों में सबसे छोटे गुलाब जी का जन्म एक जनवरी 1927 को शिवाड़ में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा भी शिवाड़ में ही हुई। होश संभालते ही पिता के काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया। कारोबारी स्पर्धा के दौर में गुलाब जी ने अपने सबसे बड़े पुत्र के नाम के साथ मुख्य बाजार में गुलाब चंद- कैलाश चंद जैन के नाम से अलग से फर्म खड़ी कर दी। मुख्यतः परचूनी सामान का थोक कारोबार होता था यहां। तेज रफ्तार से बोलना उनकी आदत थी और गल्ले पर टिके रहने का स्वभाव। मिलनसारिता ऐसी कि राह चलते से हाल-चाल जान लेते थे। शिवाड़ व आसपास के इलाकों में जब काश्तकारों ने मूंगफली की बुवाई शुरू कर दी तो गुलाब जी के दिमाग में शिवाड़ में तेल मिल खोलने का विचार आया। तब यह तेल मिल शिवाड़ के औद्योगिकरण की दिशा में कदम था। वक्त के साथ अपनी संतानों को भी अलग-अलग कारोबार का जिम्मा सौंप दिया। उनके सभी पुत्र अपने-अपने क्षेत्र में कामयाब हैं। पिछले एक दशक से खुद सक्रिय कारोबार से निवृत्त हो गए थे लेकिन कारोबारी हलचल पर नजर बराबर रखते थे। एक बड़ी खासियत गुलाब जी को सचमुच 'गुलाब' बनाती है वह यह थी कि अपने यहां मदद मांगने आए किसी को वे खाली हाथ नहीं जाने देते थे। ग्रामीणों के यहां शादी-विवाह का मौका हो या फिर गमी का, दुकान से सामान या आर्थिक मदद ले जाने वाले से कभी यह नहीं पूछते थे कि पैसा कब तक लौटाएगा? चुका दिया तो ठीक नहीं तो धर्मादा खाते में। कई बेसहारा बेटियों के विवाह का खर्चा भी उठाया। कारोबारी जगत में गुलाब जी का दखल इस कदर था कि शिवाड़ की धान मंडी में तब तक बोली लगना शुरू नहीं होती थी जब तक कि गुलाब जी नहीं पहुंचते थे। सत्तर के दशक में गांव में जब मोटरसाईकिलें भी नहीं होती थी गुलाब जी दो ट्रकों के स्वामी थे। बरसों तक जैन समाज शिवाड़ के अध्यक्ष रहे। भाजपा के प्रमुख नेताओं में नाम रहा। गुलाब जी के परिवार से मेरा शुरू से ही अपनापा रहा। उनके पुत्र महेन्द्र जैन मेरे अभिन्न मित्र हैं। परोपकार और धर्मपरायणता की मिसाल बने गुलाब जी का 94 वर्ष की उम्र में 9 मई 2021 को देवलोकगमन हो गया। शत-शत नमन। ■

# शिव के 12 ज्योतिर्लिंग

*सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्री शैले मल्लिकार्जुनम।*
*उज्जयिन्यां महाकालमोंकारे परमेश्वरम।।*
*केदारं हिमवृतपृष्ठे डाकिन्यां भीमशंकरम।*
*वाराणस्यां च विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमी तटे।।*
*वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारूकावने।*
*सेतुबन्धे च रामेशं घुश्मेशंतु शिवालये।।*
(शिवपुराण कोटि रुद्र संहिता 1/21-23)

## विश्वनाथ

वाराणसी या काशी में विराजमान विश्वनाथ या विश्वेश्वर महादेव है।

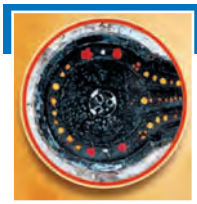

## त्रयम्बकेश्वर

महाराष्ट्र के नासिक जिले में ब्रह्मगिरि के पास गोदावरी नदी के किनारे अवस्थित है।

## वैद्यनाथ

झारखण्ड राज्य के देवघर में है। इस स्थान को चिताभूमि भी कहा गया है।

## सोमनाथ

गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र में अवस्थित इस क्षेत्र को प्रभास तीर्थ भी कहते हैं।

## ओंकारेश्वर

मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में स्थित यह ज्योतिर्लिंग नर्मदा नदी के तट पर है।

## नागेश

बड़ौदा क्षेत्र में गोमती द्वारका के समीप विराजते हैं।

## मल्लिकार्जुन

आन्ध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में श्रीशैल नामक पर्वत पर स्थित है।

## केदारनाथ

उत्तराखंड में हिमालय की चोटी पर विराजमान

## रामेश्वरम

सेतुबन्ध तीर्थ तमिलनाडु में समुद्र के किनारे अवस्थित है।

## महाकालेश्वर

मध्य प्रदेश के उज्जैन में स्थित है। इसे प्राचीनकाल में अवन्तिका कहा जाता था।

## भीमाशंकर

महाराष्ट्र में भीमा नदी के किनारे सहयाद्रि पर्वत पर हैं।

## घुश्मेश्वर

राजस्थान के सवाईमाधोपुर जिले के शिवाड़ कस्बे में विराजमान है।

# All Kinds of Mineral Suppliers & Rain Water Harvesting Expert

## B.P. Enterprises

**JDA Authorised Permanent Jaldoot**

E-mail : Saini_km57@yahoo.com

## Bhanu Buildcon Pvt. Ltd.

**Developer & Contractor**

E-mail : Bhanubuildon.jaipur@gmail.com

## Kamlesh Saini (Shiwar Wale)

**M.: 9314632947, 9352136947**

Plot No. 14, Shanti Path, Scheme No. 21 South,
Niwaru Road, Jhotwara, Jaipur 302012

# शिवानी जैन मेमोरियल ट्रस्ट

## (समाज सेवा को संकल्पित प्रकल्प )

4 - श्रीपुरम कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, गुर्जर की थड़ी, जयपुर

# सेवा, समर्पण व निष्ठा

### ट्रस्ट एक नजर में

स्मृति - शिवानी जैन, सुपुत्री श्री नवल जैन (शिवाड़ वाले)

स्थापना - अक्टूबर 2011

पंजीकरण - सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 के तहत पंजीकृत

### हमारे सेवा कार्य

रक्तदान शिविर - जयपुर में हर साल युवा परिषद अग्रवाल समाज चौरासी प्रवासी समिति के रक्तदान शिविरों में सहयोग

बेसहारों की मदद - हर साल आगरा रोड जयपुर स्थित शंकर सेवा सदन में निराश्रित वृद्धजनों की सेवा

बेजुबानों की चिंता - गर्मियों में पक्षियों के लिए चुग्गा ट्रे व परिण्डों का निःशुल्क वितरण

शिक्षा के प्रति समर्पण - शिक्षण संस्थाओं में बच्चों को स्वच्छ पानी के लिए वाटर प्यूरीफायर व वाटर कूलर भेंट

### हमारी भावी योजनाएं

- ग्रामीण इलाकों में औषधालय व चिकित्सालयों की स्थापना
- निराश्रित लोगों को भोजन व वस्त्रों का इंतजाम
- जयपुर में वरिष्ठ नागरिकों के लिए वृद्धाश्रम का इंतजाम
- जयपुर में रैन बसेरे बनाने का लक्ष्य
- गायों के लिए गोशाला बनाने का सपना
- आर्थिक दृष्टि से कमजोर बालकों की पढ़ाई में मदद

अनिल जैन सूराशाही
प्रबंध निदेशक

नवल जैन
अध्यक्ष